मौलाना

तारिक़ जमील साहब

तर्तीब

मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर मेमन

बयानात

मौलाना

तारिक़ जमील साहब

तर्तीब

मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर मेमन

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

बयानात मौलाना तारिक़ जमील साहब
(चौथा हिस्सा)

तर्तीब

मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर मेमन

बएहतिमाम

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Bayanat Maulana Tariq Jameel Sahab (Vol. IV)

Compiled by:
Muhammad Arsalan bin Akhtar Meman

Edition: **2014**

Pages: **470**

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

विषय सूची

मज़मून	पेज न०

○ ○ ○

माँ-बाप की ज़िम्मेदारी

○ ○ ○

औरतों के हक़

○ ○ ○

नेकी और बुराई का अन्जाम

○ ○ ○

कामयाब ज़िन्दगी

O O O

इस्लामी समाज का वजूद

○ ○ ○

आख़िरत का इम्तिहान

○ ○ ○

ज़िन्दगी का मक़सद

○ ○ ○

दुनिया और आख़िरत

الحمدللّٰہ و کفی و سلام علی عبادہ الذین اصطفی اما بعد.

فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم.
بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم.

من عمل صالحا من ذکر او انثی وھو مومن فلنحیینہ حیوٰۃ طیبۃ ولنجزینھم اجرھم باحسن ما کانو یعملون.
وقال تعالٰی قل کل یعمل علی شاکلتہ فربکم اعلم بمن ھو اھدٰی سبیلا.

وقال النبی صلی اللّٰہ تبارک تعالٰی علیہ وسلم بمعنی قولہ کما روی عنہ ان المؤمنۃ تفضل علی المؤمنۃ علی الحرم العین بسبعین الف ضعف. او کما قال صلی اللّٰہ تعالٰی وسلم. صدق اللّٰہ مولانا العظیم.

मुशतरिक मस्अलाः

मेरे मोहतरम भाईयो और बहनो!

पूरी दुनिया के मर्दों और औरतों के लिए एक मस्अला ऐसा है जिसमें सब शरीक हैं। हर घर में बेशुमार मसाइल हैं लेकिन कैफ़ियत अलग अगल है। एक मस्लआ सारी दुनिया के मर्दों व औरतों के लिए ऐसा है जिसमें सब शरीक हैं। वह क्या है?

वह यह है कि अल्लाह तबारक व तआला हम सब पर मौत

को तारी करने वाले हैं ﴿كل نفس ذائقة الموت﴾ हर नफ़्स ने मौत का ज़ाएका चखना है।

यहाँ नफ़्स लफ़्ज़ का इस्तेमाल किया है। वह मर्द के लिए भी है और औरत के लिए भी है क्योंकि इसका कोई लफ़्ज़ ऐसा नहीं है जो औरत के लिए अलग से आया हो। नफ़्स हर मर्द व हर औरत के लिए इस्तेमाल होता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है ﴿كل نفس ذائقة الموت﴾ हर नफ़्स ने मौत का ज़ाएका चखना है।

ये जितने मर्द बैठे हैं और पर्दे में जितनी औरतें बैठी हैं हम सब पर एक दिन ऐसा तय हो चुका है कि ये बोलती ज़बाने बन्द हो जाएंगी, ये देखती आँखें बुझ जाएंगी, ये सुनते हुए कानों के तार टूट जाएंगे, ये धड़कते हुए दिल ख़ामोश हो जाएंगे और यह चलता फिरता वजूद इन्सान के बजाय मैय्यत कहलाएगा मैय्यत। कुछ देर पहले कहते थे वह जा रहा है। अब कहेंगे मैय्यत जा रही है मैय्यत।

इन्सानी बीमारियाँ

जब आँख से नज़र आना कम हो जाए तो हम कितने परेशान हो जाते हैं। कहते हैं कि नज़र टैस्ट कराओ और जिस दिन यह आँख बिल्कुल ही बन्द हो जाएगी वह वक़्त कम परेशानी का तो नहीं है।

थोड़ा सा ऊँचा सुनाई देने लग जाए तो कहते हैं कोई दवाई दो मुझे ऊँचा सुनाई देने लगा है, कोई मशीन लगाओ, मैल निकालो, कुछ तो करो और जिस दिन ये कान बिल्कुल बन्द हो जाएंगे वह क्या वक़्त होगा।

थोड़ा सा हाथ बेहरकत हो जाए और हरकत करना मुश्किल हो जाए तो कहते हैं कहीं फालिज न हो जाए मेरे लिए दुआ करो, मुझे कोई दम करो, मुझे कोई तावीज़ दो, मुझे कोई दवाई दो कि मेरे हाथ की हरकत कमज़ोर हो रही है, मेरा हाथ कांपता है, मेरा हाथ हिलता है और जिस दिन ये दोनों हाथ बिल्कुल ठहर जाएंगे कि अपने ऊपर से मक्खी को भी नहीं उड़ा सकेंगे तो यह कोई कम मस्अला तो नहीं है।

दिल की धड़कन थोड़ी सी तेज़ या सुस्त हो जाए तो आदमी हाय हाय करता है कहीं मुझे दिल का दौरा न पड़ जाए। मुझे लाहौर ले जाओ क्योंकि नारोवाल में तो कोई दिल का डाक्टर ही नहीं। मेरा इलाज करवाओ कहीं मुझे दिल को दौरा न पड़ जाए तो जिस दिन यह धड़कता हुआ दिल बन्द होगा तो क्या यह कम मुसीबत होगी।

घुटनों में दर्द है व्हील चेयर मैं नहीं बैठना चाहती, मुझे सारे घर का काम करना होता है और मैं ही तो सारे घर को देखती हूँ, डाक्टर साहब कोई दवाई तो दो। दुकान पर अकेला हूँ जाना होता है आना होता है, सौदा देने के लिए उठना बैठना पड़ता है। मेरे घुटनों में दर्द है कोई दवाई दो। कुर्सी पर आ गया तो मैं फिर किस काम का और जिस दिन ये पूरी टांगे हरकत करने से आजिज़ हो जाएंगी और पत्थर बन जाएंगी, अकड़ जाएंगी तो वह कोई कम मुसीबत का दिन है।

बोला न जाए तो आदमी परेशान हो जाता है और कहता है मेरी ज़बान पर कहीं फ़ालिज तो नहीं हो गया, मेरी ज़बान अटकना शुरू हो गई है। तुतलाहट शुरू हो गई है। इसका इलाज

करो बल्कि जिनको पढ़ना होता है या जिन्हें बोलना होता है वह इस बात का ख़्याल रखते हैं कि मेरा गला न बैठ जाए। मेरी ज़बान में तुतलाहट न आ जाए क्योंकि मुझे बच्चों को पढ़ाना होता है, मैं स्कूल में टीचर हूँ, मैं प्रोफ़ेसर हूँ, मैं स्कूल में पढ़ाती हूँ, मैं स्कूल में पढ़ाता हूँ, मेरी ज़बान भारी होती जा रही है तो मेरा क्या बनेगा?

जिस दिन यह यह बोलती ज़बान बिल्कुल ख़ामोश हो जाएगी। वह कोई कम मुसीबत का दिन होगा। जिस दिन बच्चे पुकार रहे होंगे अम्मा! अम्मा! लेकिन आगे से जवाब कोई न होगा। जिस दिन बेटे पुकारेंगे अब्बा! अब्बा! लेकिन जवाब ही कोई न होगा।

अब्बा रोज़ाना सुबह को दुकान पर जाता था। आज दुकान किसके हवाले करके जा रहा है कन्धों पर सवार होकर।

अम्मा सुबह सवेरे ही उठकर घर के कामों में लग जाती थी, सफ़ाईयाँ कर रही है, नाश्ते तैयार कर रही है, बर्तन देखे जा रहे हैं, कपड़े देखे जा रहे हैं। आज यह इतना बड़ा घर खुला छोड़कर अजनबियों के कान्धों पर सवार होकर कहाँ जा रही है? यह किस देस की तरफ़ हिजरत है जहाँ जाकर कभी भी कोई वापस नहीं आया?

﴿كل نفس ذائقة الموت﴾ सब ही ने यह ज़ाएक़ा चखना है।

अगर यह मौत हमें मार देती और हमारा क़िस्सा तमाम कर देती और मरने के बाद मिटा दिए जाते तो हम आसानी में थे। हिसाब भी कोई नहीं, पूछेगा भी कोई नहीं। ठीक है। अगली आयत दिलों को हिला देने वाली है:

﴿ثم توفون اجوركم يوم القيمة﴾

और जो कुछ तुमने नारोवाल के बाज़ार में किया है और जो कुछ तुमने नारोवाल के घरों में रह कर किया है उसका एक दिन मैं तुम्हें पूरा पूरा अज्र दूंगा या सज़ा दूंगा। इस का हिसाब लूंगा और इस पर ईनाम या सज़ा का निज़ाम चलेगा।

सबसे बड़ा मसअला मौत है

मेरे भाईयो! और बहनो!

इस आयत ने हमें जकड़ कर रख दिया है मौत को दुनिया का सबसे बड़ा मसअ्ला बना दिया। यह दीवानों का जहाँ है जो मौत को मसअ्ला नहीं समझते।

मंहगाई मसअ्ला बन गई। बर्तन टूट जाना मसअ्ला बन गया, सिर में दर्द होना मसअ्ला बन गया, बच्चे को नौकरी नहीं मिल रही मसअ्ला बन गया। यह कितना बड़ा मसअ्ला है कि मौत हमारे इस जीते जागते वजूद के मिट्टी का ढेर में बदल देगी और मासूम बच्चे पर एक चोट पड़ती है क्योंकि उसने तो ख़ाली खेलकूद ही को देखा था वह तो एक दम जब घर में मातम होता है तो कहता है क्या हो गया, क्या हो गया? क्योंकि उसके लिए तो यह नई चीज़ है। तो मासूम ज़हन पर एक चोट पड़ती है कि यहाँ मरते भी हैं। अभी पिछले दिनों मैं हज पर था और पीछे से मेरी वालिदा गुज़र गयीं। मेरी भतीजी तीन चार साल की थी वह मेरी बीवी से कहने लगी ये लोग क्यों रो रहे हैं?

ये सारे क्यों रो रहे हैं?

उसने कहा आपकी दादी गुज़र गई है।

तो बच्ची ने कहा यह गुज़रना क्या होता है?

उसने कहा मर गई।

बच्ची ने कहा यह मरना क्या होता है?

उसने कहा अल्लाह तआला के पास चली गई।

(बच्ची) कहने लगी यह अल्लाह के पास कहाँ गई हैं यह तो सोई पड़ी हैं। अल्लाह के पास कहाँ गई? यह बोलती क्यों नहीं? यह उठती क्यों नहीं? ये सारे क्यों रो रहे हैं?

तो पता चला यहाँ जनाज़े भी उठते हैं और फिर लोग क़ब्रों में डालकर भूल भी जाते हैं। किसी को याद नहीं रहता कि कोई माँ थी जो रातों को उठकर हमारे लिए क्या कुछ बनाया करती थी, कोई बाप था जो नारोवाल के बाज़ारों में हमारे लिए गर्मी और सर्दी के थपेड़े सहता था और सारा दिन दुकान की ग़ुलामी करता था सिर्फ़ बच्चों की एक मुस्कराहट देखने के लिए माँ बाप ख़ून, ख़ून हो जाते हैं। वही भुला दें। उन्हें ऐसे भुला दें, उन्हें ऐसे भूल जाते हैं जैसे कि कभी वे आए ही नहीं थे। भूली विसरी दास्तान बन जाते हैं तो

मेरे भाईयो! और बहनों!

क़ुरआन मौत को मसअला बनाकर पेश करता है और दुनिया को गुज़रगाह बनाता है कि तुम दुनिया के किस चक्कर में पड़े हुए हो। मैंने बनाई है मुझसे पूछो यह क्या है? ﴿اعلموا﴾ जैसे कहते हैं डाक्टर साहब! मैं तो हलाक हो गया। क्या हो गया? कहता है मेरे सीने में दर्द है। खुदा के वास्ते देखो मुझे हार्टअटैक हो गया। खुद मर्ज़ बनाकर बैठा हुआ है कि मेरे दिल को दौरा पड़ गया।

डाक्टर साहब ने देखा। ई०सी०जी० की और कहा आप तो

दीवाने हैं आपका दिल तो बिल्कुल ठीक ठाक है। किसने आपको कहा कि आपको दिल का दौरा पड़ गया? तो वह मुतमइन होकर खुश खुश वापस आता है। जब हस्पताल गया तो ऐसे मरा मरा और जब निकलता है तो खुश खुश होकर।

यही कुछ अल्लाह कहता है मुझसे पूछो जिस नारोवाल को तुम सिर का ताज बनाए बैठे हो। नमाज़े तुम्हारी छूट रही हैं, क़ुरआन की तिलावत तुम्हारी छूट गई, सच तुमने छोड़ दिया, मुहब्बतें तुमने क़ुर्बान कर दीं, सदाक़त तुमने छोड़ दी, वफ़ाएं तुमने छोड़ दी, अल्लाह को राज़ी करना तुमने छोड़ दिया, हमदर्दी और क़ुर्बानी तुम भूल गए सिर्फ़ इस पेट के ईंधन को भरने के लिए और अपनी चारों दीवारों को सजाने के लिए और अपनी ख़्वाहिशात को पूरा करने के लिए तुमने अपने दिन व रात लगा दिए।

उस रब से पूछो जिसने इस नारोवाल की ज़मीन बिछाई है, जिसने आसमान की छत को ताना, जिसने सूरज और चाँद के चिराग़ जलाए, जिसने दिन व रात की गर्दिश का निज़ाम चलाया। उससे तो पूछिए यह क्या है?

खेल तमाशा

﴿اعلموا﴾ सुनो मेरे बन्दो! मेरी बात ग़ौर से सुनो! ﴿انما الحيوة الدنيا﴾ यह दुनिया की ज़िन्दगी, यह नारोवाल की ज़िन्दगी, यह बाज़ार की ज़िन्दगी ﴿لعب﴾ खेल, ﴿لهو﴾ तमाशा। ﴿لعب﴾ आपने देखा दस बारह बच्चे खेल रहे हैं। किसी ने पूछा क्या कर रहे हैं? तो कहा गया खेल रहे हैं। अभी हम बाज़ार से आए हैं। हमने

देखा कि सारे लोग काम कर रहे हैं। कोई पुड़िया बना रहा है, कोई लस्सी बना रहा है, कोई सब्ज़ी पर पानी फेंक रहा है, कोई दुकान पर झाड़ू दे रहा है, कोई दुकान पर बैठ चुका है। तो हम कहते हैं कि ये सारे लोग काम कर रहे हैं। अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि अगर मेरी नज़र से देखो तो यह सब खेल रहे हैं जैसे तुम्हारी नज़र में बच्चे गाड़ियों के खिलौनों से खेल रहे होते हैं।

﴿لهو﴾ तमाशा! तमाशा आपने देखा तमाशा क्या होता है? आपने देखा एक मदारी ने डुगडुगी बजाई और हमारे जैसे दो चार फ़ारिग़ इकठ्ठे हो गए और उसने कहा अभी मैं अपनी पिटारी से साँप निकालूंगा और साँप से यह बना दूंगा, बोतल से जिन्न निकल आएगा और जिन्न से बोतल निकल आएगी। वह लोगों को बेवक़ूफ़ बना रहे होते हैं और लोग ऐसे दीवानों की तरह खड़े देख रह होते हैं लेकिन अक़्लमंद कहते हैं, "मदारी तमाशा दिखा रहा है।"

अल्लाह तआला हमें कह रहा है कि ये जो औरतें समझती हैं हम घरों में काम कर रही हैं और ये जो मर्द समझ रहे हैं कि हम बाज़ारों में काम कर रहे हैं। मैं तुम्हारा रब तुम्हें कह रहा हूँ ये तमाशे हो रहे हैं तमाशे।

अगर किसी बच्चे की गाड़ी टूट जाए तो वह कितना रोता है? माँ कहती है कोई बात नहीं, खिलौना ही तो है और आ जाएगा और ले दूंगी लेकिन बच्चा कहता है मेरा तो बहुत नुक़सान हो गया तो अल्लाह यही फ़रमा रहे हैं कि ऐ मेरे बन्दों! तुम नारोवाल के नुक़सान पर ही रोने बैठ गए यह तो कुछ भी नहीं। तुम यहाँ की खुशियों को दिल दे बैठे। यह तो कुछ भी नहीं।

اعلمو انما الحيوٰة الدنيا لعب ولهو وزينة وتفاخر بينكم وتكاثر
فى الاموال والاولاد كمثل غيث اعجب الكفار نباته ثم يهيج
فتراه مصفرا ثم يكون حطاما وفى الاخرة عذاب شديد ومغفرة
من الله ورضوان وما الحيوٰة الدنيا الا متاع الغرور. كماء انزلنه
من السمآء فاختلط به نبات الارض فاصبح هشيما تذروه
الرياح وكان الله على كل شىء مقتدرا.وما متاع الحيٰوة فى
الاخرة الا قليل. لا يغرنك تقلب الذين كفروا فى البلاد متاع
قليل ثم ماوٰهم جهنم وبئس المهاد.

क़ुरआन की ये सारी आयतें बता रही हैं कि दुनिया बच्चों का खेल है, तमाशा है तो फिर असल क्या है?

मौत का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता

जहाँ इन्सानों का इल्म कुछ नहीं बताता वहाँ अल्लाह बताता है। असल मौत के बाद की ज़िन्दगी है। इसकी तैयारी करो। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़रमान है:

﴿الموت ليس منه الفوت﴾ ऐ लोगो! मौत से कभी भी कोई टक्कर नहीं ले सका, न कोई बच सका।

﴿ان فررتم منه ادركم﴾ ﴿ان اقمتم له اخذكم﴾

बड़े बड़े पहलवानों ने पंजा आज़माई और मौत ने उनके पंजे मरोड़ कर ज़मीन पर गिरा दिया और बड़े बड़े तेज़ रफ़्तार दौड़ने वालों ने उससे भागने की कोशिश की और मौत ने उनकी गर्दन को पकड़ कर ज़मीन पर फेंककर ख़ाक में मिला दिया।

यह वह पहलवान है जिसके सामने लाखों भोलू हार गए और लाखों रुस्तम-ए-ज़मां हार गए और लाखों फ़लाँ हार गए उसके

सामने कोई टिक नहीं सका और न टिक सकता है।

इस मौत की तैयारी करो इससे पहले कि तुम ग़फ़लत में उठा लिए जाओ। उसके आने से पहले पहले तौबा करके अपने अल्लाह से मामला ठीक कर लो।

एक सिर्फ़ एक अल्लाह की ज़ात है जो फ़ना से पाक है, एक अल्लाह है जो ज़वाल से पाक है, एक अल्लाह है जो मौत से पाक है, एक अल्लाह है जो हर क़िस्म की कमज़ोरी से पाक है। अल्लाह वह ज़ात है जिसकी शुरूआत कोई नहीं, अल्लाह वह ज़ात है जिसकी कोई इन्तेहा नहीं, अल्लाह वह ज़ात है जो अपने बाक़ी रहने में रोटी का मोहताज नहीं, अल्लाह वह ज़ात है जो अपने बाक़ी रहने में पानी का मोहताज नहीं, अल्लाह वह ज़ात है जो अपने बाक़ी रहने में रूह का मोहताज नहीं, अल्लाह वह ज़ात है जो अपने बाक़ी रहने में हवा का मोहताज नहीं, अल्लाह वह ज़ात है जो अपने बाक़ी रहने में ग़ल्लों का मोहताज नहीं। उसने अपनी ज़ात को मौत से पाक रखा है। बाक़ी सारी काएनात को मौत के बेरहम हाथों और लोहे के पंजों में उसने मरोड़ना है।

काएनात की मौत

एक एक तो मर ही रहे हैं और एक दिन ऐसा आएगा जब अल्लाह तआला सारी काएनात पर मौत का कोड़ा बरसाएगा।

﴿اذا زلزلت الارض زلزالها﴾ देखो! यह ज़मीन मर रही है। यह मैं आसान लफ़्ज़ों में कह रहा हूँ

﴿اذا الارض مدت. والقت ما فيها وتخلت. اذا زلزلت الارض زلزالها.﴾

यह देखो इन्सान मर रहे हैं ﴿يوم يكون الناس كالفراش المبثوث﴾ यह देखो पहाड़ मर रहे हैं ﴿وتكون الجبال كالعهن المنفوش﴾ यह देखो समंदर मरने लगे ﴿واذا البحار فجرت. واذا البحار سجرت.﴾ यह देखो आसमान मरने लगा है ﴿اذا السمآء انفطرت. اذا السمآء انشقت.﴾ यह देखो सूरज मरने लगा ﴿اذا الشمس كورت﴾ यह देखो चाँद मरने लगा ﴿فاذا برق البصر وخسف القمر وجمع الشمس والقمر﴾ यह देखो सितारे मरने लगे हैं ﴿واذا الكواكب انتثرت. واذا النجوم انكدرت﴾ अब ये सातों आसमान और ज़मीन और उनके अन्दर रहने वाले आज मौत के हाथों हलाक हो रहे हैं।

ज़मीन फट रही है, आसमान टुकड़े टुकड़े हो रहे हैं, पहाड़ रेत बन रहे हैं, समंदर में आग लग रही है, जानवर दीवानों की तरह जंगलों से निकलकर शहरों की तरफ़ भाग रहे हैं।

वे माँए जो बच्चों का लोरियाँ देते नहीं थकती थीं, वे माँए तो बच्चों को सीने से चिमटाए नहीं थकती थीं, वे माँए जो बच्चों को मेरा लाल! मेरा लाल! कहते कहते नहीं थकती थीं आज वे ज़रा तमाशा देखें वहीं माँए हैं आज जो बच्चों को यूँ उठाकर फेकेंगी जैसे घर का कूड़ा फेंकती हैं, जैसे घर की गन्दगी उठाकर बाहर फेंकती हैं। ﴿يوم تذهل كل مرضعة عما ارضعت﴾ और अल्लाह ने फ़रमाया बच्चा नहीं बल्कि दूध पीता बच्चा, क्योंकि दूध पीता बच्चा तो माँ का एक लाज़मी हिस्सा बन जाता है वह अपने आपको बाद में संभालती है अपने दूध पीते बच्चे को पहले संभालती है और जो बच्चे ज़रा बड़े हो जाते हैं उनसे तवज्जेह हट जाती है, मुहब्बत में कमी नहीं आती बल्कि ज़रा तवज्जेह हट जाती है और जो दूध पीता है उस पर हर वक़्त तवज्जेह रहती है।

यह वह दिन होगा जब दूध पीते बच्चे को माँ यूँ उछालकर फेंकेगी जैसे कूड़ा उठाकर फेंक देते हैं और खुद भागेगी लेकिन आज यह न मासूम बचेगा न यह माँ बचेगी।

आज न शहसवार बचेंगे, न ज़ोरदार बचेंगे, न ज़बरदस्त बचेंगे, न शहंशाह बचेंगे, न वज़ीर व फ़क़ीर बचेंगे, न जिन व इन्सान बचेंगे और मौत का बेरहम बरछा सबकी आँतों को चीरता हुआ, उनकी गर्दनों को उड़ाता हुआ, उनको मिट्टी में मिलाता हुआ चला जाएगा।

आज पहाड़ों जैसी सख़्त मख़्लूक़ मर रही है, नारोवाल वाले बेचारे कैसे बच जाएंगे। हम तो वैसे ही रोज़ाना मर रहे हैं:

आज यह गया   कल वह गया
आज यह उठा   कल वह उठा

सूर फुंकना

और फिर एक धमाका होगा और ज़मीन फटती चली जाएगी और ज़मीन के अन्दर से आग बाहर निकलती चली आएगी और पूरी दुनिया के इन्सान एक मौत मरेंगे, एक मौत। कलेजे फट जाएंगे, आँखें फट जाएंगी। वह आवाज़ ऐसी भयानक होगी। एक सुरीला साज़ जिससे सारे मस्त हो जाएंगे। सुबह का सुहाना वक़्त होगा। एक औरत ने मक्खन का पेढ़ा बनाकर लस्सी से निकालकर हाथ में रखा ही होगा कि एक दम सूर फूंक दिया जाएगा और पेढ़ा उसके हाथ से छूट जाएगा।

एक और औरत ने रोटी तैयार कर ली होगी और तवे पर

डालने के लिए अपने हाथ को ले जा चुकी होगी, अभी डाला नहीं, हाथ यूँ आ चुका है एक दम सूर फूंका जाएगा और रोटी तवे से बेक़ायदगी से गिर जाएगी।

और दुकानदार जल्दी जल्दी सुबह नारोवाल के बाज़ार में आकर बैठा हुआ है कि पहले ग्राहक मैं समेट लूँगा। ग्राहक आया और सौदा तय हुआ और उसने गज़ के ज़रिए कपड़ा नापा पाँच दस मीटर और कैंची को रखा हाथ में और अभी काटा ही होगा एक दम धमाका होगा और क़ैंची हाथ से छूट जाएगी।

और एक दुकानदार देर से आया होगा और वह झाड़ू दे रहा होगा एक आवाज़ आएगी और झाड़ू उसके हाथ से छूट जाएगी।

और ज़मींदार बैल लेकर ज़मीन की तरफ़ चल चुका है और हल उसके हाथ में है और बैल उसके आगे हैं एक आवाज़ आएगी तो बैल बिदककर वे गए, हल छूट गया और वह भागकर वह गया लेकिन आज न बैल मरने से बचा, न काश्तकार बचा, न ज़मींदार बचा, न बेगम बची, न अमीरन बची न अमीर बचा, न ग़रीबन बची न ग़रीब।

आसमानों की मौत

आज सब पर मौत की तलवार ऐसी फिरी कि सारी ज़मीन के लोगों को मौत देकर फिर अल्लाह ने पहले आसमान वालों को मौत का हुक्म सुनाया, फ़रिश्तों के रंग उड़ गए। सारी दुनिया को मरता देखते थे। आज अपनी मौत भी देख रहे हैं। दूसरा आसमान लरज़ रहा है। फिर इस पर मौत का हुक्म लागू हो रहा है। फिर

तीसरे आसमान को मौत खा गई। फिर चौथे आसमान को मौत खा गई। फिर पाँचवे आसमान को मौत खा गई। फिर छठे आसमान को मौत खा गई। सातवें आसमान के फ़रिश्ते जो सबसे ज़्यादा ख़ास और क़रीब हैं थर थर कांप रहे हैं। उन पर भी मौत का रंदा फिरा। फिर अर्श के फ़रिश्ते मरे। फिर अल्लाह की एक हैबतनाक आवाज़ आई कि जिब्राईल भी मर जाए और मीकाइल भी मर जाए।

इस आवाज़ का सुनना था कि अल्लाह तआला का अर्श हिल जाएगा और अल्लाह तआला की बारगाह में सिफ़ारिश करेगा या अल्लाह! जिब्राईल और मीकाइल भी क्या मर जाएंगे? उन पर मेहरबानी कर दें तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगेः

﴿اسكت لقد كتبت الموت على من تحت عرشي.﴾

ख़ामोश हो जा! मेरे अर्श के नीचे जो है उसके लिए मौत मुक़द्दर है अगर किसी को बचाना होता तो अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बचाता। उसको भी मौत का प्याला पिला दिया। जिब्राईल तो उसका अदना ख़ादिम है। मीकाइल तो उसका अदना ख़ादिम है। उसको नहीं छोड़ा तो ये कैसे छुट सकते हैं।

इसराफ़ील जो सूर फूंकने पर लगे हुए हैं सूर फूंकी जा रही है जूँ ही अल्लाह कहेगा इसराफ़ील तू भी मर जा तो उनके हाथ काँप जाएंगे और चकराकर गिरेंगे और सूर नीचे नहीं गिरेगा बल्कि वह उड़ता हुआ अल्लाह के अर्श पर जाकर खड़ा हो जाएगा।

फिर इसके बाद ऊपर नीचे इज़राईल। बोल इज़राईल अब कौन बाक़ी है? उसे भी यह पता चल गया कि अब मेरी बारी है। वह कहेगा या अल्लाह! ऊपर तू बाक़ी और नीचे तेरी यह मख़्लूक़

मलकुलमौत बाक़ी।

अल्लाह तआला फ़रमाएगा ﴿مُت﴾ मर जा तू भी मेरे अम्र के साथ तो इज़राइल ऐसी चीख़ मारेगा कि सारी दुनिया के इन्सान व जिन्नात और आसमानों के फ़रिश्ते अगर ज़िन्दा होते तो उनकी चीख़ सुनकर सबके कलेजे फट जाते। ऐसी हौलनाक चीख़ मारेंगे।

﴿كل من عليها فان ويبقى وجه ربك ذوالجلال والاكرام.﴾

आज बादशाही देखो।

शरीक और मशारिक

फिर अल्लाह तआला सबको मौत देकर फ़रमाएगा ﴿من كان لى شريكا فليات.﴾ है कोई मेरा शरीक तो मेरे सामने आए। हमने तो अल्लाह को ऐसा कमज़ोर समझा है कि अल्लाह अब हमारे काम बराहेरास्त कर ही नहीं सकता। अब तो कोई और अल्लाह से हमारे काम करवाएगा।

अल्लाह ने जहान बनाने के बाद अपना कोई पार्टनर नहीं बनाया। अल्लाह का न कोई शरीक है न मशारिक।

शरीक का मतलब यह है कि पहले से कोई अल्लाह का शरीक चला आ रहा है। *"नक़ल कुफ़्र कुफ़्र न बाशद"* मसलन कहा जाए एक भाई और भी है। कोई और उसके साथ था उसने कहा मेरी भी शराकत है। मेरी भी शराकत है से पाक है! पाक है! पाक है।

﴿لا مشارك﴾ मशारिक का यह मतलब है कि मैं मिसाल दे रहा हूँ। कारोबार बढ़ जाए। दूसरे से कहेंगे आप मेरे साथ पार्टनरशिप

कर लें मेरा कारोबार ज़्यादा हो गया मुझ से संभाला नहीं जा रहा। हम दोनों मिलकर कर लेते हैं तो यह है "मशारिक" तो अल्लाह तआला फ़रमाता है मेरा न कोई शरीक है और न मेरा कोई मशारिक है। सब को मौत का प्याला पिलाकर कहा ﴿من كان لي شريكا فليات﴾ कोई मेरा शरीक है तो सामने आए। उस वक़्त कोई हो तो बोले। फिर अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाएंगेः

﴿ان الذى بدات بالدنيا ولم تكن شيئاً وانا الذى اعيدها.﴾

मैंन दुनिया बनाई मैंने ही मिटा दी और मैं ही दोबारा ज़िन्दा करूँगा। ﴿كما بدانا اول خلق نعيده﴾ पहले जैस बनाया और फिर मिटाया वैसे ही क़यामत के दिन खड़ा कर दूँगा क्या मुश्किल है।

आस बिन वाइल का सवाल और जवाब में आयत

आस बिन वाइल सहमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आया और आकर कहने लगा ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तेरा रब इस हड्डी को ज़िन्दा करेगा। हड्डी उसके हाथ में थी और हड्डी को आपके सामने रखा और फिर उसे हाथ में मसला। वह बिल्कुल नरम हो चुकी थी और वह रेज़ा रेज़ा हो गई फिर उसने फूँक मारी और वह सारी हवा में उड़ गई। फिर आपसे कहने लगा इसे तेरा रब ज़िन्दा करेगा?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ मेरा रब सिर्फ़ इसे ही नहीं बल्कि तुझे भी ज़िन्दा करेगा और तुझको जहन्नुम की आग का ज़ाएक़ा चखाएगा।

अभी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात पूरी भी नहीं

हुई थी कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम आ गए और क़ुरआन पाक की यह आयतें नाज़िल हुयीं:

اولم یر الانسان انا خلقنه من نطفة فاذا هو خصیم مبین. وضرب لنا مثلا ونسی خلقه قال من یحی العظام وهی رمیم. قل یحیها الذی انشاها اول مرة وهو بکل خلق علیم. الذی جعل لکم من الشجر الاخضر نارا فاذا انتم منه توقدون. اولیس الذی خلق السموٰت والارض بقدر علیٰ ان یخلق مثلهم بلیٰ وهو الخلّٰق العلیم. انما امره اذ اراد شیئا ان یقول له کن فیکون. فسبحن الذی بیده ملکوت کل شیء والیه ترجعون.

फ़रमाया ﴾اولم یر الانسان﴿ देखो! देखो इन्सान को! हमारी बिल्ली हमें मियाऊँ तो अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं देखो! देखो! इन्सान को जिसे मैंनें गंदे पानी से बनाया यह मुझे कहता है कि इस हड्डी को कौन ज़िन्दा करेगा। मुझसे दलीलें मांगता है कि इस हड्डी को कौन ज़िन्दा करेगा। इस बदबख़्त को बता कि जिस रब ने तुझे उस वक़्त पैदा किया जब तू कुछ न था और अदम में से चक्की चलाकर तुझे इन्सान बनाया वही तुझे दोबारा ज़िन्दा करके भी दिखा देगा।

काएनात की मौत के बाद अल्लाह के सवाल

तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा ﴾این الملوك﴿ बादशाह कहाँ हैं? ﴾این الجبارون﴿ ज़ालिम कहाँ हैं? ﴾این المتكبرون﴿ अकड़कर चलने वाले अपने हुस्न पर नाज़ करने वाले कहाँ हैं? ﴾لمن الملك اليوم﴿ आज किसकी बादशाही है?

फिर अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाएगा ﴾لله الواحد القهار﴿ आज

अकेले अल्लाह की बादशा है।

मौत की तैयारी करो

जिस जहाँ को छोड़कर जाना हो उससे जी लगाने वाले भी कैसे नादान हैं? कैसे नादान हैं?

भाईयो! मैं हर बयान में यह बात साफ़ कर रहा हूँ कि तबलीग़ी जमात कोई जमात नहीं है कि हमने औरतों को भी बुलाया कि हमें औरतों को भी तबलीग़ी जमात का मेम्बर बनाना है और इन सब मर्दों को भी मेम्बर बनाना है नहीं बल्कि तबलीग़ यह मेहनत है कि मौत आ रही है भाई उससे पहले तैयारी कर लो। उसकी तैयारी करो।

औरतें मर्दों से ज़्यादा हैं उन्हें मर्दों से ज़्यादा मेहनत की ज़रूरत है। मौत किसी को नहीं छोड़ती। सब उसकी तैयारी में लगें। कहीं कल को अगर अल्लाह की बारगाह में पकड़े गए तो क्या बाप छुड़वा लेगा? बीवी छुड़वा लेगी? ख़ाविन्द छुड़वा लेगा? माँ छुड़वा लेगी? बहन छुड़वा लेगी? भाई छुड़वा लेगा? फिर वह क्या दिन होगा जब अल्लाह तआला हम सबको इस तरह इकठ्ठा करेगा जैसे नारोवाल की ज़मीन बीज़ बाहर निकालती है और नारोवाल की ज़मीन जैसे चावल के बीज को बाहर निकालती है।

क़यामत के दिन उठना

मेरे भाईयो! एक दिन ऐसा भी आएगा जब नारोवाल की ज़मीन इन्सानों को बाहर निकाल रही होगी। मर्द निकल रहे होंगे,

औरतें निकल रही होंगी और मासूम बच्चे निकल रहे होंगे ऐसे जैसे दाना उगता है। ऐसे जैसे घास उगती है। ऐसे जैसे चावल उगता है। ऐसे जैसे पेड़ उगते हैं और ज़मीन अपना सीना चीर देगी और ﴿يوم يخرجون من الاجداث سراعا﴾ तेज़ी से लोग क़ब्रों से निकल रहे होंगे ﴿ما ينظرون الا صيحة واحدة﴾ एक आवाज़ ﴿ان كانت الا صيحة واحدة﴾ एक आवाज़ ﴿فانما هى زجرة واحدة﴾ एक आवाज़ ﴿فاذا هم بالساهرة﴾ वह आवाज़ हमें एक मैदान में खड़ा कर देगी।

क़यामत के दिन की शिद्दत

वह कैसा ख़ौफ़नाक दिन है ﴿يوم يجعل الولدان شيبا﴾ बच्चा बूढ़ा हो जाएगा ﴿يوم تشقق السمآء بالغما﴾ आसमान फटेगा ﴿ونزل الملئكة تنزيلا﴾ फ़रिश्ते उतरेंगे ﴿الملك يومئذن الحق للرحمن﴾ आज अपने रब की हुकूमत देख लोगे कैसी ताक़तवर है ﴿اذا دكت الارض دكا دكا﴾ ज़मीन तोड़ दी गई ﴿وجاء ربك الملك صفا صفا﴾ आज अल्लाह अपने फ़रिश्तों के साथ उतर रहा है ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمنية﴾ आज अल्लाह के अर्श को आठ फ़रिश्तों ने पकड़ा हुआ है ﴿يوم نسير الجبال﴾ जम्मू कश्मीर क्या हिमालय पहाड़ भी हट जाएगा ﴿وترى الارض بارزة﴾ ज़मीन नंगी हो जाएगी ﴿وحشرنهم﴾ हम उन्हें जमा कर देंगे। कैसे जमा करेंगे? ﴿كما خلقنكم اول مرة﴾ क्या मतलब? तन पर तार नहीं, नंगे बदन। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, "हाय हमारी बेपर्दगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿الامر اشد من ذلك﴾ ऐ आएशा! कोई किसी को नहीं देखेगा। ऐसा सख़्त हाल होगा कि करोड़ों नहीं बल्कि अरबों इन्सान मर्द व औरत चल रहे होंगे लेकिन अल्लाह की

क़सम कोई किसी को एक नज़र भी नहीं देख सकेगा। बस ऐसे नज़र की सीध में जा रहे होंगे। ﴿تشخص فيه الابصار﴾ आँखें फटी हुयीं, कलेजे उछलते हुए, दिल उड़े हुए, वजूद थरथराता हुआ, टांगे कांपती हुयीं, टांगे वजूद को उठाने से इन्कारी हो रही हैं लेकिन आज खड़ा होना है अल्लाह के सामने। आज अल्लाह खुद आने वाला है।

अभी अदालत लगने वाली है। अभी तराज़ू आने वाला है। अभी जन्नत व दोज़ख़ आने वाले हैं। अभी पुलसिरात आने वाली है। अभी अल्लाह अपने अर्श के साथ आने वाला है। अभी हिसाब किताब का निज़ाम चलने वाला है। अभी तो सब चौपट मैदान में खड़े हैं। एक ही दम धमाका होगा। ﴿وجاء ربك والملك صفا صفا﴾ अल्लाह पहुँच गए अपने अर्श के साथ। ﴿وازلفت الجنة للمتقين﴾ जन्नत आ जाएगी और खिंची चली आएगी अपनी सारी खुशबुओं के साथ ﴿وبرزت الجحيم للغوين﴾ दोज़ख़ आ जाएगी वह खिंची चली आई अपने धुंए और आग के अंगारों, पत्थरों और साँप बिच्छुओं के साथ।

जहन्नुम की शिद्दत

ऐ मेरे भाईयो और बहनो!

जहन्नुम कोई ऐसी हवालात नहीं कि अल्लाह दो चार दिन रख कर आगे भेज देगा। उसकी आग वह है जिसके खौलते पानी का एक लोटा समंदर में डाल दें तो सातों समंदर उबलने लग जाएं। इसमें इन्सान घूमेगा और मर्द औरत घूमेंगे जैसे चावल हाँडी में घूमते हैं। कभी कभी हांडी का ढक्कन उतारकर चावलों को उबलता हुआ

देखा करें। इस तरह मर्द औरत जहन्नुम में घूम रहे होंगे और यह पानी वह नहीं जो सौ के टैम्प्रेचर पर खौला है बल्कि यह पानी वह है कि अगर एक लोटा सात संमदर में डालें तो सातों समंदर उबल जाएंगे इसमें इन्सान कहाँ तक बर्दाश्त करेगा और क्या कुछ बर्दाश्त करेगा। ﴿يطوفون بينها وبين حميم ان﴾ खौलते पानी में घूम रहे हैं।

﴿يعرف المجرمون بسيمٰهم فيؤخذ بالنواصى والاقدام﴾

फ़रिश्तें माथे और पाँव से पकड़कर मिलाएंगे जैसे हम लकड़ी के दोनों सिरों से पकड़ कर उन्हें मिला देते हैं गर्दन और टांगों को आपस में मिलाकर बांध देंगे। अब कमर टूटेगी नहीं बल्कि कमान की तरह लचक जाएगी और फिर जहन्नुम के खौलते पानियों में डाल दिया जाएगा। अल्लाह ही निकाले तो निकाले उसके सिवा अब कोई नहीं निकाल सकता।

क़यामत के दिन की हैबत

वह एक ऐसा हैबतनाक दिन है कि बच्चे बूढ़े हो जाएं, माँए अपनी औलाद भूल जाएं, ख़ाविन्द अपनी बीवियाँ भूल जाएं, बीवियाँ अपने ख़ाविन्द भूल जाएं, बाप अपने बच्चे भूल जाएं, भाई अपने भाई को भूल जाएं। जहन्नुम की लपटें हैं। जन्नत की खुशबू है, पुलसिरात की आमद आमद है, तराजू हिल रहा है। अल्लाह आ चुके हैं, इन्सान खड़े हैं, फ़रिश्तों का पहरा है। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं, "ऐ मेरे बन्दों! मैं दुनिया में तुम्हें ख़ामोशी से देखता रहा, तुम्हारी सुनता रहा, तुमने क्या समझा तुम्हारा रब ग़ाफ़िल है, रब को पता नहीं, रब जानता ही नहीं, मैंने

देखा और सुना आज अपने हिसाब के लिए तैयार हो जाओ।"

आज औरतें भी आएंगी, आज मर्द भी आएंगे, आज बूढ़े भी आएंगे, आज राजा और रंक भी आएंगे, अमीर व ग़रीब भी आएंगे। एक एक मर्द और औरत को फ़रिश्ते पकड़ पकड़कर अल्लाह तआला के सामने खड़ा करेंगे और अल्लाह तआला बराहेरास्त पूछेगा, "बोल आज के दिन के लिए क्या लेकर आया है?" कुछ होगा तो चेहरा रोशन होगा और कुछ न हुआ तो हलाकतों के दरवाज़े खुल गए।

मेरे भाईयो और बहनो!

तबलीग़ इस बात की मेहनत है कि मरने से पहले इस जहन्नुम से बचने का सामान पैदा कर लो। कहीं ऐसा न हो कि ग़फ़लत में ही गला उठाकर लेकर जाए। अल्लाह तआला जब खुद हिसाब लेने आ रहा है और आगे कोई नारोवाल की जेल नहीं है, नारोवाल का बंगला नहीं, जन्नत का वह घर है जिसे अल्लाह तआला ने अपने हाथों से बनाया है और वह जेल है अल्लाह तआला की जहन्नुम जिसका एक अंगारा अगर पहाड़ों पर रख दिया जाए तो सारे पहाड़ पिघल कर काले पानी में बदल जाएं।

जहन्नुमियों का लिबास

कुछ लोग वे होंगे जिनकी नेकियों का पलड़ा हल्का हो जाएगा तो अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐलान होगा फ़लां फ़लां का बेटा उसकी नेकियाँ घट गयीं और यह नाकाम हो गया। अब यह कभी जन्नत नहीं देख सकता। इस ऐलान के होते ही उसे जहन्नुम के डाल दिया जाएगा। उनका लिबास सुनो ﴿سرابيلهم من قطران﴾

क़त्रा उनकी शलवार लाई जाए। किस चीज़ की? तारकोल की यानी लक की जो सड़कों पर डाली जाती है। उसकी शलवार और कुर्ता पहनाया जाए। किस चीज़ का? ﴿ثياب من نار﴾ आग का कुर्ता। इनके सिरों पर दुपट्टा लाया जाए, इनके सिरों पर पगड़ी बांधी जाए। किस चीज़ की? ﴿تغشى وجوههم النار﴾ उनके चेहरों पर आग चढ़ जाएगी। उनके सिरों पर भी आग चढ़ जाएगी। उनको ले जाया जाए, कहाँ? ﴿الى جهنم﴾ जहन्नुम की तरफ़ वहाँ घर कैसे हैं? ﴿نارا احاط بهم سرادقها﴾ आग की चादरें हैं जिनकी दीवारें बनाकर घर बनाया गया है।

इनकी चारपाइयाँ बिछाओ। वे किस चीज़ की हैं? ﴿لهم من جهنم مهاد﴾ अँगारे इकठ्ठे करके उनकी चारपाई बनाई गई। उस पर बिस्तर बिछाओ। वह क्या है? ﴿من فوقهم غواش﴾ आग की मोटी तह की चादरें बनाकर डाल दी जाएं ﴿لهم من فوقهم ظلل من النار﴾ ऊपर आग ﴿ومن تحتهم ظلل﴾ नीचे आग ﴿ذلك يخوف الله به عباده﴾ यह बात थी जिससे तुम्हें तुम्हारा अल्लाह डराता रहा और डरा रहा है अगर नारोवाल में कुछ कर लेते तो आज यह दिन न देखना पड़ता।

कामयाबी का ऐलान और इब्तिदाई ईनाम

एक वे जिनका पलड़ा भारी हो गया और नेकियाँ बढ़ गयीं तो ऐलान होगा फ़लाँ फ़लाँ की बेटी, फ़लाँ फ़लाँ का बेटा, आज उसकी नेकियाँ बढ़ गयीं कामयाब हो गया और अब वह नाकाम नहीं होगा।

इस ऐलान के होते ही मर्द या औरत उसका क़द एक सौ

पच्चीस ऊँचा हो जाएगा जो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का था एक सौ पच्चीस फ़ीट से कुछ ऊपर होगा। हदीस में साठ हाथ इर्शाद फ़रमाया है।

ज़राअ शरई पैमाना है जो पच्चीस इँच का होता है। पच्चीस इँच को ज़राअ कहते हैं तो साठ ज़राअ का होगा यानी एक सौ पच्चीस फ़ीट से कुछ ऊपर का क़द हो जाएगा और फिर अल्लाह तआला कहेगा जन्नत का लिबास पहनाओ। औरत है तो जन्नत के सौ जोड़े, मर्द है तो जन्नत के सौ जोड़े। फिर अल्लाह फ़रमाएगा ताज लाओ और उनके सिर पर ताज सजाएगा। मर्द या औरत उनके ताज का अदना मोती पूरब पश्चिम को रोशन कर देगा।

फिर मर्द है तो उनके बाल घुंघरियाले होते हुए कान की लौ से निकलते हुए गर्दन तक आ जाएंगे और अगर औरत हैं तो उनके बाल सिर की चोटी से लेकर पाँव की ऐढ़ी तक लम्बे होते जाएंगे और उनके बालों में ऐसा नूर होगा और ऐसी महक भरेगा कि चन्द बाल तोड़कर दुनिया में रख दिए जाएं तो सारे जहान में ख़ुशबू और रोशनी फैल जाए कुछ बालों और अल्लाह तआला अपने नूर से उनके चेहरों पर तजल्ली डाले तो उन मर्दों और औरतों के हुस्न का क्या कहना जिनके चेहरों पर अल्लाह का नूर पड़ गया।

यह गारे मिट्टी के ऊपर अल्लाह तआला ने जिल्द लगाई है तो ऐसे ख़ूबसूरत चेहरे बन गए। ऐसे हसीन चेहरे बन गए कि अपने आपको देखकर ख़ुद ही ख़ुश हो रहे हैं लेकिन यहाँ का हुस्न तो भाईयो हादसों की नज़र हो जाता है।

खोई जवानी की तलाश

मैं लाहौर से गुज़र रहा था। एक बड़ी अम्मा को देखा जो बिल्कुल कमान बन गई थी, कमर झुकी हुई। वह ऊपर कभी नहीं देख सकती थी बल्कि नीचे ही देखते चली जा रही थी तो ऐसी ही बेइरादे मेरे मुँह से निकला मालूम होता है अम्मा अपनी खोई हुई जवानी ज़मीन में तलाश करती फिर रही है। कभी हम भी जवान थे। फिर आदमी कहता है कभी हम भी ऐसे थे लेकिन यह बहार तो पतझड़ में बदल जाती है। यह हुस्न तो लूट लिया जाता है, बुढ़ापा लूट लेता है, झुर्रियां लूट लेती हैं। आज अल्लाह हुस्न दे रहा है। कहाँ से दे रहा है? अपने नूर में से नूर दे रहा है। सूरज का नूर अल्लाह का नूर नहीं बल्कि अल्लाह के अम्र से नूर है लेकिन जन्नती मर्द व औरत के चेहरे पर जो नूर आएगा अल्लाह अपने नूर में से नूर अता करेगा।

कामयाबी पर ख़ुशी का इज़्हार

जैसे ही यह तब्दीली आएगी अल्लाह कहेगा जा अपने पिछलों को जाकर बता। यह लौटेगा और एक नारा लगाएगा ﴿هاءم هاءم﴾ क़ुरआन भी इसको बोलता है ﴿هآءم اقرءوا كتابيه﴾ "ह-उ-म" का मतलब होता है आ जाओ, आ जाओ, आ जाओ ﴿هاءم هاءم﴾ ﴿هآءم اقرءوا كتابيه (سورة الحاقه)﴾ सारे लोग इस तरफ़ तवज्जेह करेंगे भाई क्या हुआ, क्या हुआ? ﴿اقرءوا كتابيه﴾ मेरा पेपर देखो, मेरा पर्चा देखो, मैं पास हो गई, मैं पास हो गया। तू कैसे पास हुई? तो वह कहेगी ﴿انى ظننت انى ملق حسابيه﴾ मुझे पता था मेरा हिसाब

होना है, मैं तैयारी करती रही, मैं तैयारी करती रही। मैंने वक़्त बर्बाद नहीं किया। पागल औरतों की तरह मैंने अपना वक़्त बर्बाद नहीं किया। पागल मर्दों की तरह मैं दुनिया के पीछे नहीं लगा रहा बल्कि आख़िरत की तैयारी में लगा रहा कि आज मैं पास हो गया।

जन्नत की नेमतें

ऊपर अल्लाह कहेगाः

فهو فى عيشة راضية. فى جنة عالية. قطوفها دانية.
كلوا واشربوا هنيئا بما اسلفتم فى الايام الخالية.

जा मेरी बन्दी! जा मेरे बन्दे! खा पी, मौज कर। जन्नत तेरी आलीशान है, तख़्त तेरे लिए बिछे हुए हैं, गुच्छे तेरे लिए झुके हुए हैं, फल तेरे लिए पके हुए हैं, साए तेरे लिए फैले हुए हैं, चश्में तेरे लिए बहाए हुए हैं, नौकर तेरे लिए कमर बाँधे हुए खड़े हुए हैं, घर तेरे लिए सजे हुए हैं, जन्नत तेरे लिए तैयार है, मुहब्बतें तेरे लिए हैं, मौत को मैंने तेरे लिए मार दिया है, बुढ़ापे को मैंने तुझ से दूर कर दिया है, बीमारी मैंने तेरी दूर कर दी, ग़म मैंने खींच लिए हैं और ज़वाल मैंने तुझ से दूर कर दिया, नफ़रतें मैंने तुझ से दूर कर दीं।

अब तेरी जवानी रोज़ाना बढ़ेगी घटेगी नहीं, तेरा हुस्न बढ़ेगा घटेगा नहीं, तेरी मुहब्बत बढ़ेगी घटेगी नहीं, तेरा मुल्क बढ़ेगा घटेगा नहीं, तेरी ताक़त बढ़ेगी घटेगी नहीं, तेरे जमाल में जलाल में, तेरे हुस्न और कमाल में अब कमाल ही कमाल है।

अब मैंने तेरी ज़िन्दगी का वह सूरज निकाला है जिसके नसीब में डूबना नहीं। तेरे हुस्न का वह चाँद चढ़ाया है जिसके नसीब में डूबना नहीं। तेरे सिर पर शान व शौकत का वह ताज रखा है जिसने अब कभी तेरे सिर से उतरना नहीं। तुझे वह ज़िन्दगी दी है जो कभी मौत का शिकार नहीं हो सकती।

सोने की ज़मीन है। सोने चाँदी के घर हैं। एक ईंट सोने की, एक चाँदी की, एक ज़मर्रुद की, एक याक़ूत की, एक मोती की। मुश्क के गारे हैं। ज़ाफ़रान की घास है। अल्लाह का अर्श उनकी छत है। दूध की नहरें, पानी की नहरें, शहद की नहरें, शराब की नहरें। चश्में बहते हुए ﴿عينان تجريان﴾ चश्मे उठते हुए ﴿عينان نضاختن﴾ कहीं हर फल का जोड़ा जोड़ा ﴿فيهما من كل فاكهة زوجن﴾ कहीं अंगूर कहीं अनार ﴿فيهما فاكهة ونخل ورمان﴾ कहीं खजूर हैं कहीं फल हैं। ﴿متكئين على فرش﴾ कहीं तख़्त पर बैठे हैं ﴿متكئين على رفرف﴾ कहीं क़ालीनों पर बैठे हैं ﴿جنا الجنتين دان﴾ कहीं फल उनके सिरों पर झुके हुए हैं ﴿يشربون من كاس كان مزاجها كافورا﴾ आज यह मजलिस है मर्दों और औरतों की, मियाँ बीवी की, औरतों की अलग, मर्दों की अलग, भाई बहनों की, बाप बेटों की, अम्मा बेटियों की, चाचा चाचियों की।

ख़ुद पी रहे हैं। आज एक महफ़िल है जिसमें जन्नतियों को अल्लाह तआला शराब दे रहे हैं। काफ़ूरी शराब जिसका एक बूँद पर लगाकर आसमान पर बैठकर नीचे कर दें तो पूरी दुनिया ख़ुशबूदार हो जाए लेकिन ख़ुद पी रहे हैं।

एक और मन्ज़र अल्लाह तआला ने हमें दिखाया कि जब नज़र ज़रा ऊपर की जन्नत पर पड़ी तो क्या देखा कि महफ़िल आबाद

है लेकिन साक़ी महफ़िल फ़रिश्ते हैं, गुलाम हैं, हूरें हैं, खुद्दाम हैं, गिलमान हैं। जन्नती और जन्नत वालियाँ तख़्तों पर विराजमान हैं। ये खुद नहीं पी रहे हैं बल्कि उन्हें पेश किया जा रहा है। उनको पिलाने वाले फ़रिश्ते हैं, गुलाम हैं, हूरें हैं, खुद्दाम हैं जो पिला रहे हैं और ये मज़े से बैठकर पी रहे हैं। यह कौन सी शराब है? यह ज़ंजबील की शराब है जो सलसबील के चश्मे से निकली है।

﴿يسقون فيها كاسا كان مزاجها زنجبيلا. عينا فيها تسمى سلسبيلا.﴾

एक नज़र और ऊपर गई तो मन्ज़र ही अजीब देखा कि वहाँ साक़ी खुद अल्लाह तआला है ﴿وسقهم ربهم شرابا طهورا﴾ अल्लाह खुद अपने बन्दों और बन्दियों को पिला रहा है

जन्नत की सबसे आला शराब

जन्नत की आला शराब रहीक़ है ﴿يسقون من رحيق مختوم ختمه مسك﴾ फिर इससे भी आला शराब ﴿مزاجه من تسنيم﴾ यह जन्नत की सबसे आला शराब है। यह अल्लाह खुद पिलाएगा। ले मेरी बन्दी, ले मेरे बन्दे। आज साक़ी अल्लाह तआला। ﴿مزاجه من تسنيم﴾ जो नीचे दर्जे के जन्नती होंगे उन्हें तसनीम की मिलावट करके दी जाएगी ख़ालिस नहीं दी जाएगी। थोड़े थोड़े अल्लाह ऐसे करके छींटे देगा लेकिन जो ऊपर की जन्नतुलफ़िरदौस के मर्द व औरत हैं उनको ख़ालिस देगा ﴿عينا يشرب بها المقربون﴾ जो अल्लाह के क़रीब मर्द व औरत हैं अल्लाह उनके लिए खुद साक़ी बनेगा, ले अब पी।

रिसालत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

मेरे भाईयो!

ये दो ठिकाने और ये दो अन्जाम हैं जिनसे हर मर्द व औरत का वास्ता पड़ने वाला है अगर हम रोज़ाना ये बाते सुनें और सुनाएं तो हमारी कैफ़ियत ग़फ़लत की न हो जो आज चल रही है। इन चीज़ों तक पहुँचने के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रास्ता लेकर आए हैं जिसका नाम इस्लाम है, जिसका नाम क़ुरआन है, जिसका नाम शरियत है जिसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लाए। जैसे आप अपनी नबुव्वत में कामिल ऐसे ही आपकी शरियत भी कामिल, जैसे आपकी रिसालत कामिल ऐसे आपकी शरियत भी कामिल। आप अल्लाह की बारगाह में हर चीज़ में कामिल तो आपका दीन भी कामिल है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अल्लाह ने नुबव्वत को ख़त्म किया, आपकी किताब पर किताबों को ख़त्म किया, आपके दीन पर सब दीनों को ख़त्म किया और सारे आलम के लिए आपको रहबर बनाया। कोई नबी आया क़ौम के लिए, कोई नबी आया अपने क़बीले के लिए, कोई नबी आया मुल्क के लिए लेकिन जब हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने भेजा तो फ़रमाया ﴿للعلمين نذيرا﴾ यह सारे आलमीन का नबी है। हमारे नबी को अल्लाह रहमत बनाया तो रहमतुलल्लि-आलमीन बनाया और हमारे नबी को अल्लाह ने नबुव्वत अता की तो ﴿كافة للناس بشيرا ونذيرا﴾ पूरी दुनिया के इन्सानों के लिए बशीर व नज़ीर बनाया।

सिर्फ़ इन्सानों के नबी नहीं जिन्नात के भी नबी हैं ﴿واذ صرفنا اليك﴾

﴿نفرا من الجن﴾ और सिर्फ़ जिन्नात के नहीं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबियों के भी नबी हैं ﴿انا نبی الانبیاء﴾ और सिर्फ़ नबियों के ही नबी नहीं बल्कि आप जमादात के भी नबी हैं, पत्थर बेजान है उसके पास आप गुज़रते तो पत्थर बोल उठता ﴿السلام عليك يا رسول الله﴾ बेजान पत्थर को पता चल जाता कि यह हैं अल्लाह के रसूल, पेड़ के पास से गुज़रते तो पेड़ कहता अस्सलाम अलैका या रसूलुल्लाह। पेड़ को पता चल जाता था कि यह अल्लाह का रसूल है।

पेड़ को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्यार

आप आराम फ़रमा रहे हैं और एक पेड़ तेज़ी से दौड़ा हुआ आया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम हैरान होकर देख रहे हैं कि यह पेड़ कैसे चल रहा है? वह तेज़ रफ़्तारी से ज़मीन का सीना चीरता हुआ और थोड़ी देर आपके ऊपर साया करके खड़ा हुआ और फिर भागता हुआ वापस जाकर अपनी जगह पर खड़ा हो गया। आपकी आँख खुली तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आज तो हमने एक अजीब क़िस्सा देखा। आपने फ़रमाया क्या देखा? अर्ज़ किया कि एक पेड़ दौड़ा भागा आया आप पर साया किया फिर वापस हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नज़र डालकर फ़रमाया यह पेड़ मुझ से दूर था, यह तड़पा उसने फ़रियाद की और अर्ज़ किया ऐ मेरे मौला! तेरा हबीब इतना क़रीब से गुज़र जाए और मैं उसका दीदार न कर सकूं। मुझे इजाज़त दे मैं उसका दीदार करना चाहता हूँ तो मेरे अल्लाह ने इजाज़त दी और वह

वहाँ से भागा हुआ आया और मेरे दीदार से अपनी आँखों को ठंडा किया और अपनी जगह पर वापस चला गया यह तो पेड़ों को भी पता है कि यह ऐसा शँहशाह-ए-रसूल है, ऐसा अज़ीम रसूल है, ऐसा बुलन्द रसूल है।

जानवरों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अदब

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जानवरों के भी नबी हैं। जानवर आ गए। एक बद्दू आया और कहने लगा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे ऊँट सरकश हो गए, मस्त हो गए और ऊँट जब मस्त हो जाए तो वह शेर से ज़्यादा ख़तरनाक हो जाता है। आपने फ़रमाया चलो और वह चल दिया। ऊँट बाग़ में बन्द थे। आपने फ़रमाया दरवाज़ा खोलो। उसने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊँट आपको नुक़सान पहुँचाएंगे। आपने फ़रमाया दरवाज़ा खोलो। उसने डरते डरते दरवाज़ा खोला तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्दर तशरीफ़ ले गए और देखा ऊँट के मुँह से झाग निकल रहा है। जैसे ही उसकी नज़र आप पर पड़ी तीर की तरह आया और आपके क़दमों में सिर रख दिया। आपने फ़रमाया रस्सी लाओ। रस्सी लाए, बांधा और फ़रमाया पकड़ो। उसने पकड़ ली तो आपने फ़रमाया अब मौत तक यह तेरी नाफ़रमानी नहीं करेगा

दूसरा ऊँट दूर खड़ा कूद रहा था जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसकी तरफ़ बढ़े और उस पर आपकी नज़र पड़ी तो वह भी तेज़ रफ़्तारी से भाग कर आया और आपके क़दमों में पड़

गया। आपने फ़रमाया रस्सी लाओ रस्सी लाई गयी आपने बांधा और फ़रमाया यह ले यह भी कभी भी तेरा नाफ़रमान नहीं होगा।

जानवर को भी पता था कि यह अल्लाह का रसूल है, अल्लाह का महबूब है, यह सारे आलम का रसूल है, सारे इन्सानों का रसूल है, सारे ज़मानों का रसूल है।

याफ़ूर गधे को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत

जब ख़ैबर फ़तेह हुआ और माले ग़नीमत आया तो उसमें एक गधा भी था वह आगे आकर ज़बाने हाल से अर्ज़ करने लगा या या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं नस्ली गधा हूँ। आपने फ़रमाया वह कैसे?

अर्ज़ करने लगा मेरे बाप दादों पर अंबिया अलैहिमुस्सलाम ने सवारी की है। मैं अपनी नस्ल का आख़िरी हूँ और आप नबुव्वत में आख़िरी हैं। आप मुझे अपने पास रख लें।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ठीक है और आपने उसे अपने हिस्से में ले लिया और आप उस पर सवारी फ़रमाते थे। कभी कोई साथी पास नहीं होता और किसी सहाबी को बुलाना मक़सूद होता तो आप फ़रमाते याफ़ूर! जाओ अबूबक्र को बुला लाओ तो वह भागा भागा जाता और जाकर दरवाज़े पर ज़ोर से टक्कर मारता। जब दरवाज़े पर ज़ोर से टक्कर लगती तो वे परेशान होते कि यह क्या हो गया? देखते कि यफ़ूर खड़ा हुआ है समझ जाते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बुलाया

है। जिस दिन आप का इन्तिक़ाल हुआ उस दिन याफ़ूर का रोना देखने वाला था। वह बेक़रार होकर कभी इधर भागता कभी उधर भागता हत्ता कि उसे चैन न आया एक कुएं में छलांग लगाकर जान दे दी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत का रास्ता बताने आए, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दोज़ख़ से बचाने आए। समंदर व ज़मीन का जिसकी नबुव्वत के सामने सिर झुक गया। ज़िस दिन आप पैदा हुए उस दिन एक समंदर की मच्छलियों ने दूसरे समंदर की मच्छलियों को जाकर मुबारकबाद दी कि काएनात का सरदार आ गया।

सारी दुनिया के बुत ज़मीन पर गिर गए। बादशाहों के तख़्त उलटे हो गए क्योंकि दो जहाँ का सरदार आ गया, काएनात का सरदार आ गया।

मुर्दा गोह की आप से बातचीत

एक बद्दू ने एक मुर्दा गोह आप के सामने फेंकी। एक जानवर है जो छिपकली से दस गुना बड़ी होती है। बिल्कुल शक्ल व सूरत यही होती है लेकिन उससे दस गुना बड़ी होती है और जिन ख़ाना बदोशों का अब भी कोई मज़हब नहीं होता वह अब भी उन्हें पकड़ पकड़ कर खाते हैं।

अरब गोह खाते थे और बद्दू शिकार करके लाया हुआ था और उसने इस मुर्दा गोह को हज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने फेंक दिया और कहने लगा कि अगर यह कहे कि आप नबी हैं तो मैं तुझे मान जाऊँगा और अकड़ कर खड़ा हो गया।

उसके गुमान में यह था कि एक जानवर नहीं बोलता और फिर मुर्दा कैसे बोलेगा और कहने लगा अब देखते हैं कि यह अपनी नबुव्वत और रिसालत को कैसे दिखाते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿يا ضب﴾ ऐ गोह! आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इतना कहना था कि गोह की आँखें खुल गयीं और उसने अपना सिर ऊपर उठाया और गो-गा नहीं बल्कि अरबी में जवाब दिया:

﴿لبيك وسعديك يا زين من اوفى يوم القيمة.﴾

लब्बैक! या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाइए। आप सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿من تعبد﴾ तू किसकी इबादत करती है? तेरा रब कौन है? उसने कहा ﴿من كان عرشه على السمآء﴾ जिसका अर्श आसमान पर है ﴿فى الارض سلطانه﴾ जिसकी सलतनत ज़मीन पर है ﴿فى البحر سبيله﴾ जिसके रास्ते समंदर में हैं ﴿فى الجنة رحمته﴾ जन्नत में उसकी रहमत है ﴿فى النار عقابه﴾ जहन्नुम में उसका अज़ाब है। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿من انا﴾ मैं कौन हूँ? तो उसने कहा ﴿انت رسول رب العالمين﴾ आप रब्बुल-आलमीन के रसूल हैं ﴿وخاتم النبين﴾ और आप आख़िरी रसूल हैं ﴿قد افلح من صدقك وقد خاب من كذبك﴾ जिसने आपकी बात मानी कामयाब और जिसने न मानी नाकाम व बर्बाद।

ऐसा रसूल जिस उम्मत को मिले फिर वह उसके तरीक़े को छोड़ कर औरों के तरीक़े अपनाए तो वह हलाक नहीं हों तो और क्या होंगे।

नारोवाल में कोई एक शादी ऐसी तो दिखाओ जो मेरे नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ होती हो, कोई घर तो दिखाओ। यह मेंहदियाँ रचाना, यह बेंड बाजे बजाना, यह शमें जलाना, फुलझड़ियाँ छोड़ना। क्या यही नबी की ग़ुलामी के दावे की तकमील है? बेटा बाप को गालियाँ भी दे और कहे कि मैं तेरा फ़रमाबरदार हूँ। अल्लाह के नबी से बग़ावत भी हो और कहें हम ग़ुलामे रसूल हैं, हम ग़ुलामे नबी हैं, हम आशिक़ाने रसूल हैं। क्या इसी को इश्क़ कहते हैं?

ख़ातून-ए-जन्नत की अज़्मत

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी कैसे हुई दुनिया की अफ़ज़ल बच्ची, सबसे अफ़ज़ल बच्ची, सबसे आला औरत, अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महबूब, जिगर का टुकड़ा, दिल का टुकड़ा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह मेरे दिल का टुकड़ा है जिसने उसको दुःखाया उसने मुझे दुःखाया ऐसी मुहब्बत कि जब जिहाद के लिए तशरीफ़ ले जाते तो बीवियों को मिलते हुए आख़िर में फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को मिलते सबसे आख़िर में मिलते।

और जब वापस तशरीफ़ लाते तो सबसे पहले फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को मिलते और बाद में बीवियों से मिलते कि फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की जुदाई कम से कम हो। ऐसी मुहब्बत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से। जिनके दो बेटे हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा जन्नती नौजवानों के सरदार हैं। ज़रा उनकी बारात तो देखो।

दुनिया में कोई ऐसा जोड़ा नबियों के बाद नहीं आया। कैसा ख़ाविन्द और कैसी बीवी। ज़रा इनकी शादी तो देखो, कोई मेंहदी हुई हो तो बताओ, कोई ढोल बजे हों तो बताओ।

नाक काट दो

अरे मेरी बहनो और भाईयो!

क्या ज़ुल्म है कि कहते हैं नाक नहीं रहती लोग क्या कहेंगे कि जनाज़ा है या शादी है?

इस नाक को काट दो जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त को ख़ाक में मिलाए। गर्दन ऊँची रखने के लिए नहीं बल्कि यह गर्दन नीचे रखने के लिए है जो अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त को ख़ाक में मिला दे। कहते हैं नाक नहीं रहेगी, लोग क्या कहेंगे। लोगों ने तो अल्लाह तआला को नहीं छोड़ा उसका बेटा बना दिया तो हमें कब छोड़ेंगे। एक सादा सी तक़रीब मस्जिद में निकाह हो रहा है और ऐसे हाल में निकाह हो रहा है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास घर भी ज़ाती नहीं है।

ज़िन्दगी अख़्लाक़ से गुज़रती है

हम तो पूछते हैं कि लड़का क्या करता है? यह नहीं देखते कि लड़का कैसा है? उसके अख़्लाक़, उसका किरदार, उसकी सीरत, उसकी ज़िन्दगी को नहीं देखते बल्कि यह पूछते हैं कि क्या करता है? कहा जाए कि इतने पैसे कमाता है तो कहते हैं बस ठीक है

माशाल्लाह कर दो।

अरे यह तो देखो इन्सान भी है या नहीं। पैसे तो बच्चियाँ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारतीं बच्चियों की ज़िन्दगी तो अख़्लाक़ से गुज़रती है।

करोड़ों के बंगलों में आहो और सिसकियों को जाकर सुनो तो मालूम होगा कि दर व दीवार रो रहे हैं क्योंकि जिन्दगी नहीं सीखी हुई है। रिश्ते पैसे की ज़्यादती पर हुआ आज ठंडी आग है जिसने घरों को जला कर रख दिया है। सुलगती हुई आग है जिसने घरों को जलाकर रख दिया है। ज़िन्दगी अख़्लाक़ से गुज़रती है सोने चाँदी के साथ तोलने से नहीं गुज़रती।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुख़्सती

मस्जिद में निकाह हुआ और दो महीने बाद रुख़्सती। वह इस तरह हुई कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रुख़्सती हो जाए। आप कोई वक़्त बता दें मैं आकर ले जाऊँगा। यह था मतलब कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कोई वक़्त इर्शाद फ़रमा दें कि मैं उसके मुताबिक़ आकर ले जाऊँ।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अच्छा, कर देंगे। यह ज़ोहर या अस्र के वक़्त की बात थी। जिस दिन यह बात हुई उसी दिन मग़रिब की नमाज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अदा की और घर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया जाओ उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा को बुलाकर लाओ और आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की आदतें मुबारका थीं कि घर में आकर नाफ़्ल पढ़ते थे।

उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा को आदमी बुलाने चला गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने मामूलात में लग गए। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं घर का काम कर रही थी जिस तरह बेटियाँ बच्चियां करती हैं। मेरे ख़्वाब व ख़्याल में भी नहीं कि अभी क्या होने वाला है। इतने में देखा कि उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा आ गयीं। उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा आपकी वालिदा माजिदा आमना की बांदी थीं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे जिसने जन्नती औरत से शादी करनी हो उम्मे ऐमन से शादी कर ले।

जन्नती को देखना हो तो उम्मे ऐमन को देख लो और हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह हदीस सुनकर उम्मे ऐमन से निकाह कर लिया था जिनसे हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु पैदा हुए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु से ऐसी मुहब्बत थी। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी ने ख़बर दी कि उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु कहीं बाहर गए हुए थे वहाँ से वापस आए हैं तो जिस मुहब्बत से लपक कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर निकले मैंने कभी किसी के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को को ऐसा निकलते नहीं देखा।

उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा आ गयीं तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं मैं अचानक हैरान हो गई कि मेरे

कान में यह आवाज़ पड़ी कि ऐ उम्मे एमन फ़ातिमा को अली के घर छोड़ आओ।

देखो मेरी बहनो!

यह दो जहाँ के सरदार की सरदार बेटी रुख़्सत हो रही है। बारात जा रही है, न बाजा गाजा, न मेला न ठेला, न भांडा न मीरासी, न नाचने वालियाँ न नाचने वाले। कुछ भी नहीं न कोई डोली, चलो डोली ही आ जाती, गाड़ियाँ तो थी नहीं चलो डोली ही आ जाती, न डोली, न बारात, न कोई आगे न कोई पीछे। दो जहान के सरदार की बेटी शहज़ादी कपड़े भी नहीं बदले और अपने पाँव पर चलकर रुख़्सत हो कर चली जा रही है।

आज तो लोग लाख लाख रुपए का जोड़ा बेटियों की शादी के लिए सिलवाते हैं। एक आदमी मुझे कह रहा था पचास हज़ार रुपए का सूट सिलवाया फिर भी लोग कह रहे थे सस्ता सिलवाया है, सस्ता सिलवाया है। मैंने कहा ओ ज़ालिम! अल्लाह को क्या जवाब देगा। इस पचास हज़ार में पाँच ग़रीब बेटियों की शादी हो सकती थी। मालदारों ने ग़रीबों की बेटियों को वीरान करके रख दिया।

कपड़े ही नहीं बदले। जिन कपड़ों में काम कर रही थीं उन्हीं में रुख़्सत हो गई और अपने पाँव पर चलकर जा रही हैं और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी नहीं कहा बेटी को रुख़्सत कर रहा हूँ मैं भी साथ चला जाऊँ। यह किस लिए? क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साथ नहीं जा सकते थे। बनू हाशिम को नहीं बुला सकते थे, चलो बनू हाशिम को

छोड़ो सारे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को जमा कर लेते। आ जाओ आले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी आ जाएं। बनी हाशिम भी आ जाएं। सारे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम भी आ जाएं मेरी बेटी रुख़सत होने वाल है। क्या यह नहीं हो सकता था? आप ने यह क्यों नहीं किया? इसलिए ताकि मेरी उम्मत की ग़रीब बच्चियाँ आसानी से बियाही जा सकें। कोई यह न कहे कि नाक नहीं रहती। इस नाक को काट दो जो अल्लाह के नबी के तरीक़ों का ख़ाक में मिला दे। और फ़रमाया अली से कहना मैं इशा की नमाज़ के बाद आऊँगा।

उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा ने दरवाज़े पर जाकर दस्तक दी और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने दरवाज़ा खोला तो परेशान हो गए यह क्या?

उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा अपनी अमानत ले लो, निकाह हो चुका है, अपनी अमानत ले लो और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे भेजा है और इर्शाद फ़रमाया मैं इशा पढ़कर आऊँगा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इशा की नमाज़ पढ़ाई। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तश्रीफ़ लाए और एक पियाले में पानी मंगावाया उस पर दम किया दोनों को सामने खड़ा किया और अपने हाथ से दोनों के सीने पर छिड़का फिर दोनों की पुश्त पर अपने हाथ मुबारक से पानी छिड़का और फ़रमाया जाओ अल्लाह बरकत दे। आहा! जब पानी अल्लाह के नबी लगाए तो फिर जन्नत के सरदार ही पैदा होंगे। पानी जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लगाया।

रस्म व रिवाज

तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो तरीक़ा ज़िन्दगी लेकर आएं हैं तबलीग़ उस तरीक़े को सीखने की मेहनत है कि मामलात, अख़्लाक़ और पूरी ज़िन्दगी नबुव्वत वाले हो। मैंने वह बात आपके सामने पेश की है कि पाँच वक़्त के नमाज़ी और तहज्जुद गुज़ार मर्दों और औरतों के घरों में भी शादी के मौक़े पर नबी के तरीक़े ज़िब्ह होकर रह जाते हैं।

हम किस मुँह से हिन्दुओं से जिहाद करेंगे जब हर घर में मेंहदी रचाई जा रही हों यह कोई किसी मुसलमान की ईजाद की हुई है, नहीं नहीं बल्कि यह बनिए हिन्दुओं की रस्म है। रस्में काफ़िरों की अपनाएं तो फिर उनके ख़िलाफ़ हम जिहाद कैसे करेंगे। हम किस बात पर तलवार उठाएं तरीक़े उनके चलें, गाने उनके बाज़ारों में चले, रहन सहन उनकी बाज़ारों में चले।

जन्नत का रास्ता

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मुबारक तरीक़ा लाएं हैं। मुबारक तरीक़ा जो सिर्फ़ नमाज़ व रोज़े का नाम नहीं है। इसमें नमाज़ सबसे अज़ीमतर व ज़रूरी है कि वह मुसलमान ही क्या जिसका सर अल्लाह के सामने न झुके।

वह मुसलमान औरत क्या मुसलमान औरत है जिसका माथा ज़मीन पर न टिकता हो। वह मर्द क्या मुसलमान मर्द है जिसकी पेशानी रब की बारगाह में सज्दे में न जाती हो। वह तो दावा ही दावा है ख़ाली बग़ैर दलील के। हम चाहते हैं कि हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाला तरीक़ा हमारी ज़िन्दगियों में आ जाए। जब हो तो सारे बाज़ार बन्द हो जाएं, सब भाग रहे हों मस्जिदों की तरफ़, औरतों की हाँडियाँ चूल्हे से उतर जाएं कच्ची हों या पक्की, हाथ रुक जाएं बर्तन धोने और कपड़ा सीने से चाहे काम पूरा हो या अधूरा लेकिन वह कहें लब्बैक या अल्लाह! हम हाज़िर हैं, मेरे मौला हम हाज़िर हैं और दीवानों की तरह मर्द दौड़ें मस्जिदों की तरफ़ और औरतें दौड़ें मुसल्ले की तरफ़ और बच्चे दौड़ें मस्जिदों की तरफ़ और बच्चियाँ दौड़ें मुसल्ले की तरफ़ और सारे नारोवाल में सन्नाटा छा जाए और पता चले कि अल्लाह के दरबार में हाज़िर हुए खड़े हैं।

राबिया बसरिया रह० का ज़ोहद व तक़्वा

यह जन्नत का रास्ता है, यह जन्नत का रास्ता है। कितनी बड़ी बदक़िस्मती है कि सैकड़ों बल्कि हज़ारों घर ऐसे हैं जिनमें किसी एक को भी सज्दे की तौफ़ीक़ नहीं होती।

राबिया बसरिया रह० रात को ग़ुस्ल करके कपड़े बदलकर ख़ुशबू लगाकर ख़ाविन्द से पूछतीं आपको मेरी ज़रूरत है? अगर वह कहते कोई नहीं तो कहती मुझे इजाज़त है? वह कहते इजाज़त है तो फ़रमातीं अच्छा और मुसल्ले पर जाकर नमाज़ शुरू कर देतीं। अल्लाहु-अकबर! और फ़ज्र की अज़ान राबिया को मुसल्ले पर होती थी। फिर राबिया होतीं और मुसल्ला होता। जवानी में ही ख़ाविन्द गुज़र गए थे और निकाह का पैग़ाम हसन बसरी रह० जैसे वक़्त के इमाम लाए जिनसे तसव्वुफ़ के सारे

सिलसिले जाकर मिलते हैं चिश्तिया, क़ादिरिया, सहरवरदिया, नक़्शबन्दिया हसन बसरी रह० से मिलते हैं और उनके ज़रिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलते हैं। वक़्त का इतना बड़ा इमाम निकाह का पैग़ाम ख़ुद लेकर और औरतों में ख़ूबसूरती देखी जाती है तो वह हब्शी थीं, औरतों में ख़ानदान देखा जाता है तो वह नीचे ख़ानदान की थीं। न हुस्न है न ख़ानदान है और पैसा देखा जाता है तो वह ग़ुलाम थीं। ग़ुलाम अरब नहीं थीं बल्कि काली ग़ुलाम थीं और रंग काला हो लेकिन नैन नक़्शा अच्छे हों तो उनकी शक्ल व सूरत भी अच्छी न थी लेकिन दिल ऐसा सोना और ख़ूबसूरत था कि राबिया क़यामत तक के लिए अपने आपको ज़िन्दा कर गयीं। नारोवाल जैसे छोटे से शहर में राबिया नाम चल रहा है।

हज़रत हसन बसरी रह० से राबिया रह० के चार सवाल

तारीख़ ने उनके लिए अपने पन्नों में जगह बनाई है हालाँकि तारीख़ ने बड़े बड़े बादशाहों के लिए जगह नहीं बनाई। दो चार लाइनें लिखकर आगे चल पड़ते हैं राबिया को तारीख़ ने बहुत जगह दी है।

न वह शहज़ादी है न वह बादशाह ज़ादी है लेकिन अल्लाह की बारगाह में कामयाब औरत हैं। हज़रत हसन बसरी रह० जैसे निकाह का पैग़ाम लाए तो फ़रमाने लगीं चार बातों का जवाब दे दो तो शादी कर लूँगी। यह बात पर्दे में हो रही है। हसन बसरी

रह० ने कहा बताइए। राबिया कहने लगीं यह बताओ मेरे लिए जन्नत है या जहन्नुम है?

वह ख़ामोश हो गए कि इसका क्या जवाब दूँ।

कहने लगीं जब आमाल नामे उड़ाए जाएंगे। किसी के सीधे हाथ में और किसी के उल्टे हाथ में दिए जाएंगे यह बताओ कि मेरा आमाल नामा मेरे कौन से हाथ में आएगा?

वह ख़ामोश हो गए कि मैं इसका क्या जवाब दूँ कोई पता नहीं।

कहने लगीं यह बताओ जब तराज़ू तुलेगा तो किसी की नेकी बढ़ेगी और किसी की बदी बढ़ेगी। मेरी क्या बढ़ेगी नेकी या बदी?

वह फिर ख़ामोश हो गए कि इसका क्या जवाब दूँ?

कहने लगीं अच्छा यह बताओ जब पुलसिरात से दुनिया गुज़रेगी कुछ पार हो जाएंगे कुछ अन्दर गिर जाएंगे। मुझे बताओ मैं पार निकल जाऊँगी या अन्दर गिर जाऊँगी?

कहने लगे मैं क्या बता सकता हूँ?

तो राबिया रह० कहने लगीं तो फिर तुम जाओ मुझे तैयारी करने दो। मैं फ़ारिग़ नहीं हूँ शादी के लिए।

जो अल्लाह का हो जाता है अल्लाह उसका हो जाता है

﴿من كان لله كان الله له﴾ जो अल्लाह का हो जाता है अल्लाह उसका हो जाता है और अल्लाह ने उनकी ज़रूरतों का ऐसा इन्तिज़ाम बनाया कि इब्ने अबिद-दुनिया रह० जैसे मुहद्दिस ने

उनका वाक़िया नक़ल किया है कि खाना पकाने के लिए उठीं तो देखा प्याज़ नहीं है। अब बैठीं हैं कि प्याज़ कहाँ से लाऊँ न कोई नौकर न कोई ख़ादिम न कोई ख़ादिमा। अभी ख़्याल आया ही था कि ऊपर एक चील उड़ती हुई जा रही थी जिसके पंजों में प्याज़ था। उसके पंजे ढीले हुए और प्याज़ सीधा उनकी झोली में आ गिरा। फ़रमाया राबिया! तू मेरी बन गई मैं चीलों को तेरी ख़िदमत के लिए लगा दूंगा।

ज़िन्दगी को जिन्दा करने की मेहनत

तो अल्लाह और जन्नत तक पहुँचने का रास्ता हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी है। तबलीग़ इस ज़िन्दगी को ज़िन्दा करने की मेहनत है कि हर मर्द व औरत में इबादतें ज़िन्दा हों। नमाज़ ऐसी ज़िन्दा हो कि नारोवाल में कोई औरत बेनमाज़ी न हो, कोई मर्द बेनमाज़ी न हो, अख़्लाक़ ऐसे ज़िन्दा हों कि नारोवाल में कोई लड़ाई झगड़ा न रहे मुहब्बतें और प्यार ज़िन्दा हो जाए, माफ़ करना ज़िन्दा हो जाए, अख़्लाक़ सीखे जाएं, अख़्लाक़ सिखाए जाएं।

दिल को क्यों न सजाया

मेरे भाईयो!

यह वह चैपटर है जो आज न माँ सिखाती है, न अब्बा सिखाता है बल्कि ख़ाली हाथ बच्चियों को रवाना कर देते हैं। माँ कहती है मैंने अपनी बेटी को सब कुछ दे दिया, सारा कुछ दे

दिया, जाएदाद में से भी हिस्सा दे दिया, कपड़ा भी दे दिया, ज़ेवर भी दे दिया, सन्दूक़ भी दे दिया है, यह भी दे दिया, वह भी दे दिया। जब भी औरतों में बयान होता है तो मैं यह सवाल किया करता हूँ कि अपनी बेटी को अल्लाह का ताल्लुक़ भी दिया या नहीं दिया। अपनी बेटी को तूने सजा दिया चूड़ियों से, कानों को तूने सजा दिया कांटों से, माथे को तूने सजा दिया टिके से, गर्दन को तूने सजा दिया हार से, पाँव को तूने सजा दिया पाज़ेब से, तन को तूने सजा दिया रेशमी कपड़ों से, दिल को क्यों न सजाया अल्लाह की मुहब्बत से।

ख़ाली भांडा

उसे जो ख़ाली भांडा बनाकर भेज दिया कल यह कैसे पहाड़ जैसी ज़िन्दगी गुज़ारेगी जब तक अल्लाह का ताल्लुक़ नहीं होगा तो इसको ज़िन्दगी का सकून कैसे नसीब होगा। यह तो पराए घर में जा रही है। बहू बनकर जा रही है, बेटी बनकर नहीं जा रही है तो जब इस पर कोई दुःख आएगा तो तुम्हारे सिर खाएगी या अल्लाह को याद करेगी।

इन्सान बनाओ

अब्बा कहता है कि मैंने अपने बेटे को कारोबारी बना दिया है, एम०ए० की डिग्री भी करवा दी है, नौकरी भी लग गई है या ताजिर कहता है कि मेरा बच्चा सारा कारोबार संभाल लेता है। बस अब हमने बेटे की शादी कर देनी है। उसका घर आबाद हो जाएगा। अरे उसको कारोबार तो सिखाया लेकिन उसे अल्लाह का

ताल्लुक़ भी सिखाया या नहीं सिखाया। कल को एक नई ज़िन्दगी उसके साथ चलने वाली है कहीं अपनी हिकमत में उसकी ज़िन्दगी को तबाह व बर्बाद न कर बैठे। तूने चाय में मीठा क्यों नहीं डाला इसी पर लड़ाई हो गई, तूने मेरे बटन क्यों नहीं लगाया इसी बात पर उसकी बेइज़्ज़ती करके रख दी। कमाने वाला तो बनाया मगर इन्सान नहीं बनाया बल्कि दरिन्दा बना दिया।

अरे मेरे भाईयो!

अपने बच्चों को पहले इन्सान बनाओ फिर उनकी शादियाँ करो, अपनी बेटियों को पहले अल्लाह का ताल्लुक़ सिखाओ फिर उनकी शादियाँ करो। ज़ेवर दे दिया, कपड़े दे दिए, कहते हैं सब कुछ दे दिया। नहीं नहीं अल्लाह की क़सम अगर अल्लाह का ताल्लुक़ नहीं दिया तो कुछ भी नहीं दिया।

असली ज़ेवर

बीस बरस एक बच्ची माँ बाप के घर में गुज़ार कर जाए और माँ बाप उसको अल्लाह के सामने रोना न सिखाएं, अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ताल्लुक़ न सिखाएं तो उन्होंने बच्ची को नंगे सर भेज दिया है, नंगे पाँव भेज दिया है, ख़ाली हाथ भेज दिया अगर किसी की बेटी ख़ाली हाथ जा रही है, ख़ाली कान जा रही हो, माथा भी ख़ाली हो।

गला भी ख़ाली हो तो सारा मुहल्ला उसको ताने सुनाता है कि अरी बदतमीज़ तूने बेटी को ख़ाली कांटे ही पहना दिए होते लेकिन मुझे मेरे रब की क़सम अगर बच्ची ज़ेवर से लदी जा रही

है और दिल उसका अल्लाह की मुहब्बत के ज़ेवर से ख़ली है ता अपनी बेटी को ख़ाली दिल रुख़्सत कर दिया। उसे अल्लाह ही न दिया।

मेरा ताल्लुक़ ही न दिया, कल को दुःख आएंगे तो तुम्हारा सिर खाएगी अपने रब को याद नहीं करेगी।

शादी ख़ाना आबादी या बर्बादी

कहते हैं बेटे को हम ने बैंक बैलेन्स दे दिया, कारोबारी भी बना दिया। अख़्लाक़ भी सिखाए हैं या नहीं। कल को उसे घर को लेकर चलना है फिर आप देखते नहीं कि लोग शादी ख़ाना आबादी के कार्ड छापते हैं और एक महीने के बाद ही लड़ाईयाँ शुरू हो जाती हैं। ये लड़ाई क्यों पड़ गयीं। इसलिए कि बच्चे को पता नहीं कि मेरी हदें क्या हैं? बेटी को पता नहीं कि मेरी हदें क्या हैं? सास को पता नहीं कि मेरी हदें क्या हैं? बहू को पता नहीं कि मेरी हदें क्या हैं? ससुर को पता नहीं मेरी हदें क्या हैं?

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा नहीं सिखाया, आप वाले अख़्लाक़ न सीखे तो आपस में टकराव हो गया।

दीनदार ख़ानदान ज़िन्दगी आसान

छोटे ख़ानदान से ज़िन्दगी आसान नहीं होती बल्कि दीनदार ख़ानदान से ज़िन्दगी आसान होती है। दस बेटे, दस बेटियाँ हों सारे फ़रमाबरदार हों तो माँ बाप की आँखों की ठंडक है और

अगर एक बेटा और एक बेटी हों लेकिन नाफ़रमान हों तो ज़िन्दगी दोज़ख़ बन जाती है।

मेरा अपना एक चचा है। उनका सिर्फ़ एक बेटा और एक बेटी है। कोई ख़ानदानी मंसूबा वन्दी नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से क़ुदरती तौर पर दो ही बच्चे हैं। पन्द्रह साल बाद बेटा और अठ्ठारह साल बाद बेटी पैदा हुई।

और वह माँ जो पन्द्रह बरस रोई कि या अल्लाह बच्चा दे दे, बच्चा दे दे। आज वह माँ बच्चे की नाफ़रमानियों पर रोती रोती अंधी हो चुकी है। डाक्टर उसे कहते हैं कि माई रोया न कर। वह कहती है मैं आँसू क्यों रोकूं, मेरे आँसू क्यों रुकें, जिस पर मैंने सब कुछ क़ुर्बान कर दिया वह मुझे रोटी को नहीं पूछता हालाँकि यह तो हमारे ख़ानदान में सबसे ख़ुशहाल ख़ानदान होना चाहिए था। पैसे की कोई कमी नहीं। जाएदाद की कोई कमी नहीं। कमी है तो नबुव्वत वाले अख़्लाक़ की कमी है।

"छोटा ख़ानदान ज़िन्दगी आसान"

जब ऐसे हुकुमत करने वाले बनें जो ऐसा प्रचार करें तो उस मुल्क को ऐटमी ताक़त कैसे इज़्ज़त दे सकेगी या अल्लाह के अज़ाब से कैसे बचा सकती है। छोटे खानदान से ज़िन्दगी आसान नहीं बल्कि

"दीनदार ख़ानदान ज़िन्दगी आसान"

"दीनदार ख़ानदान ज़िन्दगी आसान"

जहाँ यह पता हो कि माँ का क्या दर्जा है? बाप का क्या दर्जा है? भाई और बहन का क्या दर्जा है? वह घर ख़ुशहाल है। पैसे से अगर लोग ख़ुशियाँ ख़रीद सकते तो आज किसी संगमरमर के

मकान में रोना चिल्लाना न होता। किसी मालदार का चेहरा वीरान न होता। ग़मियाँ सिर्फ़ ग़रीबों के घरों में होतीं और शादियाने सिर्फ़ मालदारों के घरों में होते लेकिन आप जाकर देखो तो सही। ग़रीब और अमीर दोनों के घरों में हाय हाय है।

माफ़ करना सीखो और सिखाओ

हम कोई जमात नहीं कि तबलीग़ी जमात में शामिल करने आए हैं। तबलीग़ का काम जन्नत तक पहुँचाने वाले रास्ते को ज़िन्दा करने की मेहनत है कि हर मुसलमान हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तर्तीबे ज़िन्दगी पर आए, नमाज़ों पर आए, इबादतों पर आए, अख़्लाक़ पर आए, किरदार पर आए, दरगुज़र और माफ़ करने पर आए, माफ़ करना सीखें माफ़ करना। जो तुझे एक सुनाए उसे खरी खरी सुनानी है अब यह माँ बेटी को कह रही है कि खरी खरी सुनानी है। अरे अम्मा! बेटी से कहो माफ़ कर देना क्योंकि माफ़ करने में बड़ी इ़ज़्ज़त है। अपनी बच्चियों को माफ़ करना सिखाओ, अपने बेटों को माफ़ करना सिखाओ, आप खुद सीखो माफ़ करना।

जन्नत की ज़मानत

अल्लाह का नबी कहता है मेरी ज़मानत ले ले कि तुम माफ़ करोगे तो अल्लाह तुम्हें इ़ज़्ज़त देगा। जहाँ ज़िम्मेदार अल्लाह का नबी हो उससे बढ़कर ज़मानत कहाँ से लाकर दूँ? दो जहाँ के सरदार की ज़मानत। कहा मैं ज़ामिन हूँ तुम माफ़ करो अल्लाह तुम्हें इ़ज़्ज़त देगा। कहा मैं ज़ामिन हूँ तुम अख़्लाक़ अच्छे कर लो

जन्नतुलफ़िरदौस में तुम्हें घर लेकर दूंगा तो इसलिए ज़िम्मेदारी समझो।

ज़िम्मेदारी समझो

मेरे भाईयो और बहनो!

दीन तर्बियत से आता है। आज माँ बाप को नहीं पता कि औलाद को कैसे चलाना है, अपने आपको कैसे चलाना है? इसीलिए हम मर्दों को भी कहते हैं निकलो और औरतों को भी कहते हैं निकलो यानी जमातें बन बनकर जाओ और सीखो। सीखने की चन्द बुनियादें हैं जो क़ुरआन ने माँ बाप को सबक़ दिया है कि इन बुनियादों पर औलाद को खड़ा करो अगर इन बुनियदों पर औलाद को खड़ा न किया तो न पैसे सुखी कर सकेगा और न कोई हुकूमत सुख दे सकेगी।

सूरहः लुक़मान हर माँ को पढ़ना चाहिए, हर बाप को पढ़ना चाहिए और स्कूल के हर टीचर और कालेज के प्रोफ़ेसर को सूरहः लुक़मान का एक रुकू ज़रूर पढ़ना चाहिए अल्लाह तआला बता रहा है कि अगली नस्ल की तर्बियत के ख़तूत क्या हैं? अगली नस्ल की तर्बियत की बुनियादें क्या हैं? उन्हीं को हम तबलीग़ में सीख रहे हैं।

पहला सबक़

﴿واذ قال لقمٰن لابنه وهو يعظه يٰبنى لا تشرك بالله﴾

यह पहला सबक़ है जो हर माँ को अपने बच्चे को सिखाना

चाहिए। हदीस में आता है कि जब तुम्हारा बच्चा पैदा हो तो उसके सामने अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह! इतना कहो कि जब वह पहला लफ़्ज़ बोले तो अल्लाह! बोले।

अब्बा न बोले, अम्मा न बोले। जब वह अम्मा बोलता है तो अम्मा खुश होती है कि आज उसने मुझे अम्मा कहा, आज उसने मुझे अब्बा कहा, आज उसने मुझे अम्मी कहा। यहाँ से अपने बच्चे की ज़बान मत खुलवाएं।

﴿يبنى لا تشرك بالله ان الشرك لظلم عظيم.﴾

बच्चे के सामने "अल्लाह, अल्लाह", *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"*, *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* कहते जाएं कहते जाएं और इतना कहें कि जब वह ज़बान खोले तो "अल्लाह, अल्लाह", *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* कहे।

हज़रत बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अलैहि का गोद में पन्द्रह पारे हिफ़्ज़ करना

हज़रत बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अलैहि को माँ सबक़ पढ़ाने के लिए मदरसे में ले गई और जब उस्ताद ने पढ़ाया अलिफ़-ब-त-स तो उन्होंने ﴿الٓمٓ. ذلك الكتب لا ريب فيه﴾ से पढ़ना शुरू किया और पन्द्रह पारे सुना दिए।

उस्ताद ने कहा बच्चे! तेरी माँ ने मुझ से मज़ाक़ किया है। वह घर आ गए और कहने लगे माई! आपने क्या किया? आपका बच्चा तो पन्द्रह पारों का हाफ़िज़ है। इसने ये पन्द्रह पारे कैसे हिफ़्ज़ कर लिए हालाँकि आप इसे अलिफ़-ब-त-स पढ़ाने के लिए भेज रही हैं। माँ ने फ़रमाया मैं जब दूध पिलाती थी तो क़ुरआन

पढ़ पढ़कर पिलाती रही तो आपको पता चला है बच्चे का ज़हन बिल्कुल साफ़ होता है इसलिए क़ुरआन इसके दिल में नक़्श होता गया नक़्श होता गया।

और अगर बच्चा दूध पी रहा हो और कमरे में गाने लगे हों तो बच्चे से क्या उम्मीद की जा सकती है कि यह कल फ़रमांबरदार बनेगा जब कि पहले दिन से ही उसके कानों में ज़हर घोल दिया। ﴿لا تشرك بالله﴾ माँ ने बच्चे को जो पहला सबक़ सिखाना है वह *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* कि अल्लाह एक है इसका कोई शरीक नहीं। वह कारसाज़ है। इसके बग़ैर कोई काम बनाने वाला नहीं। वही काम बनाने वाला है, कोई उसके बग़ैर काम बना सकता, कोई किसी की बिगड़ी नहीं बनाता सिवाए अल्लाह के यह उनके दिल में नक़्श कर दिया जाए।

दूसरा सबक़

يبنى انها ان تك مثقال حبة من خردل فتكن فى صخرة اوفى
السموات او فى الارض يات بها الله ان الله لطيف خبير ٥

ऐ बेटे! हिसाब व किताब होगा अपने अमल को ख़ालिस व साफ़ रखना एक राई के दाने के बराबर भी अगर नेकी या बदी है तो उसकी ईनाम या सज़ा है लिहाज़ा तैयारी करना, तैयारी करना।

शेख़ जिलानी रह० का वाक़िया

शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० इल्म की तलाश में निकले। ग्यारह बारह बरस की उम्र है। क़ाफ़िले पर डाका पड़ता है और

उन सबके माल लूट लिए जाते हैं और एक डाकू उनसे कहता है अरे बच्चे! तेरे पास भी कुछ है? इसके दिल में आया कि इस मासूम के पास क्या होगा और वह बच्चा बड़े आराम से कहता है कि मेरे पास चालीस दीनार हैं और चालीस दीनार के आज के ज़माने में लाखों रुपए बनते हैं।

कहने लगा कहाँ हैं?

कहा यह देखो अन्दर सिले हुए हैं। उस ज़माने में कुर्ते की आस्तीन चौड़े चौड़े और खुले होते थे।

कहने लगा बेटा! अगर तू न बताता तो मुझे यक़ीन न आता और मुझे कोई पता न चलता।

कहा मेरी माँ ने कहा था हमेशा सच बोलना है और कभी झूट नहीं बोलना।

कहने लगा अच्छा! यह बात है और आपको पकड़ कर सीधा सरदार के पास ले गया और कहने लगा इस बच्चे की बात सुनें।

डाकू ने सारा क़िस्सा सुनाया तो सरदार कहने लगा अरे बेटा! तूने पैसे क्यों न बचा लिए तू देखता नहीं हम तो लूटने वाले हैं और अगर तू न बताता तो तेरी शक्ल ऐसी मासूम व ख़ूबसूरत है कि हम तो तेरी तलाशी भी न लेते।

फ़रमाया मेरी माँ ने कहा था बेटा हमेशा सच बोलना।

तो डाकुओं के सरदार की चीख़ निकली और कहने लगा कि ऐ मेरे मौला! यह मासूम होकर माँ का ऐसा फ़रमांबरदार और मैं आक़िल व बालिग़ होकर तेरा नाफ़रमान या अल्लाह मुझे मॉफ़ कर दे।

माँ बैठी है जीलान में और तौबा का ज़रिया बन रही है बग़दाद

के क़रीब डाकुओं के इतने बड़े सरदार और उनके पूरे गिरोह की।

यह है तर्बियत कि बेटा हिसाब होना है ज़बान सीधी रखना। बच्चों को क़यामत का यक़ीन दिलाओ। उनके दिलों में हिसाब व किताब की अज़मत पैदा करो।

तीसरा सबक़ नमाज़

﴿يٰبُنَىَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ﴾ बेटा नमाज़ पढ़ा कर। माँए पीछे पीछे हों और कहें बेटा पढ़ो नमाज़, बेटी पढ़ो नमाज़ लेकिन यहाँ तो कहते हैं न न सोने दो बच्चा है। नींद ख़राब न करो मेरे बच्चे की, मेरी बेटी की नींद ख़राब न करो अभी इसने स्कूल जाना है फिर स्कूल में नींद आएगी। ﴿اقم الصلوٰة اقم الصلوٰة﴾ आग में जल जाए लेकिन नमाज़ न छूटे, टुकड़े टुकड़े हो जाएं लेकिन नमाज़ न छूटे, सूलियों पर लटक जाएं लेकिन नमाज़ न छूटे।

नमाज़ का सबक़ अगर माँ बाप ने दिया होता तो आज नारोवाल के बाज़ार अज़ान पर बन्द हो जाते। इतना बड़ा बाज़ार है और यह छोटी सी मस्जिद है। मालूम होता है कि नमाज़ी ही नहीं हैं अगर नमाज़ी होते तो यह मस्जिद तो टूट चुकी होती अगर यही बाज़ार सारा नमाज़ी होता तो इस मस्जिद में तो बैठने के लिए जगह ही नहीं मिलती। मालूम होता है नमाज़ी नहीं हैं जैसे घर की वीरानी बताती है कि यहाँ रहने वाला कोई नहीं है। ऐसे ही मस्जिद को छोटा होना बताता है कि बाज़ार में नमाज़ी नहीं हैं अगर माँ बाप ने सूरहः लुक़मान पढ़कर बुनियाद बनाई होती आज यह हाल न होता ﴿اقم الصلوٰة﴾ बेटा नमाज़ पढ़ती है और क्या

करना है? ﴿وامر بالمعروف﴾ भलाई फैलानी है ﴿وانه عن المنكر﴾ बुराई से रोकना है ﴿واصبر على ما اصابك﴾ फिर इस पर सब्र करना है ﴿ان ذلك من عزم الامور﴾ यह बहुत ऊँची बात है।

ज़रा दोबारा ग़ौर करें। हज़रत लुक़मान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया बेटा नमाज़ पढ़। हम तबलीग़ में कहते हैं भाईयो नमाज़ को ज़िन्दा करो। कलिमा सीखो, नमाज़ सीखो। मालूम हुआ कि यह काम तो माँ बाप का था। तबलीग़ कोई जमात नहीं है बल्कि तबलीग़ तो माँ बाप वालिद का काम कर रही है ﴿وامر بالمعروف﴾ जाओ दीन फैलाओ ﴿وانه عن المنكر﴾ जाओ बुराई मिटाओ तो भलाई फैलाना और बुराई मिटाना यह तबलीग़ी जमात का काम नहीं बल्कि माँओं का काम है कि माँ की गोद में जब बच्चा आँख खोले तो माँ उसे बता रही हो मेरा बच्चा आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आख़िरी उम्मती है तेरे ज़िम्मे नबी का दीन फैलाना है। दावत का काम तो माँ बाप ने सिखाना था। तबलीग़ का काम तो माँ बाप ने सिखाना था कि जाओ दीन फैलाओ, जाओ बुराई से रोको।

हज़रत सुफ़ियान सूरी रह० की वालिदा का ईसार

एक ज़माना था सुफ़ियान सूरी रह० को उनकी वालिदा ने कहा कि बेटा जा बेटा तुझे मैंने अल्लाह के दीन के लिए वक़्फ़ कर दिया। आज अगर किसी के माँ बाप के घर में ख़बर आ जाए कि आप के बेटे का अमरीका युर्निवसिटी में दाख़िला हो गया है। उसे रवाना कर दें। कोई बूढ़े से बूढ़ा भी नहीं कहेगा कि न जा बल्कि सब कहेंगे जा बेटा जा कोई बात नहीं हम तो जाने वाले हैं आज

हैं कल नहीं पर तू तो जा।

यह वह ज़माना था जब माँए कहती थीं बेटा हम तो सुबह के चिराग़ हैं तू जा और तेरे ज़रिए से दीन ज़िन्दा हो जाए। हमारी कोई बात नहीं हमारी ख़ैर है। जब निकला माँ का लाडला सुफ़ियान घर से। हम तो कहते हैं चिल्ला दो चार महीने दो यह सुफ़ियान उन्नीस साल के बाद वापस आए, उन्नीस बरस।

वह माँए भी कैसी थीं। वापस आए रात के वक़्त था। दरवाज़े पर दस्तक दी। माँ को अल्लाह ने ज़िन्दगी अता की हुई थी वह अभी ज़िन्दा थीं। अन्दर से माँ ने कहा कौन? कहा आपका बेटा सुफ़ियान!

फ़रमाया बेटा जब कोई चीज़ किसी को हदिया दे दी जाती है तो वापस लेना बड़ी बेग़ैरती है। मैं तुझे अल्लाह को दे चुकी हूँ अब वापस लेना बड़ी बेग़ैरती है। यह दरवाज़ा अब दुनिया में खुलेगा, वापस चला जा और क़यामत को मिल लेना तसल्ली के साथ। माँ ने दरवाज़ा नहीं खोला बल्कि वापस कर दिया।

दोस्ती न रहेगी

फिर सुफ़ियान सूरी रह० कहाँ पहुँचे। जब माँएं इतनी बुलंद थीं तो बच्चे ऐसे पारसा होते थे। अबू जाफ़र मन्सूर के ख़िलाफ़ सुफ़ियान सूरी रह० ने खुला फ़तवा दिया। उसने कहा मैं मक्का आ रहा हूँ और मेरे आने से पहले सूली तैयार रखी जाए और जब मैं आऊँ तो सुफ़ियान को सूली पर लटका दिया जाए।

यह फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० की गोद में सिर रखे हुए हरम

मुबारक में लेटे हुए थे तो इतने में सुफ़ियान बिन ऐनिया रहँ भाग हुए आए और कहने लगे सुफ़ियान! सुफ़ियान! ग़ज़ब हो गया। कहा क्या ग़ज़ब हो गया? उन्होंने कहा अबू जाफ़र ने तेरी सूली का हुक्म दे दिया है। तेरे लिए फाँसी का हुक्म दे दिया है। अल्लाह के वास्ते यहाँ से निकल जा। कहा ﴿وقد فعل﴾ क्या हक़ीक़त उसने यह कह दिया है? कहा हाँ। कहा मैं भाग जाऊँ वाह यह भी कोई बात है। वहाँ से सीधे आए मुलतज़िम पर और पकड़ कर फ़रमाया, "ऐ मौला! अगर तूने जाफ़र को मक्के में दाख़िल होने दिया तो दोस्ती न रहेगी।" अबू जाफ़र को मक्के नहीं बल्कि ताएफ़ में भी दाख़िला नसीब नहीं हुआ और वह बदमाश ताएफ़ से पहले ही मर गया।

माँओं की ज़िम्मेदारी

यह माँओं का काम था बच्चों का दीन के लिए तैयार करना जो आज तबलीग़ वाले याद दिला रहे हैं। यह जन्नत का रास्ता है। और कौन सा सबक़ देना है? ﴿يٰبنى﴾ यह बहुत प्यारा लफ़्ज़ है। इससे साबित होता है कि बच्चे से प्यार पढ़ाओ। डाँट डपट के और मार कर न पढ़ाओ ﴿يٰبنى، يٰبنى، يٰبنى﴾ यह इस बात की तरफ़ इशारा है लफ्फड़ न मारो, थप्पड़ न मारो बल्कि प्यार मुहब्बत से पढ़ाओ। स्कूलों में कान न पकड़वाओ क्योंकि आज बग़ावत का ज़माना है मुहब्बत से तो समझेंगे मार पिटाई से नहीं समझेंगे।

﴿يٰبنى﴾ "या बुनैय्या" का मतलब होता है ऐ मेरे प्यारे बेटे! ऐ मेरे नन्हें से बेटे! ऐ मेरे छोटे से बेटे। अल्फ़ाज़ में ऐसी नरमी है। आगे फ़रमाया ﴿ولا تصعر خدك للناس﴾ बदअख़्लाक़ न होना, मुँह न

चिढ़ाना कि मुँह से भी बड़ाई टपकती हो। ﴿ولا تمشی فی الارض مرحا﴾ अकड़ कर न चलना ﴿ان اللّٰہ لا یحب کل مختال فخور﴾ अल्लाह फ़ख़ व ग़रूर करने वालों से मुहब्बत नहीं रखता ﴿واقصد فی مشیک﴾ चलने में आजिज़ी हो ﴿واغضض من صوتک﴾ आवाज़ में पस्ती हो ﴿ان انکر الاصوات لصوت الحیمر﴾ सबसे गंदी और बुरी आवाज़ गधे के की है।

अख़्लाक़ की अहमियत

यह जो आख़िरी चैपटर है अख़्लाक़ पर है। ईमान सिखाया, जज़ा व सज़ा सिखाई, इबादत सिखाई और आख़िर में अख़्लाक़ को लाए हैं और आप अन्दाज़ा लगाएं अख़्लाक़ का बाब कितना अहम है कि तौहीद के लिए लफ़्ज़ है ﴿لا تشرک باللّٰہ﴾ नमाज़ के लिए लफ़्ज़ ﴿اقم الصلوٰۃ﴾ तबलीग़ व दावत के लिए जुमला है

﴿وامر بالمعروف وانہ عن المنکر واصبر علی ما اصابک﴾

और जब आई अख़्लाक़ की बात तो क्योंकि अख़्लाक़ से तो घर आबाद होते हैं। अख़्लाक़ के लिए एक लम्बी इबारत है। छः जुमले हैं:

ولا تصعر خدك للناس. ولا تمشی فی الارض مرحا. ان
اللّٰہ لا یحب کل مختال فخور. واقصد فی مشیك.
واغضض من صوتك. ان انكر الاصوات لصوت الحیمر.

सबसे लम्बा मज़मून अख़्लाक़ का बयान किया है। और यही हम औलाद को सिखाते नहीं। कुछ दीनदार लोग नमाज़ का तो बच्चों और बच्चियों से पूछ लेते हैं। अख़्लाक़ कैसे हैं, किरदार

कैसा है? बोल कैसा है? तवाज़े है? इन्किसारी है? आजिज़ी है? यह सिखाना है। यह एक पूरा प्रोग्राम है जो अल्लाह तआला ने माँ बाप को दिया है, उस्तादों को दिया है, पढ़ाने वालों को दिया, दर्स देने वालों को यह प्रोग्राम दिया है कि इस पर अपनी औलाद और शार्गिदों को तैयार करो। इन्हीं बातों को सीखने की हम तबलीग़ में दावत दे रहे हैं। यह कोई जमात नहीं है बल्कि यह तो क़ुरआन की दावत दे रहे हैं। क़ुरआन को सीख रहे हैं और क़ुरआन को सिखाने की मेहनत कर रहे हैं क्योंकि ज़िन्दगियों की आबादियाँ अच्छे अख़्लाक़ से है लिहाज़ा इसको खोलकर बयान किया गया है।

ख़र्च करने में ऐतिदाल

﴿واقصد فی مشیك﴾ की तफ़्सीर जो मुफ़स्सिरीन ने की है वह यह है कि चलने में आजिज़ी और मियानारवी हो लेकिन मैं तफ़सीर नहीं बल्कि इशारा कर रहा हूँ कि इस लफ़्ज़ का इशारा दूसरी तरफ़ भी जा रहा है। इसको कहते हैं "फ़वाइदुल-क़ुरआन" हर दौर में ये खुलते रहेंगे, खुलते रहेंगे चाहे सारी दुनिया इमाम ग़ज़ाली रह० जैसों से भर जाए तो भी "फ़वाइदुल-क़ुरआन" ख़त्म नहीं हो सकते हर दौर में अल्लाह खोलता रहेगा, खोलता रहेगा।

﴿واقصد، واقصد﴾ को अगर एक हदीस से जोड़ा जाए तो एक मतलब और भी यहाँ से निकल सकता है।

﴿واقصد فی الفقر والغناء﴾ हदीस और ﴿واقصد فی مشیك﴾ क़ुरआन। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे रब ने मुझे कहा है कि ख़र्च करने में ऐतिदाल हो फ़िज़ूलख़र्ची न हो

चाहे पैसा हो चाहे ग़रीबी हो, ख़र्च करने में मयानारवी और ऐतिदाल हो। क्या पता बच्ची का नसीब क्या है मालदार को दी वह कल को फ़कीर हो जाए। फ़क़ीर को दी वह मालदार हो जाए, इज़्ज़तदार को दी वह कल को बेइज़्ज़त हो गया, बेइज़्ज़त को दी वह कल को इज़्ज़तदार हो गया। ये तो दिन रात के वाक़ियात हैं।

मेरी बच्ची यह मांग रही है दे दो। न न बल्कि उन्हें ज़रूरतों पर ज़िन्दगी गुज़ारना सिखाएं कि कल को अगर अल्लाह फ़राख़ी दे तो वह आसानी से चल सके और अगर तंगी दें तो भी आसानी से चल सके।

तो कहा कि अपनी औलाद को ख़र्च करने में भी ऐतिदाल सिखाओ जो मांगे वह दे दिया यह न हो।

तो यह लफ़्ज़ का इशारा है तफ़सीर नहीं। ﴿القصد﴾ हदीस का लफ़्ज़ है और ﴿واقصد﴾ क़ुरआन का लफ़्ज़ है इन दोनों का जोड़ा जाए तो उनसे एक मतलब भी यह निकलता है कि हर वक़्त अपनी औलाद के खाने पीने, कपड़े की फ़िक्र न करो बल्कि उन्हें मियाना चाल चलना सिखाओ। ऐतिदाल से ख़र्च करना सिखाओ।

इन्सानियत की ज़रूरत

मेरे भाईयो और बहनो!

इन बातों को लेकर हम तबलीग़ में फिरते हैं। इसी बात की दावत देते हैं आपको भी कहते हैं कि आप भी इनको सीखने के लिए निकलें। मुझे उम्मीद है कि इन बातों में से कोई बात भी ऐसी नहीं है जो आप की ज़रूरत की न हों सारी बातें आपकी ज़रूरत की हैं। ऊपर जो औरतें बैठी हैं उनकी भी, आप जो मेरे

सामने बैठे हैं आपकी भी, मैं जो बोल रहा हूँ मेरी भी, जो नहीं आए उनकी भी ज़रूरत की हैं। जहन्नुम से बचकर जन्नत के रास्ते पर चलना और इसके लिए मेहनत व कोशिश करना यह हम सब पर फ़र्ज़ है, हमारे ज़िम्मे है।

जब मौत आए और अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िरी हो तो अल्लाह हमें देखकर खुश हो रहा हो और ऐलान कर दे कि मेरे बन्दे और मेरी बन्दी ने मुझे राज़ी किया जाओ ﴿عليين﴾ के वेटिंग रूम में इन्हें बिठा दो, जल्दी हम इन्हें जन्नत में पहुँचा देंगे। मेरे बन्दे ने मुझे राज़ी कर दिया।

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु की मौत पर उनका एज़ाज़ व इकराम

हज़रत साद बिन माज़ रज़ि० का जब इन्तिक़ाल हुआ तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आज आपके सहाबा में से कौन गज़र गया है? आपने फ़रमाया क्यों क्या बात है?

जब ईमान वाले की रूह क़ब्ज़ होती है तो सीधी अर्श के नीचे जाकर सज्दा करती है। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा अल्लाह का अर्श खुशी से झूम रहा है कि कोई आ रहा है।

﴿استبشر بموته اهل السماء.﴾

सातों आसमान के फ़रिश्ते खुशियाँ मना रहे हैं कि कोई आ रहा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हाय! मेरा साद गया। आपको पता चल गया क्योंकि वह ज़ख़्मी थे। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दम तेज़ी से मस्जिद से निकले और आप

इतना तेज़ चले कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पीछे दौड़ रहे थे और आप चल रहे थे और उनकी जूतियों के तसमे टूटने लगे। उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़रा आहिस्ता चलें। ﴿تعبنا﴾ आपने हमें थका दिया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जल्दी चलों क्योंकि मुझे डर है कि

हमारे पहुँचने से पहले कहीं साद को फ़रिश्ते न ग़ुस्ल दे दें और हम उन्हें ग़ुस्ल देने से महरूम रह जाएं। इसलिए जल्दी चलो। जल्दी चलो। भागे भागे पहुँचे तो देखा हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु की मैय्यत कमरे में पड़ी है और कमरा ख़ाली है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम बाहर खड़े हो गए आप अन्दर गए और कैसे अन्दर गए जैसे अगर अब सामने से कोई आदमी मेरी तरफ़ आए तो सीधी चाल तो न चल सकेगा कोई क़दम इधर रखेगा और कोई क़दम उधर रखेगा क्योंकि रास्ते में लोग बैठे हुए हैं।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने देखा कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी इधर क़दम रखते हैं कभी उधर क़दम रखते हैं। कभी पाँव पूरा रखते हैं कभी आधा रखते हैं। फिर साद रज़ियल्लाहु अन्हु सिरहाने सिकुड़ कर बैठ गए।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपने ऐसा क्यों किया नज़र तो कोई आ नहीं रहा? आपने फ़रमाया कमरा फ़रिश्तों से भरा पड़ा है कि पाँव रखने की जगह भी नहीं है और अभी एक फ़रिश्ते ने अपने परों को सिकोड़ा और मेरे लिए बैठने की जगह बनाई है।

भाईयो और बहनों! हम मरें तो हमारी मौत ऐसी आए।

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा

और हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु लम्बे चौड़े थे, लहीम शहीम थे लेकिन जब आपका जनाज़ा उठाया गया तो उसका वज़न भी नहीं था। ऐसा लग रहा था कि ऊपर मैय्यत ही नहीं है तो मुनाफ़िक़ बकने लगे। देखा न, देखा न यह भी मुनाफ़िक़ था इस लिए इसका वज़न ही नहीं रहा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक जब बात पहुँची तो आपने फ़रमाया उनकी ज़बानें बन्द करो और उन्हें बताओ कि साद को तुम लोगों ने नहीं बल्कि फ़रिश्तों ने कन्धा दिया है तुम तो ख़ाली चल रहे हो कन्धे तो नीचे फ़रिश्तों के हैं। जैसे लोगों ने मैय्यत को कन्धा दिया होता है और कुछ ने ख़ाली नीचे हाथ रखा हुआ होता है अज्र के लिए सवाब के लिए कि मैय्यित को कन्धा देना सवाब का काम है लेकिन जो मेरे जैसे कमज़ोर लोग नहीं उठा सकते वह ख़ाली हाथ नीचे रख देते हैं। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आपके हाथ तो ख़ाली हैं कन्धे तो फ़रिश्तों के हैं जिन पर जनाज़ा जा रहा है।

आशिक़ का जनाज़ा है ज़रा धूम से निकले
महबूब की गलियों से ज़रा घूम कर निकले

तबलीग़ी काम की तर्तीब

जब नारोवाल से ईमान वाली औरत या ईमान वाले किसी मर्द का जनाज़ा उठे तो ऐसे उठे कि फ़रिश्तों ने कन्धे दिए हुए हों।

इसके लिए तब्लीग़ का काम है। इसके लिए हम मर्दों से चार महीने मांगते हैं और औरतों से तीन दिन कि मर्दों के साथ तीन दिन के लिए निकलों और जब तीन तीन दिन लग जाएं तो फिर पन्द्रह दिन लगाओ और जब पन्द्रह दिन लग जाएं तो फिर चार महीने के लिए बाहर की दुनिया में जाओ उन मुसलमान औरतों को पैग़ाम सुनाओ कि तुम भी अल्लाह और रसूल की रज़ा वाली ज़िन्दगी पर आ जाओ।

वुसअत रहमत-ए-रब्बानी

मेरे भाईयो और बहनो!

एक तो आज तक जो अल्लाह की नाफ़रमानियाँ हुई हैं उससे तौबा करें क्योंकि तौबा वह अमल है जो लाखों साल के गुनाहों को धो कर साफ़ कर देता है। सारे मर्द और सारी औरतें तौबा करें। इतनी तो नियत तो सब कर ही लें।

क्या पता कब बुलावा आ जाए तो तौबा तो की हुई हो और अल्लाह तआला ऐसा करीम है कि वह कहता है मेरा बन्दा तो इतने गुनाह कर कि आसमान की छत तक पहुँचा दे। क्या कोई इतने गुनाह कर सकता है? सारी दुनिया, सारे इन्सान, सारे शैतान सब मिलकर गुनाह करें तो भी आसमान तक नहीं जा सकते लेकिन अल्लाह हमें कह रहा है कि नारोवाल की कोई औरत कोई मर्द अगर इतने गुनाह भी करे कि आसमान तक चले जाएं और फिर एक बोल बोल दे कि या अल्लाह माफ़ कर दे तो मैं वहीं सारे माफ़ कर दूंगा, जाओ माफ़ कर दिया।

माँ भी इतनी जल्दी माफ़ नहीं करेगी वह ताने देगी कि तूने मुझे बहुत सताया है मैं नहीं माफ़ करती। कल ही हमारे यह भाई बता रहे थे कि मेरे वालिद मुझ पर नाराज़ हुए और दो साल तक मुझे माफ़ नहीं किया।

और अल्लाह कितना मेहरबान है इधर हम ने कहा या अल्लाह! माफ़ कर दे। वह कहता है जाओ मैंने माफ़ कर दिया। मैं तो कब से इन्तिज़ार कर रहा था कि तो एक दफ़ा कह तो दे। जाओ मैंने माफ़ कर दिया।

तो यह सारा मजमा अल्लाह की बारगाह में तौबा करे कि तौबा पर अल्लाह सब गुनाह धो देता है और कहता है मुझे परवाह भी नहीं होती। अल्लाह से कोई पूछ सकता है कि तूने माफ़ कर दिया। सबसे तौबा करवाएं।

सौ आदमियों के क़ातिल की तौबा का क़िस्सा

शिर्क के बाद सबसे बड़ा गुनाह क़त्ल है। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि बनी इसराईल में से एक आदमी निन्ननावें क़त्ल कर चुका। इसके बाद उसे ख़्याल आया कि मैं तौबा कर लूँ। उसने किसी अनपढ़ से पूछ लिया क्या मेरी तौबा क़बूल हो जाएगी?

उसने कहा तेरी तौबा कैसे क़बूल हो सकती है? निन्ननानवे क़त्ल कर चुका है तू तो सीधा दोज़ख़ी है।

उसने कहा तो फिर सौ पूरे करूँ, अधूरा काम तो न हो और उसे भी उड़ा दिया और सौ पूरे कर दिए।

फिर उसे ख़्याल आया कि तौबा करूँ तो किसी आलिम से पूछा

कि मेरी तौबा क़बूल हो सकती है? कहा बेटा! क्यों नहीं लेकिन शर्त एक है कि तौबा पक्की होनी चाहिए और तौबा उस वक़्त पक्की होती है जब आदमी अच्छा माहौल इख़्तियार करे तो यहाँ का माहौल अच्छा नहीं तो तू यह शहर छोड़ दे और फ़लाँ बस्ती चला जा वहाँ नेक लोग रहते हैं वहाँ तेरी तौबा पक्की हो जाएगी।

यही हम कहते हैं कि नारोवाल हो या पाकिस्तान का कोई शहर हो माहौल इतना गन्दा है कि तौबा पक्की होती नहीं। इसलिए तौबा पक्की करने के लिए उसे चिल्ले और चार महीने के लिए छोड़ दें।

औरतों का दिल क्योंकि नरम होता है इस लिए उनको तीन दिन में वह कुछ हासिल हो जाता है जो मर्दों को तीन चिल्लें में हासिल होता है। ज़मीन नरम होती है।

उसने कहा जी! मैं तैयार हूँ मेरी तौबा क़बूल होनी चाहिए। आलिम ने कहा तू यहाँ से निकल जा। उसने सामान उठाया और चल दिया। लोग हमें कहते हैं कि बिस्तर उठाकर निकल पड़ते हैं तो यह तो बनी इसराईल से बिस्तर उठाना चला आ रहा है।

वह चल पड़ा रास्ते में बीमार हो गया और मौत ने आ घेरा और उसे नज़र आया कि नहीं बचता। तो आहिस्ता आहिस्ता चलना शुरू किया। जब गिर पड़ा तो रेंगना शुरू कर दिया और जब मौत ने झटका दिया तो उसने लपककर छलाँग लगाई और जब उसने छलाँग लगाई तो उसके दोनों हाथ आगे फैले हुए थे और इसी हाल में उसकी रूह क़ब्ज़ हो गई।

अल्लाह को उसकी यह अदा इतनी पसन्द आई कि अल्लाह ने

क़यामत तक उसकी इस कहानी को हम तक पहुँचाने के लिए दुनिया इस पर एक मुक़द्दमा चला दिया। जन्नत के फ़रिश्ते भी भेज दिए और दोज़ख़ के फ़रिश्ते भी भेज दिए।

दोज़ख़ वाले कहने लगे हमारा क़ैदी है।

जन्नत वाले कहें यह हमारा मेहमान है तौबा कर चुका है।

दोज़ख़ वाले फ़रिश्तों ने कहा कि तौबा पूरी नहीं हुई, वहाँ जाता तो पूरी होती।

जन्नत वाले कहने लगे तौबा पूरी हो गई है जब चल पड़ा तो तौबा हो गई। फ़ैसला नहीं हो रहा था अल्लाह तआला ने एक तीसरा फ़रिश्ता भेजा। उसने कहा इधर की ज़मीन भी नापो और उधर की ज़मीन भी नापो। अगर घर के क़रीब है तो दोज़ख़ी और अगर बस्ती के क़रीब है तो जन्नती हालाँकि घर का फ़ासला कम था और बस्ती का ज़्यादा था लेकिन ज़मीन भी अल्लाह की और जहाँ भी अल्लाह का। जब वे नापने लगे तो अल्लाह ने बस्ती की तरफ़ की ज़मीन को कहा सिकुड़ जा और घर की तरफ़ की ज़मीन को कहा कि फैल जा। वह फैल गई और वह सिकुड़ गई। बस्ती की तरफ़ घट गई और घर की तरफ़ बढ़ गई और अल्लाह ने कहा मेरे बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर दो।

तो इन औरतों और मर्दों में तो कोई ऐसा गुनाहगार नहीं जो कहे कि क्या हमारी तौबा क़बूल हो सकती।

तौबा की हक़ीक़त

इधर हम ने कहा या अल्लाह मेरी तौबा! उधर से अल्लाह ने

फ़रमाना है मेरे बन्दे का सारा दफ़्तर धो दो। सुलह हो गई है नए सिरे से कापी लग गई।

एक तो यह सारा मजमा तौबा करे। इसकी तो सारे दिल से नियत कर लें। इबादतों की तौबा क्या है नमाज़ नहीं पढ़ते थे आज से शुरू कर दें और पिछली क़ज़ा पढ़नी शुरू कर दें।

मामलात की तौबा क्या है? दुकान पर बैठकर रोज़ाना झूठ बोलते थे आज से सच शुरू हो जाए सौदा बिके या न बिके। रोटी मिले या न मिले लेकिन झूठ नहीं आएगा ज़बान पर। रूखी सूखी खा लेंगे लेकिन झूठ बोलकर सौदा नहीं बेचेंगे। नाप तोल में कमी ज़्यादती नहीं करेंगे। दिखाया कुछ और दिया कुछ यह काम नहीं करेंगे। यह मामलात की तौबा है।

सुखी हो गया

एक दूधिया दस दिन लगाकर आया और कहने लगा पहले एक मन छः मन दूध बनाकर बेचा करता था और हर वक़्त मेरे घर में बीमारी रहती थी जाती नहीं थी। तबलीग़ में आया तो एक मन ही बेचता हूँ। जब से एक मन बेचना शुरू किया मैं सुखी हो गया, चैन आ गया।

तो वह पैसा जो झूठ से आता है या ख़्यानत से आता है वह कभी भी मेरी औलाद के दिन हरे नहीं कर सकता। सूखी रोटी हलाल की मेरी नस्लों को निहाल कर देगी। यह अल्लाह का वायदा है।

क़ुरआन सीखें

मेरे भाईयो और बहनो!

एक तो आज हम तौबा करें। जिन औरतों को क़ुरआन नहीं आता वह क़ुरआन पढ़ना शुरू कर दें। एक एक हरुफ़ सीखें अल्लाह के फ़ज़्ल से सारा क़ुरआन आ जाएगा। आप (मर्दों) में जिसको क़ुरआन नहीं आता है आप भी एक एक हरुफ़ सीखना शुरू कर दें। मामलात की तौबा यह है कि आज के बाद अल्लाह के हुक्मों के ख़िलाफ़ नहीं करेंगे। नाप तोल, तिजारत, ज़राअत, शादी, ब्याह, ख़ुशी, ग़मी में सुन्नत को ज़िन्दा करेंगे और ख़िलाफ़े सुन्नत न चलेंगे।

कारगुज़ारी और तर्ग़ीब

ख़ुदा-न-ख़्वास्ता अगर कभी तौबा टूट जाए तो दोबारा कर लें अल्लाह फिर माफ़ कर देगा और इसी बात को औरों तक पहुँचाने के लिए चार महीने और चिल्ले मर्द दें और औरतें तीन दिन दें और तीन दिन तो औरतों की जमात नक़द दें।

हमने ज़फ़रवाल में बयान किया। वहाँ से औरतों की तीन दिन की जमात निकली फिर शकरगढ़ बयान किया और वहाँ से भी तीन दिन की जमात निकली। अब यह नारोवाल का आख़िरी स्टेशन है कल हमने आगे चले जाना है। यह ज़िला है तो यहाँ से कम से कम तीन दिन की दो जमातें निकलनी चाहिए तो भाईयों कल से नक़द जो औरतों की जमात में तीन दिन के लिए तैयार हैं वे अपने नाम पेश करें।

अपने घरों में क़ुरआन की तिलावत का एहतिमाम करें। ज़िक्र का एहतिमाम करें, फ़ज़ाइल की तालीम का ऐहतिमाम करें ताकि हमारे बच्चों और बच्चियों को भी पता चले कि हमारी ज़िन्दगी का मक़सद क्या है।

माँ-बाप की ज़िम्मेदारी

माज़रत

इस बयान की इब्तिदाई रिकार्डिंग मिल नहीं सकी। जिस पर इदारे और तर्तीब देने वाले पढ़ने वालों से माज़रत चाहते हैं।

मुसदतुन ﴿موصدة﴾ की वज़ाहत प्रेशरकुकर से

﴿انها عليهم مؤصدة﴾ उन पर आग बन्द होगी। यह "मुसदतुन" का जो तर्जुमा है यह मुझे एक दिन प्रेशरकुकर देखकर समझ में आया और बात जो मैं कहने वला हूँ औरतें हम से ज़्यादा समझेंगी। यह प्रेशरकुकर क्या होता है। इसकी दीवारें मोटी होती हैं। उसकी छत भी मोटी होती है, उसके नीचे फ़र्श भी मोटा होता है। वह यह करता है जो गर्मी अन्दर होती है उसे बाहर नहीं निकलने देता लिहाज़ा उसमें एक छोटा सा सुराख़ रखा जाता है जिसमें से फ़ालतू भाप निकलती रहती है अगर वह सुराख़ भी बन्द कर दिया जाए तो प्रेशरकुकर बम बन जाए। इससे पिछली तश्कील हमारी मुरीद के हुई थी तो वहाँ एक नौजवान ने आकर बताया कि मेरी बीवी का इन्तिक़ाल हो गया इस वजह से कि

प्रेशरकुकर के ऊपर वाला सुराख़ बन्द हो गया। प्रेशरकुकर फटा और वहीं मौके पर मेरी बीवी हलाक हो गई।

लिहाज़ा थोड़ा सा इसमें सुराख़ रखते हैं जिससे वह फ़ालतू भाप निकलती रहती है तो इससे क्या ताक़त पैदा होती है कि वह गोश्त जो दो घन्टे में नहीं गलता वह दस मिनट में गल जाता है और आधे घन्टे में हड्डियों से जुदा हो जाता है और अगर दस मिनट और लगा दो तो वे हड्डियाँ भी बिल्कुल रेज़ा रेज़ा और चूरा चूरा हो जाती हैं।

﴿انها عليهم مؤصدة﴾ "अलैहिम" यह जो लफ़्ज़ "अलैहिम" है यह बड़ा ख़ौफ़नाक है । पहला लफ़्ज़ ﴿على﴾ अला जो यहाँ बड़ी ख़ौफ़नाक सूरत पैदा कर रहा है और ﴿مؤصدة﴾ इस एक और मुसीबत को बयान कर रहा है कि वह आग की मोटी मोटी दीवारें होंगी। मोटी छत, नीचे मोटा फ़र्श होगा। इसके अन्दर ढक्कन उठाकर नाफ़रमान मर्दों और औरतों को डाल दिया जाएगा और ऊपर ढक्कन बन्द कर दिया जाएगा और इसमें भाप निकलने का कोई सुराख़ नहीं है जिससे फ़ालतू भाप निकले और दीवारें इतनी सख़्त कि भाप उनको फाड़ नहीं सकती। स्टीम उन्हें तोड़ नहीं सकती। इन मर्द व औरतों को इसके अन्दर बन्द करके इसके नीचे जब अल्लाह तआला आग को भड़काएगा तो उसके अन्दर ये इस तरह गलते रहेंगे जिस तरह गोश्त गलता है लेकिन मौत नहीं आएगी। ﴿ثم لا يموت ولا يحيى﴾ न इसमें वह ज़िन्दा रहेगा और मरेगा। न मौत आएगी और न यह ज़िन्दगी है। हड्डियाँ भी पिघल जाएंगी फिर अल्लाह तआला जोड़ देगा, फिर पिघल जाएंगी, फिर जोड़ देगा, फिर पिघल जाएंगी।

अल्लाह का ज़न्नत और दोज़ख़ वालों से ख़िताब

और यह कोई एक दिन का क़िस्सा होता तो कोई अमान होती बल्कि यह ऐसा क़िस्सा है। एक हदीस में आता है कि अगर दोज़ख़ वालों को पूछा जाए कि दुनिया में जितने रेत के ज़र्रे हैं सारी दुनिया के लोग इकठ्ठे हो जाएं तो सिर्फ़ कोहाट के रेत के ज़र्रे नहीं गिन सकते और यूँ कहा जा रहा है कि सारी दुनिया में जितने रेत के ज़र्रे हैं इतने साल तुम्हें दोज़ख़ में रखा जाएगा और फिर तुम्हें माफ़ करके निकाल दिया जाएगा तो सारे दोज़ख़ वाले ख़ुश हो जाएंगे और जन्नत वालों से यूँ कहा जाए कि सारी दुनिया में रेत के जितने ज़र्रे हैं उतने साल तुम्हें जन्नत में रखकर निकाल दिया जाएगा तो वे सारे रोने बैठ जाएंगे। लेकिन न ये निकलेंगे और न वे निकलेंगे।

अल्लाह तआला जन्नत वालों से पूछेगा ﴿ياهل الجنة﴾ ऐ जन्नत वालों! वे कहेंगे ﴿لبيك ربنا وسعديك﴾ या अल्लाह हम हाज़िर हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿كم لبثتم فى الارض عدد سنين﴾ दुनिया में कितनी ज़िन्दगी गुज़ार कर आए हो? वे कहेंगे ﴿يوما او بعض يوم﴾ या अल्लाह एक दिन गुज़ारा था और कुछ कहेंगे एक दिन कहाँ गुज़ारा था आधा दिन ही गुज़ारा था हालाँकि कोहाट में सत्तर साल गुज़र गए लेकिन उस वक़्त कहेंगे आधा दिन ही गुज़ारा था तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿نعم استجرتم﴾ शाबाश! बहुत अच्छा सौदा किया तुमने, बड़ी अच्छी तिजारत की तुमने ﴿رحمتى وكرامتى وجنتى خلدين فيها﴾ तुम ने मेरी रहमत को ख़रीदा मेरी मेहमान नवाज़ी को ख़रीदा, मेरी जन्नत को ख़रीदा। अब तुम मेहमान और मैं मेज़बान। अब तुम कभी नहीं निकल सकते। अगर मौत होती

तो यह सब खुशी से मर जाते लेकिन मौत मर चुकी है।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएगा ﴿يا اهل النار﴾ ऐ दोज़ख़ वालों। वे कहेंगे ﴿لبيك ربنا وسعديك﴾ या अल्लाह हम हाज़िर हैं। अल्लाह तआला कहेगा ﴿كم لبثتم فى الارض عدد سنين﴾ बोलो! तुम दुनिया में कितना रहकर आए हो? वे कहेंगे ﴿يوما او بعض يوم﴾ या अल्लाह एक दिन गुज़ारा था और कुछ कहेंगे आधा दिन गुज़ारा था। वह क़ौमे आद जो नौ नौ सौ साल रहते थे तीन सौ साल में बालिग़ होते थे वे भी कहेंगे या अल्लाह आधा दिन गुज़ारा था तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा ﴿بئس ما استجرتم فى يوم او بعض يوم﴾ लानत है तुम पर ﴿بئس ما استجرتم﴾ का मुरादी तर्जुमा कर रहा हूँ (लानत है तुम पर क्या सौदा करके आए हो)

जैसे कि आपका कोई नौकर नुक़सान का सौदा कर दे तो कैसे उसको डाँटा जाता है तो अल्लाह उन्हें कह रहा है तुम्हें शर्म नहीं आई। तुम्हें होश न आया सिर्फ़ आधे दिन की लज़्ज़त के लिए तुमने क्या किया। अब देख रहो हो कि तुमने क्या किया ﴿ما اصبر هم على النار﴾ क्या कहने तुम्हारे सब्र के देखो तो सही किया करके आए हो। ﴿غضبى وسخطى ونار جهنم﴾ तुमने मेरे गुस्से को ख़रीदा और दोज़ख़ की आग को ख़रीदा। जाओ अब तुम हमेशा के लिए इसी में रहो तुम्हें कोई निकालेगा नहीं अगर मौत होती तो यह ग़म से मर जाते लेकिन न वे मरेंगे और न ये मरेंगे।

मेरे भाईयो और बहनो!

यह सारी दुनिया के मर्द व औरतों सबका इज्तिमाई और सबसे बड़ा मस्अला है। हम अल्लाह के अज़ाब से बचें। दुनिया के दुखों

से भी बचें यह भी हमारी ज़रूरत है और अज़ाबे आख़िरत से बचना इससे भी बड़ी ज़रूरत है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु जैसा अज़ीम इन्सान दुआ कर रहा है ﴿اللھم صبرنی، اللھم صبرنی﴾ या अल्लाह मुझे सब्र दे! या अल्लाह मुझे सब्र दे तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे से लात मारी और फ़रमाया क्या मांग रहा है? क्या मांग रहा है? ﴿اسالت اللہ بلآء﴾ अल्लाह से परेशानी मांग रहा है तू इस काबिल है कि अल्लाह की आज़माइश पर पूरा उतरे। अली रज़ियल्लाहु अन्हु को कह रहे हैं हमें तो कुछ पता ही नहीं। पता नहीं हम इन्सान भी हैं या नहीं।

अब इन्सान नहीं बल्कि नर और मादा

हमारे उस्ताद साहब फ़रमाया करते हैं अब मर्द भी मर गए और औरतें भी मर गयीं अब तो नर और मादा हैं जिन्हें ख़्वाहिश के सिवा कुछ पता नहीं। मर्द भी गुज़र गए और औरतें भी चली गयीं।

ذھب الذین یعاش فی النار فیھم   بقیت وحدی کالبعیر الاجرب.

सब उठ गए

﴿من المومنین رجال صدقوا ما عاھدو اللہ علیہ﴾

और ﴿مومنت، غفلت، محصنت﴾ उठ गयीं जिन्हें क़ुरआन ने औरत कहा।

क़ुरआन ने जिन्हें मर्द व औरत कहा वे तो क़ब्रों में चले गए अब तो बस नर हैं और मादा हैं जिन्हें अपनी ख़्वाहिश के अलावा

कुछ पता नहीं कि क्या हो रहा है और हम कहाँ जा रहे हैं।

हम तो दुनिया का दुःख भी नहीं सह सकते। हज़रत अली से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा आज़माइश क्यों मांग रहा है? अल्लाह से दुनिया व आख़िरत की भलाई मांग ﴿اتنى فى الدنيا حسنة وفى الآخرة حسنة﴾ या अल्लाह मेरी दुनिया भी अच्छी कर और मेरी आख़िरत भी अच्छी।

अल्लाह की रहमत का साया

तो यह हम सब का इज्तिमाई मसअला है अगर हम को इस दुनिया की मुसीबतों से निजात और आसानी की ज़िन्दगी मिले। ज़िल्लत की ख़ौफ़नाक पकड़ से हमें निजात मिले जब कहा जाए ﴿وامتازو اليوم ايها المجرمون﴾ ऐ मुजरिमीन की जमात आज अलग हो जाओ। इस ऐलान को सुनकर बड़े बड़े ज़मीन पर जा गिरेंगे। जब दोज़ख़ आएगी मैदाने हश्र में और चीख़ मारेगी। एक हदीस में आता है अगर किसी के पास सत्तर नबियों के आमाल के बराबर भी अमल होगा तो वह भी पुकार उठेगा आज मेरी निजात नहीं है। ऐसा ख़ौफ़ का आलम होगा।

ज़रूरत सिर्फ़ यही नहीं कि हमें सुबह को तन्दूर की रोटी मिले, चाय मिले और मक्खन मिले, दोपहर को खाना मिले, रात को रोटी मिले, रहने को घर मिले और बच्चों को रोज़गार मिले। सिर्फ़ यही हमारी ज़रूरियात नहीं बल्कि यह भी हमारी ज़रूरत है कि जब दुनिया से जा रहे हों तो ईमान हमारा साथी हो, आमाल का सरमाया हो, अल्लाह की रहमत का साया हो। जब क़ब्र में जा रहे

हों तो वहाँ के अंधेरे रोशनियों में बदल चुके हों, जब मैदाने हश्र में पुकारा जाए कि एक तरफ़ हो जाओ मुजरिमीन की जमात तो मुजरिमों में न खड़े हों बल्कि फ़रमांबरदारों में खड़े हों; जब आमालनामे उड़ाए जाएं तो हमारा आमालनामा हमारे सीधे हाथ में आए उल्टे हाथ में न आए।

कामयाबी का परवाना

सीधे हाथ में आना कामयाबी की अलामत है। ﴿هاؤم اقرء وا كتابيه﴾ जैसे ही आमालनामा सीधे हाथ में आएगा तो वह एक नारा लगाएगा ﴿هاؤم، هاؤم﴾ यह एक नारा है जैसे आदमी ख़ुशी से हा करता है तो यह असल में ख़ुशी का इज़्हार है और ख़ुशी का नारा है। अब ज़ात में यह लफ़्ज़ नहीं बल्कि उसे लफ़्ज़ की शक्ल दी गई है! जिसके सीधे हाथ में किताब आएगी वह कहेगा ﴿هاؤم اقرء وا كتابيه﴾ असल तो है ﴿اقراء وا كتابيه﴾ लेकिन उससे पहले वह नारा लगाएगा ﴿هاؤم، هاؤم، هاؤم﴾ क्या हुआ? क्या हुआ? कहेगा ﴿اقراء وا كتابيه﴾ मेरा पेपर पढ़ो, मेरी किताब पढ़ो मैं पास हो गया, मैं कामयाब हो गया। यही सवाल छुपा हुआ है कि तू कैसे पास हो गया यह तो बहुत मुश्किल इम्तिहान था? वह कहेगा ﴿انى ظننت انى ملق حسابيه﴾ मुझे पता था मेरा हिसाब होना है इसलिए मैं तैयारी करता रहा तो इसका जवाब अल्लाह तआला फ़रमाएगा ﴿فهو فى عيشة راضية﴾ बेहतरीन ज़िन्दगी उसको मिल गई ﴿فى جنة عالية﴾ ऊँची जन्नत में पहुंच गया ﴿قطوفها دانية﴾ फल जिसके झुके हुए हैं ﴿كلوا واشربوا﴾ अब खाओ पियो ﴿هنيئا﴾ मज़े से। मज़े से खाने का क्या मतलब? खाएंगे पाख़ाना नहीं, पिएंगे पेशाब नहीं।

खाएंगे पिएंगे मुसीबत नहीं बीमारी नहीं, कै नहीं, उल्टी नहीं। खाने पीने से जो मुसीबतें आती हैं उनमें से कोई मुसीबत नहीं। यह किस लिए ﴿بما اسلفتم في الايام الخالية﴾ वह जो तुमने कोहाट में गुज़रे हुए दिनों में अल्लाह को राज़ी किया था यह उसका बदला है।

नाकामी का टिकट

और जिसके उल्टे हाथ में आमाल नामा आ गया तो वह चीख़ मारेगा ﴿يليتني، يليتني﴾ रोना तो किसी का भी आदमी को दुःख देता है। किसी और का रोना भी आदमी को ग़मगीन कर देता है और जब यह ख़ुद रोएगा और फिर यह रोना इस पर नहीं कि मेरी नौकरी चली गई, मेरा बच्चा चला गया, मेरे पैसे चले गए बल्कि यह रोना इस बात पर है कि हाय वह आई दोज़ख़ मेरे सर पर तो इस वजह से कहेगा ﴿يليتني لم اوت كتبيه﴾ काश! यह मेरे हाथ में न आता। ﴿ولم ادري ما حسابية يليتها كانت قاضيه﴾ मुझ तो पता ही नहीं था कि मेरा हिसाब होना है। कहाँ चली गई मौत आ जा। तूने मुझे मार क्यों नहीं दिया? तूने मुझे उठा क्यों दिया जबकि मुझे मिट्टी बना दिया था तो मुझे मिट्टी ही रहने देता। मुझे उठा क्यों दिया? ﴿ولم ادري ما حسابيه﴾ मुझे हिसाब का पता ही नहीं था ﴿ما اغنى ماليه هلك عني سلطنيه﴾ यह सारी चीज़ों के बारे में कह रहा है कि मेरा पैसा काम न आया, मेरी दौलत काम न आई, मेरी औलाद काम न आई तो जब कोई नाकाम हो जाएगा तो अल्लाह तआला कहेगा ﴿خذوه﴾ पकड़ो तो मर्दों के मुँह के अन्दर हाथ डालकर नीचे वाला जबड़ा पकड़कर खींचेगे और यह सारा जबड़ा

बाहर निकल आएगा और नंगधड़ंग को घसीटेंगे और औरतों को सिर के बालों से पकड़कर झटका देंगे वे लुढ़कती हुई गिरेंगी और कहेंगी रहम करो रहम करो तो फ़रिश्ते कहेंगे तुम पर रहमान ने रहम नहीं किया हम कैसे रहम करें।

मेरे भाईयो और बहनो!

यह हमारा सबका एक जैसा मस्अला है अगर हम इस ग़फ़लत में मर गए तो बर्बाद हो गए। दुनिया और आख़िरत के अज़ाबों से निकलने के कुछ उसूल हैं जो अल्लाह ने हमें बताए हैं। जिन्हें ज़िन्दगियों में लाना हमारे ज़िम्मे है। अपने अन्दर भी और अपनी नस्ल के अन्दर भी।

औरत इस्लाम से पहले

औरत को अल्लाह तआला मर्द का शरीके ज़िन्दगी बनाया है। इस्लाम से पहले औरत को कोई मुक़ाम न था। यहूदियों के नज़दीक तो यह एक डायन थी डायन यानी ख़ौफ़नाक मख़्लूक़ और इसाईयों के नज़दीक बस ख़्वाहिश पूरी करने का एक सामान था और कुछ नहीं। काफ़िरों के नज़दीक औरत का यह मुक़ाम था कि पैदा होते ही दफ़न कर दो कौन इसकी मुसीबत को उठाएगा? कौन इसकी शादियाँ करेगा? कौन इसके ख़र्चे पूरे करेगा? इसलिए इसको आज ही दफ़न कर दो। पैदा होते ही दफ़न कर दिया जाता था।

एक आदमी ने कहा जो बाद में ईमान लाए और सहाबी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बन गए। कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैंने सत्तर लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न किया है, क्या मेरी बख़्शिश हो जाएगी?

इस्लाम में औरत का मुक़ाम

जब इस्लाम आया तो उसने औरत को एक मुक़ाम दिया, ज़िन्दगी का साथी बनाया। जैसे हमारी शक्लों और आज़ा की बनावट अलग है ऐसे ही हमारे दायरे भी अलग हैं और हमारी तर्तीब भी अलग है। बराबर नहीं बल्कि फ़र्क़ है।

﴿الرجال قومون على النسآء﴾ अल्लाह ने मर्द को औरत से बढ़ाया है। दुनिया के लिहाज़ से आख़िरत के लिहाज़ से नहीं। आख़िरत में बहुत सी औरतें लाखों और करोड़ों मर्दों से आगे खड़ी होंगी। यह बात दुनिया का निज़ाम चलाने के लिए है यह आख़िरत की बात नहीं।

आख़िरत में तो जो अमल ज़्यादा लेकर आएगा वही कामयाब हो जाएगा। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा को कौन सा मर्द पहुँचेगा? सिवाए चन्द लोगों के कौन है जो उनसे आगे बढ़ने का दावा करें मर्दों में से, हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को कौन पहुँचेगा? हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को कौन पहुँचेगा? हज़रत हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को कौन पहुँचेगा जिनके बारे में फ़रमाया ﴿سيدا شباب اهل الجنة الحسن و الحسين﴾ हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा जन्नत के नौजवानों के सरदार, फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जन्नत की औरतों की सरदार। यह दुनिया का निज़ाम है मर्दों को औरतों पर बढ़ौत्तरी है। निज़ाम चलाने के लिए। बाहरी ज़िन्दगी मर्द के ज़िम्मे और घर की ज़िन्दगी औरत के ज़िम्मे है।

औरत की ज़िम्मेदारी

अल्लाह तआला ने इस्लाम में औरत को एक मुक़ाम दिया है कि उसके ज़िम्मे तर्बियत लगा दी। बाप के भी ज़िम्मे है। औरत पर ख़ास तौर पर इसलिए है कि यह औलाद के ज़्यादा क़रीब होती है। और इसको घर में रखने की तर्तीब बनाई गई। इसलिए पर्दे का हुक्म उतारा गया ताकि औरत कम से कम बाहर निकले।

पर्दे का हुक्म उतारा गया और घरों में रहने की तर्ग़ीब दी गई। अब घर में बिठाकर काम क्या ज़िम्मे लगाया। शरअन तो ख़ाविन्द की रोटी बीवी के ज़िम्मे नहीं है। ख़ाविन्द के जो हक़ बीवी पर हैं उनमें रोटी पकाना शामिल नहीं, सालन पकाना शामिल नहीं, चाय पकाना शामिल नहीं, कपड़े धोना शामिल नहीं।

औरत अगर अपने ख़ाविन्द की रोटी पकाए, सालन पकाए, कपड़े धोए तो यह उसका अपने ख़ाविन्द पर एहसान है। अपने बच्चे को दूध पिलाने के लिए भी अगर औरत कहे मेरे लिए किसी औरत का इन्तिज़ाम करो मैं दूध नहीं पिला सकती तो मर्द के ज़िम्मे है कि अपने बच्चे के दूध पिलाने का इन्तिज़ाम करे।

जो चीज़ उसके ज़िम्मे नहीं है वह आज उसके घर का काम बन चुका है और जो चीज़ उसके ज़िम्मे है उसका न बीवी को पता है और न मियाँ को पता है।

जो चीज़ उसके ज़िम्मे नहीं है उसको ज़िम्मेदारी बनाकर घरों में लड़ाईयाँ हो रही हैं कि तू मेरी ख़िदमत भी कर, मेरे बाप की भी ख़िदमत कर, मेरी माँ की भी ख़िदमत कर, मेरे भाईयों की भी ख़िदमत कर। सारे घर की ख़िदमत कर तू आई ही इसी लिए है।

जो चीज़ उसके ज़िम्मे थी वे न माँ बाप ने समझा कर भेजा न ख़ावन्दि को पता है न सुसराल को पता है कि यह जोड़ा किस लिए बनाया गया है।

तो अल्लाह तआला ने इसके ऊपर से यह ज़िम्मेदारी हटाई है तो इस पर वह ज़िम्मेदारी रखी है कि पहाड़ अपनी जगह से हटाना आसान है लेकिन इस ज़िम्मेदारी को निभाना मुश्किल है जो औरत के ज़िम्मे आई है।

वह क्या है?

वह नस्ल की तर्बियत करना। औलाद की तर्बियत को मुश्किल तरीन काम उसके ज़िम्मे लगाया है और अल्लाह तआला ने औरत पर यह ज़िम्मेदारी डाली है लिहाज़ा उसके बाहर निकलने की हौसला शिकनी की है और पर्दे का हुक्म उतारा है।

पर्दे की अहमियत

अल्लाह तआला ने पूरे क़ुरआन में किसी औरत का नाम नहीं लिया सिर्फ़ हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम आया है और हज़रत मरयम का नाम भी इसलिए आया है कि अल्लाह तआला ने देखा कि लोगों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा बना दिया ।

तो अल्लाह तबारक व तआला ने इसकी सफ़ाई फ़रमाते हुए कहा ﴿ذالك عيسى ابن مريم﴾ यह मेरा बेटा नहीं है बल्कि मरयम का बेटा है। इसको अल्लाह तआला ने साफ़ किया है। उनके अलावा अल्लाह तआला ने किसी औरत का नाम ज़िक्र नहीं

किया। औरत का भाई, बाप या ख़ाविन्द के ताल्लुक़ से तो ज़िक्र किया है नाम नहीं आया। कोई अच्छी औरत थी ﴿امــــرأة فرعون﴾ की तरह कोई बुरी औरत थी ﴿امــــرأة العزيز﴾ कोई मोमिना औरत थी ﴿فاقبلت امرأته﴾ कोई काफ़िर औरत ﴿امرأة نوح وامرأة لوط﴾

अल्लाह तआला ने किसी का भी नाम नहीं लिया बल्कि ख़ाविन्द के नाम से उसको ज़िक्र किया है तो इसमें तफ़सीर के उलमा ने लिखा है कि अल्लाह तबारक व तआला को औरत का नाम ज़िक्र करना भी पसन्द नहीं है तो जब अल्लाह नाम छिपाने की तर्ग़ीब दे तो चेहरा खोलना तो किसी सूरत में जाएज़ हो ही नहीं सकता।

तो उसे हर चीज़ को छिपाने का हुक्म है। बाहर निकलना है तो पर्दे का एहतिमाम तो जो पर्देदार औरत होती है तो उसके कितने काम होते हैं जो ऐसे ही पड़े रहते हैं कि कौन निकले कौन निकले और जब निकले तो शदीद ज़रूरत से निकले, बग़ैर ज़रूरत के न निकले।

और जब निकले तो निकलने का अन्दाज़ और चाल क्या हो तो अल्लाह तआला ने एक जुमला क़ुरआन में लिख दिया जो क़यामत तक इस बात पर दलालत करता रहेगा कि अगर मुसलमान औरत को बाहर निकलना हो तो उसका तरीक़ा क्या हो?

शुएब अलैहिस्सलाम की बेटियाँ पानी पिलाकर जल्दी वापस चली गयीं। शुएब अलैहिस्सलाम ने पूछा तुम जल्दी क्यों आ गयीं? तो उन्होंने कहा एक नौजवान था उसने हमारी बकरियों को पानी पिला दिया। इसलिए जल्दी वापस आ गयीं।

एक बेटी ने कहा उसे इसकी जज़ा मिलनी चाहिए। मुसाफ़िर परदेसी लगता था। शुएब अलैहिस्सलाम ने कहा जाओ और उसे बुलाकर लाओ। अब यह लड़की हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को बुलाने के लिए आई। उसके बयान करने के लिए इतना जुमला काफ़ी था

﴿فجآءته احدٰهما فقالت ان ابی یدعوك لیجزیك ما سقیت لنا﴾

तर्जुमाः इनमें से एक आई और उसने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा मेरा बाप आपको बुलाते हैं आपको मुआवज़ा देने के लिए।

हया की तारीफ़

लेकिन अल्लाह तआला ने उसके चलने के अन्दाज़ को बयान करने के लिए तीन लफ़्ज़ बढ़ाए और यह सारा क़िस्सा इन तीन लफ़्ज़ों की वजह से ही बयान हुआ है। वे लफ़्ज़ क्या हैं?

﴿تمشی علی استحیآء، فجآءته احدٰهما﴾

उनमें से एक लड़की आई और जब वह मूसा अलैहिस्सलाम को बुलाने आई तो वह किस तरह चल कर आ रही थी।

अल्लाह तआला को इस लड़की का चलना इस क़द्र पसन्द आया और इतना अच्छा लगा कि आज भी इतने हज़ार साल बाद इसको शक्कर कोट में बयान किया जा रहा है और उसकी चाल को क़ुरआन का हिस्सा बना दिया।

कि उनमें से एक लड़की आई मूसा अलैहिस्सलाम को बुलाने के लिए और वह इस तरह चल रही थी कि जैसे ख़ुद हया चल कर आ रहा हो।

हया किसे कहते हैं? इस लड़की की चाल देख लो यह होती है हया। जैसे किसी ने पूछा था क़ुरआन कौन सा है? सामने हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु जा रहे थे तो जवाब देने वाले किताब उठाकर उन्हें नहीं बताया बल्कि हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ इशारा करके कहा यह हमारा क़ुरआन जा रहा है।

कोई अगर हया को देखना चाहे या जानना चाहे कि हया किसे कहते हैं तो वह शुएब अलैहिस्सलाम की बेटी की चाल को देख ले। उसको हया कहते हैं क्योंकि "अला" लफ़्ज़ यहाँ पर यह मतलब बता रहा है कि हया उसके लिए मुसख़्ख़र हो चुका था। हया उसके लिए सवारी बन चुका था और वह हया पर सवार होकर आप ही थी जैसे गाड़ी आपके हाथों में बंधी होती है दाएं मोड़ो मुड़ गई, बाएं मोड़ो मुड़ गई, पीछे चलाओ तो पीछे चली गई, भगाओ तो भागने लगी, आहिस्ता करो तो आहिस्ता हो गई, रोको तो रुक गई तो यह लफ़्ज़ "अला" यहाँ यह बता रहा है कि हया इस लड़की के पूरी तरह ताबे हो चुका था और वह हया पर सवार थी। कहीं जाना हो तो बाहर निकलने और जाने का तरीक़ा यह है।

विरासत में औरत का हक़

औरत को घर में बिठाया है और मुक़ाम दिया है। मैंने बताया कि पहले मुक़ाम नहीं था। इस्लाम ने मुक़ाम दिया।

पहले विरासत में लड़की का हिस्सा नहीं था। अरबों में विरासत देने का दस्तूर नहीं था और हमारे यहाँ आजकल अक्सर हिस्सा

नहीं दिया जाता जैसे ये अपनी नहीं है बल्कि बाहर से उठाकर लाए हैं या कहीं से ख़रीद कर लाए हैं।

असल में यहाँ क्योंकि मज़हब हिन्दू था और हिन्दू मज़हब में लड़की के लिए विरासत नहीं है। हम लोगों में ज़्यादातर हिन्दू से मुसलमान हुए हैं इसलिए वह आदतें हम से पूरे तौर से छूट नहीं सकीं क्योंकि पूरी तरह से मेहनत नहीं हुई। बर्रे सग़ीर (हिन्द व पाक) के ख़ित्ते में इस्लाम को दिलों में उतारने की ज़रूरत है।

अरबों के यहाँ भी यही दस्तूर था कि लड़की का कोई हिस्सा नहीं सारी जाएदाद लड़के के नाम और अल्लाह तआला ने विरासत का हुक्म उतारा है ﴿يوصيكم الله في اولادكم﴾ यह इल्म इतना अहम है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा ﴿تعلموا الفرائض فانها نصف العلم﴾ आधा इल्म विरासत का है।

हालाँकि विरासत में मर्द को औरत पर बढ़ौत्तरी हासिल है कि मर्द का हिस्सा औरत के हिस्से से ज़्यादा है लेकिन अल्लाह तआला ने जब मर्द का हक़ बताया तो औरत का पहले बताया और मर्द का बाद में बताया। औरत का हक़ साबित किया और मर्द के हक़ को क़यास किया है। ﴿للذكر مثل حظ الانثيين﴾ लड़के को मिलेगा दो लड़कियों के बराबर हालाँकि होना यह चाहिए था ﴿للانثى مثل نصف حظ الذكر﴾ यानी लड़की को मिलेगा लड़के का आधा तो फिर लड़के का हक़ असल साबित होता और उस पर लड़की को क़यास किया जाता लेकिन अल्लाह तआला ने यहाँ औरत के हक़ को साबित किया और इस पर मर्द के हक़ को अल्लाह ने क़यास किया। फ़रमाया ﴿للذكر﴾ मर्द को मिलेगा। कितना मिलेगा? ﴿مثل حظ الانثيين﴾ जितना दो लड़कियों को मिलता है

हालाँकि यहाँ इबादत भी बढ़ गई है लेकिन फिर भी अल्लाह तआला ने इसी को इख़्तियार फ़रमाया कि दो लड़कियों का हक़ तो साबित है इसके बराबर एक लड़के को दे दिया जाए तो औरत का इस्लाम ने मुक़ाम बुलन्द किया है। हज़रत लाहौरी रह० फ़रमया करते थे, "लोगों लड़कियों का हिस्सा दिया करो मैं जहन्नुम में जलता देख रहा हूँ बड़े बड़े हाजियों को, नमाज़ियों को, परहेज़गारों को जो बेटियों को हिस्सा देकर न मरे उन्हें जहन्नुम में जलता देख रहा हूँ।"

ख़ाविन्द और बीवी का हक़

दूसरी जगह ख़ाविन्द और बीवी का हक़ बताया तो फ़रमाया

﴿لهن مثل الذی علیهن بالمعروف وللرجا علیهن درجة﴾

इन औरतों को ख़ाविन्दों पर हक़ है जैसा कि ख़ाविन्दों का बीवियों पर हक़ है। मर्द के लिहाज़ से होना चाहिए था ﴿ولهم مثل الذی علیهم﴾ उन मर्दों का हक़ है औरतों पर जब कि औरतों का हक़ है मर्दों पर लेकिन यहाँ भी अल्लाह तआला ने औरत के हक़ को पहले बयान किया है बल्कि इसे साबित किया है ﴿ولهن﴾ इन औरतों का हक़ मर्दों पर, कैसा? ﴿مثل الذی علیهن﴾ जैसा कि मर्दों का हक़ है औरतों पर तो इस्लाम ने औरत को मुक़ाम दिया है, इज़्ज़त दी है और उसके हक़ तय किए हैं और उसको मर्द की ज़िन्दगी का साथी बनाया है।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

﴿واذ اسر النبی الٰی بعض ازواجه حدیثا ...تبتغی مرضات ازواجك.﴾

यहाँ अल्लाह तआला ने लफ़्ज़ "ज़ौज" इस्तेमाल किया है। ज़ौज सिर्फ़ बीवी को ही नहीं कहते। ज़ौज उसे कहते हैं जो ख़ाविन्द के साथ मिलकर ज़िन्दगी की गाड़ी चला रही है। अल्लाह तआला ने औरत को मुक़ाम बख़्शा। फिर घर में बिठाया और बहुत सी ज़िम्मेदारियाँ उस पर नहीं डालीं जो आज ज़िम्मेदरी के तौर पर समझी जा रही हैं हालाँकि वे उसके ज़िम्मे ही नहीं तो उसकी ज़िम्मेदारी क्या हैं?

शरियत के हुक्मों के लागू होने की उम्र

बच्चे को पन्द्रह साल और बच्ची को बारह साल की मोहलत दी है कि उस पर ऐसी मेहनत करो कि जब लड़की बारह साल को पहुँचे और पन्द्रह साल को लड़का पहुँचे तो पूरा पूरा अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमांबरदार बन चुका हो।

फ़ौजियों को भर्ती करके उन्हें ऐब्टाबाद के इलाक़े में ट्रेनिंग के लिए भेज देते हैं और वहाँ पर ढाई साल ट्रेनिंग होती है। तक़रीबन दो ढाई साल उनकी ट्रेनिंग करते हैं और उनकी इतनी ट्रेनिंग करते हैं कि जब वे पासिंग आउट पर आते हैं तो वे इस क़ाबिल होते हैं कि उस पर लैफ़्टीनैन्ट का फूल लगाया जा सकता है।

अल्लाह तआला हम से कह रहा है कि तेरी बेटी के लिए तुझे ग्यारह बरस देता हूँ, पन्द्रह साल तुम्हें लड़के के लिए देता हूँ क्योंकि इसके बाद शरियत उन पर फ़र्ज़ हो जाएगी। उन पर ऐसी मेहनत करो कि जब ये जवान हों और अल्लाह की शरियत उनकी तरफ़ मुतवज्जेह हो तो वे पूरे पूरे तैयार हो चुके हों अल्लाह के हर हुक्म को मानते चले जाएं और नाफ़रमानी को छोड़ते चले जाएं। इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी लगी है माँ के ज़िम्मे।

तर्बियत का निज़ाम और औलाद की परवरिश

और माँ क्योंकि बच्चों से ज़्यादा मुताल्लिक़ होती है और माँ की शफ़्क़्क़त बाप से ज़्यादा होती है। ख़ुद भूखी रहती है और बच्चों को खिलाती है, ख़ुद पियासी रहती है बच्चों को पिलाती है, ख़ुद जागती है और बच्चों को सुलाती है, बच्चों की हँसी देखने के लिए ख़ुद रोती है, बच्चों को आराम पहुँचाने के लिए ख़ुद थकती है, उनकी ज़िन्दगी बचाते बचाते ख़ुद क़ुर्बान हो जाती है, अपने बच्चों को बचाती है और अपने आपको मौत के हवाले कर देती है।

अल्लाह ने माँ के अन्दर यह सिफ़्त इसलिए रखी है ताकि बच्चों की तर्बियत हो, नस्ल परवान चढ़ सके, नस्ल परवरिश पा सके और अगर यह सिफ़्त खींचकर निकाल दे तो माँए अपने बच्चों को ख़ुद क़त्ल कर दें और अल्लाह पर क़ुर्बान जाएं कि चलो हमें तो ज़रूरत होती है कि हम बूढ़े होते हैं और कहते हैं कि औलाद हमारी ख़िदमत करेगी। परिन्दे और जानवर तो कुछ दिनों के बाद जानते भी नहीं कि यह गाय मेरी बेटी है, यह कुत्ता मेरा तो बेटा है, यह कव्वा यह अक़ाब मेरे अन्डों से निकला है। उनको पता भी नहीं होगा और ख़बर भी नहीं होती इसके बावजूद अक़ाब उड़ता है कहीं से साँप उठाता है, कहीं ख़रगोश से उठाता है, कहीं से चकोर उठाता है, कहीं से कबूतर उठाता है, कहीं से उसे पकड़ता है और उड़ता हुआ फ़िज़ाओं को चीरता हुआ लाकर अपने बच्चों के आगे रखता है और फिर काट काट कर बच्चों को खिलाता है और गाय जो है वह अपने बच्चे को चाटती है, चूमती है, थनों का दूध पिलती है और बिल्ली अपने बच्चों को मुँह में उठाकर कभी यहाँ छिपती है कभी वहाँ छिपती है। यह क्या

अल्लाह तआला का ख़ूबसूरत निज़ाम है तर्बियत और परवरिश का और चन्द दिनों के बाद इस बिल्ली को पता भी नहीं कि यह मेरे ही थनों का दूध पिए हुए हैं। उन्हीं को काटने को है। उनकी तो ज़रूरत भी नहीं लेकिन जहाँ को चलाने के लिए इन सारी चीज़ों का वजूद ज़रूरी था तो अल्लाह तआला ने परिन्दों के दिलों में भी अपने बच्चों की मुहब्बत को भर दिया और उनके अन्दर भी अल्लाह तबारक व तआला ने परवरिश का निज़ाम चला दिया।

माँ की ममता

फिर माँ तो इन्सान है तो माँ की ममता न तो बच्चे को भूखा देख सकती है न प्यासा देख सकती है न नंगा देख सकती है न बेरोज़गार देख सकती है।

कुछ दिन पहले की बात है हमारे जानने वाले हैं। अल्लाह ने उन्हें सब कुछ अता किया हुआ है। उनका बेटा बहुत पढ़ गया है और उसको पढ़ाई के हिसाब से नौकरी नहीं मिल रही है। यह नहीं कि उसे नौकरी की ज़रूरत है बल्कि सब कुछ अल्लाह ने दिया हुआ है। उसकी वालिदा मेरे पास आई और रोने लग गई कि मेरे बेटे को नौकरी नहीं मिल रही है।

अब मुझे हँसी भी आए और उनके रोने को देखकर मैं कुछ कह भी न सकूं। कह रही थीं कि आप दुआ कर दें अल्लाह तआला मेरे बेटे को नौकरी दे दे।

यह माँ की ममता है इसको यह बेक़रारी है कि मेरा बेटा इतना पढ़ा है और उसे नौकरी नहीं मिल रही और नौकरी वह ज़रूरत

की वजह से नहीं करना चाहता था क्योंकि अल्लाह ने उन्हें बहुत कुछ अता किया हुआ है तो क्या यह बस मौत तक ममता है।

अल्लाह ने मुसलमान औरत के इससे आगे भी सोच दी है कि अपने बच्चे के लिए बेक़रार हो कि यह क़ब्र के अन्धेरों से बच जाए, यह क़ब्र के साँप बिच्छुओं से बच जाए, यह क़ब्र की भूख से बच जाए।

क़ब्र में एयर कन्डीशनर

साहयूवाल की एक फेमिली है बड़े मालदार और नेक लोग हैं। एक एक्सीडेंट में उनके दो बेटे और पोते मौक़े पर हलाक हो गए। वह कहने लगे मेरा जी चाहता है कि उनकी क़ब्रों में एयर कन्डीशनर लगवाऊँ कि उन्होंने कभी ज़िन्दगी में पसीना नहीं देखा। ज़िन्दगी भर कभी सूरज की तपिश और धूप को नहीं बर्दाश्त किया तो क़ब्र में क्या होगा। कहने लगा मैं ऐसा पागल हो गया कि मेरे जी में आया कि उनकी क़ब्रों में एयर कन्डीशनर चलवाऊँ। फिर मुझे ख़्याल आया उनके किस काम का क्योंकि मौत सारा क़िस्सा ही ख़त्म करके रख देती है।

उम्मत की पहली बुनियाद कलिमा

मेरे भाईयो और बहनो!

हमारी औरत के ज़िम्मे है इन बच्चों को एक बुनियाद क़ायम करके देना। इसमें पहली चीज़ ﴿يٰبُنَىَّ لَا تُشْرِكْ بِاللهِ﴾ सूरहः लुक़मान का यह रुकू हर माँ को ज़बानी याद होना चाहिए, हर बाप को

ज़बानी याद होना चाहिए, हर पढ़ाने वाले को ज़बानी याद होना चाहिए, हर मुदर्रिस को ज़बानी याद होना चाहिए, हर टीचर को ज़बानी याद होना चाहिए कि इस उम्मत की बुनियादें क्या हैं। बस खाना और कमाना नहीं। डाक्टर बन गया, ताजिर बन गया, इन्जीनियर बन गया, सियासतदां बन गया। इन्सान कैसा होना चाहिए यह अल्लाह ने बताया है, मुसलमान कैसा होना चाहिए अल्लाह ने बताया है।

इस पर कौन मेहनत करे यह माँ बाप के ज़िम्मे है। उसको इस रंग में ढालना माँ बाप के ज़िम्मे है।

﴿يبنی لا تشرك بالله﴾

पहली चीज़

﴿لا اله الا الله﴾

अपनी औलाद को पहला सबक़ यह दो कि बेटा ﴿لا تشرك بالله﴾ नफ़ी बताई। नफ़ी (इन्कार करना) मुश्किल है और इस्बात (इक़रार) आसान है। अल्लाह खुद नज़र आने लगता है। नज़र हटाना ही मुश्किल है और जब नज़र मख़्लूक़ से हट जाती है तो फिर अल्लाह की ज़ात तक पहुँचना आसान हो जाता है।

﴿لا تشرك بالله، لا اله الا الله﴾ यह पहला सबक़ है जो औलाद को देना है कि बेटा कोई माबूद आसमान व ज़मीन में नहीं सिवाए अल्लाह के और सिर्फ़ यह माबूद की बात नहीं होती बल्कि जब "ला" का लफ़्ज़ आता तो यह काएनात की हर चीज़ का इन्कार कर देता है।

दुनिया में जो कुछ है अल्लाह के सिवा सब की नफ़ी कर देता है यह इस तरह यूँ नज़र आता है कि जिस तरह अल्लाह के हाथ में "ला" की तलवार है और अर्श के ऊपर से चलाता है तहत अल्लाह की हर चीज़ को काएनात पर चला जाता है और कहता है "ला" कुछ भी नहीं है, "ला" कुछ भी नहीं है।

रब की इकाई पर सब कुछ है

एक मिसाल देता हूँ आप कापी पर एक लिखो और ज़ीरो बढ़ाते जाओ, बढ़ाते जाओ तो ज़ीरो से अदद पहले से ज़्यादा ताक़तवर होता चला जाएगा। एक हो और साथ एक ज़ीरो बढ़ाएं तो दस हो जाएगा, अगला सौ, अगला हज़ार, अगला दस हज़ार, अगला लाख, अगला दस लाख, अगला करोड़, अगला दस करोड़, अगला अरब, अगला दस अरब, अगला खरब, अगला दस खरब। जितने ज़ीरो बढ़ते जाएंगे अदद की ताक़त बढ़ती जाएगी।

किस वजह से? इसलिए कि पीछे एक खड़ा हुआ है। एक अगर हटा दो, एक अगर मिटा दो और सारी कापी ज़ीरो से भर दो तो कोई भी अदद नहीं बनेगा और न ही कोई ताक़त होगी। और अगर एक लगा दो तो वह बहुत बड़ी रक़म बन गई। यह सारी काएनात मेरे रब की रक़म, मेरे रब की इकाई पर सब कुछ है। अगर अल्लाह की ज़ात को पीछे हटा दो तो यह सब कुछ कुछ भी नहीं है, कुछ भी नहीं।

यह पहला सबक़ है जो औलाद को देना था हमारी बदक़िस्मती है कि हम ने औलाद को यह सबक़ नहीं दिया, खुद नहीं सीखा तो

आगे क्या सिखाते। न किसी ने बताया औ सिखाया ﴿لا اله الا الله﴾ अपने बच्चे और बच्चियों को ऐसे तरीक़े पर लाओ कि उनके अन्दर से उठे ﴿لا اله الا الله﴾

चूं हों यह मुसलमान बलरज़्म
कि दानम मुश्किलात ला इलाहा

﴿لا اله الا الله﴾ वजूद को हिला दे इस तरह अपने बच्चों पर मेहनत करना कोई छोटा काम नहीं है। यह तो पागल कर देने वाली ज़िम्मेदारी है। खाना पकाना कौन सा मुश्किल है? रोटी पकाना कौन सा मुश्किल है? कपड़े धोना कौन सा मुश्किल काम है? यह काम है जो माँ कि ज़िम्मे लगा है कि इन बच्चों के दिल से सारी चीज़ों की अहमियत निकाल कर एक अल्लाह की अज़मत उनके अन्दर उतार दो। उनके अन्दर से मख़्लूक़ की अज़मत निकाल दो।

एक बच्चे का बहलोल रह० से सवाल व जवाब

बहलोल रह० बाज़ार से गुज़र रहे थे। बच्चे खेल रहे थे और एक बच्चा रो रहा था। उन्होंने समझा कि शायद इसके पास अख़रोट नहीं क्योंकि बच्चे अख़रोट से खेल रहे थे। बहलोल रह० ने उस बच्चे से कहा बेटा! तू रो नहीं मैं तुझे अख़रोट ले कर देता हूँ।

बच्चा कहने लगा बहलोल! क्या हम खेलने के लिए पैदा हुए हैं? बहलोल रह० बहुत हैरान हुए कि मैंने तो समझा था कि शायद उसके पास अख़रोट नहीं हैं इसलिए रो रहा है। उन्हें क्योंकि ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं थी इसलिए फ़रमाया बेटा! तो हम किस

चीज़ के लिए पैदा हुए हैं? वह कहने लगा हम अल्लाह की इबादत के लिए पैदा हुए हैं।

बहलोल रह० कहने लगे तेरी कोई अभी उम्र है इन बातों को सोचने की? तेरी उम्र कोई उम्र है यह बातें सोचने की? तो वह बच्चा आगे से कहने लगा बहलोल! मुझे धोखा न दे मैंने अपनी माँ को देखा है जब वह चूल्हे में आग जलाती है तो पहले छोटी छोटी लकड़ियाँ डालती है फिर बड़ी लकड़ियाँ डालती है मुझे डर है कहीं अल्लाह दोज़ख़ को पहले हम बच्चों से न जलाए। यह एक माँ की तर्बियत है ﴿لا اله الا الله﴾ और यही तबलीग़ का पहला नम्बर है जो काम तबलीग़ वाले कर रहे हैं वह काम तो अल्लाह तआला माँ बाप से कह रहा है कि अपने बच्चों को इन कामों पर तैयार करो। बाद में जो चिल्ले लगाएंगे पहले से ही इनको इस काम पर लगाओ कि फिर दुनिया में सिर्फ़ इस्लाम फैलाना रह जाए। अब तो मुसीबत पड़ी हुई है अपनों को भी संभालो और बाहर का काम भी ख़त्म हो कर रह गया है।

इस्लाम और मुसलमान और हैं

सारी दुनिया के बातिल को हम दावत नहीं दे सकते कि अपने ही नहीं संभल रहे हैं। बंगलादेश के इज्तिमा से वापस आ रहा था। मेरे साथ एक गोरा बैठा हुआ था। मेरे दिल में आया कि मैं इसको दावत दूँ फिर मुझे ख़्याल आया कि मैंने तो अंग्रेज़ी बोलना भी छोड़ दी। पच्चीस साल हो गए कभी नहीं बोला तो अब कैसे मैं बोलूं। फिर मेरे दिल में ख़्याल आया चलो अल्लाह का नाम लेकर शुरू कर दूँ क्योंकि बात करना तो मेरे ज़िम्मे है चलो बात तो

करें। मैंने उससे बात शुरू कर दी।

तक़रीबन कोई चालीस फ़ीसद लफ़्ज़ वापस आ रहे थे साठ फ़ीसद नहीं आ सके लेकिन इतना हो रहा था कि वह मेरी बात समझ रहा था और वह मेरी बातों से बहुत मुतास्सिर हुआ।

मैं उसे बयान कर रहा था कि हमारे दीन में यह ख़ूबी है, यह ख़ूबी है और चलते चलते कहीं मेरे मुँह से यह निकल गया कि इस्लाम में शराब हराम है।

तो वह बड़ा ताजिर था पूरी दुनिया में फिर चुका था। वह कहने लगा शराब हराम है?

मैंने कहा हाँ।

कहने लगा मैं सारी दुनिया में फिरता हूँ और सबसे बेहतरीन शराब मुझे कराची में मिलती है और कराची जैसी शराब मुझे आज तक यूरोप में भी कहीं नहीं मिली।

चल भाई मेरी सारी तबलीग़ वहीं चुप हो गई।

आप यक़ीन जानें वह बहुत असर ले चुका था लेकिन सिर्फ़ एक लफ़्ज़ पर सारी कहानी पलटा खा गई कि मुझे तो सबसे अच्छी शराब कराची में मिलती है।

फिर मैंने कहा इस्लाम और चीज़ है मुसलमान और चीज़ है। एक ज़माना था जब इस्लाम और मुसलमान एक ही चीज़ थी। आज तुम मुसलमान को मत देखो बल्कि इस्लाम देखो बस तुम ऐसा करो क़ुरआन ले लो और उसका तर्जुमा पढ़ो फिर अल्लाह से दुआ करो अल्लाह जो हक़ है वह मुझ पर खोल दे। कभी अल्लाह चाहेगा तो तुम पर वाज़ेह कद देगा।

इसलिए हमारे बड़े कहते हैं कि अभी ग़ैर-मुस्लिमों को दावत मत दो बल्कि पहले घर साफ़ करो क्योंकि घर साफ़ करके ही मेहमान बुलाए जाते हैं। घर में गंदगी का ढेर पड़ा हो तो मेहमान कौन बुलाता है। पहले घर तो साफ़ करो फिर मेहमान बुलाओ। हमारा सारा घर गन्दा हुआ है। हम अपनों से मार खाए पड़े हैं। अपनों से शर्मिन्दा हैं। तो *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* पहली बुनियाद है जो माँ बाप के ज़िम्मे है और यही हम तबलीग़ में सीखते सिखाते हैं।

दूसरी बुनियाद आख़िरत का तसव्वुर

दूसरी चीज़ है

انها ان تك مثقال حبة من خردل فتكن فى صخرة
او فى السمٰوٰت اوفى الارض يات بها الله.

उनके अन्दर आख़िरत का तसव्वुर पैदा करना। उनके अन्दर जज़ा व सज़ा का यक़ीन पैदा करना। उनके अन्दर अल्लाह के सामने खड़े होने की अहमियत को बयान करना। ऐ मेरे बेटे एक राई के दाने के बराबर अगर तूने नेकी की या गुनाह किया, छिप कर किया पहाड़ों के अन्दर, ज़मीन के अन्दर, हवाओं के अन्दर तो भी तुझे तेरा अल्लाह देखता है और तुझे भी एक दिन दिखा देगा। फ़िक्रे आख़िरत और तसव्वुरे आख़िरत, हिसाब व किताब का यक़ीन और अल्लाह तआला के सामने खड़े होने का यक़ीन और जन्नत व जहन्नुम उनके सामने लाना माँ बाप की दूसरी ज़िम्मेदारी है।

इल्म की ज़रूरत

अब हमारी ग़फ़लत का हाल यह है कि हम आख़िरत बयान ही नहीं करते। आख़िरत सुनते ही नहीं बताएंगे क्या? उन्हें तो ख़ुद पता नहीं तो यहाँ आकर ज़रूरत पड़ती है कि इल्म को सिखाया जाए जिसकी रोशनी में बच्चों को जन्नत बताई जाए। जहन्नुम बताई जाए, आमाल बताए जाएं, गुनाह बताए जाएं, नाफ़रमानी बताई जाए, अच्छाई बताई जाए ताकि उनके अन्दर ख़ैर व शर की तमीज़ पैदा हो और अल्लाह तआला के सामने खड़े होने का एहसास उनके अन्दर पैदा हो।

अगर हम ने ये चीज़े उन्हें नहीं दीं तो फिर उनके अन्दर पैसे का एहसास पैदा हो जाएगा। फिर वे नेकियाँ लुटाएंगे और पैसा कमाएंगे।

और अगर हम ने उनके अन्दर यह एहसास पैदा कर दिया तो फिर नेकियाँ कमाएंगे और पैसा लुटाएंगे।

दुनिया को बेच देंगे और आख़िरत को बचा लेंगे और अगर दीन न सिखाया तो आख़िरत बेच देंगे और दुनिया बचा लेंगे और मौत पर दुनिया भी हार जाएंगे और आख़िरत तो पहले ही हार चुके थे। ख़ाली हाथ क़यामत के दिन उठाए जाएंगे।

माँ बच्चे को यहाँ देखकर तड़प जाती है लेकिन जब बच्चे पर क़यामत के दिन प्यास पड़ेगी तो उस वक़्त माँओं का क्या हाल होगा?

बच्चे के पुराने कपड़े देखकर माँ रोने लग जाती है जिस दिन अल्लाह उन्हें नंगा करके दोज़ख़ का लिबास पहना देगा तो उस

वक़्त उनका क्या हाल होगा?

बच्चा स्कूल से देर से आए तो माँ परेशान हो जाती है और कहती है हाय! हाय! इतनी देर हो गई तूने खाना नहीं खाया होगा और जल्दी से खाना गर्म करके उसे खिलाती है और जिस दिन अल्लाह भूख डाल देगा तो उस वक़्त माँओं का क्या हाल होगा?

इस लिए मेरे भाईयो और बहनो! इस उम्मत की हर माँ के ज़िम्मे है कि अपने बच्चे के दिल में आख़िरत उतार दे और रासिख़ कर दे।

तीसरी बुनियाद नमाज़

तीसरी चीज़ क्या है? ﴿يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ﴾ बेटा! नमाज़ पढ़। मेरी बच्ची नमाज़ पढ़।

नमाज़ पर लेकर आना तो ऐसा है जैसा कि अपने बच्चों को मालदार बना देना। जिस बच्चे और बच्ची को नमाज़ की आदत पड़ गई और नमाज़ की हक़ीक़त के साथ नमाज़ को अदा करने वाले बन गए। सिर्फ़ इतना न हो कि नमाज़ पढ़ ली तो बस शुक्र बल्कि यह देखें कि ये कैसी नमाज़ पढ़ते हैं? उनका रुकू कैसा है? उनका सज्दा कैसा है? अगर हमने उन्हें बचपन में ऐसी नमाज़ सिखा दी कि जिसके बाद उन्हें दुआ मांगना नसीब हो गया तो हमारी मुश्किल आसान हो गई।

हम यह समझते हैं कि पैसा इकट्ठा करके बच्चों को मालदार बना दो उनका आने वाला वक़्त बन गया। यह बात उन्हें मालदार नहीं बना देगी बल्कि बच्चों को दुआ वाला बनाओ। नमाज़ वाला

बनाओ तो उनका आइन्दा आने वाला वक़्त बन गया। यह तीसरी चीज़ है जिस पर अल्लाह तबारक व तआला फ़रमा रहे हैं कि अपनी नस्ल को ले कर आओ कि ﴿اقم الصلوٰة﴾ नमाज़ पढ़ो कि कोई बे नमाज़ी न रहे।

चौथी बुनियाद दावत व तबलीग़

चौथी चीज़

﴿وامر بالمعروف وانه عن المنكر﴾

बेटे भलाईयों का हुक्म कर और बुराईयों से रोक यानी तबलीग़ कर। लोग यह समझते हैं कि तबलीग़ करना तबलीग़ वालों का काम है और तबलीग़ी जमात वालों ने चक्कर चला दिया है कि निकलो! निकलो।

मैं आपको सूरहः लुक़मान से बता रहा हूँ कि अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि अपने बच्चों को इस तरह तैयार करो कि जब वे बालिग़ हों तो वे तबलीग़ के सारे उसूल व आदाब जान चुके हों और उन्हें पूरे आलम में इस्लाम फैलाना आता हो।

﴿وامر بالمعروف وانه عن المنكر﴾

यह चौथी बुनियाद है कि भलाई फैलाओ और बुराई मिटाओ। जो हुक्म अल्लाह तआला ने पूरी उम्मत के ज़िम्मे लगाया है ﴿تامرون بالمعروف وتنهون عن المنكر﴾ इस काम के लिए अल्लाह तआला माँ बाप को कह रहा है कि अपने बच्चों को तैयार करो, अपनी बच्ची को तैयार कर दो कि अल्लाह के हुक्मों को फैलाने वाली हो और अल्लाह की नाफ़रमानी से बचाने वाली हो।

अल्लाह के हुक्मों को ज़िन्दा करने वाला हो और अल्लाह की नाफ़रमानी से रोकने वाला हो तो मालूम हुआ तबलीग़ की बात तबलीग़ वाले नहीं बल्कि अल्लाह कर रहा है और अपनी नस्ल को इस बात पर तैयार करना और अपने बच्चों को इस पर तैयार करना कि अल्लाह के दीन के लिए फिरें।

हज़रत सुफ़ियान सूरी रह० की तर्बियत और वालिदा

हज़रत सुफ़ियान सूरी रह० अपनी वालिदा से कहने लगे मुझे अल्लाह के नाम पर वक़्फ़ कर दो और वक़्फ़ का मस्अला और हुक्म यह है कि जो चीज़ एक दफ़ा वक़्फ़ कर दी जाए उसे वापस नहीं किया जा सकता। माँ ने कहा चलो जाओ तुझे मैंने वक़्फ़ कर दिया। हज़रत सुफ़ियान सूरी रह० घर से जो निकले तो उन्नीस साल के बाद वापस आए। उन्नीस साल के बाद।

भाई हम तो उन्नीस साल के लिए तश्कील ही नहीं करते। हमारी तो लम्बी से लम्बी तश्कील एक साल की होती है। पहले डेढ़ साल की थी फिर हमारे हज़रात ने एक साल की कर दी। सात महीने, चार महीने, चालीस दिन तो वह वापस आए उन्नीस साल के बाद रात को घर पहुँचे दरवाज़े पर दस्तक दी तो अन्दर से माँ ने पूछा कौन हो? उन्होंने कहा आपका बेटा सुफ़ियान हूँ।

जिस माँ को उन्नीस साल के बाद बच्चे की आवाज़ सुनाई दे उस माँ की खुशी का क्या हाल होगा? कैसी बेक़रारियाँ होंगी? कैसी तड़प होगी? बच्चे को मिलने और देखने की लेकिन उस माँ

ने अन्दर से जवाब दिया बेटा मैं तो तुझे अल्लाह के नाम पर वक़्फ़ कर चुकी हूँ और जो चीज़ वक़्फ़ कर दी जाए उसे वापस लेना बड़ी बेग़ैरती है तू यहीं से वापस चला जा और क़यामत के दिन तुझ से मुलाक़ात करूंगी। इससे पहले नहीं मिलूंगी।

अल्लाह-अकबर! क्या माँएं थीं, कितनी अज़ीम माँएं थीं। तो सुफ़ियान सूरी रह० के लिए माँ ने दरवाज़ा नहीं खोला और कहा मैं वक़्फ़ कर चुकी हूँ। अब वापस नहीं लूँगी बल्कि क़यामत के दिन वापस लूंगी।

फिर सुफ़ियान सूरी रह० क्या बना? अबू जाफ़र मन्सूर के कुछ ज़ुल्मों के ख़िलाफ़ उन्होंने फ़त्वा दिया और उसने कहा मैं आ रहा हूँ और उनके लिए फाँसी का फंदा तैयार किया जाए और मेरे आने पर उन्हें सूली पर लटका दिया जाएगा।

यह हतीम में लेटे हुए थे जो बैतुल्लाह के आगे छोटी सी दीवार है। उसके अन्दर और फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० की गोद में सिर रखा हुआ था। सुफ़ियान बिन ऐनिया रह० आए और कहने लगे, सुफ़ियान! जान बचाओ और भाग जाओ। यह कहने लगे क्यों? कहा तेरे बारे में अबू जाफ़र मन्सूर बादशाहे वक़्त ने आर्डर पास कर दिया है कि उसे पकड़ा जाए और मेरे आने पर उसे सूली पर लटका दिया जाए। कहा वाक़ई उसने यह कह दिया है?

कहा, हाँ तो यह वहाँ से उठे भागे नहीं बल्कि सीधे मुलतज़िम पर गए और उसे पकड़कर कहा या अल्लाह! अगर तूने मन्सूर को मक्के में दाख़िल कर दिया तो दोस्ती बाक़ी नहीं रहेगी। जो लोग अल्लाह पर क़सम खाएं और अल्लाह पूरी कर दे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत में ऐसे लोग आते रहेंगे

जो अल्लाह पर अगर क़सम उठाएंगे तो अल्लाह उनकी क़सम को कभी नहीं टालेगा।

अबू जाफ़र मन्सूर ने ताएफ़ का पहाड़ पार किया और कुछ क़दम भी नहीं चल सका था कि वहीं गिर कर मर गया। आज उसकी क़ब्र का निशान तक बाक़ी नहीं है। हरम की हदों में दाख़िल नहीं हो सका।

दावत व तबलीग़ हमारी तरफ़ से यह काम नहीं आ रहा बल्कि यह तो अल्लाह माँओं से कह रहा है कि अपनी बेटी को तैयार कर ﴿وامر بالمعروف وانه عن المنكر﴾ अपने बेटे को इस काम पर तैयार कर। आप देखते नहीं एक कान में अज़ान और दूसरे कान में इक़ामत कही जाती है। अज़ान भी दावत है और इक़ामत भी है। गोया हम अपने बेटे और बेटी के पैदा होते ही उसको यह बताते हैं कि यह तेरा पैग़ाम है जो तूने दुनिया में देना है।

हिम्मत करो

जैसे बच्चे जब पढ़ते हैं थक जाते हैं तो माँ कहती है शाबाश! थोड़े दिन हैं कि पास हो जाओगे हिम्मत करो। थोड़े दिनों की बात है हिम्मत करो तो पास हो जाओगे तो अल्लाह तआला माँओं और बाप से कह रहा है कि उन्हें तैयार करो। उन्हें तैयार करो।

﴿واصبر على ما اصابك﴾ जो हुई पी जाओ, सह जाओ, मैदान न छोड़ो, हुक्म न तोड़ो, शरियत न छोड़ो, हालात से समझौता न करो बल्कि शरीयत से समझौता करो।

सिखाए किसने इस्माईल अलैहिस्सलाम को बेटेपन के आदाब

शायद छः सात साल की उम्र होगी इस्माईल अलैहिस्सलाम की जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम उन्हें ज़िब्ह करने के लिए आए थे। पहले छोड़कर गए तो इस्माईल अलैहिस्सलाम को पता ही नहीं। एक साल के बाद आए मिलने के लिए तो इस्माईल अलैहिस्सलाम एक साल के थे तो उन्हें पता ही नहीं कि कौन हैं और कौन नहीं। इसके बाद जो आए हैं तो ज़िब्ह करने के लिए आए हैं और यह उम्र है।

﴿فلما بلغ معه السعی، بلغ .معه.السعی﴾ जब दौड़ने भागने लगे तो पाँच छः साल के बच्चे को दौड़ना भागना ख़ूब होता है। शायद छः, सात या आठ बरस की उम्र होगी जब ज़िब्ह होने को तैयार हैं तो मीना की वादी में खड़े हैं और इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़रमा रहे हैं ﴿انی اری فی المنام انی اذبحک﴾ मैंने ख़्वाब देखा है मैं तुझे ज़िब्ह कर रहा हूँ ﴿فانظر ما ذاتری﴾ तेरी राय क्या है? तो उस वक़्त हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की जो उम्र है उसके लिहाज़ से चाहिए यह था कि वे कहते, "अब्बा जी मुझे क्यों ज़िब्ह करते हो? मेरा क्या क़ुसूर है? ख़्वाब आपने देखा और ज़िब्ह मुझे करो क्यों? मुझे क्यों मारते हो?

इस छः सात बरस की उम्र तक पहुँचते पहुँचते माँ ने इस्माईल अलैहिस्सलाम की ऐसी तर्बियत की है क्योंकि इस्माईल अलैहिस्सलाम को बाप की तर्बियत नहीं मिली है सिर्फ़ माँ की तर्बियत मिली है तो वह इस उम्र में कहते हैं:

﴿يابت افعل ما تؤمر ستجدني ان شآء الله من الصابرين﴾

तर्जुमाः अब्बा जी! आप करो जो अल्लाह ने आपको कहा है, आप देखोगे मैं सब्र करूंगा।

इतनी बड़ी बात अपने ऊपर ले रहा है। छः सात साल का बच्चा इस उम्र में।

﴿واصبر على ما اصابك﴾ जो अल्लाह की तरफ़ से हुक्म आए सह जा, पी जा अमल कर रहे हैं। एक तो यह कि हुक्म पूरा कर दो बल्कि उससे भी आगे इस्माईल अलैहिस्सलाम का हौसला देखो कि बच्चा इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कह रहा है अब्बा जी! आप अपनी आँख पर पट्टी बांध लो कहीं मुझे ज़िब्ह करते हुए आप का दिल नरम न हो जाए और मेरे हाथ पाँव बाँध दो कहीं हरकत की वजह से आपको चोट न लग जाए और मुझे उल्टा लिटाकर छुरी चलाओ कहीं आँखों से आँखें मिलें और आपका दिल डोल जाए, हाथ काँप जाएं और हुक्म टूट जाए। यह छः सात साल का बच्चा इब्राहीम अलैहिस्सलाम जैसी हस्ती को नसीहत कर रहा है।

वह क्या मन्ज़र था जब इस्माईल अलैहिस्सलाम के हाथ पाँव बांधे जा रहे हैं और उनको लिटाया जा रहे है बकरी की तरह ज़िब्ह करने के लिए और पता है कि यह बच्चा कब मिला है?

चौरास्सी साल की उम्र में यह बेटा मिला है। चौरास्सी साल की उम्र में अगर इब्राहीम अलैहिस्सलाम की शादी बीस साल की उम्र में हुई हो अन्दाज़ा ही है इससे पहले और क्या हुई होगी तो चाँसठ साल दुआ करते रहे। उसके बाद बेटा मिला और खुद नव्वे

बरस के हो चुके हैं और नव्वे बरस की उम्र में अल्लाह उन्हें हुक्म दे रहा है कि अपने बेटे की गर्दन पर छुरी चला दे।

जब इनको लिटाया और छुरी निकाली तो आसमान के फ़रिश्तों को भी सन्नाटा तारी हो गया। मीना की वादी में भी एकदम सन्नाटा छा गया कि यह क्या हो रहा है कि अभी छुरी चल जाएगी। फ़रिश्तों को तो नहीं पता कि छुरी नहीं चलनी है यह तो अल्लाह ही को पता था कि मैंने चलने नहीं देनी है बाक़ी तो किसी को भी इल्म नहीं, न इब्राहीम अलैहिस्सलाम को पता है कि यह नहीं चलनी, न इस्माईल अलैहिस्सलाम को पता है कि यह नहीं चलनी। वह गर्दन देकर पड़े हैं कि अब्बा जी छुरी चला दो।

वाह! वाह! क्या तर्बियत है? यह ज़िम्मेदारी माँओं की है कि सब कुछ लगा दें लेकिन अपने बच्चे को अल्लाह के हुक्मों पर मर मिटने के लिए तैयार कर दें।

छुरी चलाई लेकिन अल्लाह ने छुरी से काटने की ताक़त हटा दी। यह नहीं कि छुरी नरम हो गई और गर्दन सख़्त हो गई।

अब कौन काटे। छुरी चाहे फ़िरऔन के हाथ में हो या ख़लील के हाथ में हो। अल्लाह काटने का हुक्म वापस ले ले तो न ख़लील का हाथ काम कर सकता है और न फ़िरऔन का हाथ काम कर सकता है। फ़िरऔन की छुरी औरों पर तो चल गई लेकिन मूसा अलैहिस्सलाम की गर्दन पर न चल सकी। ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम की छुरी छतरे पर तो चल गई, दुंबे पर तो चल गई लेकिन हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पर नहीं चल सकी। निशान भी नहीं डाल सकी। रगड़ते रगड़ते तंग आ गए, नहीं चली, फिर गुस्से से उठे और पत्थर पर तेज़ किया।

वाह! वाह! क्या बेटा और क्या बाप (की शान है) फिर आए जोश में तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया बस!

﴾قد صدقت الرؤيا انا كذالك نجزى المحسنين.﴿

हम ने देख लिया। तुम बाप बेटे पास हो गए हो, पास। ये असल पास होने वाले।

ईमान, आख़िरत, नमाज़, दावत, सब्र यही तो तबलीग़ के छः नम्बर हैं।

अख़्लाक़ की अहमियत

छठी चीज़ अख़्लाक़ है जिस पर औलाद को तैयार करना है और अख़्लाक़ इस्लाम का बहुत मुश्किल सबक़ है और अल्लाह ने उसे सबसे आख़िर में रखा है और क़ुरआन में उसे सबसे ज़्यादा जगह दी है।

﴾لا تشرك بالله﴿ एक जुमला है,

﴾اقم الصلوٰة﴿ एक जुमला है,

तबलीग़ के लिए दो लफ़्ज़ हैं ﴾وامر بالمعروف وانه عن المنكر﴿ सब्र को एक लफ़्ज़ ﴾واصبر علىٰ ما اصابك﴿

अख़्लाक़ की तालीम के लिए छः जुमले है ﴾لا تصعر خدك للناس﴿ बदतमीज़ होकर बात मत किया कर, ﴾ولا تمش فى الارض مرحا﴿ अकड़ कर मत चला कर, ﴾ان الله لا يحب كل مختال فخور﴿ तकब्बुर वाले अल्लाह को पसन्द नहीं, ﴾واقصد فى مشيك﴿ चलने में मियाना चाल रखाकर, ﴾ان انكر الاصوات لصوت الحمير﴿ सबसे बुरी आवाज़ गधे की है जो ऊँची ऊँची बोलता है। छः जुमले बयान किए

अख़्लाक़ बनाने के लिए, अख़्लाक़ बताने के लिए।

सुकून अख़्लाक़ में है

मेरे भाईयो और बहनो!

घर बेटी को सोने और चाँदी से लाद कर रवाना करने से नहीं चलता और डाक्टर, इन्जीनियर और मील मालिक बनाने से घर नहीं चलता। मियाँ बीवी का घर अच्छे अख़्लाक़ से चलता है। अख़्लाक़ अच्छे हों तो घर आबाद होते हैं चाहे झोपड़ी में हों और अगर अख़्लाक़ बिगड़ जाएं तो घर बर्बाद हो जाते हैं चाहे संगमरमर के घर बने हों।

अख़्लाक़ अच्छे हों तो घर में रोशनियाँ हैं चाहे चिराग़ भी न जलता हो। अख़्लाक़ बुरे हों तो घर में अन्धेरा है चाहे दिन रात में बिजलियाँ चमक रही हों और क़ुमक़ुमे जल रहे हों।

अगर अख़्लाक़ अच्छे हों तो काँटों की सेज भी फूल बन जाती है और अख़्लाक़ बिगड़े हुए हों तो नरम व नाज़ुक गद्दे भी कांटे और झाड़ियाँ बन जाते हैं।

अख़्लाक़ के सही होने पर रूखी रोटी भी पराँठा बन जाती है और बदअख़्लाक़ के लिए अगर दुनिया की सारी लज़्ज़तों को भी चुनकर दस्तरख़्वान पर रख दिया जाए तो भी वे अंगारे बन जाते हैं। ज़िन्दगी का वजूद अख़्लाक़ पर है। ज़िन्दगी का वजूद चीज़ों पर नहीं, कपड़ों पर नहीं, ज़ेवर पर नहीं, डिग्रियों पर नहीं, ओहदों पर नहीं, बड़े बड़े घरों पर नहीं बल्कि ज़िन्दगी का बसेरा अच्छे अख़्लाक़ से होता है।

दिल की बनावट का ज़ेवर

हमारी माँएं कहती हैं मैंने बच्ची को सब कुछ बना दिया है अब उसकी शादी करनी है। सब कुछ तैयार कर दिया है और माँ बाप कहते हैं कि हमारा बेटा कमाने वाला हो गया है। अब मैंने शादी करना है। इसका सब कुछ तैयार है।

अल्लाह तआला यह कह रहा है इसको अख़्लाक़ भी सिखाए या नहीं सिखाए। शादी जो कर रहे हो। हाथ का ज़ेवर भी दे दिया, कान का ज़ेवर भी दे दिया, माथे का ज़ेवर भी दे दिया, गले का ज़ेवर भी दे दिया है, कपड़े भी दे दिए और सब सारे सेट भी दे दिये। उसको जिस्म की बनावट का हर सामान दे दिया। अल्लाह यूँ पूछ रहा है उसको दिल की बनावट का ज़ेवर भी दे दिया या नहीं दिया अगर लड़की को कोई ख़ाली हाथ रुख़्सत कर दे हालाँकि ग़रीब ग़रीब माँ बाप भी ख़ाली हाथ रुख़्सत नहीं करते और कहते हैं डोली कैसी निकलेगी अगर दिल का ज़ेवर नहीं पहनाया तो बेटी ख़ाली हाथ जा रही है चाहे सिर से पैर तक लदी हुई हो।

अगर बेटे को दिल का ज़ेवर नहीं पहनाया तो वह ख़ाली हाथ है चाहे दस मीलें तुम ने उसके नाम कर दीं और उसे पाकिस्तान का सदर बना दिया गया है तो भी यह ज़ालिम ख़ाली हाथ है और उसके पास कुछ भी नहीं है।

मेरे भाईयो और बहनो! बदअख़्लाक़ी ने घरों को आग लगा दी है न लड़की को पता है कि मेरी हदें क्या हैं न लड़के को पता है कि मेरी हदें क्या हैं? अपनी अपनी ख़्वाहिश की ग़ुलामी है।

ख़्वाहिशें टकराती हैं और लोग शादियाँ करके ज़्यादा परेशान हो जाते हैं। ज़्यादा मुसीबतें शुरू हो जाती हैं क्योंकि अख़्लाक़ नहीं सीखे, माफ़ करना नहीं आता, दरगुज़र करना नहीं आता, मीठा बोल नहीं आता, कड़वी सुनकर चुप रहना नहीं आता, बेइज़्ज़ती बर्दाश्त करके ख़ामोश रहना नहीं आता। यह ज़ेवर औलाद को नहीं दिया जाता इसलिए ज़िन्दगियाँ टकराती हैं और नफ़रतें बढ़ना शुरू हो जाती हैं। उन्हें अख़्लाक़ सिखाओ जो ज़िन्दगी का आख़िरी और मुश्किल सबक़ है।

ज़िन्दगी और अख़्लाक़

﴿لا تصعر خدك للناس﴾ मामला अच्छा करो। हमारी मिलने जुलने होने, उठने बैठने में तवाज़े हो, आजज़ि हो, हमारे बोल में मुहब्बत हो, मिठास हो।

देखा ना! माँ बच्ची को पालते पालते पन्द्रह बीस साल उसके नख़रे बर्दाश्त करके अल्लाह पर भरोसा करके लोगों के हाथ में पकड़ा देती है। कल तो किसी ने नहीं देखी है, कल का तसव्वुर तो किसी के पास नहीं है। आज़कल इतना देखते हैं कि कमाऊ लड़का है, पैसे वाला है, अच्छा है। ग़रीब से ग़रीब आदमी कहता है कि मेरी बेटी मुझ से अच्छे घराने में चली जाए। देखने में जो डाक्टर नज़र आ रहा है, ताजिर नज़र आ रहा है, इन्जीनियर नज़र आ रहा है, दुकानदार नज़र आ रहा है, मालदार नज़र आ रहा है, अफ़सर नज़र आ रहा है वह देखने में इन्सान है और अन्दर से शैतान है न उसका बोल ठीक है, न उसकी नज़र ठीक है, न उसकी बातचीत ठीक है, न उसका किरदार ठीक है, न उसके अख़्लाक़

ठीक है। वह ऐसे मसल कर रख देता है जैसे कली को मसल कर फेंक दिया। ज़िन्दगी क़दम क़दम पर सिसकती है। दोनों का यही मामला है।

बेटी को ज़ेवर से लाद दिया अख़्लाक़ नहीं दिया, मीठा बोल नहीं दिया तो उसने अगले घर में जाते ही आग लगा दी कि अलग कर दो। अब तू किसी का नहीं सिर्फ़ मेरा है। सारे घर में आग लग गई।

ज़ेवर तो दिया मगर अख़्लाक़ नहीं दिया, पैसा तो दिया मगर अख़्लाक़ नहीं दिया, फ्रिज तो दिया लेकिन अख़्लाक़ नहीं दिया, बैडरूम का सामान तो दे दिया अख़्लाक़ नहीं दिया, सवारियाँ तो दीं लेकिन अख़्लाक़ नहीं दिया तो जाते ही घर में आग लग गई।

इस लिए मेरे भाईयों और बहनो!

यह मुश्किल तरीन सबक़ था जो अल्लाह तआला ने आख़िर में रखा है अख़लाक़ से ज़िन्दगी गुज़रती है शक्लों से ज़िन्दगी नहीं गुज़रती।

माँ-बाप और बच्चों की वादी

और ख़ासतौर से आजकल का माहौल है कि आज की नस्ल न बाप के साथ बैठती है और न माँ के साथ बैठती है। स्कूल वी०आई०पी० है। उनको तो यह पता ही नहीं होता कि ज़िन्दगी किस चीज़ का नाम है? लोग हमें ताने देते हैं कि बीवी बच्चों को छोड़कर चले जाते हैं। मैं कहता हूँ जो अपने बीवी बच्चों के साथ रहते हैं वे उनसे उतना ही दूर हैं जितना हम दूर हैं। बच्चे स्कूल को गए, मियाँ दफ़्तर को गए, दुकान को गए। जब बच्चे

वापस आए तो औरतें घर के काम जो बेकार में काम बने हुए हैं उनमें लगी रहती हैं। बच्चे वापस आए तो उन्हें खाना खिला दिया फिर किसी को ट्यूशन वाले न पकड़ लिया, किसी खेल ने पकड़ लिया। कोई ट्यूशन चला गया और कोई खेलने चला गया, कोई सो गया तो माँ बेटे की आपस में कोई बातचीत नहीं हुई। शाम हुई तो टेलीवीज़न खुल गया। बाप बाहर से थका हुआ आया वह भी टेलीवीज़न के सामने बैठ गया, माँ भी बैठ गई, बच्चे भी बैठ गए। कोई इज्तिमाई मीटिंग और माँ बाप का आपस में मिल बैठना नहीं है। माँ बाप अपनी वादी में और बच्चे अपनी वादी में।

कारोबारी उलझनें

आजकल कारोबारी उलझनें ऐसी हैं कि अक्सर कारोबार उधार पर लेते हैं और उधार पर ही देते हैं और जिसने उधार लेना और देना हो वह घर में रहकर भी ग़ैर हाज़िर होता है क्योंकि उसका दिल व दिमाग़ हाज़िर नहीं होता बल्कि उसके अन्दर में बखेड़े चल रहे होते हैं कि फ़लाँ को देना है, फ़लाँ से लेना है। न उसे बच्चे अच्छे लगते हैं और न बीवी अच्छी लगती है क्योंकि वह अपनी हैसियत से बढ़कर कारोबार कर रहा है।

अपनी चादर से बाहर क़दम रखा हुआ है। काम का निज़ाम उधार पर चल पड़ा है। इधर लेने वाले तंग कर रहे हैं और यह अगलों को तंग कर रहा है और यह बीच में लटका हुआ है तो इसके दिमाग़ को तो इतनी फ़ुर्सत नहीं कि वह बैठकर बच्चों को

अख़्लाक़ समझाए, कुछ मौत की तैयारी की बात बताए, कुछ ईमान की बात बताए, कुछ जन्नत की बात बताए, कुछ जहन्नुम की बात बताए।

माँ-बाप और बच्चों में दूरी

और माँ सुबह से लेकर शाम तक ग़ैरज़रूरी कामों में लगकर थक चुकी है उसने बस रोटी खिलानी है और कपड़े पहनाने में रात हो गई तो वे इधर सोए और वह उधर सोए।

और जो ज़्यादा मालदार हो गए हैं उनके बच्चों के कमरे अलग हैं बच्चा अपनी माँ से कहता है कि तू बग़ैर पूछे मेरे कमरे में कैसे आ गई, मुझे डिस्टर्ब कर दिया यह हो रहा है तो एक घर में रहते हुए माँ बाप बच्चों से दूर हैं और बच्चे माँ बाप से दूर है तो जब वह बड़े होकर आँखें दिखाते हैं तो कहते हैं यह तो बड़े नाफ़रमान हैं हमारी मानते ही नहीं।

तुमने उन्हें मानना सिखाया कब था। उन्हें कब सिखाया था उनके साथ कब बैठे थे? आप ज़रा मेरी इस बात पर कि किस तरह हम एक घर में रहकर अपने बच्चों से दूर हैं, कभी एक घन्टा बच्चों के साथ सिर्फ़ इसलिए बैठे हों कि आज मैंने उनसे आख़िरत के बारे में बात करना है, आज मैंने उन्हें अख़्लाक़ सिखाने हैं, आज उन्हें उनकी ज़िम्मेदारी बताना है। वक़्त ही नहीं फ़ुर्सत ही नहीं भाग रहे, भाग रहे।

हम तो चलो चिल्ले में हैं और घर से दूर हैं और जो अपने घरों में रह रहे हैं कोहाट में रह रहे हैं वे अपने बच्चों से इतना दूर हैं।

औलाद को तर्बियत देने से बढ़कर कोई बन्दगी नहीं, नफ़्लों से वज़नी है। बच्चे की तर्बियत के लिए नफ़्लें छोड़ो।

ये कुछ बुनियादें हैं जिस पर ज़िन्दगी आबाद होती है, ईमानियात हैं, आख़िरत है, नमाज़ है, तबलीग़ है, सब्र है और अच्छी अख़्लाक़ हैं। इन सिफ़ात वाले को कहते हैं मुसलमान मर्द और सिफ़ात वाली को कहते हैं मुसलमान औरत, मुसलमान बेटी, मुसलमान लड़की, मुसलमान बीवी, मुसलमान माँ।

तबलीग़ भी इन्हीं सिफ़ात को ज़िन्दा करने की मेहनत है। यह वही छः नम्बर हैं जो तबलीग़ वाले बयान कर रहे हैं। वह यह सूरहः लुक़मान बयान कर रही है तो भाई! इस पर अपने समाज को लाएं ताकि आख़िरत की पकड़ से बच सकें और अल्लाह के ग़ज़ब से बचें और जल्दी हम में से हर एक ने अल्लाह के सामने खड़े होकर अपनी ज़िन्दगी का हिसाब देना है तो हम मरने से पहले पहले अपनी औलाद को इस तरह तैयार करके मरें कि वे हमारे मरने के बाद हमारे लिए आख़िरत का सामान बनें और आख़िरत के सफ़र का सामान बढ़ने का ज़रिया बनें न कि घटने का ज़रिया बनें।

ईसाले सवाब हक़ है

एक बुज़ुर्ग मतरफ़ बिन शख़ीर रह० फ़रमाते हैं कि मैंने एक रात ख़्वाब में देखा कि एक क़ब्रिस्तान है और लोग कुछ चीज़े चुनने में मसरूफ़ हैं लेकिन एक बुज़ुर्ग और बूढ़ा अलैहिदा होकर बैठा हुआ है। मैंने उससे पूछा कि यह लोग क्या चुन रहे हैं तो

उसने कहा किसी गुज़रने वाले ने गुज़रते हुए कुछ तिलावत का सवाब बख़्शा है और ये लोग वह सवाब चुन रहे हैं।

मैंने कहा आप उनके साथ सवाब क्यों नहीं चुनते? उन्होंने कहा मुझे ज़रूरत नहीं क्योंकि मुझे थोक के हिसाब से रोज़ाना सवाब पहुँच जाता हैं।

मैंने कहा आपको क्यों ज़रूरत नहीं और आपको कितना सवाब रोज़ाना पहुँचता है और कैसे पहुँचता है?

उन्होंने कहा मेरा एक बेटा हाफ़िज़ क़ुरआन है जो फ़लाँ बाज़ार में मिठाई की दुकान पर मिठाई का कारोबार करता है और वह सारा दिन अपने कारोबार के साथ साथ एक क़ुरआन मजीद पूरा पढ़कर उसका सवाब मुझे पहुँचाता है। इसलिए मुझे इस चुनने की ज़रूरत नहीं पढ़ती और उन्हें सवाब चुनने की ज़रूरत है ये चुनते हैं और मैं अलैहिदा बैठकर उनको देखता हूँ तो अगले दिन ये उठे और बाज़ार में घूमते घूमते वहाँ तक पहुँचे तो देखा कि एक नौजवान जो मिठाई बेच रहा है और साथ ही क़ुरआन पढ़ रहा है। कहा बेटा! क्या पढ़ रहे हो? उसने कहा जी क़ुरआन पढ़ रहा हूँ। कहा कितना पढ़ते हो? उसने कहा एक ख़त्म रोज़ाना पढ़ता हूँ। कहा इतना क्यों पढ़ते हो? उसने कहा मेरे बाप ने मुझ पर एहसान किया था उसका बदला चुकाना चाहता हूँ। मुझे क़ुरआन दे गया था इसलिए मैं चाहता हूँ कि उसके एहसान का बदला हो जाए।

कई साल गुज़र गए मतरफ़ बिन शख़ीर रह० बड़े उलमा में से हैं मुहद्दिस और मुफ़स्सिर हैं। उन्होंने फिर ख़्वाब देखा। वही क़ब्रिस्तान वही मुर्दे निकले और वह बाबा जो बैठे हुए थे उन्हें भी देखा कि वह भी चुनते फिर रहे थे।

जब उनकी आँख खुली तो ख़्याल हुआ कुछ हो गया है। नमाज़ के बाद बाज़ार में गए तो देखा दुकान बन्द पड़ी है तो कहा यह मिठाई वाला कहाँ है? बताया गया कि जी इन्तिक़ाल कर गया है तो जो पीछे से सिलसिला चला आ रहा था ईसाले सवाब का वह बन्द हुआ तो बाबा जी भी चुनने वाले बन गए।

दर्जों की बुलन्दी का ज़रिया

हमारे ज़िम्मे है कि जब हम दुनिया से जाएं तो हमारी औलाद हमारे लिए ऐसे सवाब का बहुत बड़ा निज़ाम चला सके। मौत पर भूल तो जाता है हर कोई याद नहीं रखता लेकिन कम से कम इतना तो हो कि कभी हाथ उठते रहें और वह कहते रहें ﴿رب ارحمهما كما ربيني صغيرا﴾ इतना ही उनकी ज़बानों पर आ जाए तो यही माँ बाप के दर्जात की बुलन्दी का ज़रिया बन जाता है।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाएबीन

यह तर्बियत की एक शक्ल है जो हमारे हाथों से निकल गई है। अब मर्द भी अल्लाह की राह में निकलें, औरतें भी निकलें और पूरी ज़िन्दगी के निज़ाम को सीखें और उसे दुनिया में ज़िन्दा करें यह इस उम्मत की ज़िम्मेदारी है। अल्लाह तबारक व तआला ने इस उम्मत को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़त्मे नबुव्वत की वजह से नयाबत अता फ़रमाई है। हम नाएब हैं कोई उम्मत नाएब नहीं थी हम नाएब हैं। अल्लाह तआला ने बहुत बड़ी इज़्ज़त का ताज हमारे सिरों पर रखा है।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ासिदीन

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु का इर्शाद है जब वह यमन गए तो उन्होंने कहा ऐ लोगों!

﴿انا رسول رسول اللہ الیکم﴾

यह जुमला कोई उम्मत न बोल सकी कि ऐ लोगों! मैं अल्लाह के रसूल का रसूल हूँ।

अल्लाह का रसूल तो वह होता है जो होता है लेकिन जो अगला लफ़्ज़ रसूल है यह क़ासिद के माइने में है कि मैं अल्लाह के नबी का भेजा हुआ हूँ तो हम अल्लाह के नबी के भेजे हुए हैं, हम क़ासिद हैं, हम रसूल हैं, हम नाएबे रसूल हैं। रसूलुल्लाह नहीं बल्कि रसूल रसूलुल्लाह। हम अल्लाह के रसूल के भेजे हुए हैं कि दुनिया के लोगों को हम गफ़लत की नींद से जगा दें। सारे आलम को जगाना अल्लाह तआला ने हमारे ज़िम्मे लगाया है।

इस ज़िम्मेदारी का एहसास इस वक़्त जागता है जब आदमी इस माहौल में आता है और अल्लाह के रास्ते में वक़्त लगाता है। इसलिए भाईयो! आप सब भाईयों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि आप सब चार चार महीने के इरादे करो। जिनकी शर्तें पूरी हैं वे औरतें भी साढ़े चार महीने के लिए नाम पेश करें। औरतों की तीन दिन की जमात नक़द तैयार होनी चाहिए।

अहमियत व फ़ज़ाईल रमज़ान

रमज़ान की सबसे बड़ी इबादत तिलावत की कसरत है। हुज़ूरे

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान में कसरत से क़ुरआन की तिलावत करते थे तो तिलावत को बढ़ाया जाए और कुछ वक़्त निकाल कर अपने बच्चों के साथ बैठ कर फ़ज़ाईल का हल्क़ा लगाया जाए और यह सिर्फ़ रमज़ान का अमल नहीं है, बल्कि सारी ज़िन्दगी का अमल है और मौत तक का अमल है। जिसमें फ़ज़ाईल को पढ़ा और सुना जाए और इसमें हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत और ज़िन्दगी अपने बच्चों को बताई जाए ताकि उनके ज़हन खुलें और उनके अन्दर ज़ौक़ पैदा हो और बचपन ही से उनके अन्दर अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत पैदा हो जाए।

अपने बच्चों को दावत देना सिखाएं, छः नम्बर याद कराएं ताकि अपने साथियों को दावत दें। हर बच्चा, बच्ची दाई बने और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात को आगे पहुँचाने वाला बने। नमाज़ों का एहतिमाम हो, नफ़्लों का बढ़ाया जाए, सहरी और इफ़्तारी को हल्का किया जाए क्योंकि ख़ासतौर से सहरी का वक़्त बहुत क़ीमती और अल्लाह से मांगने और लेने का है वह हम सारा खाने पीने के चक्कर में लगा देते है। सहरी इफ़्तारी का निज़ाम मामूली रखा जाए और ज़्यादा वक़्त नमाज़ और दुआएं को दिया जाए। इफ़्तार के वक़्त भी दुआएं क़बूल होती हैं, सहरी के वक़्त भी दुआएं क़बूल होती हैं तो इन दोनों वक़्तों में अपनी दुआओं को बढ़ाया जाए और अल्लाह तआला को मनाया जाए और कोई रास्ता नहीं अल्लाह के दरबार में पहुँचने का सिवाए मिन्नत और रोने धोने के।

और जैसे रमज़ान में नेकियों का खाता बढ़ता है ऐसे ही गुनाहों का खाता भी बढ़ता होगा जैसे बैतुल्लाह में कोई बुराई का इरादा भी करे तो बुराई लिखी जाती है ﴿ومن يرد فيه بالحاد بظلم نذقه من عذاب اليم﴾ इस आयत के तहत कुछ उलमा इस तरफ़ गए हैं कि बैतुल्लाह में अगर कोई बुराई का इरादा भी करेगा तो इरादे पर भी लिख दी जाती है लेकिन आम हालात में अगर बुराई का इरादा करे तो नहीं लिखी जाती लेकिन बैतुल्लाह की हुरमत ऐसी है कि बुराई के इरादे पर भी पकड़ हो सकती है।

रमज़ान में तो ख़ास तौर से नज़र की हिफ़ाज़त, हाथों की हिफ़ाज़त, ज़बान की हिफ़ाज़त क्योंकि रोज़ा सिर्फ़ मुँह के बन्द करने का नाम नहीं, रोटी और पानी छोड़ने का नाम नहीं।

ज़बान ग़ीबत छोड़ दे, गाली छोड़ दे, चुग़ली छोड़ दे, नज़र ग़लत देखना छोड़ दे, कान ग़लत सुनना छोड़ दें और हाथ ग़लत तोलना छोड़ दें, पाँव ग़लत चलना छोड़ दें। बहुत से लोग हैं जो कहते हैं कि रमज़ान आ गया अब रमज़ान में रिश्वत नहीं लेनी। क्या बाक़ी सारा साल रिश्वत हलाल है? वह तो सारा साल हराम है और कहते हैं कि मैं रमज़ान में झूठ नहीं बोलता तो क्या बाक़ी सारा साल झूठ बोलना हलाल है?

भाईयो! अल्लाह तआला ने इन चीज़ों को सारे साल के लिए हराम क़रार दिया है जो चीज़ हराम है वह हमेशा के लिए हराम है जो चीज़ हलाल है वह हमेशा के लिए हलाल है तो रमज़ान में ख़ासतौर से बड़े गुनाहों से बचा जाए ताकि हमारे रोज़े साफ़ सुथरे होकर अल्लाह के दरबार में पहुँचें।

नमाज़ तरावीह की फ़ज़ीलत

रमज़ान की ख़ास इबादत जो अल्लाह तआला ने हमें अता फ़रमाई है वह तरावीह है किसी उम्मत को तरावीह नहीं मिली। उनके यहाँ नमाज़ में किताब पढ़ी ही नहीं जाती बल्कि तस्बीह होती थी। हमें अल्लाह ने क़ुरआन अता किया फिर याद करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई फिर हमें सुनने सुनाने का हुक्म दिया तो रमज़ान में तरावीह का एहतिमाम किया जाए। औरतें अपने घरों में एहतिमाम करें, अपना काम थोड़ा करें।

हम लोग इफ़्तारी इतना कुछ खा लेते हैं कि फिर तरावीह पढ़ना ही मुश्किल हो जाता है और फिर पड़े होते हैं तो उठा ही नहीं जाता। इसलिए थोड़ा खाओ ताकि तरावीह इतमिनान से अदा की जा सकें।

और यह अल्लाह ने हमें तोहफ़ा अता फ़रमाया है और अल्लाह तआला ने इसके हर सज्दे पर डेढ़ हज़ार नेकियों का ऐलान किया। बीस तरावीह में चालीस सज्दे और एक दिन की कमाई बन गई। साठ हज़ार अगर इस मस्जिद वाले ऐलान कर दें कि जो हमारी इस मस्जिद में डेढ़ हज़ार नहीं बल्कि पन्द्रह रुपए देंगे तो फिर देखना आप की मस्जिद का क्या हाल होता है। आपकी मस्जिद में लोग पंखे पर लटक कर तरावीह पढ़ेंगे छत भर जाएगी। चारों तरफ़ की गलियाँ भर जाएंगी।

अल्लाह तआला कह रहा है कि डेढ़ हज़ार नेकी ले लो डेढ़ हज़ार नेकी और एक नेकी सातों ज़मीन व आसमान से वज़नी होती है।

औरतें अपने घरों में मुसल्ले बिछाएं और तरावीह का ऐहतिमाम करें। आप लोग मस्जिदों में तरावीह का एहतिमाम करें और पूरा क़ुरआन सुनें *"अलम-तरा-कैफ़ा"* वाली तरावीह न पढ़ो। यह बहुत बड़ा ज़ुल्म है क़ुरआन से भी और ज़ुल्म है अपने आप पर भी और ख़्यानत है अल्लाह तआला की किताब के साथ और ख़्यानत है अल्लाह के नबी के और उसकी शरियत के साथ।

ऐसे सुस्त न हो कि साल में सिर्फ़ एक महीने एक घन्टे खड़े होकर अल्लाह का न दे सको। अल्लाह के साथ इतनी मुहब्बत तो हो कि हम खड़े होकर तरावीह में क़ुरआन सुन सकें। हमारी बदक़िस्मती है कि हम क़ुरआन समझते नहीं यह वह नग़मा है कि अगर इसकी समझ आ रही हो तो दिल के तार हिल जाते हैं ﴿تقشعر منه جلود الذين يخشون ربهم﴾ रूए रूए में उतर जाता है क़ुरआन। अब तो हमारी मदरसों में अरबी पढ़ने वाले लड़के समझते नहीं आपके सामने क्या रोना रोऊँ लेकिन सुनो तो सही। *"अलम-तरा-कैफ़ा"* से चक्कर न देना और यह अपने आपको चक्कर देना होगा यह अल्लाह को नहीं बल्कि अपने को चक्कर देने वाली बात है।

और तरावीह के हर सज्दे पर अल्लाह जन्नत में एक घर बनाता है जिसकी साठ हज़ार सोने चाँदी के दरवाज़े होते हैं। डेढ़ हज़ार उसके अलावा है एक घर के अलावा जिसके साठ हज़ार सोने चाँदी के दरवाज़े होंगे।

तीसरी बात तरावीह के हर सज्दे पर जन्नत में एक पेड़ लगता है जिसके साए के नीचे पाँच सौ साल घोड़ा दौड़ सकता है।

इतनी बड़ी कमाई सिर्फ़ एक सज्दे पर कर सकते हैं और पूरी

तरावीह पर नमाज़ इशा समेत सवा घन्टा नहीं लगता और औरतों को तो इजाज़त है कि वे *"अलम-तरा-कैफ़ा"* से पढ़ लें तो उनकी बीस रकअत तरावीह पर बीस मिनट लगेंगे पन्द्रह बीस मिनट में फ़ारिग़ हो जाती हैं लेकिन मिलेगा उतना जो मैंने बयान किया।

अल्लाह तबारक व तआला ने यह दौलत इस उम्मत को अता फ़रमाई है और किसी उम्मत को यह नेमत नहीं मिली।

यह रमज़ान की ख़ास इबादत है इसमें सुस्ती नहीं होनी चाहिए फिर अल्लाह तौफ़ीक़ दे तो रातों को उठो और दुआएं करो अपने लिए अपने अज़ीज़ों के लिए और सारी उम्मत के लिए।

सदक़ा फ़ितर की अहमियत

आख़िरी चीज़ रमज़ान की सदक़ा फ़ितर है। रोज़ों की क़ुबूलियत रुकी रहती है जब तक सदक़ा फ़ितर अदा न किया जाए। यह उन लोगों के लिए है जिन पर ज़कात वाजिब होती है जो साहिबे निसाब हो जाएं वक़्ती तौर पर उन पर भी सदक़ा फ़ितर होता है।

आमतौर पर गेहूँ के लिहाज़ से सदक़ा फ़ितर देना हमारे मुल्क में रिवाज है। बीस रुपए अख़बार में परसों हम ने देखा सदक़ा फ़ितर बीस रुपए आया हुआ था। ठीक है जो देगा उसका पूरा पूरा अदा हो जाएगा लेकिन भाई मैं आपको फ़ज़ीलत की चीज़ बताता हूँ मालदार लोगों को तर्ग़ीब देता हूँ।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो सदक़ा फ़ितर अदा किया है वह किशमिश या खजूर अदा किया और किशमिश और खजूर का सदक़ा पूरा है। गेहूँ आधा सआ लेकिन किशमिश

और खजूर पूरा है यानी तक़रीबन तीन किलों से ज़्यादा यानी अगर सदक़ा फ़ितर किशमिश की शक्ल में दिया जाए तो एक आदमी का तक़रीबन तीन सौ रुपए बनता है।

और गेहूँ के हिसाब से दो तो बीस रुपए बनता है और खजूर के हिसाब से दो कोई डेढ़ सौ रुपए बनता है तो जो मालदार औरतें हैं वे सदक़ा फ़ितर अदा करें किशमिश के लिहाज़ से ताकि किसी ग़रीब के घर ईद तो हो सके।

मसलन चार अफ़राद का घराना है दो मियाँ बीवी हों और दो बच्चे हों तो गेहूँ के हिसाब से अस्सी रुपए बनता है अस्सी रुपए दे दें अदा तो हो गया लेकिन अस्सी रुपए वह ग़रीब आदमी एक वक़्त का सब्ज़ी गोश्त भी नहीं पका सकता।

लेकिन अगर फ़ी आदमी तीन सौ रुपए किशमिश के हिसाब से देते तो बारह सौ रुपए दे दिए। बारह सौ रुपए से ईद के दो तीन दिन तो उसके अच्छे गुज़र जाएंगे।

और अगर खजूर के हिसाब से डेढ़ सौ रुपए फ़ी आदमी दिया तो भी चार आदमियों के छः सौ रुपए हो गया तो भी उस ग़रीब की ईद अच्छी गुज़र गई।

जिनको अल्लाह ने वुसअत दी उनसे गुज़ारिश है कि वह सदक़ा फ़ितर किशमिश के हिसाब से दें अगर इतनी वुसअत नहीं है तो खजूर के हिसाब से दें और इसकी भी वुसअत नहीं तो फिर आख़िरी दर्जा गेहूँ के हिसाब से दे दो तो भी अदा हो जाएगा और जब तक सदक़ा फ़ितर अदा न किया जाए उस वक़्त तक रोज़े क़ुबूलियत से रुके रहते हैं।

एतिकाफ़ की फ़ज़ीलत

भाईयो!

रमज़ान में क़ुरआन की तिलावत का बढ़ाया जाए, अल्लाह के ज़िक्र को बढ़ाया जाए कुछ लोगों को ऐतिकाफ़ में बैठने को ज़ौक़ होता है। बेशक हमारे नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारी ज़िन्दगी ऐतिकाफ़ नहीं छोड़ा। आख़िरी अशरे का हमेशा आपन ऐतिकाफ़ फ़रमाया। फ़तेह मक्का के मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ऐतिकाफ़ क़ज़ा हो गया था तो फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शव्वाल में दस दिन ऐतिकाफ़ फ़रमाया।

क्योंकि फ़तेह मक्का के मौक़े पर आप बाईस रमज़ानुल-मुबारक को मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए और जिस साल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से तशरीफ़ ले गए उस साल आपने डबल ऐतिकाफ़ फ़रमाया यानी बीस दिन। बहुत से लोग मौहल्लों में ऐतिकाफ़ में बैठते हैं उनसे सिर्फ़ इतनी गुज़ारिश है कि आगे चादरें बिछाकर न बैठ जाएं बल्कि पहले उलमा से पूछ लें कि ऐतिकाफ़ का क्या तरीक़ा है?

क्योंकि मेरा रमज़ान पिछले पच्चीस साल से अल्लाह के रास्ते में गुज़रता है और एक आध दिन पहले मैं घर जाता हूँ तो मैं देखता हूँ कि निन्नानवें फ़ीसद ऐतिकाफ़ वालों का ऐतिकाफ़ ग़लत हो रहा है बल्कि होता ही नहीं क्योंकि उन्हें पता नहीं बस शौक़ में आकर बैठ गए।

सबसे बड़ा दर्जा तो है अल्लाह की राह में निकलना है ज़ाहिर

है कोई निकलता है, कोई नहीं निकलता। जो ऐतिकाफ़ में बैठना चाहें उन भाईयों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि पहले उलमा से इसकी हदें पूछ लें और इसकी तर्तीब पूछें।

कुछ औरतें भी घरों में ऐतिकाफ़ में बैठती हैं उनका ऐतिकाफ़ मर्दों के मुक़ाबले आसान है लेकिन वे भी अहले इल्म से पूछ लें कि इसका तरीक़ा क्या है? यह न हो कि बस बैठे रहें और मिलें कुछ नहीं सिवाए मस्जिद में रात गुज़ारने के और सिवाए मस्जिद में खाने पीने और सोने के।

अगर किसी भाई के दिल में जज़्बा हुआ ऐतिकाफ़ में बैठना का तो यह बड़ा अमल है नादानी और कम इल्मी की वजह से ज़ाए न हो जाए। इसको उलमा से जाकर ज़रूर पूछा जाए और उसके बाद बैठा जाए तो फिर अल्लाह के फ़ज़ल व करम से एक दिन का ऐतिकाफ़ आदमी को तीन ख़न्दक़ दोज़ख़ से दूर करता है और एक ख़न्दक़ का फ़ासला इतना है जितना ज़मीन व आसमान के बीच का फ़ासला है।

तो हर अमल जब इल्म की रोशनी में किया जाए तो जाकर इसकी क़ीमत लगती है वरना तो इसकी क़ीमत नहीं लगती।

दुआ

○ ○ ○

औरतों के हक़

الحمد للّٰه الذی خلق الانسان من نطفة امشاج فجعله سمیعا
بصیرا ان الحمد للّٰه الذی خلقنا من ذکر وانثٰی وجعل شعوبا
وقبائل لتعارفواo الحمد اللّٰه الذی جعل اکرمهم اتقهمo

الحمد للّٰه الذی بیده ملکوت کل شیء وهو یجیر ولا یجار علیه
واشهد ان لا اله الا اللّٰه وحده لا شریك له احد صمدا لم یتخذ صاحبة
ولا ولدا واشهد ان سیدنا ومولانا محمدا عبده ورسوله.اما بعد

فاعوذ باللّٰه من الشیطٰن الرجیمo
بسم اللّٰه الرحمٰن الرحیمo

یایها الناس انا خلقنکم من ذکر وانثٰی وجعلنکم شعوبا وقبآئل
لتعارفوا ان اکرمکم عند اللّٰه اتقکمo (الحجرات)

وقال تعالٰی من عمل صالحامن ذکر اونثٰی وهو مؤمن فلنحیینه
حیوٰة طیبة ولنجزینهم اجرهم باحسن ما کانوا یعملونo

وقال النبی صلی اللّٰه علیه تبارك وتعالٰی علیه
وسلم الدنیا کلها متاع وخیر متاعها المرأة الصالحةo

وقال النبی صلی اللّٰه تعالٰی علیه وسلم ان المرأة اذا صلت خمسها
وصامت شهرها وحصنت فرجها واطاعت بعلها دخلت من ای ابواب
الجنة شآء ت او کما قال صلی اللّٰه علیه وسلم.

मेरे मोहतरम भाईयो और बहनो!

हमारा जमा होना न फ़ायदे से ख़ाली है और न अज्र से ख़ाली

है। अमल की नियत से सुना जाए, ज़िन्दगियों को बदलने की नियत से सुना जाए ताकि हमारा जमा होना सिर्फ़ बिखरने के लिए न हो जाए बल्कि इस सुनने सुनाने से हम किसी नतीजे और मक़सद तक पहुँचें।

क़ुरआन के इन्सान से सवाल

एक सवाल क़ुरआन पाक उठाता है और अन्दाज़ बहुत ख़ूबसूरत है ﴿ام خلقوا من غیر شیء﴾ यह सवाल क़ुरआन औरतों से भी करता है और मर्दों से भी अल्लाह तआला पूछता है मेरे बन्दों और मेरी बन्दियों! एक बात तो बताओ क्या तुम ख़ुद अपने आप बन गए हो?

यह स्कूल की इमारत अपने आप बन गई? यह एक सवाल है ﴿ام ھم الخلقون﴾ या तुमने अपने आप को ख़ुद बनाया है।

पहला सवाल ख़ुद-ब-ख़ुद बन गए हो?

दूसरा सवाल अपने आपको तुम ने बनाया है?

तीसरा सवाल ﴿ام خلقوا السمٰوٰت والارض﴾ क्या ज़मीन व आसमान और जो कुछ उन के बीच में है यह सब कुछ तुम ने बनाया है?

सवाल और भी चल रहे हैं लेकिन मेरी बात से मुताल्लिक़ यहाँ पर यही तीन सवाल हैं।

﴿ام خلقوا من غیر شیء﴾ अगर तो तुम बने हो किसी बनाने वाले के बग़ैर अपने आप, किसी जंगल की बूटी की तरह और रास्ते के कीकर की तरह तो जो मर्ज़ी आए करो। कोई तुम से सवाल व

जवाब नहीं, तुम फ़ारिग़ और आज़ाद हो अगर तुम ने अपने आप को खुद बनाया है तो फिर तुम आज़ाद हो। कोई मस्अला नहीं है जो मर्ज़ी करो।

अपने आप बन गए हो तो भी कोई सवाल नहीं, अपने आपको खुद बनाया है तो भी कोई सवाल नहीं।

﴿ام خلقوا السموٰت والارض﴾ इस ज़मीन व आसमान में मौजूद बिखरी हुई चीज़ों को अगर तुमने अपने हाथों से बनाया है तो उनको जैसे मर्ज़ी इस्तेमाल करो फिर शराब का हराम होना भी ख़त्म और दूध का हलाल होना भी ख़त्म फिर हर चीज़ ख़त्म है फिर शादी और ज़िना में कोई फ़र्क़ नहीं, फिर पर्दा और बेपर्दा में कोई फ़र्क़ नहीं, फिर नमाज़ पढ़ने और नमाज़ छोड़ने में कोई फ़र्क़ नहीं, फिर सच और झूठ में कोई फ़र्क़ नहीं, फिर पाकदामन और आवारा में कोई फ़र्क़ नहीं, फिर हया और बेहयाई में कोई फ़र्क़ नहीं, फिर ज़ुल्म और इन्साफ़ में कोई फ़र्क़ नहीं।

अगर तो तुमने आप को बनाया है या तुम अपने आप बने हो या काएनात तुम ने बनाई है तो तुम्हारा रब कहता है मैं पीछे हो जाता हूँ और तुम्हें छुट्टी दे देता हूँ तुम जो मर्ज़ी करो।

अब हम इस सवाल का जवाब ढूंढते हैं कि क्या कोई चीज़ आज तक अपने आप भी बनी है और काएनात की कोई चीज़ अपने आप वजूद में आ गई हो?

हेच चीज़े खुद-ब-खुद चीज़े न शुद
हेच आहन ख़न्जरे तेग़ न शुद
हेच हलवा ई न शुद उस्ताज़ कार
ता गुलाम शकर रेज़े न शुद

औरत सुबह को उठी तो क्या देखती है घर में एक ख़ूबसूरत बच्चा बैठा हुआ है, क्या देखती है कि सोने चाँदी का ढेर लगा हुआ है, क्या देखती है कि रोटियाँ पकी पड़ी हैं, गोश्त पका पड़ा है और सारा घर साफ़ सुथरा पड़ा है। क्या कभी ऐसा हुआ? नहीं हुआ और हर्गिज़ नहीं हुआ।

मैं ख़ुद नहीं बना फिर मुझे किसने बनाया? मैंने अपने आपको भी नहीं बनाया यह बात भी पक्की है। पाँच साल की उम्र में होश आया कि मेरा नाम तारिक़ जमील है और यह मेरा बाप है, और यह मेरी माँ है और यह मेरा गाँव है और यह मेरा घर है तो अगर मैंने अपने आपको ख़ुद बनाया होता तो इससे अच्छी शक्ल में बनाया होता, किसी बादशाह के घर पैदा किया होता तो यह बात भी ग़लत है कि मैंने अपने आपको नहीं बनाया। वही सवाल फिर आ गया।

अगर मैं ख़ुद नहीं बना तो फिर मुझे बनाया किसने?

अगर मैंने अपने आपको भी नहीं बनाया तो फिर मुझे बनाया किसने? और इस काएनात को अगर मैंने नहीं बनाया और मैं तो एक तिनका नहीं बना सकता तो मैं पेड़ कैसे बनाता, एक ज़र्रा नहीं बना सकता ज़मीन कैसे बिछाता, एक पत्थर नहीं बना सकता मैं हिमालय कैसे बनाता, एक बूंद नहीं बना सकता तो दरिया कैसे बनाता, एक पत्ता नहीं बना सकता तो फल कैसे बनाता, एक पर नहीं बना सकता मैं ख़ूबसूरत मोर कैसे बनाता।

मैंने तो नहीं बनाया या अल्लाह!

अच्छा फिर पता तो कर किसने बनाया है?

ज़मीन तूने नहीं बनाई, आसमान तूने नहीं बनाया तो फिर किसने बनाया?

तू कहता है मैं खुद नहीं बना हूँ, तू कहता है कि मैंने अपने आपको भी नहीं बनाया, तू कहता है काएनात भी मैंने नहीं बनाई तो फिर मेरे सवाल का जवाब तो दे कि तुम्हें बनाया किसने है?

दोनों जहान की बाज़ी

यह एक सवाल

यह एक सवाल है ज़िन्दगी का जिस औरत ने यह सवाल हल न किया वह बर्बाद हो गई, जिस मर्द ने यह सवाल हल न किया वह बर्बाद हो गया। हर हर क्लास में तो गोल्ड मैडल लेता है गया, वज़ीफ़े लेता गया, पी०एच०डी० तक गोल्ड मैडल लेता गया लेकिन इस सवाल को हल न किया तो बर्बाद हो गया और दोनों जहान की बाज़ी हार गया।

तो इन तीन सवालों से एक सवाल उठा कि मुझे किसने बनाया?

पहला सवाल, मुझे किसने बनाया? दूसरा सवाल किस लिए बनाया? इस दुःख दर्द के जहाँ में क्यों आ गया जहाँ पल पल ग़म की कहानियाँ जन्म ले रही हैं, एक एक सेकेण्ड पर हज़ारों ग़म की दास्तनें हैं जो इन्सानियत को रुला रही हैं और हज़ारों दास्तानें हैं जो मिट्टी के तले जाकर सो रही हैं। एक एक क़दम पर आफ़तें ही आफ़तें हैं तो यह सवाल क़ुरआन ने उठाया है। मैं इसकी थोड़ी वज़ाहत कर रहा हूँ। जब हमने इस सवाल का जवाब तलाश

करना चाहा तो हमें क़ुरआन से ही जवाब मिला।

इन्सान की कहानी

﴿هل اتٰى على الانسان حين من الدهر لم يكن شيئاً مذكوراo﴾

ऐ इन्सान सुन! मैं तुझे तेरी कहानी सुनाता हूँ तू कुछ भी नहीं था, कुछ न था। ﴿اولم یر الذین کفروآ ان السمٰوٰت والارض کانتا رتقا﴾ ज़मीन व आसमान भी कुछ न था तू भी कुछ न था तो कौन था? अल्लाह था।

अल्लाह जो पहले से अल्लाह, जो आज भी, जो फिर भी अल्लाह, जो आइन्दा भी अल्लाह, जो अव्वल भी अल्लाह, जो आख़िर भी अल्लाह, जो ज़ाहिर भी अल्लाह, जो बातिन भी अल्लाह, जो क़ायम भी अल्लाह, जो क़य्यूम भी अल्लाह, जो हय्यि भी अल्लाह जो मुतकब्बिर भी अल्लाह, मालिकुल-मुल्क भी अल्लाह, ज़ुलजिलालि- वल-इकराम भी अल्लाह, जो अल्लाह अपनी पहल से पाक है, जो अल्लाह अपनी इन्तेहा से पाक है, जो अल्लाह अपनी इब्तिदा से पाक है।

अल्लाह की पहचान

जो अल्लाह अपने अव्वल होने में इब्तिदा का मोहताज नहीं, जो अल्लाह अपने आख़िर होने में इन्तेहा का मोहताज नहीं। काएनात की हर चीज़ की एक शुरूआत है एक आख़िर होती है। इस काएनात में एक अल्लाह है जिसकी इब्तिदा कोई नहीं, जिसकी इन्तेहा कोई नहीं जो अव्वल है लेकिन उसकी पहला सिरा

कोई नहीं, जो आख़िर है लेकिन उसका आख़िरी सिरा कोई नहीं जो मौजूद है लेकिन जगह में नहीं समाता, वह मौजूद है लेकिन ज़माने से पाक है, वह मौजूद है लेकिन दिशा से पाक है, वह मौजूद है लेकिन शक्ल से पाक है, वह मौजूद है लेकिन जिस्म से पाक है, वह मौजूद है लेकिन बीवी बच्चों का मोहताज नहीं, इन्सानों का मोहताज नहीं, काएनात का मोहताज नहीं, ज़मीन व आसमान का मोहताज नहीं, किताबों, नबियों, रसूलों और वलियों का मोहताज नहीं, जन्नत और दोज़ख़ का मोहताज नहीं, जिब्राईल मीकाईल का मोहताज नहीं, मलकुल-मौत इज़राईल, इसराफ़ील, को मोहताज नहीं, पूरब पच्छिम, उत्तर, दख़्खिन का मोहताज नहीं, अर्श उसकी ज़रूरत नहीं, लौहे महफ़ूज़ उसकी ज़रूरत नहीं, कुर्सी पर वह बैठा हुआ नहीं, मैं तो यह स्कूल के इस पुराने से सोफ़े पर बैठा हूँ, मेरा रब मौजूद है लेकिन बैठा हुआ नहीं, पर लेटा हुआ नहीं है, पर सोया हुआ नहीं है।

आख़िर कोई वजूद हो, तो बैठा तो हो या खड़ा हो या लेटा हो या करवट पर हो या सीधा हो या मुँह के बल हो या दाएं तरफ़ हो या बाएं तरफ़ हो। किसी तरफ़ तो हो लेकिन अल्लाह वह अल्लाह है जो मौजूद है लेकिन बैठा हुआ नहीं, जो मौजूद है लेकिन लेटा हुआ नहीं, जो मौजूद है लेकिन खड़ा हुआ नहीं, जो मौजूद है लेकिन पहलू के बल नहीं, जो मौजूद है लेकिन दायीं करवट पर नहीं, जो मौजूद है लेकिन बायीं करवट पर नहीं, जो मौजूद है लेकिन उल्टे मुँह नहीं, जो मौजूद है लेकिन सीधे मुँह नहीं, जो मौजूद है लेकिन कमर के बल नहीं, जो मौजूद है लेकिन ग़ाफ़िल नहीं है, जो मौजूद है लेकिन जाहिल नहीं है, जो मौजूद है

लेकिन सोता नहीं, जो मौजूद है लेकिन ऊँघता नहीं, जो मौजूद है लेकिन खाता नहीं, मौजूद तो है लेकिन पीता नहीं, मौजूद तो है लेकिन तन्हाई से घबराता नहीं है, अन्धेरे उजाले बराबर, दिन व रात बराबर, ज़मीन व आसमान बराबर, अर्श और कुर्सी बराबर, नारी और नूरी बराबर, मिट्टी और पानी वाले बराबर, ख़ला और पहाड़ बराबर, इन्सानों का बादशाह, जिन्नात का बादशाह, पानियों का बादशाह, क़तरों का बादशाह, हवाओं का बादशाह, लोहे, चाँदी का बादशाह, मूरत व सूरत का बादशाह, रंग व रूप का बादशाह, शक्लों और आदतों का बादशाह, काएनात में ज़मीन व दरिया में उड़ने वाले परिन्दों का बादशाह, उतरने वाली बारिशों के क़तरों का बादशाह, खिलने वाली कलियों का बादशाह और इसमें पैदा होने वाली ख़ुशबू की महक का बादशाह, उक़ाब की झपट का मालिक, साँप के बल खाने का मालिक और उसके अन्दर पैदा होने वाले ज़हर का ख़ालिक़, सदफ़ के अन्दर पानी के मोती में बदल जाने का मालिक और ख़ालिक़, मछली के थूक को अंबर बना देने का मालिक और ख़ालिक़, पानी के क़तरे को मक्खी के मुँह में डालकर शहद बना देने का मालिक और ख़ालिक़, रेशम के कीड़े को पिलाकर रेशम बना देने वाला मालिक और ख़ालिक़, हिरन को पानी पिलाकर उसे मुश्क का नाफ़ा बना देने वाला मालिक व ख़ालिक़, आम के पेड़ पर ख़ूबसूरत आम बना देने वाला मालिक व ख़ालिक़, वह अल्लाह, वह अल्लाह जो दुनिया के पानी के क़तरों को कभी आम में बदलता है, कभी अनार में बदलता है। क्या ताक़त है उस ज़ात की? क्या अज़मत वाला वह शंहशाह है? क्या अज़मत वाला बादशाह है? क्या शानों वाला शहानेशाह है कि लकड़ी कड़वी, पत्ते कड़वे और छोटी छोटी

डालियों और शाखों पर अनार का लटका दिया। उसका छिलका कड़वा, इसका ऊपर का सारा कढ़वा लेकिन उसको जब चीरा तो अन्दर एक जहाँ नज़र आया। एक एक दाना ऐसा ख़ूबसूरत जड़ा हुआ जैसे छोटे छोटे हीरे और याक़ूत, सफ़ेद अनार को देखा तो मोती चमकते नज़र आए, कन्धारी अनार को देखा तो याक़ूत चमकते नज़र आए। वह कौन ज़ात है जो इन दानों को घड़ घड़कर बनाता है और सफ़ेदी देता है, सुर्ख़ी देता है और उसे पर्दे में लपेट कर दाना दाना जुदा करके कहता है मेरे बन्दे अब बता कौन है ख़ालिक़? कौन है ख़ालिक़?

काएनात की बनावट

﴿هذا خلق الله. هذا خلق الله فاروني ما ذا خلق الذين من دونه.﴾

यह है तुम्हारे अल्लाह की काएनात, यह है तुम्हारे रब का कारख़ाना। बताओ तुम्हारे रब के सिवा कोई और भी है जो यह सब कुछ बनाकर दिखा दे। यह अल्लाह है। उस अल्लाह ने कहा मेरे बन्दे, मेरी बन्दी! मैंने तुम्हें भी पानी से बनाया, जिस पानी से अनार बनाया, जिस पानी से अमरूद को शक्ल दी, जिस पानी से सदफ़ के मोती को, जिस पानी से मैंने मुश्क का नाफ़ा बनाया, जिस पानी से मैंने मक्खी के मुँह में शहद बनाया तू भी एक पानी था, तू भी एक पानी था ﴿الم يك نطفة من مني يمنى﴾ तू भी पानी था और पानी से पहले मिट्टी था। कहाँ से ﴿خلقنا الانسان من سللة من طين﴾ तू मिट्टी था, मिट्टी से ग़िज़ा निकाली, ग़िज़ा से जौहर निकाला, पानी को आगे चलाया और उसे अलग अलग शक्लों में तब्दील करता करता करता तुझे यह ख़ूबसूरत रंग दिया, रूप दिया,

औरत में ढाला, मर्द में ढाला ﴿انا خلقنكم من ذكر وانثى﴾ तुम्हें औरत बनाया, तुम्हें मर्द बनाया ﴿يهب لمن يشآء اناثا﴾ बेटियाँ ही देता चला गया ﴿يهب لمن يشآء الذكور﴾ बेटे ही देता चला गया ﴿او يزوجهم ذكران واناثا﴾ बेटे बेटियाँ जमा करके देता चला गया ﴿ويجعل من يشآء عقيما﴾ और कई को बेऔलाद कर दिया, मांगते मांगते ज़िन्दगी बीत गई लेकिन कोई न दिया। वह अल्लाह तो मेरे सवाल का जवाब आ गया। अल्लाह ने कहा मैंने तुम्हें बनाया है। आसमान बनाया है ﴿والسمآء بنينها بايد وانا لموسعون﴾ ज़मीन अल्लाह ने बनाई ﴿والارض فرشنها فنعم الماهدون﴾ पहाड़ अल्लाह तआला ने लगाए ﴿والجبال ارسها﴾ पानी अल्लाह तआला ने निकाला ﴿اخرج منها مآء ها ومرعها﴾ बारिश अल्लाह तआला ने बरसाई ﴿انا صببنا المآء صبا﴾ ज़मीन को अल्लाह तआला ने फाड़ा ﴿ثم شققنا الارض شقا﴾ दाने, फल, फूल अल्लाह ने निकाले

﴿فانبتنا فيها حبا وعنبا وقضبا وزيتونا ونخلا وحدآئق غلبا وفاكهة اوبا﴾

इन्सान को अल्लाह तआला का ख़िताब

जिस अल्लाह ज़मीन का फ़र्श बना दिया, आसमान की छत तानी, सूरज, चाँद के चिराग़ जलाए अब वह हमारी तरफ़ मुतवज्जेह हुआ और कहने लगा ऐ मेरे बन्दे!

يآيها الانسان ما غرك بربك الكريم الذى خلقك
فسوك فعدلك فى اى صورة ما شآء ركبك○

ऐ इन्सान! ऐ इन्सान! क़ुरआन मे सिर्फ़ दो जगह आया ﴿يآيها الانسان﴾ यह आयत बहुत ख़ूबसूरत है कि अल्लाह ने यहाँ सिर्फ़

मुसलमान से बात नहीं की बल्कि पूरी दुनिया के इन्सानों से बात की वह मुसलमान हो, वह काफ़िर हो, हिन्दू हो, दहरिया हो, मुलहिद हो, अल्लाह का मुन्किर हो, कम्युनिस्ट हो, सोशिलस्ट हो, पाकदामन हो, बदकार हो।

अल्लाह तआला सबसे यूँ बात कर रहा है यह आयत इस तरह मेरे सामने एक ख़्याल पैदा करती है जैसे माँ अपने बच्चे के कन्धे से पकड़कर झंझोड़ती है और कहती है मेरे बच्चे! तू मेरे बारे में बदगुमान हो गया, कभी माँएं भी ऐसा सोच सकती हैं, कभी माँओं ने भी औलाद का बुरा चाहा, कौन सी ऐसी माँ है जो औलाद का बुरा चाहे।

माँ की बोटी बोटी कर दो उसकी बोटियों से भी औलाद की भलाई की दुआएं निकलती हैं तो बच्चा माँ से बदगुमान हो जाए उस माँ के दिल पर क्या गुज़रती होगी तो इस आयत में कुछ ऐसा ख़्याल मेरे सामने गुज़रता है कि अल्लाह तआला एक एक मर्द और एक एक औरत को कन्धों से पकड़ पकड़ कर कह रहा है कि,

"ऐ मेरे बन्दे! ऐ मेरी बन्दी! तू मेरे बारे में ही बदगुमान हो गई मैं तो तेरा ख़ालिक़ हूँ ﴿الذی خلقك﴾ मैंने तुझे बनाया ﴿فسوّٰك﴾ ﴿فعدلك﴾ ऐसी ख़ूबसूरत शक्ल में ऐतिदाल से तुझे बनाया ﴿فی ای صورة ماشاء رکبك﴾ और बहुत ख़ूबसूरत रूप देकर मैंने तुझे पैदा किया। क्या वह दिन याद नहीं जब एक गंदा पानी था फिर नुत्फ़ा फिर अलक़ा, फिर मुज़ग़ा फिर हड्डियाँ फिर गोश्त फिर खाल फिर रूह फिर दुनिया में लाया। इस तरह लाया कि ﴿لا لك سن﴾ तेरे मुँह में दाँत था जो काट सके ﴿ولا لك تبطش﴾ तेरे हाथ में ताक़त

नहीं थी जो पकड़ सके ﴿ولا لك رجل تمشى﴾ तेरे पाँव में जान नहीं थी कि तू चल सके, जब तू आजिज़ था, न ज़रूरत बता सके, न हाजत बता सके, न पेशाब धो सके, न पाख़ाना धो सके।"

माँ-बाप के दिल में मुहब्बत डालने वाला

मैंने दो शख़्सों को तेरे लिए बेक़रार कर दिया ﴿جعلت لك حنانا فى صدر ابويك﴾ तेरी माँ को तेरे लिए बेक़रार कर दिया तेरे बाप को तेरे लिए बेक़रार कर दिया ﴿لا يكلون حتى تشبع ولا ينامان حتى ترقد﴾ तू न खाए तो वे खाते नहीं, तू न सोए तो वे सोते नहीं, तू रोए तो उनके निवाले गिर जाते हैं तो चौंके तो उनकी नींद उड़ जाती है, तेरी हाय निकलती है तो उनकी चीख़ निकल जाती है, तू हा कहता है वे बेक़रार होकर उठते हैं। यह निज़ाम अगर मैं न चलाता तो माँएं तुम्हें उठाकर कूड़े के ढेर पर डाल देतीं, कोई रातों को तेरे लिए न जागता, तुझे बार बार दूध न पिलाता, तेरे पाख़ाने न धोता, तुझे सूखी जगह पर सुलाकर ख़ुद ठंडी जगह पर न सोता, ख़ुद भूखा रहकर तुझे रोटियाँ न खिलाता, मंडी बहाऊद्दीन की गर्म झुलसा देने वाली लू में जाकर कोई मज़दूरी न करता और सारा दिन कोई माँ तेरे लिए रोटियाँ न पकाती, आटा न गूंधती, सब्ज़ी न छीलती, गोश्त न पकाती। मेरा बेटा आ रहा है, मेरा बेटा आ रहा है। वह इन्तिज़ार में बैठी है। यह सारा कुछ मैंने इसलिए किया कि तेरी परवरिश का निज़ाम चल सके अगर मैं माँ बाप के दिल में से मुहब्बत निकाल दूं तो जैसे साँप अपने बच्चों को ख़ुद खा जाता है ऐसे ही माँ बाप भी अपने बच्चे को ख़ुद ही कूड़े के ढेर पर उठाकर फेंक देते जैसे कूड़ा फेंका जाता है ऐसे ही बच्चों

को फेंक दिया जाता लेकिन यह मैंने किया, तेरे अल्लाह ने किया जब तू कुछ नहीं था, तू काट नहीं सकता, तू सुन नहीं सकता, मैंने तेरे लिए गिज़ा का इन्तिज़ाम किया है जिससे ज़्यादा कोई चीज़ तेरे क़रीब न थी जिससे ज़्यादा ठंडी तेरे लिए छाँव न थी। क्या किया मैंने?

اجرت لك عرقين رقيقين ينبعان لك لبنا
خالصا دافعا فى الشتآء وبارداً فى الصيف۔

मैंने तेरी माँ की छातियों को तेरे लिए चश्मे बना दिया। जब गर्मियाँ आती हैं तो माँओं की क़ा दूध ठंडा कर देता हूँ और जब सर्दियाँ आती हैं तो माँओं का दूध मैं गर्म कर देता हूँ। तेरे लिए इससे ज़्यादा ख़ूबसूरत न कोई ठिकाना न था, न कोई गोद थी, न को गिज़ा थी, न कोई चश्मा था।

एक हकीम ने मुझे बताया कि माँ के दूध की तासीर चालीस साल तक चलती है अगर वह अपनी जवानी को बर्बाद न करे। सारी दुनिया के दूध में वह ताक़त नहीं है जो माँ के दूध में अल्लाह ने ताक़त डाल दी है। कहा यह सब कुछ तेरे अल्लाह ने किया।

इन्सान को अल्लाह तआला झंझोड़ता है

﴿خلقك فسوٰك فعدلك٥ فى اى صورة ماشآء ركبك٥﴾

यह सब कुछ करने के बाद जब कोई औरत सज्दे से इन्कार कर देती है, जब किसी नौजवान का माथा ज़मीन पर लगाने से इन्कारी होता है, जब किसी की नज़र बेहया हो जाती है, जब कोई

औरत पेपर्दा हो जाती है और ज़ेब व ज़ीनत से बनठन कर बाज़ार में क़दम उठाती है तो यह आयत आगे आकर उसका कन्धा पकड़ लेती है और कहती है कि ऐ मेरी बन्दी! मैंने तुझे बनाया तू मेरी ही बाग़ी हो गई। ऐ मेरे बन्दे! मैंने तुझे बनाया तू मेरे बारे में ही बदगुमान हो गया। कभी माँओं ने भी अपनी औलाद का बुरा चाहा। मैंने जो तुम्हें कहा है पर्दा करो, मैंने जो तुम्हें ज़मीन पर सर रखो और सज्दा करो और नमाज़ें पढ़ो, मैंने जो तुम्हें कहा है मर्द औरत में फ़ासला रखो, मैंने जो तुम्हें कहा है कि मर्द औरत का घुलना मिलना आग ही आग है इससे बचो तो क्या कभी माँ भी औलाद का बुरा चाहती है, मैंने जो तुम्हें कहा कि रमज़ान के रोज़े रखो, मैंने जो तुम्हें कहा है कि बाप के सामने सर न उठाओ, मैंने जो कहा है ख़ाविन्द का कहना मानों, मैंने जो कहा है ख़ाविन्दों से कि बीवियों के हक़ अदा करो, मैंने जो कहा था दुकान पर तिजारत सही करना, तोलना सही, अपने मुलाज़िमों पर ज़ुल्म न करना, अपनी ताक़त से ग़लत फ़ायदा न उठाना लेकिन तुम ने क्या किया?

तुमने क़दम क़दम पर मेरे हुक्मों को तोड़ दिया, नमाज़ों को छोड़ दिया, क़ुरआन गुज़रा हुआ क़िस्सा बन गया, बरकत के लिए क़ुरआन पर्दों में लपेटकर रखे हुए हैं, पढ़ना भूल गए, सीखना पढ़ाना भूल गए, सिखाना भूल गए।

हम बहुत छोटे थे मुझे अपने बचपन का याद है कि हम मस्जिद से क़ुरआन पढ़कर घर आते थे तो घर में बूढ़ी औरतें क़ुरआन खोलकर पढ़ रही होती थीं हालाँकि छोटा सा हमारा गाँव, देहानी इलाक़ा मुल्तान लेकिन घर घर में औरतें क़ुरआन खोलकर

पढ़ रही होती थीं। अब रात एक बजे तक टीवी चलते हैं और जहाँ केबिल आएगी वहाँ बेहयाई भी आएगी। ज़िना के बाज़ार भी गर्म होंगे तो नस्ल आवारा होगी।

हमारी फ़क़ीरी

लोग रो रहे हैं कि पाकिस्तान क़र्ज़दार हो गया, पाकिस्तान पर क़र्ज़े चढ़ गए, पाकिस्तान का रोज़गार टूट गया।

मेरे भाईयो!

मेरे रब की क़सम! यह रोने की बात नहीं है। यह ग़रीबी नहीं। मैं इस बात पर रो रहा हूँ कि हमारी नस्ल आवारा हो गई। हम फ़क़ीर हो गए। जिस क़ौम की नौजवान नस्ल आवारा हो जाए, गाने की आदी हो जाए, नाच गाना उनकी ज़िन्दगी में दाख़िल हो जाए, नौजवान बच्चियाँ पर्दे से बाहर आ जाएं, वह नस्ल फ़क़ीर हो गई, वह नस्ल लुट गई, वह क़ाफ़िला उजड़ गया, वह किश्ती डूब गई, वह किश्ती किनारे न लगी, वह क़ाफ़िला मंज़िल तक न पहुँचा, वे किश्तियाँ घाट पर न लगीं। उनके लिए डूबना ही तय है।

जिस क़ौम के मर्द औरत म्युज़िक के रसिया हों, बच्चे बच्चियाँ गाने सुनने के आदी हो जाएं, माँओं को आँखें दिखाएं, बाप से बदतमीज़ी करें, बाज़ारों में ब्याज चले और नाप तोल के पैमाने ग़लत हो जाएं और हुक्मुरानों में ज़ुल्म आ जाए और अदालतों में इंसाफ़ बेच दिया जाए, चन्द टकों पर ज़ालिम छूट जाएं, मज़लूम की हाय हाय कोई सुनने वाला न हो और इंसाफ़ सड़कों पर गन्दे

कीड़े की तरह रेंगता फिर रहा हो और मज़लूम वहाँ पैसे के बग़ैर इंसाफ़ न ले सकता हो ऐसे देश का ज़मीन पर रहना, लोगों का उठना, खाना और पीना ही ग़नीमत है वरना दुनिया अगर बदले की जगह होती तो कब का मंडी बहाऊद्दीन ज़मीन में धंस चुका होता। सिर्फ़ मंडी नहीं मेरा मुल्तान भी धंस चुका होता, लाहौर और पाकिस्तान भी धंस चुका होता, सारी दुनिया ज़मीन के अन्दर जा चुकी होती।

जज़ा और सज़ा (बदले) का जहाँ

मेरे भाईयो और दोस्तों!

एक औरत जब घुँघरू बाँधकर बाज़ार में खड़े होकर नाचती है तो उसकी छन छन में वह ताक़त है कि हिमालय पहाड़ को आग लगा दे, समन्दरों को आग लग जाए, पहाड़ ख़ुश्क हो जाएं, हरियाली रेगिस्तान में बदल जाए, शहर वीरान हो जाएं लेकिन क्योंकि दुनिया बदले की जगह नहीं बल्कि इम्तिहान की जगह है, बदले का जहाँ आगे आ रहा है जिस दिन आँखें फट जाएंगी, कलेजे मुँह को आ जाएंगे, माँएं बच्चों को भूल जाएंगी, बच्चे माँओं को भूल जाएंगे, बीवियाँ ख़ाविन्दों को भूल जाएंगी, ख़ाविन्द बीवियों को भूल जाएंगे, भाई भाई को भूल जाएगा। वह तो अगला जहाँ है। यह तो मौत पर ही फ़ैसले हो जाते हैं जिस हाल में ज़िन्दगी में गुज़रती है उसी हालत में मौत आती है। जिस हाल में दुनिया में इन्सान ज़िन्दगी गुज़ारता है उसी हाल में मौत आती है। जिस हाल में इन्सान दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारता है उसी हाल में मौत का फ़रिश्ता उसके पास पैग़ाम लेकर आता है।

अल्लाह की अपने बन्दे से मुहब्बत

तो मेरे भाईयो और बहनो!

अल्लाह पाक इस आयत में कह रहा है, मेरा कन्धा हिलाकर कह रहा है, आपका जितनी बहने आयीं बैठी हैं, जितनी बेटियाँ आई बैठी हैं, जितनी बीवियाँ आई बैठी हैं, जितनी माँएं आई बैठी हैं, जितनी ख़ाला चाचियाँ आई बैठी हैं, जितनी फूफियाँ आई बैठी हैं और जितने ये बाप और भाई आऐ बैठे हैं, जितने चाचे, मामे और फूफे आए बैठे हैं और जो बाज़ार में बैठे हैं और जो अमरीका अफ़्रीका में फिर रहे हैं यूँ लगता है कि अल्लाह तआला उतर कर एक एक को कन्धे से पकड़ कर कह रहा है ऐ मेरे बन्दे! तुझे बनाने वाला मैं हूँ और तेरी माँ से सत्तर माँओं गुना ज़्यादा तुझ से प्यार करता हूँ, क्या मैं भी तेरे बारे में कोई बुरा फ़ैसला कर सकता हूँ? क्या मैं तुझे तंगी में डाल सकता हूँ? तेरी माँ जो कि भूखी रहकर तुझे खिलाती है, खुद जाग कर तुझे सुलाती है तो कुछ सोच मैं तुझ से तेरी माँ से सत्तर गुना ज़्यादा प्यार करता हूँ। सत्तर का मतलब अरबी में ज़बान में सत्तर नहीं होता। अरबी ज़ुबान में सत्तर का मतलब होता है बेशुमार और बेहिसाब, बेहद।

मेरे बन्दे और मेरी बन्दी! मेरी जो तुझ से मुहब्बत है वह तेरी माँ से बहुत ज़्यादा है। जब मैं तुझे कहता हूँ मेरी बात मान और नमाज़ पर आजा, तू मुसल्ला बिछा दे, सर सज्दे में रख दे, पर्दे में आजा, निकलने से नहीं रोक रहा हूँ मेरी बन्दी! जा और अपने काम के लिए निकल लेकिन पर्दे में निकल जिस्म को छिपा कर निकल। जब रोज़े आते हैं तो मैं कहता हूँ रोज़े रख। जब तू बेटी

बनती है तो मैं कहता हूँ कि माँ की ख़िदमत कर, बाप की ख़िदमत कर। जब तू बहन बनती है तो मैं कहता हूँ भाईयों की ख़िदमत कर। जब तू बीवी बनती है तो मैं कहता हूँ ख़ाविन्द की ख़िदमत कर और जब तू बेटा बनाता है तो मैं कहता हूँ बाप की ख़िदमत कर, माँ की ख़िदमत कर और जब तू भाई बनता है तो मैं कहता हूँ भाईयो की ख़िदमत कर। जब तू बाप बनता है तो मैं कहता हूँ तू औलाद की तर्बियत कर। जब तू ताजिर बनता है तो मैं कहता हूँ कि सच बोल, सही तोल। जब तू ज़मींदार बनता है तो मैं कहता हूँ अपनी ज़मीन के ग़ल्लों से तकब्बुर में मत आ बल्कि ग़रीबों पर भी ख़र्च कर और अपने ऊपर भी ख़र्च कर। जब तू बादशाह बनता है तो मैं कहता हूँ अदल कर। जब तू ताक़त में आता है तो मैं कहता हूँ इन्साफ़ कर, जब तू कुर्सी अदालत पर बैठता है तो मैं कहता हूँ ज़ालिम का साथी मत बन। यह सब कुछ जो मैं कह रहा हूँ इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि मैं तेरा भला चाहने वाला नहीं हूँ। मुझ से ज़्यादा भला चाहने वाले तुम्हें कोई नहीं मिलेगा। ﴿وكان الله شاكراً عليما﴾ मेरे जैसा क़द्रदान तुम दुनिया में कोई नहीं पाओगे।

यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम की तौबा

यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली ने निगल लिया और जब बाहर निकले तो अल्लाह तआला ने कहा तेरी क़ौम ने तौबा कर ली है जा उनके पास। वह वापस जा रहे थे तो रास्ते में देखा कुम्हार घड़े बना रहा था। कच्चे घड़े भट्टी में पकाने के लिए तो यूनुस अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला ने कहा इस कुम्हार से कहो एक

घड़ा तोड़ दे।

यूनुस अलैहिस्सलाम उसके पास गए और उससे कहा भाई एक घड़ा तो तोड़ दो। वह कहने लगा क्यों, अपने हाथों से बनाया ख़ुद ही क्यों तोड़ दूँ?

यूनुस अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह! वह कहता है मैं नहीं तोड़ता।

तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया यूनुस! यह मिट्टी का घड़ा तोड़ने को तैयार नहीं है और तू मुझ से मेरे वन्दे जिन्हें मैंने अपने हाथों से बनाया है उन्हें मेरे हाथों से मरवा रहा था। उन्होंने तौबा कर ली वे मेरे बन गए, मुझ से समझौता कर लिया।

सिफ़ाते बारी तआला

मेरे भाईयो और बहनो!

हम पूरी दुनिया के मुसलमान मर्दों व औरतों से यह कह रहे हैं कि अल्लाह तआला से सुलह कर लो, अल्लाह से सुलह कर लो। ऐसा शफ़ीक़, करीम, रहीम रब कहीं नहीं पाओगे और न मिलेगा। वह मेहरबान, वह करीम, वह हन्नान, वह मन्नान, वह दया। वह सारी ख़ूबसूरत सिफ़ात का मालिकः

الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ الرَّزَّاقُ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ الْقَابِضُ الْبَاسِطُ الْخَافِضُ
الرَّافِعُ الْمُعِزُّ الْمُذِلُّ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ الْحَكَمُ الْعَدْلُ اللَّطِيفُ
الْخَبِيرُ الْحَلِيمُ الْعَظِيمُ الْغَفُورُ الشَّكُورُ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ الْحَسِيبُ
الْجَلِيلُ الْكَرِيمُ الرَّقِيبُ الْمُجِيبُ الْوَاسِعُ الْمَجِيدُ الْبَاعِثُ
الشَّهِيدُ الْحَقُّ الْوَكِيلُ الْقَوِيُّ الْمَتِينُ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ الْمُحْصِي
الْمُبْدِئُ الْمُعِيدُ الْمُحْيِي الْمُمِيتُ الْحَيُّ الْقَيُّومُ الْوَاجِدُ الْمَاجِدُ

الواحدُ الاحدُ الصمدُ القادرُ المقتدرُ المقدمُ المؤخرُ الاولُ
الاخرُ الظاهرُ الباطنُ الوالیُ المتعالیُ البرُ التوابُ المنتقمُ
العفوُ الرؤوفُ مالکُ الملک ذوالجلال والاکرام المقسطُ
الجامعُ الغنیُ المغنیُ المانعُ الضآرُ النافعُ النورُ الهادیُ البدیعُ
الباقیُ الوارثُ الرشیدُ الصبورُ جل جلالهُ.

अल-मलिकु, अल-क़ुद्दूसु, अस्सलामु, अल-मु-मिनु, अल-मुहैमिनु, अल-अज़ीज़ु, अल-जब्बारु, अल-मुतकब्बिरु, अर्र-रज़्ज़ाक़ु, अल-फ़त्ताहु, अल-अलीमु, अल-क़ाबिज़ु, अल-बासितु, अल-ख़ाफ़िज़ु, अर्र-राफ़िउ, अल-मुईज़्ज़ु, अल-मुज़िल्लु, अस्-समिउ, अल-बसीरु, अल-हकमु, अल-अद्लु, अल-लतीफ़ु, अल-ख़बीरु, अल-हलीमु, अल-अज़ीमु, अल-ग़फ़ूरु, अश-शकूरु, अल-अल्लियु, अल-कबीरु, अल-हसीबु, अल-जलीलु, अल-करीमु, अर्र-रक़ीबु, अल-मुजीबु, अल-वासिउ, अल-मजीदु, अल-बाइसु, अश-शहीदु, अल-हक़्क़ु, अल-वकीलु, अल-क़वियु, अल-मतीनु, अल-वलियु, अल-हमीदु, अल-मुहसीयु, अल-मुबदियु, अल-मुईदु, अल-मुहयी, अल-मुमीतु, अल-हय्यू, अल-क़य्यूमु, अल-वाजिदु, अल-माजिदु, अल-वाहिदु, अल-अहदु, अस्-समदु, अल-क़ादिरु, अल-मुक़तदिरु, अल-मुक़द्दिमु, अल-मुअख़्ख़िरु, अल-अव्वलु, अल-आख़िरु, अज़्-ज़ाहिरु, अल-बातिनु, अल-वालियु, अल-मुताअलियु, अल-बर्रु, अत्-तव्वाबु, अल-मुन्तक़िमु, अल-अफ़ूव्वु, अर्र-रऊफ़ु, मालिकुल-मुल्कि, ज़ुलजिलालि-वल-इकरामि, अल-मुक़सितु, अल-जामिउ, अल-ग़नीयु, अल-मुग़नियु, अल-मानिउ, अद्-दार्रु, अन्-नाफ़िउ, अन्नूरु, अल-हादियु, अल-बदियु, अल-बाक़ियु, अल-वारिसु, अर्र-रशीदु, अस्-सबूरु, जल्ले-जलालुहू।

असली ज़ेवर व ख़ूबसूरती

यह मेरा ख़ूबसूरत अल्लाह है। कोई है ऐसा मालिक तो लाकर दिखा दो? कोई है ऐसा आक़ा तो लाकर दिखा दो, कोई ऐसा ख़ालिक़ तो लाकर दिखा दो, कोई है ऐसा अल्लाह तो लाकर दिखा दो। उस अल्लाह को सज्दा न करना कितनी बदनसीबी है हालाँकि वजूद उसी का दिया हुआ है, उसी ने माथा दिया, माथे के झूमर को औरतों ने अपना ज़ेवर समझा है लेकिन मैं कहता हूँ कि सज्दे के निशान को अपने माथे का झूमर बना ले। दुनिया के सुरमे को अपनी आँखों का ज़ेवर समझा मैं कह रहा हूँ अपनी आँखों को हया के सुरमे से सजा ले। बन सवँर कर बाहर आना कमाल समझा मैं कह रहा हूँ छिप जाना अपना कमाल बना ले। हीरा छुपा हुआ होता है पहाड़ों के बीच में, मोती छुपा हुआ होता है सदफ़ के बीच में, गेहूँ का दाना छुपा हुआ होता है सटे के अन्दर, मक्की का दाना छुपा हुआ होता है तह दर तह पर्दों के अन्दर। क़ीमती चीज़ों को सरे बाज़ार नहीं फेंका जाता, क़ीमती चीज़ों को सरे बाज़ार नहीं डाला जाता। कोई फल तो बताओ जो जो पर्दे के बग़ैर हो। अल्लाह तआला ने हर फल पर पर्दा लगाया। जितनी भी कोई चीज़ पुरमग़ज़ है, जितनी भी कोई चीज़ फ़ायदेमंद है और जितनी ज़्यादा फ़ायदेमंद है अल्लाह तआला उसे उतना ज़्यादा पर्दों में छुपाता चला जाता है, उसे पर्दों में डालता चला जाता है।

काएनात की ज़िन्दगी का सामान

काएनात की सबसे क़ीमती चीज़ है जिसको अल्लाह तआला ने

ज़िन्दगी का सामान बनाया। माँओं से तो नस्ल चली है। माँओं की गोद जब हरी होती है तो दुनिया भी हरी होती है और जब माँओं की गोद में वीरानी होती है तो दुनिया भी वीरान होती है। जब माँओं की गोद ख़ुश्क होती है तो सारी दुनिया ख़ुश्क हो जाती है। जब माँओं की गोद वीरान होती हैं तो सारी दुनिया वीरान हो जाती है जब माँओं की गोद में बहार होती है तो सारी दुनिया में बहार होती है। जब माँओं की गोदों में से तर्बियत का निज़ाम टूट जाता है तो फिर जैसे कीकर पर काँटे उगते हैं ऐसे ही माँओं की गोद से क़ातिल निकलते हैं, ज़िना करने वाले निकलते हैं, शराबी निकलते हैं, आवारा निकलते हैं, जिस्म बेचने वाले निकलते हैं, इज़्ज़त बेचने वाले निकलते हैं, इन्साफ़ को लूटने वाले निकलते हैं, इन्सानियत के क़ातिल निकलते हैं।

माँ की तर्बियत

और जब माँओं की गोद हरी होती है तो फिर कोई सैफ़ुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु बनकर निकलता है, कोई तारिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु बनकर निकलता है, कोई फ़ातेह इराक़ बनकर निकलता है, कोई जुनैद रह० बनकर निकलता है, कोई अब्दुल क़ादिर रह० बनकर निकलता है, कोई राबिया बसरिया रह० बनकर निकलती है, कोई राबिया अदविया रह० बनकर निकलती है, कोई सिर्री सिक़्ती रह० बनकर निकलता है, कोई मारूफ़ करख़ी रह० बनकर निकलता है, कोई बख़्तियार काकी रह० बनकर निकलता है।

बांझ मर्द व औरत

पीछे देखो! जब माँओं की गोद हरी थी तो ऐसे हीरे व जवाहरात वजूद में आये कि आलम को चमका दिया। आज की माँ की गोद बांझ हो चुकी है। बांझ है। सारी माँएं आज बेऔलाद हैं, सारे बाप बेऔलाद हैं। क्या मतलब हालाँकि औलाद से तो आज घर भरे पड़े हैं। औलादें हैं लेकिन वे नहीं हैं जिन्हें देखकर अल्लाह खुश होता, जिन्हें देखकर अल्लाह का महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुश होता, जिन पर इस्लाम नाज़ करता, जिन पर धरती नाज़ करती।

मुसलमानों के आँसुओं की क़ीमत

ईमान वाली औरत जब सज्दे में सर रखती है, ईमान वाला मर्द जब सज्दे में सर रखता है और उसकी आँख से आँसू का क़तरा टपकता हुआ ज़मीन के जिगर में जाता है चालीस दिन की बारिश से ज़मीन में वह ठंडक नहीं आती जितना एक आँसू किसी मोमिन मर्द व औरत की आँख का ज़मीन को ठंडा कर देता है। ज़मीन पर पानी की बारिश दस बारह इंच से नीचे नहीं जाती लेकिन मेरे भाईयो और बहनो! तुम्हारी आँख का आँसू तहतुस्सरा तक ज़मीन को ठंडा कर देता है। यह ज़मीन तरस रही है इन्सानियत के आँसूओं को। इसलिए कि इसको इतने गाने सुनाए गए कि इसका कलेजा फट रहा है। इस पर इतना नाचा गया है कि इसके रुए रुए में आग लगी हुई है, इस पर इतना ज़िना किया गया है कि यह फटने को तैयार है, इस पर माँ बाप को इतनी गालियाँ पड़

रही हैं कि पहाड़ रेज़ा रेज़ा होने को तैयार हैं, इस पर ऐसे ख़ौफ़नाक गुनाह हो रहे हैं कि आसमान की छत टूटने को तैयार है, ज़मीन व आसमान बेनूर होने को तैयार हैं।

रस्म व रिवाज छोड़ दो

मेरे भाईयो!

मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देता हूँ कि वापस आ जाओ, वापस आ जाओ और इस ज़मीन को आबाद करो सज्दों से। यह नाचने गाने के लिए नहीं बनाई गई। कौन सी शादी है मंडी बहाउद्दीन में जिसमें लड़कियाँ न नाचती हों और लड़के न नाचते हों और मेंहदियाँ न रचाई जाती हों। उधर हिन्दुस्तान से दुश्मनी, हिन्दू हमारा अज़ली दुश्मन इधर कौन सी बेटी है जिसकी मेंहदी की रस्म न होती हो, जिसकी शादी पर ढोल न बजते हों, जिसकी शादी पर मिरासी न नाचते हों, जिसकी शादी पर सेहरे न बांधे जाते हो और आगे आगे बैंड बाजे न बजते हों।

हर दम साथ रहने वाली ज़ात

मेरे भाईयो और बहनो!

कुछ तो मेरी सुनो! मैं जुनून में क्या क्या कह रहा हूँ। मैं अपनी नही सुना रहा हूँ बल्कि मैं तो डाकिया हूँ डाकिया, क़ासिद हूँ, पैग़ाम लाया हूँ अपना नहीं बल्कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पैग़ाम लाया हूँ जो वफ़ाओं के क़ाबिल है। उनसे वफ़ा करो, मौत पर माँओं की वफ़ा मिट जाती

है, बीवियों की वफ़ा मिट जाती है। हम ने अपने हाथों से अपने बाप को क़ब्र में उतार दिया। हम अपने बाप की जगह नहीं मर सके। अपनी माँ को क़ब्र में डालकर आ गए। उसे भुला दिया और उसकी जगह नहीं मर सके लेकिन अल्लाह वह ज़ात है जो मौत पर भी साथी, ज़िन्दगी में भी साथी, रात का भी साथी, दिन का भी साथी, अंधेरों का भी साथी, उजालों का भी साथी, क़ब्र का भी साथी, क़ब्र में भी आ रहा है, दाएं तरफ़ नमाज़ आ रही है, बाएं तरफ़ क़ुरआन आ रहा है, सर के ऊपर रोज़ा आ रहा है, पाँव की तरफ़ मस्जिद की तरफ़ चलने वाले क़दम आ रहे हैं और सब्र आ रहा है, तक़्वा आ रहा है, मुन्कर नकीर आ रहे हैं। सवाल जवाब हो रहे हैं।

राबिया बसरिया रह० की इबादत और मेहनत

क्या बताऊँ? राबिया बसरिया रह० एक औरत थी। हज़ारों औरतें बैठीं हैं लेकिन मेरे रब की क़सम औरत होने के नाते से राबिया का ज़िक्र तारीख़ में पन्नों में आ ही नहीं सकता था। किसी औरत के मुक़ाम बनाने के लिए पहली चीज़ ख़ानदानी होना ज़रूरी है, ख़ानदानी हो, फिर हुस्न व जमाल हो, फिर दौलत हो, फिर औलाद वाली हो अगर इन चार बातों में से कोई भी एक चीज़ न हो तो उसका मुक़ाम घट जाएगा, ख़ानदानी नहीं है तो क़ीमत घटेगी अगर ख़ूबसूरत नहीं है तो क़ीमत घटेगी अगर माल वाली नहीं है तो क़ीमत घटेगी और अगर वह वैसे ही बेऔलाद हो और बांझ हो तो कोई शादी करने को तैयार नहीं होता और कितनी अजीब बात है कि राबिया में ये चारों बातें नहीं थीं। एक

बात भी ऐसी नहीं जिसकी वजह से तेरह सौ साल के बाद मंडी बहाउद्दीन के गर्ल्स स्कूल में हज़ारों औरतों को राबिया का क़िस्सा सुनाया जाए, राबिया की कहानी सुनाई जाए। उनमें से एक बात भी राबिया के पास मौजूद नहीं थी। वह ख़ानदान से ग़ुलाम थीं। हब्शी, रंग तो कोई बड़ी बुरी बात नहीं नैन नक़्श भी भद्दे नम्बर एक ख़ानदान की ग़ुलाम, नम्बर दो शक्ल की हब्शी, नम्बर तीन ग़ुलाम के पास पैसा कहाँ से आएगा, नम्बर चार बांझ थीं और औलाद के क़ाबिल नहीं थीं। ख़ाविन्द का जवानी में इन्तिक़ाल हो गया था और जवानी में ही बेवा हो गई। उनका रोज़ का दस्तूर था रात को नहाना, कपड़े बदलना और ख़ाविन्द के पास आ जाना और अर्ज़ करना मेरी ख़िदमत की कोई ज़रूरत है? वह कहते कि नहीं तो यह कहतीं मुझे इजाज़त है? वह कहते इजाज़त है तो फिर मुसल्ला होता और राबिया होतीं थीं, रब होता और राबिया होतीं। सारी रात मुसल्ले पर कट जाती। जब ख़ाविन्द का इन्तिक़ाल हो गया तो हज़रत हसन बसरी रह० जैसे ख़ूबसूरत, हसन बसरी रह० जैसे आलिम, हसन बसरी रह० जैसे मुहद्दिस और मुफ़स्सिर, मुजाहिद खुद चलकर आए और कहा राबिया मुझ से शादी कर लो। खुद निकाह का पैग़ाम लेकर आए कि मैं आप से शादी करना चाहता हूँ।

राबिया रह० ने कहा मेरी चार बातों का जवाब दे दो। मैं शादी के लिए तैयार हूँ। उन्होंने कहा बोलो।

राबिया रह० ने कहा बताओ मैं जन्नती हूँ या दोज़ख़ी?

हसन बसरी रह० ने कहा मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता।

राबिया रह० ने कहा जब नामे आमाल उड़ाए जाएंगे किसी के

सीधे हाथ में आएगा और किसी के उल्टे हाथ में आएगा। मेरे किस हाथ में आएगा?

हसन बसरी रह० ने कहा इस बारे में भी मैं क्या बताऊँ?

राबिया रह० ने कहा बताओ जब अल्लाह तआला मेरी नेकियों को तोलेगा तो मेरे गुनाह बढ़ेंगे या नेकियाँ बढ़ेंगी?

हसन बसरी रह० ने कहा मैं कुछ नहीं जानता।

राबिया ने कहा बताओ जब लोग पुलसिरात से गुज़रेंगे तो कोई पार गुज़र जाएंगे और कोई गिर जाएंगे। मैं गिर जाऊँगी या पार निकलूंगी?

हसन बसरी रह० कहा मैं नहीं जानता।

राबिया ने कहा फिर जाओ मैं फ़ारिग़ नहीं मुझे तैयारी करने दो।

राबिया रह० का इन्तिक़ाल

जब उनके इन्तिक़ाल होने लगा तो अपनी ख़ादिमा से फ़रमाया कि जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो किसी को ख़बर न करो। पड़ौसियों को बुलाओ और मेरी इसी गुदड़ी में जिसमें मैंने सारी ज़िन्दगी अपने रब को रात को उठकर याद किया है उसी को मेरा कफ़न बना देना। उसी में दफ़न कर देना और सुबह को लोगों को बता देना ज़मीन पर एक बोझ था जो उतर गया है।

ज़मीन पर बोझ

हाय! क्या ऐसी औरतें बोझ हैं? बोझ तो मैं और आप हैं जो

सर से लेकर पाँव तक गुनाहों में डूबे हुए हैं। जिनके माथे सज्दों से ख़ाली हो गए, जिनकी आँखें हया से ख़ाली हो गयीं, जिनके कानों में म्युज़िक का ज़हर घुल गया, जो माँओं के नाफ़रमान हो गए, बाप को आँखें दिखाने लगे, बीवियों का हक़ ज़ाए करने लगे, ख़ाविन्दों का हक़ ज़ाए करने लगी। हम हैं ज़मीन पर बोझ।

ऐसी मौत मरो

राबिया उसी ख़ादिमा के ख़्वाब में आयीं और कहा मुन्कर नकीर क़ब्र में आ गए और मुझ से कहने लगे ﴿مــــن ربك﴾ तेरा रब कौन है? मैंने कहा सुब्हानअल्लाह चालीस साल जिसको न भुलाया चार हाथ ज़मीन में आकर उसे भूल जाऊँगी तो मुन्कर नकीर कहने लगे बस करो आगे क्या पूछना। ऐसी मौत मरो बहनो।

मग़रिब (यूरोप) वालों की इत्तिबा न करो

आज की औरत के पीछे मत चलो। आज की औरत यूरोप की तरफ़ खिसक रही है, आज के नौजवान यूरोप की तरफ़ खिसक रहे हैं मैं आपको फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की तरफ़ ले जाना चाहता हूँ, मैं आपको ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की तरफ़ ले जाना चाहता हूँ, जन्नत की औरतों सरदार फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की बेटी बनाना चाहता हूँ। जन्नत के नौजवानों के सरदार हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ग़ुलामी में मैं आपको लाना चाहता कि उनकी तरीक़ों को अपनाओ, उनकी ज़िन्दगी पर चलो ताकि

कल उनके साथ उठाए जाओ।

यह न हो कि कल को अल्लाह कहे यूरोप की बेटियाँ अलग हो जाएं हालाँकि सारी ज़िन्दगी मंडी बहाउद्दीन में गुज़री और कल को फ़रिश्ते खींचकर मग़रिब की आवारा औरतों के साथ खड़ा कर दें।

सारी ज़िन्दगी मंडी में गुज़री और कल को अल्लाह ने मग़रिब की आवारा लड़कों के साथ खड़ा कर दिया। ﴿وامتازوا اليوم ايها المجرمون﴾ यह वह पुकार है जो बड़ों बड़ों का पित्ता फाड़ कर रख देगी, कलेजे फट जाएंगे, मौत होती तो लोग मर जाते लेकिन मौत ही मर चुकी है कोई इस वक़्त बच नहीं सकता।

रहमान ने रहम नहीं किया

औरतों को सर की चोटियों से पकड़ कर फ़रिश्ते घसीटेंगे और मर्दों को उनके मुँह के अन्दर हाथ डालकर नीचे वाले जबड़े को पकड़कर घसीटेंगे तो उनका सारा जबड़ा निकलकर बाहर आ जाएगा और कहेंगे ﴿واشباباه﴾ हाय हमारी जवानी पर रहम करो। फ़रिश्ते कहेंगे तुम पर रहमान ने रहम नहीं किया हम कैसे रहम करें। औरतें कहेंगी हमारी बेपर्दगी पर रहम करो। फ़रिश्ते कहेंगे तुम पर रहमान ने रहम नहीं किया हम कैसे रहम करें।

मेरे भाईयो और बहनो!

उस अल्लाह को अपना बनाओ जिसने बनाया है और उसने क्यों बनाया है? इसलिए बनाया है कि मुझे राज़ी करके जाओ। मेरे बनकर आ जाओ, मेरे हुक्मों में ढल कर आ जाओ, मेरे नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े में ढल कर जाओ। उसकी ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी बनाकर जाओ तो तुम्हारी यह दुनिया भी बनेगी और आख़िरत भी बनेगी।

मुसाफ़िर ख़ाना

अल्लाह जल्ले जलालुहू नें इस दुनिया को खेल नहीं बनाया, तमाशा नहीं बनाया बल्कि या धोके का घर है यह मच्छर का पर है यह मकड़ी का जाला है। इसकी दौड़ लगाने वाले दीवाने हैं, इसका ख़्वाब देखने वाले पागल हैं। उसके लिए बड़े बड़े घर बनाने वाले दुनिया के सबसे बड़े नादान इन्सान हैं जो टूट जाने वाले घर के पीछे जन्नत का घर भूल गए। मिट जाने वाली दुनिया के पीछे अल्लाह की जन्नत को भूल गए। यह मुसाफ़िर ख़ाना है यह उजड़ जाने वाला घर है।

तू हिर्स हवस को छोड़ मियाँ　　मत देस बदेस फिरे मारा
क़ज़्ज़ाक़ अजल का लूटे है　　दिन रात बजाकर नक़्क़ारा
क्या बधिया भैंसा बैल शतर　　क्या गोनी पल्ला सर भारा
क्या गेंहूँ चावल मौठ मटर　　क्या आग धुंआ और अंगारा
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा　　जब लाद चलेगा बन्जारा

क़ब्रिस्तान आबाद और घर वीरान हो गए

वह बेगम गई, वह अमीर गया, वह अमीरन गई, वह ग़रीब गया, वह ग़रीबन गई, वह बावरची गया, वह ख़ान्सामा गया, वह बादशाह गया, वह वज़ीर गया, वह सिपाही गया, वह एसपी गया,

वह सदर गया, वह वज़ीरे आज़म गया, वह वज़ीरे आला गया, वह सेक्रेटरी गया, वह ख़ोंन्चा फ़रोश गया, छाबड़े वाला गया, वह बूट पालिश करने वाला गया, लोहा बेचने वाला भी गया, कपास गेंहूँ बेचने वाला गया।

उठ गए जनाज़े और क़ब्रिस्तान आबाद हो गए और मंडी उजड़ती चली गई और एक दिन ऐसा आएगा कि यहाँ सिवाए क़ब्रिस्तान के कोई घर नज़र नहीं आएगा।

क्या अरब शायिर थे। फ़रमाया

كل بيت وان طالت سلامتها　　　يوم ستدر كهانك باع الجب

कोई मंडी कितनी आबाद रहे, कोई घर कितना आबाद रहे, एक वक़्त आ जाता है कि वहाँ मकड़ी के जालों और हवा की संसनाहट के सिवा कोई नहीं होता। एक दिन आएगा मंडी पर कि यहाँ मकड़ियाँ भी ख़त्म हो जाएंगी, हवाएं भी ख़त्म हो जाएंगी, इन्सान भी ख़त्म। मैं और आप अल्लाह तआला के दरबार में होंगे और अल्लाह तआला सीधे सीधे पूछेगा मेरी बन्दी! बता आज के लिए क्या करके आई हो? मेरे बन्दे! बता आज के लिए क्या करके आया है?

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मत के लिए रोना

आज अल्लाह के नबी के तरीक़ों की क़द्र कर लो। उसके तरीक़ों में ढल जाओ। उस जैसा क़द्र दान नहीं। उस जैसा मेहरबान नहीं, उस जैसा मुहब्बत करने वाला नहीं। मुझे कोई माँ

बताओ तेईस बरस जिसकी आँख का आँसू ख़त्म न हुआ हो औलाद के लिए। मैं बताता हूँ यह अल्लाह का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है जो तेईस बरस अपनी उम्मत के लिए रोया है।

मुझे कोई बाप बताओ जो लगातार तेईस बरस तक औलाद के लिए तड़प तड़प कर गया हो। मैं बताता हूँ यह अल्लाह का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है जो तेईस अपनी बरस उम्मत के लिए तड़पा और मचला और ऐसा रोया कि जिस अल्लाह ने भेजा था रोने के लिए उसने भी कहा इतना न रोया कर।

बच्चा ज़्यादा पढ़ने लग जाए तो माँ बाप खुद कहते हैं बच्चा! थोड़ी देर आराम कर ले इतना न पढ़ा कर। मेरा और आपका नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी उम्मत के लिए हमारे लिए ऐसा बेक़रार हुआ, ऐसा रोया, ऐसा तड़पा, ऐसा मचला कि अल्लाह को भी कहना पड़ा मेरे नबी इतना तो न रोया कर, इतना तो न रोया कर कि तू खुद अपने आपको मार बैठे। नहीं नहीं तू अपने आँसू को रोक रोक क्यों रो रहा है? क्यों तड़प रहा है?

ऐ मेरे मौला! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत।

ताएफ़ में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ज़ुल्म

ताएफ के पहाड़ों से पूछो जाकर कि यहाँ आपके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कैसे पत्थर पड़े थे?

काएनात की अफ़ज़ल तरीन हस्ती को तीन मील पत्थर पड़े और ऐसे पत्थर पड़े कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लहूलुहान,

जूते में ख़ून जम गया और जूता पाँव से चिपक गया। बेहोश होकर गिर पड़े। ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उठाया। उत्बा बिन रबी का बाग़ था दुश्मन के बाग़ में पनाह ली।

हाय आज उसकी उम्मत ही उसकी क़ातिल है और उस वक़्त उन लोगों का यह हाल था जो चाहते थे कि हमारा दाँव लगे और हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल कर दें और उत्बा बिन रबी का बाग़ था वह तो जान का दुश्मन था लेकिन जब हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लहूलुहान देखा तो जानी दुश्मन की भी आँखों में पानी आ गया और कहने लगा हाय! मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के साथ क्या हो गया।

खुद जाकर अंगूर तोड़े और पलेट में रखकर लाया और ख़ुद देने के लिए जा रहा था। फिर शर्म आई और ग़ुलाम को भेजा और कहा उससे कहना मैं तुझे ख़ून की क़सम देता हूँ मेरे अंगूर रद्द न करना।

अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खुश करो

जिसको दुश्मन भी खिलाने पर मजबूर हो जाएं। उसकी उम्मत उसे बर्बाद करने पर आ गई। शादी होती है ढोल बज रहा है कहा जाए क्या कर रहे हो? तो कहते हैं बच्चियाँ हैं ख़ुशी कर रही हैं, बच्चे हैं खुशी कर रहे हैं। कुछ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी ख़ुश कर लेते।

कहते हैं शादी हो रही चाचे को मना कर लाओ, मामे को मना

कर लाओ, फूफी को मना कर लाओ, भाई को मना कर लाओ, दादे को मना कर लाओ, बिरादरी को मना कर लाओ। अल्लाह ने खुशी का दिन दिखाया है।

अरे भाईयो!

चाचे मामे हम मनाने चल पड़ते हैं। रूठे यार मनाने चल पड़ते हैं। मैं फिर कहता हूँ जिस रब ने हमें यह दिन दिखाया और औलाद जवान हुई है। हम ने उनकी शादी का फ़र्ज़ अदा करना चाहा और जिस नबी की दुआओं से आज हम इन्सान बन कर ज़िन्दा हैं और उसके रोने के तुफ़ैल आज हम इन्सानी शक्ल में है अगर वह रो रोकर हमारा मस्अला हल न करवाता तो आज मंडी में कोई मुसलमान नज़र न आता, जानवर फिर रहे होते।

हाय हाय मिरासियों को भी खुश कर रहे होते हैं, मुसल्लियों को भी खुश कर रहे होते हैं, अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी खुश करो।

फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की भी तो बारात गई थी। फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का भी तो निकाह हुआ था। कोई है जो दुनिया में ऐसी अज़मत वाली बेटी पेश करके दिखाए। ऐसी बेटी जब पुल सिरात से गुज़रेगी तो मैदाने हश्र में ऐलान होगा नज़रें झुका लो। फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा पुलसिरात पर आ रही हैं।

आग लग गई घर के चिराग़ से

मैं तो आप बहनों को इधर खींच रहा हूँ। तुम मग़रिब की तरफ़ जा रही हो। मंडी जैसे देहाती शहर में औरतों के पर्दे उतर गए और औरतें बेपर्दा हो गयीं।

हाय हाय कहाँ चली गयीं माँएं तर्बियत करने वाली? हमारी माँएं मर गयीं। घर वीरान हो गए टेलीवीज़न और केबिल ने हमें आग लगा दी। अपने हाथों से घर जला दिया।

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग़ से
इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से

अपने हाथों से आग लगा दी। क्या दीवाने हैं जो लुटता घर देखते हैं और हँसते हैं। जो भड़कते शोले देखते हैं और हँसते हैं। उस ज़मींदार से पूछो जिसकी फ़सल जल गई हो उसके आँसू थमने को नहीं आते। एक भैंस मर जाए तो लोग रो उठते हैं। अरे जिनकी नस्ल को आग लग गई वह कैसे खुशहाल फिर रहे हैं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की बारात और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुख़्सती

मैं तो कह रहा हूँ फ़ातिमा की बेटियाँ बनो जिसका मस्जिद में निकाह हुआ। बारात पता है कैसे गई? बहुत सारियों को पता नहीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रुख़्सती हो जाए तो आप कहते जाओ ढोल लेकर आओ, बैन्ड लेकर आओ, बाजे लेकर आओ, बारात लेकर आओ तो मैं धूमधाम से रुख़्सती करूंगा नहीं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रुख़्सती कर देते हैं। निकाह दो माह पहले हो चुका था।

मग़रिब की नमाज़ पढ़कर घर तशरीफ़ लाए। फ़ातिमा

रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं मैं घर का काम कर रही थी जैंसे की घर की बेटियाँ घर का काम करती है। मेरे कानों में आवाज़ पड़ी कि आपने किसी से कहा उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा को बुलाओ।

उम्मे ऐमन, ऐमन की माँ यह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वालिदा की बाँदी हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे बहुत प्यार करते थे उनके बारे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो जन्नती औरत से शादी करना चाहे वह उम्मे ऐमन से कर ले।

वह आ गयीं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उम्मे ऐमन! फ़ातिमा को अली के घर छोड़कर आओ और मैं इशा की नमाज़ पढ़कर आऊँगा मेरा इन्तिज़ार करें। यह फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की बारात जा रही है और अपने क़दमों पर चल कर जा रही हैं।

न बाप छोड़ने गया और न आपकी माँएं जो उम्माहातुल-अमोमिनीन हैं। पाकीज़ा माँएं, मुकद्दस माँएं जिन जैसी काएनात पर कोई पैदा नहीं हो सकती।

आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा जैसी माँ, जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा जैसी माँ, उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा जैसी माँ। सब मौजूद हैं। फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को अली रज़ियल्लाहु अन्हु के घर छोड़कर आओ। उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा और फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा क़दमों पर चलकर जा रही हैं। न कपड़े बदले, न मेंहदी रचाई, न ढोल न तामशा, न बाजा न गाना, न मेला न ठेला।

जाकर उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा ने दस्तक दी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर निकले तो हैरान हो गए और कहा यह क्या?

उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा अपनी अमानत संभालो और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे हैं मैं इशा पढ़कर आऊँगा।

यह हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की बारात गई थी जो दो जहाँ के सरदार की चार बेटियों में से सबसे प्यारी और महबूब बेटी थी। तीन बेटियों को तो अपने हाथ से रुख़्सत कर दिया था। उनकी जन्नत तो देख ली थी और फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को जाते हुए कहा था तू रो नहीं सबसे पहले तू ही मुझ से आकर मिलेगी।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का आख़िरी वक़्त और वसीयत

और फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बीमार हुई, इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु किसी काम के लिए बाहर निकल गए तो आपने ख़ादिमा से फ़रमाया पानी रखो। उसने पानी रखा और आपने ग़ुस्ल फ़रमाया उसके बाद फ़रमाया चारपाई मेरे कमरे के बीच में कर दो।

उन्होंने चारपाई बीच में कर दी। आप उस पर लेट कर क़िबले रुख़ होकर फ़रमाने लगीं अब मैं मर रही हूँ। अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बता देना कि मेरा ग़ुस्ल हो गया है। मुझे अब ग़ुस्ल नहीं

देना बल्कि इसी तरह मुझे दफ़न कर देना। यह कहकर अल्लाह के पास चली गयीं।

उस से एक दिन पहले सैयदा असमा बिन्ते उमैस[1] रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि मेरे जनाज़े का ऐसा इन्तिज़ाम करो कि मेरी लाश का भी लोगों को पता न चले।

कोई कहेगा कि नबी की बेटी लम्बी थी, कोई कहेगा नबी की बेटी छोटी थी, कोई कहेगा नबी की बेटी मोटी थी, कोई कहेगा कि नबी की बेटी पतली थी। (इसलिए) पर्दे का ऐसा इन्तिज़ाम करो। मरने को बाद रूह का नाता तो जिस्म से टूट जाता है और जिस्म शरियत का पाबन्द नहीं रहता।

मेरे भाईयों और बहनो!

मैं चाहता हूँ कि तुम उसकी बेटी बन जाओ। उनके बेटे बन जाओ जो मरने के बाद भी अपने लिए हया की चादर का इन्तिज़ाम कर रही हैं तो कहा कोई इन्तिज़ाम करो।

अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा मैं हब्शा में गई थी हिजरत करके। वहाँ मैंने देखा कि जब कोई औरत मरती थी तो उसकी चारपाई पर चारों कोनों में लकड़ियाँ लगा देते थे जैसे ख़ेमे को लगाते हैं और उस पर कपड़ा डाल देते थे। इस तरह जनाज़ा उठाते थे कि पता नहीं चलता था कि मैय्यत कैसी है।

---

1. इनका पहला निकाह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई हज़रत जाफ़र तैयार से हुआ। उनकी शहादत के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन से ख़ुद निकाह किया। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के आख़िर दिनों में सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के दौर में उनके निकाह में हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की तीमारदारी करती रहीं। (मुरत्तिब हाफ़िज़ मुहम्मद अहमद)

फ़रमाया बस! जब मैं मर जाऊँ तो मेरे ऊपर यही इन्तिज़ाम करना है। इस तरह हया के साथ दुनिया से उठकर गयीं हैं। इसी लिए तो ऊपर के ये मुक़ामात दिए जा रहे हैं।

मेहर की हिकमत

मेरे भाईयो और बहनो!

इधर आओ। इधर दुनिया व आख़िरत की इज़्ज़तें हैं और कामयाबियाँ हैं। अल्लाह तबारक व तआला ने मुसलमान औरत को मुक़ाम दिया है। उसे आज़ाद नहीं छोड़ा।

ख़ाविन्द के ज़िम्मे कमाना लगाया। देखो न मेहर किस चीज़ का नाम है। कोई पाँच सौ रुपये किसी की बेटी की क़ीमत होती है। पाँच करोड़, पाँच अरब, पाँच खरब रुपया भी किसी की बेटी की क़ीमत नहीं बन सकतीं।

मेहर के बग़ैर निकाह नहीं हो सकता और मेहर एक निशानी जैसी चीज़ है कि मरते दम तक लड़का इस लड़की पर ख़र्च करेगा और यह लड़की घर बैठकर खाएगी। इस ख़ाविन्द के ज़िम्मे उस बच्ची को खिलाना है। यह एक अलामत और निशानी है इसके बग़ैर निकाह नहीं हो सकता।

विरासत में बेटियों पर ज़ुल्म

अरब में दस्तूर था कि बेटियों का हिस्सा नहीं देते थे और सारी दौलत और जाएदाद बेटे अपने क़ब्ज़े में ले लेते हैं। हमारे पंजाब में भी यही है।

मैं अभी मर्दान से आ रहा हूँ। पठानों के यहाँ भी यही हो रहा है और मेरे ख़्याल में पूरे पाकिस्तान में यही हो रहा है कि बेटियों को कोई हिस्सा नहीं देता।

और यह ज़मींदार तो बड़े ज़ालिम हैं विरासती जाएदाद जब बहनों की तरफ़ मुन्तक़िल होती है तो वह भी पटवारियों से मिल मिलाकर और बहनों को मजबूर करके ज़मीन उतरवाकर अपने नाम लगवा लेते हैं। ताजिरों का मुझे मालूम नहीं लेकिन अन्दाज़ा यही है कि ताजिर भी बच्चियों को विरासत का हिस्सा नहीं देते। बस जो ज़हेज़ दे दिया उसे ही हिस्सा तसव्वुर कर लेते हैं।

मेरे भाईयो! जो बेटियों और बहनों को हिस्सा दिए बग़ैर मर गए उन्हें न नमाज़ें क़ब्र के अज़ाब से बचा सकेंगी, न हज, न रोज़ा, न तबलीग़, न तसव्वुफ़, न मदरसा, न ज़िक्र, न तस्बीह, न तिलावत।

मेरे भाईयो!

क़ुरआन के इतने बड़े हिस्से का ये लोग इन्कार करके मरते हैं जो बेटियों को हिस्सा नहीं देते और सारी जाएदाद बेटों के नाम लगा देते हैं। उनको दोज़ख़ की आग से कोई नहीं बचा सकेगा। उनको क़ब्र के झटके से क़ोई नहीं बचा सकेगा अगर क़ब्र एक दफ़ा झटका दे तो उसके झटके की आवाज़ पूरब और पश्चिम में सुनाई देती है।

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दुआ

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा जो आपकी सबसे बड़ी बेटी

थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें क़ब्र में दफ़न करते हुए ग़मीगीन थे लेकिन जब बाहर निकले तो चेहरा मुबारक खिला हुआ था।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा आप बहुत ग़मगीन थे जब क़ब्र से निकले तो ख़ुश थे?

आप सल्लललाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे अपनी बेटी पर अज़ाबे क़ब्र का डर था। मैंने अल्लाह तआला से दुआ की या अल्लाह! मेरी बेटी को अज़ाबे क़ब्र से बचा ले तो मेरे अल्लाह ने मेरी बेटी को बचा दिया वरना अगर क़ब्र एक दफ़ा झटका दे तो उस झटके की आवाज़ पूरब पश्चिम की सारी काएनात सुनती है।

हाय क़ब्र मिट्टी का गढ़ा नहीं है बल्कि एक नई ज़िन्दगी शुरू हो जाती है। जज़ा व सज़ा के निज़ाम चल जाते हैं।

डाकिया और नौकर

तो मेरे भाईयो और बहनो!

सुनो! सुनो! मैं क्या कह रहा हूँ। मैं अपनी नहीं कह रहा हूँ बल्कि मैं तो डाकिया और क़ासिद हूँ। अल्लाह और उसके रसूल सल्लललाहु अलैहि वसल्लम का पैग़ाम लाया हूँ। हमारे ज़मींदारों में दस्तूर है कि जहाँ क़रीबी ताल्लुक़ होता है वहाँ डाक नहीं भेजते बल्कि नौकर भेजते हैं। जब वह नौकर कार्ड लेकर जाता है तो हर ज़मींदार उसको अपनी हैसियत के मुताबिक़ कोई सौ रुपये देता है, कोई डेढ़ सौ रुपये देता है, कोई हज़ार रुपये देता है तो वह ख़ुशी ख़ुशी वापस आता है।

भाईयो और बहनो!

मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नौकर और डाकिया बनकर आया हूँ। मैं आप से पैसे नहीं मांगता बल्कि मै यह मांगता हूँ कि जब यहाँ से उठो तो फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की बेटियाँ बनकर उठो, जब यहाँ से उठो तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम बनकर उठो। बाग़ी बन न उठो, तौबा करके जाओ। लौट जाओ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ आ जाओ। उस मुबारक ज़िन्दगी की तरफ़ जहाँ इज़्ज़त ही इज़्ज़त है।

क़ुरआन ने औरत का नाम छिपाया है

औरत का बेपर्दा होना कोई इज़्ज़त की चीज़ नहीं। अल्लाह तआला ने पूरे क़ुरआन में किसी औरत का नाम ज़िक्र नहीं किया। “अल्हम्दु” से “नास” यानी पूरे क़ुरआन में मैंने इसी नज़र एक दफ़ा देखा, दस दफ़ा देखा, पचास दफ़ा देखा बल्कि सौ दफ़ा देखा तो मुझे सिवाए हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा के किसी एक भी औरत का नाम नहीं मिला। हर औरत का ज़िक्र या तो उसके ख़ाविन्द के ज़रिए से है जैसे ﴿امـــرأة العزيز﴾ अज़ीज़ की बीवी, ﴿امرأة فرعون﴾ फ़िरऔन की बीवी, ﴿امرأة نوح﴾ नूह अलैहिस्सलाम की बीवी ﴿امرأة لوط﴾ लूत अलैहिस्सलाम की बीवी।

फ़िरऔन की बीवी आसिया हैं। अल्लाह कह सकता था। नेक औरत है ﴿امـــرأة العزيز﴾ अज़ीज़े मिस्त्र की बीवी ज़ुलेख़ा। अल्लाह कह सकता था गर्वनर की बीवी बदकार औरत है ज़ुलेख़ा बुरी औरत है, आसिया अच्छी औरत है लेकिन अल्लाह तआला ने न

आसिया का नाम लिया और न ज़ुलेख़ा का नाम लिया। ﴿امرأة العزيز﴾ कौन थी ज़ुलेख़ा, ﴿امرأة فرعون﴾ कौन थी आसिया?

सिवाए मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा के अल्लाह तआला ने किसी का भी नाम नहीं लिया और हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम क़ुरआन पाक में इसलिए आया है कि लोगों ने हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा के बेटे को अल्लाह तआला का बेटा बना दिया तो अल्लाह तआला ने वाज़ेह करके साफ़ लफ़्ज़ों में फ़रमाया मेरा बेटा नहीं बल्कि मरयम का बेटा है, मेरा बेटा नहीं बल्कि मरयम का बेटा है ﴿ذالك عيسى ابن مريم﴾ इसके अलावा अल्लाह तआला ने औरत को उसके रिश्ते के साथ ज़िक्र किया नाम के साथ नहीं किया। इस पर उलमा तफ़सीर फ़रमाते हैं अल्लाह तआला को औरत का नाम ज़ाहिर करना भी पसन्द नहीं, चेहरा खोलकर बाहर आना कैसे पसन्द होगा। मुसलमान औरत का नाम हया है, मुसलमान औरत का नाम पर्दा है, मुसलमान बेटी का काम सजकर आना नहीं बल्कि यह उसकी शान के ख़िलाफ़ है। देखते नहीं छिलके बाहर फेंक दिए जाते हैं कभी केले का गूदा भी बाहर फेंका गया? कभी बादाम की गिरी भी बाहर फेंकी गई? बादाम के छिलके फेंके जाते हैं, कद्दू के छिलके बाहर फेंके जाते हैं, करेले के छिलके बाहर फेंके जाते हैं, छिचड़े बाहर फेंके जाते हैं गोश्त नहीं फेंका जाता, अख़रोट का मग़ज़ नहीं फेंका जाता।

महबूबा माशूक़ा

तुम क्यों मग़रिब (वैस्टर्न) की बेटियाँ बनना चाहती हो? जो माँ

का रूप मिटा चुकी है, वहाँ कोई औरत माँ की शक्ल में क़बूल नहीं, बेटी की शक्ल में क़बूल नहीं, बहन की शक्ल में क़बूल नहीं, बीवी की शक्ल में क़बूल नहीं, दादी की शक्ल में क़बूल नहीं, नानी की शक्ल में क़बूल नहीं है सिर्फ़ एक शक्ल में क़बूल है महबूबा हो, माशूक़ा हो और जब तक उससे इश्क़ है और लज़्ज़त है ज़िन्दगी के साथ और जैसे ही जी भर गया वहीं उसके छोड़ दिया। मर्द औरत से ज़्यादा बेवफ़ा होते हैं, तोता चश्म होते हैं। औरतों में वफ़ा का माद्दा मर्दों से ज़्यादा अल्लाह तआला ने रखा है तो जाओ देखो अल्लाह तआला ने जो हदें क़ायम की हैं वे वैसी ही नहीं क़ायम कीं।

जाओ देखो वहाँ औरत किस क़द्र रहम के क़ाबिल हो चुकी है कि जब उससे जी भर जाता है वहाँ की औरत को ऐसे फेंक दिया जाता है जैसे रुमाल से पसीना पोंछ कर उसे फेंक दिया जाता है। वह किसी शक्ल में भी क़बूल नहीं सिवाए इसके कि महबूबा बनकर रहे तो क्या औरत सिर्फ़ माशूक़ा की शक्ल में बाक़ी रहती है?

बेटी का रूप कहाँ गया? बहन का रूप कहाँ गया? बीवी का रूप कहाँ गया? माँ का रूप कहाँ गया? फूफी का रूप कहाँ गया? ख़ाला का रूप कहाँ गया?

बेटियों की परवरिश पर अज्र व सवाब

अल्लाह ने हमें कैसा प्यारा दीन दिया है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसके घर में बेटी पैदा हो

और वह बुरा न मनाए कुछ ऐसे बेवकूफ़ हैं कि बीवियों को मारना शुरू कर देते हैं। घर उजड़ गए इस बात पर कि बेटी क्यों पैदा हो गई। अरे ज़ालिम, अन्धे, दीवाने, पागल इस बच्ची के बस में होता तो वह बच्चा दे देती। यह तो आसमान वाले के बस में है। देखते नहीं हो कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यहाँ पहले बेटी ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा पैदा हो रही हैं, दूसरी बेटी रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा पैदा हो रही हैं फिर बाद में बेटे पैदा हो रहे हैं। अल्लाह तआला अपने नबी को भी बेटियाँ पहले अता कर रहा है।

तो फ़रमाया जिस घर में बेटी पैदा हुई और उसने बुरा न मनाया, मुँह न चढ़ाया और ख़ुशी ख़ुशी उस पर ख़र्च किया तो उसके लिए ﴿وجبت له الجنة﴾ जन्नत वाजिब हो गई।

जिसने तीन बेटियों को पाला और उन्हें शादी करके रवाना कर दिया तो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मैं और वह दो उंगलियों की तरह इकठ्ठे होंगे।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बीच वाली और शहादत की उँगली को जोड़कर फ़रमाया कि ऐसे होंगे।

एक शख़्स खड़ा हो गया और कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जिसकी दो बेटियाँ हों? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर दो भी हों तो भी मैं और वह इसी तरह इकठ्ठे होंगे। एक और शख़्स खड़ा हुआ और अर्ज़ किया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिसकी एक बेटी हो? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर एक भी हो तो भी वह और मैं इसी तरह इकठ्ठे होंगे जिस तरह यह

दो उँगलियाँ इकठ्ठी हैं। जिसको अल्लाह तआला ने बेटियाँ नहीं दीं तो वह क्या करे? तो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसे अल्लाह तआला दो बेटियाँ दे या दो बहनें दे और वे तंगदस्त हों और वह उन पर ख़र्च करता रहे यहाँ तक कि वे ग़नी हो जाएं या यह मर जाएं तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई।

लोग तो बहनों का हक़ छीन लेते हैं और अल्लाह तआला शादी के बाद भी तर्ग़ीब दे रहे है कि ख़र्च करते रहो बहनों पर उनको देते रहो।

माँ जने का कोई बदल नहीं हुआ करता। बहन भाईयों का रिश्ता इतना सस्ता नहीं है कि चार टकों पर उसे तोड़ दिया जाए। चार बोल पर उसे तोड़ दिया जाए। अल्लाह का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो कहता है कि शादी के बाद भी जो बहनों पर ख़र्च करेगा उस पर जन्नत वाजिब हो गई और ये बहनों का हिस्सा ही उतार लेते हैं।

विरासत के अहकाम में औरत की रिआयत

देखो अल्लाह ने क़ुरआन में सवाल कैसे उठाया? जाएदाद का सवाल। अरबों में औरतों को जो हिस्सा दिया जाता था तो क़ुरआन में सवाल ऐसे होना चाहिए था कि औरतों को या अल्लाह! कितना हिस्सा मिलेगा?

﴿للانثى مثل نصف حظ الذكر.﴾

कि औरत को लड़के का आधा दिया जाएगा यानी जितना

लड़के को मिलता है उसका आधा बेटी को दे दिया जाए।

क़ुरआन ने यह सवाल नहीं उठाया बल्कि क़ुरआन ने सवाल ही अजीब कर दिया बेटों का हिस्सा जिन्हें पहले से मिल रहा था उनका हिस्सा ख़त्म कर दिया और यह अन्दाज़ क़ुरआन से यूँ मालूम हो रहा है जैसे उनका हिस्सा है ही नहीं और पता ही नहीं कि कितना होगा? फ़रमाया

﴿للذكر مثل حظ الانثيين﴾

हम ने बेटियों का हक़ साबित कर दिया।

हम ने बेटियों का हक़ वाज़ेह कर दिया। दो बेटियों को जितना मिलना चाहिए उतना एक बेटे को दे दिया जाए। यूँ अल्लाह तआला ने जवाब दिया कि लड़कों का हक़ एक दफ़ा उड़ा दिया और बेटियों के हक़ को साबित कर दिया। मंडी वालों का बताने कि लिए कि बेटियों का हक़ दिया करो वरना मारे जाओगे बर्बाद हो जाओगे। कोई चीज़ बचा न सकेगी। अल्लाह तआला ने ख़ाविन्द को कमाने का हुक्म दिया। फिर मियाँ-बीवी के हक़ूक़ में ख़ाविन्द का हक़ बढ़ा हुआ है और मर्द औरत से अफ़ज़ल है और यह फ़ज़ीलत दर्जे के लिहाज़ से नहीं बल्कि इन्तिज़ाम के लिहाज़ से है।

सारी दुनिया के मर्द हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को पहुँच सकते? आज के सारे मर्द हज़रत राबिया बसरिया रह० को पहुँच सकते हैं?

मियाँ बीवी के हक़ूक़

बढ़ौतरी दर्जे के लिहाज़ से नहीं बल्कि इन्तेज़ाम के लिहाज़ से है।

﴿الرجال قوٰمون على النسآء.﴾

मर्द औरतों से बढ़े हुए हैं। मर्दों का औरतों से दर्जा बड़ा है इन्तिज़ाम के लिहाज़ से न कि मतर्बे के लिहाज़ से। क़यामत के दिन आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा जैसी माँ का कौन मुक़ाबला करेगा, कौन सा मर्द है जो आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के मुक़ाबले में खड़ा हो सकेगा।

मियाँ बीवी के हक़ूक़ बयान करने में अल्लाह तआला ने औरत का हक़ पहले ज़िक्र किया है और मर्द का हक़ बाद में ज़िक्र किया और फ़रमाया ﴿ولهن مثل الذى عليهن بالمعروف﴾ हालाँकि होना यह चाहिए था ﴿ولهم مثلهن الذى عليهم﴾ कि मर्दों को औरत पर हक़ है जैसा कि औरतों का मर्दों पर हक़ है लेकिन यहाँ भी अल्लाह तआला ने इसके ख़िलाफ़ इर्शाद फ़रमाया है ﴿ولهن مثل الذى عليهن﴾ इन औरतों का मर्दों पर हक़ है जैसा कि मर्दों का औरतों पर हक़ है और कहा ﴿وعاشروهن بالمعروف﴾ अपनी बीवियों से अच्छा सुलूक करना और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा ﴿خيركم خيركم لاهله﴾ तुम में से सबसे बेहतरीन मुसलमान वह जो अपनी बीवी के साथ अच्छा सुलूक करता हो।

फिर बीवियों को ख़ाविन्दों का हक़ समझाया। एक लड़की आई और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे माँ बाप मेरी शादी करना चाहते हैं। मियाँ का क्या हक़ बनता है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तेरा मियाँ सर से लेकर पाँव तक ज़ख़्मों से चूर हो उसके ज़ख़्मों में पीप पड़ चुकी हो और तू अपनी ज़बान से चाट चाट कर उसके ज़ख़्मों को

साफ़ करे तो भी तू अपने मियाँ का हक़ अदा नहीं कर पाई।

यह तो छोटी सी बात पर मुँह को पड़ने को आ जाती है। इधर छोटी सी बात पर मर्द पिटाई कर देते हैं और उधर छोटी सी बात पर गुस्ताख़ी पर उतर आती है दोनों की हदें बयान फ़रमा दीं और दोनों को ज़िन्दगी की तर्तीब बयान फ़रमा दी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का घरेलू रहन सहन

हमारे नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम घर में खुद झाड़ू देते थे। आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम बीवियों का हाथ बंटा देते थे। आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम अम्मां आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कह रहे हैं कि मैं तुझे आटा गूंध देता हूँ और तू रोटी पका ले। कोई है जो अपनी बीवी को आटा गूंध कर दे। उल्टा उनकी पिटाई कर रहा है। आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम आटा गूंध रहे हैं और फ़रमा रहे हैं कि आएशा रोटी पका, उम्मे सलमा रोटी पका, जुवेरिया रोटी पका।

आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने कपड़े खुद धो रहे हैं। नौ बीवियाँ हैं और कपड़े खुद धो रहे हैं। हँस रहे हैं मस्कुरा रहे हैं। बाहर आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफ़्त हैं ग़मगीन और घर में आपकी सिफ़्त मुस्कराने वाले।

﴿كان ضحكا، كان ضحكا﴾

औरत की ज़िम्मेदारी

अल्लाह तआला ने औरत को आमदनी की लाईन से यूँ मज़बूत करके उसके ज़िम्मे काम क्या लगाया है? उसके ज़िम्मे काम क्या

लगाया है? इसके ज़िम्मे काम यह लगाया कि नस्ल को अल्लाह और उसके रसूल सल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी सिखाओ। पन्द्रह साल दिए हैं बेटे के लिए और बेटी के लिए ग्यारह साल दिए। जब उसको रवाना करो तो इस तरह रवाना करो कि यह मुसलमान औरत हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की बेटी बनकर जा रही हो और जब उस बच्चे की शादी करो तो यह ऐसा हो कि अल्लाह के नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम का ग़ुलाम बनकर ज़िन्दगी गुज़ार रहा हो। यह तर्बियत आज ख़त्म हो चुकी है। हमारी औरतें तर्बियत से ग़ाफ़िल हो चुकी है।

हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा का सब्र

भाईयो और बहनों!

अल्लाह और उसके रसूल सल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आओ और उसकी ज़िन्दगी के तरीक़े अपनाओ। इस उम्मत की शुरूआत भी माँ से हुई थी। देखते नहीं ज़रा पाँच हज़ार साल पीछे मैं आपको दिखाने की कोशिश करता हूँ। बेशक ज़माना दूर है और गुज़रे को देखना वैसे भी मुश्किल होता है। पाँच हज़ार साल पीछे कौन देखे। ख़्यालात की आँख को ज़रा पीछे ले जाओ और देखो कि मक्का मुकर्रमा के काले पहाड़ हैं और एक औरत मिस्र की शहज़ादी बीस बाईस साल की उम्र में अपने बच्चे को गोद में लिए बैठी हुई है और मियाँ छोड़ना बीवियों के लिए वैसे बुहत ग़म की बात होती है और बीवियों के लिए सबसे बड़ी क़ुर्बानी शौहरों की जुदाई है और ख़ाविन्द अगर इब्राहीम अलैहिस्सलाम जैसा हो तो फिर जुदाई का ग़म और ज़्यादा हो जाता है।

और फिर घर के बजाए रेगिस्तान हो तो ग़म और बढ़ जाता है फिर पानी भी न हो और खाना न भी न हो तो ग़म और बढ़ जाता है और फिर कोई हौसला देने वाला भी न हो तो ग़म और बढ़ जाता है।

अम्मा हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा की गोद में उम्मत मुहम्मदिया को वजूद मिला है और उस माँ ने इस्माईल अलैहिस्सलाम को ऐसा तैयार किया और ऐसे तर्बियत फ़रमाई कि इस्माईल अलैहिस्सलाम छः या आठ बरस के हैं और इब्राहीम अलैहिस्सलाम छुरी लेकर खड़े हैं और कह रहे हैं:—

बेटा मैंने ख़्वाब देखा है तुझे ज़िब्ह करना है। तू क्या कहता है? तो उस वक़्त उस बच्चे को यह कहना चाहिए था कि बाबा! मैं नहीं ज़िब्ह होना चाहता। ख़्वाब आपने देखा और छुरी मेरे ऊपर चले मेरा क्या क़ुसूर है? यह होना चाहिए था उस वक़्त का जवाब।

हम औलाद को पानी पिलाने को कहें तो उसके माथे पर बल पड़ जाते हैं। औलाद को काम कहने की हिम्मत नहीं पड़ती।

इस्माईल अलैहिस्सलाम की तर्बियत

और यह देखो! एक माँ ने कैसे तैयार किया है। एक बच्चा उसको बाप की सोहबत नहीं मिली। उसने बाप को देखा नहीं पहली दफ़ा इस्माईल अलैहिस्सलाम अपने बाप को देख रहा है। वह कितनी मुहब्बत से देखता होगा कि मेरा अब्बा है और उसे पता नहीं कि अब्बा ज़िब्ह करने जा रहा है और "मीना" की वादी

में बाप बेटे की बातचीत हो रही है।

यह नहीं कहा कि अब्बा मुझे क्यों ज़िब्ह करते हो बल्कि फ़रमायाः

﴿يابت يابت﴾ इस लफ़्ज़ में मैं गुम हो जाता हूँ ﴿افعل ما تؤمر﴾ औलाद को अगर कोई नागवार काम कहो तो वह आगे से कहते हैं क्या है अब्बू? क्या है अम्मा? उसके लहजे में भी कड़वाहट आ जाती है। आज तो औलाद की मिन्नतें करना पड़ती हैं। यहाँ देखो! बाप कह रहा है बेटा! मैंने तुझे ज़िब्ह करना है।

आगे से इस्माईल अलैहिस्सलाम ने यह नहीं कहा। क्या मुसीबत है बाबा। अब मैं छोटा हूँ कह कुछ नहीं सकता। नहीं तुझे जो करना है कर ले मासूम हूँ कहाँ भाग सकता हूँ। इस बात की नफ़ी हो रही है ﴿يآبت﴾ में।

﴿يآبت﴾ हाय मेरे अब्बा! आपने यह क्या कह दिया। यह आप ने क्या कह दिया। मैं अल्लाह के हुक्म पर क़ुर्बान हो जाऊँ।

﴿يآبت﴾ से मालूम होता है कि इस्माईल अलैहिस्सलाम खुश हो रहे हैं जैसे बच्चे को खिलौना लाकर दो तो वह खुश होता है तो इस्माईल अलैहिस्सलाम क़ुर्बान होने के लिए इसी तरह उछल रहे हैं।

﴿يابت﴾ में नज़र आ रहा है कि इस्माईल अलैहिस्सलाम खुश होकर बोल रहे हैं अब्बा जान! कर दो, कर दो। मेरी मुराद मिल गई। यही तो मैं चाहता था, यही तो मैं चाहता था।

इब्ने क़ुदामा रह० हंबली फ़िक़ह के बड़े आलिम हैं उन्होंने एक रिवायत नक़ल की है कि जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पूछा बेटा! तेरी क्या राय है तो इस्माईल अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया:

अब्बू! मेरी क्या राय पूछते हो अगर आप मुझे ज़िब्ह कर दें तो आपके बदले में मुझे अल्लाह मिल जाएगा और अल्लाह तआला आप से बेहतर है और दुनिया के बदले में जन्नत मिल जाएगी और वह जन्नत दुनिया से बेहतर है।

बाप और बेटे का इम्तिहान

अब अगली सुनो। अपना कुर्ता उतारा और कहा बाबा! यह कुर्ता मेरी माँ को दे देना मेरी कोई भी निशानी उसके पास नहीं है तो जब कभी उसे मेरी याद आएगी तो मेरे कुर्ते से वह तसल्ली पा लिया करेगी। आप मुझे अपने कुर्ते में मुझे कफ़न दे देना और आप मेरे हाथ और पाँव बांध दें ﴿وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ﴾ माथे के बल मुझे लिटाएं और नीचे से छुरी चलाएं। कहीं मेरे हाथ पाँव की हरकत से आप को तकलीफ़ न पहुँचे और नज़रों से नज़र चार होते हुए कहीं आप का हाथ न काँप जाए। इसलिए आप मुझे उल्टा लिटा दें।

जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हाथ पाँव बांध रहे थे। क़ुर्बानी वाले बकरे के कैसे पाँव बांधे जाते हैं। उस बच्चे के हाथ पाँव बांध रहे हैं जो चौरास्सी या छियास्सी साल की उम्र में मिला था और अब क्या उम्र हो चुकी है।

अब बियानवे बरस की उम्र में हैं और मासूम बच्चा तो पराया भी प्यारा लगता है। अपने बच्चे के हाथ बांधे। पाँव बांधें लिटाया और अपना घुटना इस्माईल अलैहिस्सलाम की कमर पर रख दिया और सर के बालों से पकड़ कर यूँ उठाया जैसे बकरी के सर को पकड़ कर उठाया जाता है और अर्ज़ किया:

ऐ मौला! अगर तू मुझ से नाराज़ हो गया था कि मेरे दिल में इस्माईल (अलैहिस्सलाम) का ख़्याल आता था तो मेरी इस क़ुर्बानी से अपनी नाराज़गी दूर कर दे अगर तूने मेरा इम्तिहान लेना था तो तू मुझे इस इम्तिहान में मुझे कामयाब कर दे।

और छुरी चला दी। इब्राहीम अलैहिस्सलाम का यह अमल और अलफ़ाज़ देखकर फ़रिश्तों की चीखें निकल गयीं और अगर मीना में जान होती तो मीना की चीख़ व पुकार सुनी जाती। अल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया:

﴿وناديـنه ان ياابراهيم قد صدقت الرويا.﴾

इब्राहीम शाबाश! शाबाश! तू इम्तिहान में पास हो गया। हम ने देख लिया तेरा दिल मेरे लिए ही है और किसी के लिए नहीं है। मैंने देख लिया है।

ऐसी माँएं हम ढूंडते फिरते है। खोई हुई दौलत है, बिखरी हुई दौलत है जिसे हम ढूडते फिर रहे हैं कि शायद ये मोती इकठ्ठे हो जाएं और यह माला पिरोई जा सके और फिर उम्मत के गले का हार बने।

माँओं की गोद में जब तर्बियतें थीं तो नस्लें ऐसी पैदा हुईं जो हिदायत का सूरज और चिराग़ बन गए।

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का वालिदा से इजाज़त लेना

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का जब घेराव किया गया हज्जाज ने। अठ्ठारह आदमी पास रह गए। तीन हज़ार की फ़ौज से मुक़ाबला। माँ के पास आए और कहा अम्मा! समझौते

की पेशकश हो रही है क्या ख़्याल है समझौता कर लूँ? अगर समझौता कर लूँ तो जान बच जाएगी।

उनकी वालिदा हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हैं। अस्मा बिन्ते अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया बेटा अगर तू दुनिया के लिए लड़ रहा है तो तू भी और तेरे साथी भी बर्बाद हो गए और अगर तू आख़िरत के लिए लड़ा है तो फिर समझौता न कर। मुझे तेरा मरना भी प्यारा है और तेरा जीना भी प्यारा है अगर तू अल्लाह की रज़ा के लिए मरता है तो मुझे तेरी मौत की कोई परवाह नहीं।

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कहा अम्मा! तू क्या कह रही है। मैंने तो दुनिया का ख़्वाब भी आज तक नहीं देखा। मैं दुनिया के लिए तलवार कैसे उठा सकता हूँ।

फ़रमाया बेटा! फिर तेरा मरना भी मेरे लिए राहत है आजा गले मिल ले। माँ बेटा आख़िर मुलाक़ात कर रहे हैं और माँ मरने के लिए अपने बेटे को भेज रही है। जब गले लगाया तो कुर्ते के नीचे लोहे की ज़िरह (लोहे की जाकेट) थी तो माँ ने पूछा यह अन्दर क्या है?

अर्ज़ किया ज़िरह है।

माँ ने कहा यह क्यों है?

बेटे ने कहा मुझे डर है कि मेरी लाश को ख़राब करेंगे तो अस्मा रिज़ियल्लाहु अन्हा ने एक जुमला बोला जो अरब कहावत बन गया। फ़रमायाः

﴿الشاة المذبوح.﴾

बेटा! जब बकरी ज़िब्ह हो जाती है तो खाल खिंचने का दर्द उसे नहीं होता। मरने वाले लोहे का सहारा नहीं लेते और अपने हाथ से ज़िरह उतरवा कर बेटे को रवाना किया।

इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का जमाव

सुबह से शाम तक अठ्ठारह आदमियों के साथ मिलकर दोनों हाथों में तलवार लेकर तीन हज़ार आदमियों का मुक़ाबला किया। अस्र हो गई और कोई भी क़रीब न फटक सका। आख़िर उन्होंने जबल अबि क़ैस के ऊपर से पत्थर मारना शुरू कर दिए।

एक पत्थर आकर माथे पर लगा। ख़ून का फ़व्वारा छूटा और सीने से होता हुआ सामने से पंजों पर आया तो बे साख़्ता कहाः

﴿ولسنا على الاعقاب تدما كلومنا﴾

हम वे नहीं जो कमर पर ज़ख़्म खाकर ऐड़ियों को रंगीन करते हैं बल्कि हम वे हैं जो सीने के ख़ून से पंजों पर मेंहदी लगाते हैं।

पत्थर इतना बड़ा था खड़े न हो सके और गिर गए। ऊपर से सूडानियों ने हमला कर दिया और आख़िरी बोल ये थे:

﴿اسماء ان قتلت لا بتكينى﴾

ऐ माँ अब मेरा पैग़ाम आएगा मौत का रोना नहीं तूने मुझे ख़ुद ही तो भेजा था।

﴿لم يبق الا حسبى ودينى﴾

मैंने दीन को निभाया, अपनी शराफ़त को निभाया और मेरा सबने साथ छोड़ दिया अलबत्ताः

﴿صارم للانت بیمینی﴾

मेरी तलवार आख़िर तक मेरे साथ रही।

यह थीं माँएं और यह औलाद थी।

हया की सूरत

हम ऐसी माँएं ढूंडते फिर रहे हैं ये माँएं वे नहीं होतीं जिनके कान गानों के आदी हों, जो बेपर्दा होकर बाज़ारों में फिरें बल्कि ये व माँएं होती हैं जो हया की सूरत होती हैं और फ़ातिमा रज़ियल्लाह अन्हा की बेटियाँ होती हैं और अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी में चलती हैं।

यह ज़िन्दगी घर बैठे मिलती तो हम घर क्यों छोड़ते। यह ज़िन्दगी बाहर फिर कर मिलती है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों में मिलती है। हज़रत मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी में मिलती है जो इतना बड़ा एहसान कर गया हम पर अल्लाह के बाद अगर अल्लाह के नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम रो रोकर हमारे लिए रास्ता न खुलवाते तो हम दुनिया में ही बर्बाद हो जाते।

पाँच घन्टे उम्मत के लिए दुआ

हर साल अल्लाह हज पर ले जाता है, बड़ा ज़ोर लगाते हैं कि लम्बी दुआ करनी है। लम्बी से लम्बी दुआ मैंने कोशिश की तो चालीस मिनट से ज़्यादा न हो सकी और हम ख़ेमे में बैठे होते हैं। पानी भी मौजूद होता है। प्यास लगती है तो पानी पी लेते हैं।

खाना भी खाया होता है।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरफ़ात के मैदान में अप्रैल के महीने में सीधी पड़ती धूप में ऊँटनी पर बैठकर जो बे आराम सवारी होती है, पाँच घन्टे दुआ की पाँच घन्टे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हाथ उठाकर फ़क़ीर की तरह या अल्लाह! मेरी उम्मत, या अल्लाह! मेरी उम्मत। औलाद नहीं फ़रमाया बल्कि मेरी उम्मत, मेरी उम्मत, उम्मत उम्मत की ख़ैर मांग रहे हैं।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का जमाव

हालाँकि औलाद की आज़माइश की ख़बर सुन ली थी लेकिन उनके लिए दुआ नहीं की कि या अल्लाह! उनसे आज़माईश टाल दे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ रखते हैं हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु को गोद में लिया हुआ है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ारोक़तार रो रहे हैं, रो रहे हैं।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ैर तो है आप क्यों रो रहे हैं? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे जिब्राईल अलैहिस्सलाम आकर कह गए हैं कि मेरे इस बेटे को मेरी ही उम्मत क़त्ल कर देगी और मुझे वह मिट्टी दिखा कर गये हैं जिसमें इसका ख़ून बहाया जाएगा।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए दुआ नहीं की कि या अल्लाह! इसकी क़ुर्बानी टाल दे। या अल्लाह इसको बचा ले।

इसकी नस्ल को बचा ले।

आप के घर के सोलह आदमी ऐसे टुकड़े टुकड़े दिखाए गए कि जब उनकी औरतों को इब्ने ज़ियाद का लश्कर लेकर चलने लगा तो सिर्फ़ हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सर ही नहीं काटा गया था बल्कि बहत्तर के बहत्तर के सर काट दिए गए थे। जिनमें सोलह लोग तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की औलाद में से थे और पाँच हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के दूसरे बेटे थे।

उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु थे, अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु थे, मुहम्मद रह० थे, जाफ़र रह० थे।

वह अब्बास रह० जिन्हें अलमबरदार कहते हैं। ये पाँच हज़रात हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई और दूसरी माँओं से थे। ये इक्कीस तो औलादे अली रज़ियल्लाहु अन्हु में से हैं और अल्लाह के नबी के ख़ानदान से थे और बहत्तर के बहत्तर की गर्दनें काट दी गयीं। छोटा बच्चा मासूम अब्दुल्लाह जो आख़िर में शहीद हुए उनका भी सिर काट दिया गया और जब वह क़ाफ़िला चला और ज़ैनब की नज़र पड़ी देखा कि सबके धड़ कटे पड़े हैं तो कहा:

يا محمدا يا محمدا صل عليك الا له وملك السماء
هذا حسين بالعراء مزمل بالدماء مقطع الاعضاء.

يا محمدا يا محمدا بناتك صدايا
وذريتك مقتلا تصفى عليها الرياح.

यह वह विलाप था जिसको सुनकर अभी जिन्होंने सर काटे थे ज़ारो क़तार रोने लग गए।

﴿ابكت كل عدو وصديق.﴾

सब रोने लगे अपने और पराए।

इन अलफ़ाज़ के तर्जुमे की ताक़त नहीं रखता बस मैं ऐसे ही गुज़र गया हूँ।

आख़िरी वक़्त भी उम्मत की फ़िक्र

अपनी औलाद की क़ुर्बानी का फ़ैसला क़बूल किया और उम्मत के लिए हाथ उठाए या अल्लाह मेरी उम्मत, या अल्लाह मेरी उम्मत। यही कहते कहते दुनिया से जाने का वक़्त आ गया। रबियुल अव्वल आ गया। जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए और कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मौत का फ़रिश्ता बाहर खड़ा है अन्दर आने की इजाज़त चाहता है। सुब्हानल्लाह अल्लाह ने हमें कैसा नबी दिया जहाँ मौत का फ़रिश्ता भी पूछ कर आए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आ जाए। फ़रिश्ता अन्दर आ गया और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब से मौत का काम मेरे ज़िम्मे लगा है पहला मौक़ा है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया इजाज़त लेकर जाना अगर इजाज़त मिले तो ठीक नहीं तो वापस आ जाना और पहला मौक़ा है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया पूछ लेना आना चाहें तो ले आना और रहना चाहे तो वापस आ जाना। हमें ऐसा रसूल मिला।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को देखा और फ़रमाया जिब्राईल! क्या कहते हो?

हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया अल्लाह तआला आपकी मुलाक़ात का शौक़ रखता है।

कहा अच्छा। मैं ऐसे नहीं जाऊँ बल्कि अपनी उम्मत का काम करवाऊँगा। जाओ और अल्लाह से पूछकर आओ मेरे बाद मेरी उम्मत के साथ क्या करेगा मैं फिर बताऊँगा मुझे जाना या है या रहना है।

मौत का फ़रिश्ता खड़ा रहा और जिब्राईल अलैहिस्सलाम वापस गए और जवाब लेकर आए और कहाः

"या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि आपकी उम्मत को अकेला नहीं छोड़ेंगे।"

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿الآن قرة عينى﴾ अब मेरी आँखें ठंडी हैं।

मेरे रब की क़सम अगर यह मसूअला उस वक़्त हल न होता तो आज ज़िना के अड्डे चलाने वाले ख़िन्ज़ीर बन चुके होते, सूद खाने वाले बन्दर बन चुके होते। मेरे और आप जैसे इन्सान नज़र न आते बल्कि हम सब जानवर बनकर ज़मीन के नीचे जा चुके होते।

दुआएं दो उस कमली वाले को और उसके आँसूओं की क़द्र करो जो अपनी औलाद के लिए तो न रोया लेकिन आपके लिए रो रोकर अल्लाह को मनवा गया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इज़्राईल अलैहिस्सलाम से कहा अपना काम करो (मेरी रूह निकालो) तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम की हाय निकल गई और कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर आपने वाक़ई जाने का फ़ैसला

कर लिया है तो मेरा भी आज दुनिया में आख़िरी दिन है आज के बाद मैं भी कभी दुनिया में लौटकर नहीं आऊँगा और "वही" का नूरानी सिलसिला ख़त्म हो गया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्मे मुबारक पर पानी डाल रहे थे जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग़ुस्ल दे रहे थे तो फ़रमायाः

> **या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपके इन्तिक़ाल पर वह सिलसिला बन्द हुआ है जो किसी नबी अलैहिस्सलाम के इन्तिक़ाल पर बन्द न हुआ था अगर आप ने ख़ुद हमें सब्र करने का हुक्म न दिया होता तो आज हम दुनिया को रो कर दिखाते और ग़म दिखाते और बताते रोना कैसा होता है और ग़म कैसा होता है?**

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आख़िरी नसीहत

मौत के फ़रिश्ते ने जब आपकी रूह निकालना शुरू किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आख़िरी वक़्त को भी क़ीमती बनाया और अपनी उम्मत को ख़िताब करके फ़रमायाः

﴿الصلوۃ وما ملکت ایمانکم﴾

मेरी उम्मत नमाज़ न छोड़ना

कितनी औरतें हैं मंडी में जो नमाज़ पढ़ती हैं इतना हज़ारों का मज्मा बहनों का बैठा हुआ है कितनी औरतें हैं जो नमाज़ अदा करने वाली?

यह कितने नौजवान बैठे नज़र आ रहे हैं उनमें से कितने हैं पाँच वक़्त के नमाज़ी? आख़िरी नसीहत ﴿الصلوٰة﴾ मेरी उम्मत! नमाज़ न छोड़ना ﴿وما ملكت ايمانكم﴾ गुलामों से अच्छा सुलूक करना। इससे मुराद यह है कि गरीबों, मातहतों और घर में काम करने वालियों से अच्छा सुलूक। गरीबों को भी माँओं ने जना होता है। उनकी भी बहनें होती हैं, उनकी भी बेटियाँ होती हैं। क्या ज़ुल्म व सितम है कि छोटी छोटी बातों पर माँ बहन को बेइज़्ज़त करके खड़ा कर देते हैं तो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आख़िरी नसीहत थी गरीबों से अच्छा सुलूक करना, मातहतों से अच्छा सुलूक करना, नमाज़ न छोड़ना और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज़ जब आहिस्ता हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कह रहे थे ﴿الصلوٰة الصلوٰة الصلوٰة﴾ नमाज़ नमाज़ नमाज़ फिर फ़रमाया ﴿اللهم الرفيق الاعلىٰ﴾ और वह गए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखें बन्द हुईं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सर मुबारक उस वक़्त हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के सीने पर रखा हुआ था। वह गमगीन हुईं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें छोड गए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल पर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की कैफ़ियत

जब घर में चीख पुकार हुई तो मस्जिद में शोर मच गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तलवार लेकर खड़े हो गए और

कहाः—

"ख़बरदार! जिसने कहा अल्लाह का नबी फ़ौत हो गया है मैं उसे क़त्ल कर दूंगा। वह फ़ौत नहीं हुए बल्कि मूसा अलैहिस्सलाम की तरह अल्लाह के पास गए हैं और वापस आएंगे और कुफ़्र को मिटाएंगे। मुनाफ़िक़ों को मिटाएंगे और जो कहेगा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ौत हो गए हैं मैं उसे क़त्ल कर दूंगा।"

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु दौड़े हुए आए, छलाँग लगाई और अन्दर गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर चादर थी। चादर को हटाया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माथे को चूमा और कहाः

"वा सैयदा व ख़लीला" फिर रोए फिर कहा "वअसफ़ियाह" फिर रोए फिर कहा "वअंबियाह" हाय मेरा ख़लील जुदा हो गया हाय मेरा नबी जुदा हो गया, हाय मेरे दिल का टुकड़ा जुदा हो गया और कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह आप पर दो मौतों को जमा नहीं करेगा। उसके बाद मस्जिद में तशरीफ़ ले गए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया बैठ जाओ।

और पहली दफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने साफ़ इन्कार कर दिया और कहा नहीं बैठता तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु मेम्बर पर तशरीफ़ ले गए और ख़ुत्बा दिया और कहाः

فمن كان يعبد محمدا فان محمدا قد مات
ومن كان يعبد الله فان الله حي لا يزال.

ऐ लोगों! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से उठ गए

और अल्लाह के पास चले गए। उन पर भी मौत को आना था वह आ गई और अल्लाह मौत से पाक है वह ज़िन्दा है।

और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ﴿وما محمد الا رسول قد خلت من قبله الرسل﴾ आयत जब पढ़ी तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मुझे यूँ लगा जैसे यह आयत आज ही उतरी है और वहीं गिर गए।

इस परेशानी में ज़ोहर का वक़्त हुआ। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए अज़ान देने के लिए। जब ﴿اشهد ان محمدا﴾ पर पहुँचे तो आवाज़ बन्द हो गई और अज़ान में चीख़ पुकार शुरू हो गई और औरतों में चीख़ पुकार और मदीने में कोहराम मच गया।

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुश्किल से अज़ान को पूरा किया और नीचे उतर कर फ़रमाया आज के बाद मैं अज़ान नहीं दूंगा।

एक देहाती का आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का अजीब अन्दाज़

हाय वह नसीहतें करता चला गया। थका हुआ मुसाफ़िर मंज़िल पर जाते हुए भी उम्मत को याद करता चला गया और मरने के बाद भी यह निज़ाम बना गया। नुव्वी रह० बड़े मुहद्दिसीन में से हैं, इब्ने कसीर रह० बड़े मुहद्दिसीन व मुफ़स्सिरीन में से हैं। एक वाक़िया नक़ल करते हैं कि एक बुज़ुर्ग क़ब्रे अतहर पर बैठे हुए

सलाम पढ़ रहे थे कि एक बद्दू आया और कहाः

﴿السلام عليك يا رسول الله.﴾

फिर कहने लगा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रब ने कहा है:

ولو انهم اذ ظلموا انفسهم جآء وك فاستغفروا الله
واستغفرلهم الرسول لوجدوا الله توابا رحيما.
فجئتك مقرا بذنوبي. مستشفعا بك الى ربي.

या रसूलुल्लाह! तेरे रब ने कहा अगर यह अपने ऊपर ज़ुल्म कर बैठें, गुनाह कर बैठें और फिर तेरे पास हाज़िर हों और मुझ से माफ़ी मांगे और तू भी उनके लिए मुझ से माफ़ी मांगे तो मैं उन्हें माफ़ कर दूंगा। मैं अपने गुनाहों का बोझ लेकर आया हूँ और आपको सिफ़ारिशी बनाता हूँ अल्लाह के दरबार में कि अल्लाह मेरी बख़्शिश कर दे।

फिर उसने दो शे'र पढ़े और ये दो शे'र आज भी रौज़ा-ए-अक़्दस पर लिखे हुए हैं। जब हम जाली के सामने खड़े होकर सलाम पढ़ते हैं तो सुतूनों पर लिखे हुए हैं:

﴿يا خير من دفنت في البقاع اعظمه من طيب﴾

ऐ वह बाबरकत ज़ात! जिसके अन्दर जाने से वादियाँ भी बाबरकत हो गयीं और ज़मीन भी बाबरकत हो गई और पहाड़ भी बाबरकत हो गए।

﴿نفسي الفدآء لقبر انت ساكنه﴾

मैं क़ुर्बान उस क़ब्र पर जिसमें आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आराम कर रहे हैं।

﴿فيه العفاف وفيه الجود والكرم﴾

इसी में सख़ावत इसी में इज़्ज़तें, इसी में बुलन्दियाँ, इसी में पाकदामनियाँ पड़ी हुई हैं।

ये दो शे'र तो लिखे हुए हैं और भी हैं जो वहाँ नहीं लिखे हुए।

﴿انت الشفيع الذی ترجٰی شفاعته علی الصراط عزامه﴾

जिस दिन उम्मत पुलसिरात से गुज़रेगी तो हमारा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हाथ उठाकर कहेगा

﴿یا ربّ سلم سلم﴾

या अल्लाह! मेरी उम्मत पार लंघा दें, मेरी उम्मत पार लंघा दे

﴿وصاحباك هما ابدا﴾ ﴿منی السلام علیهم ما جری القلم.﴾

और मैं अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को भी नहीं भूल सकता। मेरा उन पर भी सलाम हो। आप पर भी सलाम हो। जब तक क़लम कार क़लम चलाता रहे मेरा सलाम भी चलता रहे।

वह कोई ऐसे दर्द में शे'र कह गया कि हज़ारों बरस के बाद भी मैं आपको सुना रहा हूँ और वह आज तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ा-ए-अत्हर पर लिखे हुए हैं।

अतबी रह० फ़रमाते हैं कि वह बद्दू तो उठकर चला गया और मुझे नींद आ गयी। नींद आते ही अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया भाग और उस बद्दू को पकड़ कर बता कि तेरे अल्लाह ने तुझे माफ़ कर दिया।

जाने के बाद भी निज़ाम बनाकर गए हैं कोई तो शर्म की आँख रखता, कोई तो दिल जिन्दा रखता।

क़यामत के दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत

यह तो दुनिया है। आगे देखो जब दोज़ख़ आकर चीख़ मारेगी, चिंघाड़ेगी और बड़े बड़े इन्सान ज़मीन पर गिरेंगे।

आदम अलैहिस्सलाम कहेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

नूह अलैहिस्सलाम कहेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

इदरीस अलैहिस्सलाम कहेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

इब्राहीम अलैहिस्सलाम कहेंगे नफ़्सी-नफ़्सी या अल्लाह तेरी मेरी दोस्ती का वास्ता मेरी जान बचा मैं किसी और का सवाल नहीं करता। अपने बाप का भी सवाल नहीं करता।

याक़ूब और यूसुफ़ अलैहिमास्सलाम कहेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

इस्हाक़ और इस्माईल अलैहिमास्सलाम कहेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

याह्या और ज़क्रिया अलैहिमास्सलाम कहेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

अय्यूब और सालेह अलैहिमास्सलाम कहेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

यूनुस और दाऊद अलैहिमास्सलाम कहेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

सुलेमान अलैहिस्सलाम कहेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

यूशा, मूसा, हारून अलैहिमुस्सलाम कहेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे या अल्लाह! मैं अपनी माँ मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा का भी सवाल नहीं करता। मेरी जान बचा।

तो माँएं कब याद करेंगी, बीवियाँ कब याद करेंगी, बाप बेटे कब याद करेंगे लेकिन आपको एक हस्ती का पता बताता हूँ जो सबसे अलग होगा। उसकी झोली फैली हुई होगी। अर्श पर नज़र

होगी और कह रहा होगा

﴿يا رب امتی امتی، يا ربی امتی امتی﴾

माँएं कहेंगी या अल्लाह मेरी जान बचा, नबी कहेंगे या अल्लाह मेरी जान बचा लेकिन मेरा और तुम्हारा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कहेगा या अल्लाह! मेरी उम्मत बचा ले।

जो न ज़िन्दगी में भूला, जो न मौत पर भूला, जो न क़ब्र में भूला, जो न हश्र में भूला। वह रह गया है बेवफ़ाई के लिए और कोई नहीं मिला बेवफ़ाई के लिए, और कोई नहीं मिला नाराज़ करने के लिए, कोई और नहीं मिला। उसी से बग़ावत करना थी।

हम दीवाने नहीं

मेरे भाईयो और बहनो!

तौबा करो अल्लाह के दरबार में। मैं तो कम करना चाहता था बात लम्बी हो गई है लेकिन मालूम नहीं फिर इतने दोस्त जमा हो सकेंगे या नहीं

अह़बाब जमा हैं मीर हाले दिल कह ले कह ले
फिर इलतिफ़ात दिले दोस्तां रहे न रहे

ऐसे मजमें कम मिलते हैं कौन सुनता है हमारी। कौन सुनता है हमारी फ़रियाद। हमें समझते हैं पागल हैं जो बिस्तर उठाकर घर छोड़े फिरते हैं। हक़ अदा नहीं करते। घर से बे घर होकर फिरते हैं। अल्लाह तआला ने हमें इतना दीवाना नहीं बनाया कि हम घरों से बेज़ार होकर निकल जाएं।

मेरे भाईयो और बहनो!

आख़िरत की आने वाली घाटी ऐसी ख़ौफ़नाक है जो हक़ीक़त में इन्सान को दीवाना बना देती है और दुनिया से ग़ाफ़िल कर देती है। मौत का झटका सारा ऐश भुला देता है और मौत का ख़ूबसूरती से आ जाना सारे ग़म भुला देता है। क़ब्र का जन्नत का बाग़ बन जाना सारी दुनिया के ग़म भुला देता है।

कल क़यामत के दिन अल्लाह का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हौज़े कौसर पर कहेगा आ जाओ चौदहवीं सदी की बेटियाँ आ जाओ, मेरे हाथों से पियो, मैं तुम्हारी हया को सलाम करता हूँ। जब मेरी बेटियों को मग़रिब की तहज़ीब ने नंगा कर दिया था और वे सरे बाज़ार ज़ीनत बन गयीं थीं और बनठन कर आना अपनी इज़्ज़त समझती थीं तुम ने उस वक़्त पर्दों को सलामत रखा, हया को सलामत रखा। आओ मेरी बेटी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ तुम भी खड़ी हो जाओ। वह कैसा दिन होगा जब अल्लाह का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ऐसी पाकीज़ा बेटियों को गले लगा रहा होगा, वह कैसा दिन होगा जब अल्लाह का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चौदहवीं सदी के नौजवानों को अपने सीने से लगा रहा होगा और कौसर पिला रहा होगा।

मेरे भाईयो और बहनो!

शौक़ बदलो, ज़ौक़ बदलो। यह भी कोई शौक़ है कि यह मिल जाए वह मिल जाए। मिल जाने के बाद क्या होगा? आख़िर तो छोड़कर ही चले जाएंगे, आख़िर तो जनाज़े उठ जाएंगे, आख़िर तो क़ब्रें मिट जाएंगी। सगी औलादें भूल जाती हैं कि अम्मा की क़ब्र

कहाँ है औरों ने कब याद करना है।

कारगुज़ारी और तर्ग़ीब

मेरे भाईयो और बहनो!

तौबा करो और अपनी ज़िन्दगी को अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी में लाओ। अपने मर्दों को चार चार महीने के लिए भेजो, चालीस चालीस दिन के लिए भेजो। अपने बेटों को भेजो, अपने भाईयों को भेजो, ख़ुद भी निकलो। हम तो औरतों की जमात बनाकर निकलते हैं। मैं अभी मर्दान में अपनी बीवी के साथ पन्द्रह दिन लगाकर आ रहा हूँ। हमारी आठ मर्दों और आठ औरतों की जमात थी। मर्दान में हम ने आठ दिन काम किया और बाक़ी राएविन्ड रहे।

मर्दान में ऐसा औरतों का माहौल था और इज्तिमा था और औरतें अपने मर्दों और ख़ाविन्दों के साथ निकलती थीं। हम कहते हैं तीन दिन के लिए अपने मर्दों के साथ, अपने ख़ाविन्दों के साथ, अपने भाईयों के साथ, अपने बाप के साथ।

बयान का खुलासा

औरतें अपने अपने घरों से आपने ख़ाविन्दों को चार चार महीने के लिए तैयार करें। अपने घरों में नमाज़ ज़िन्दा करें। ज़िक्र व तिलावत को ज़िन्दा करें। बीवी ख़ाविन्द का हक़ अदा करे। ख़ाविन्द बीवी का हक़ अदा करे। माँ बाप औलाद की तर्बियत करें। औलाद माँ बाप का कहना माने। अपनी औलाद को हलाल

ख़िलाओ। कभी हराम न ख़िलाओ। अपनी ज़िन्दगी से शरीयत के ख़िलाफ़ तरीक़ों को निकालो। अपने बच्चों की तर्बियत के लिए वक़्त निकालो। पर्दे में रहो, पर्देदार बनकर चलो।

पर्दे में नमूना

अल्लाह तआला ने एक आयत आज की औरत के लिए संभाल कर रखी है बाहर निकलने से तो अल्लाह ने नहीं रोका लेकिन बताया कि अगर निकलो तो जैसे शुएब अलैहिस्सलाम की बेटी निकली थी

﴿فجآءته احدٰهما تمشی علی استحیآء ان ابی یدعوك.﴾

इनमें तीन अल्फ़ाज़ इज़ाफ़ी तौर पर अल्लाह ने बयान फ़रमाएं हैं जो क़िस्से से मुताल्लिक़ नहीं हैं लेकिन उन्हें किस्से का हिस्सा बनाया है कि एक बेटी आई। मूसा अलैहिस्सलाम को बुलाने के लिए

فجآءته احدٰهما تمشی علی استحیآء ان ابی
یدعوك لیجزیك اجر ما سقیت لنا.

यह बात पूरी है कि एक बच्ची आई और कहने लगी मेरे अब्बा आपको बुलाते हैं लेकिन अल्लाह तआला ने तीन लफ़्ज़ों का इज़ाफ़ा किया और फ़रमाया

﴿فجآءته احدٰهما تمشی علی استحیآء ان ابی یدعوك.﴾

कि एक लड़की आई मूसा अलैहिस्सलाम को बुलाने, वह जो आई चलकर उसकी चाल इतनी हया वाली थी जो कि अल्लाह तआला को इतनी पसन्द आई कि अल्लाह तआला ने उसको

कुरआन का हिस्सा बना दिया। उसकी चाल को अल्लाह तआला ने ज़िक्र किया है

इसका तर्जुमा करते हुए मैं हमेशा परेशान हो जाता हूँ क्योंकि यहाँ जो लफ़्ज़ ﴿عـلـٰى﴾ है वह हया को सवारी की शक्ल में ला रहा है। यहाँ यह बहुत ख़ूबसूरत मिसाल है। हया को अल्लाह तआला ने एक सवारी की तरह बयान किया है।

और हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम की बेटी को उस पर सवार से मिसाल दी है और यूँ बताया है कि अगर कोई यह देखना चाहे कि हया क्या होती है तो इस बेटी की चाल को देख ले। उसे हया कहते हैं।

"उनमें से एक लड़की आई हया बनकर"

तर्जुमा तो यह कि हया बनकर आई लेकिन मैं यह तर्जुमा करता हूँ कि उनमें से एक बेटी आई हया बनकर, हया बनकर।

बहरहाल निकलो तो हया बनकर निकलो। शर्म में निकलो। पर्दे में निकलो जन्नत में सारे पर्दे अल्लाह उठा देगा। जन्नत की औरतों में सत्तर हज़ार गुना ज़्यादा ख़ूबसूरती अल्लाह तआला अता करेगा।

जन्नत में मुसलमान औरत का मक़ाम

उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछकर बात आपके लिए वाज़ेह कर दी कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत की हूर अफ़्ज़ल है या दुनिया की औरत अफ़्ज़ल है?

जन्नत की हूर मुश्क से बनी है, अंबर, ज़ाफ़रान, काफ़ूर से बनी

है दुनिया की औरत पानी, आग और हवा से बनी है।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उम्मे सलमा! दुनिया की ईमान वाली औरत जन्नत की हूर से अफ़ज़ल है। उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किस वजह से? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿بصلوٰتهن﴾ नमाज़ की वजह से ﴿وصيامهن﴾ रोज़े की वजह से ﴿وعبادتهن لله عزوجل﴾ अल्लाह की इताअत की वजह से ﴿البس الله وجوههن النور﴾ अल्लाह उनके चेहरों का नूर अपने नूर में से डाल देगा। फिर जन्नत की हूर की क्या हैसियत रह जाएगी। जन्नत की हूर तो ख़ादिमा बन जाएगी उनके हुस्न व जमाल के सामने।

﴿واجسادهن لاحرير﴾ और जिस्म पर रेशम पहना देगा, हाथों में कंगन पहना देगा, सर में सोने की कंघियाँ और सर के बाल सर की चोटी से लेकर पाँव की ऐढ़ी तक होंगे। उठाने के लिए जन्नत की हूरें साथ चलेंगी और उनका लहंगा तीन मील के दायरे में घूमेगा, तीन मील के दायरे में घूमेगा। मैं काफ़ी अर्से तक सोचता रहा की तीन मील के दायरे में घूमने वाले लिबास को उठाएंगी कैसे तो बड़ी देर के बाद मुझे यह बात समझ में आई कि जन्नत का लिबास, जन्नत का धागा कपास का नहीं है, पौलिस्टर का नहीं है बल्कि जन्नत का धागा नूर का है और नूर का वज़न नहीं होता वह तीन मील में हो या तीन सौ मील में हो वज़न कोई नहीं होगा। लिहाज़ा बे वज़न जोड़े होंगे। हर जोड़े का रंग अलग होगा, हर जोड़े के लिहाज़ से चेहरे पर हुस्न व जमाल की लहरें आएंगी और अल्लाह तआला वह जमाल देगा और वह कमाल देगा कि

चालीस चालीस साल तक मियाँ बीवी एक दूसरे को देखते ही रहेंगे और देखने का शौक़ पूरा नहीं होगा।

यह सारी ज़िन्दगी है। आज तक जो किया उससे तौबा करो। उस ज़िन्दगी की नियत करो। तौबा तो सारा मजमा करे। मैं हर बयान में गुज़ारिश करता हूँ। औरतें तो मुझे नज़र नहीं आ रही हैं आप तो मेरे सामने बैठे हैं आज तो सारे कहो या अल्लाह मेरी तौबा! सारी औरतें भी ज़बान से कहें या अल्लाह हमारी तौबा। हम तक आवाज़ बेशक न आए लेकिन बैठे बैठे सब कहो या अल्लाह! हमारी तौबा। हमें माफ़ कर दे और भाई अब बोलो कौन तैयार है? औरतों के साथ तीन दिन नक़द देने के लिए कौन तैयार हैं?

तश्कील और दुआ

O O O

नेकी और बुराई का अन्जाम

(बमक़ाम. मान्सेहरा)

الحمد للّٰہ و کفی و سلام علی خاتم الانبیاء. اما بعد

فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم.
بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم.

ان المسلمین والمسلمات والمؤمنین والمؤمنٰت
والقٰنتین والقٰنتٰت والصٰدقین والصٰدقٰت والصٰبرین
والصٰبرٰت والخٰشعین والخٰشعٰت والمتصدقین
والمتصدقٰت والصآئمین والصٰئمٰت والحٰفظین
فروجھم والحٰفظٰت والذاکرین اللّٰہ کثیرا والذاکرات
اعد اللّٰہ لھم مغفرۃ واجراً عظیماo (سورۃ الاحزاب، پارہ ۲۲)

यह दस बातें हैं। मुसलमान औरत अगर अपने अन्दर पैदा करे तो यह कामयाब, मुसलमान मर्द अपने अन्दर पैदा करे तो वह कामयाब। जो मर्द या औरत इन दस चीज़ों से अपने आपको सजाएगा अल्लाह तआला के दरबार में कामयाबी का परवाना उसे मिल जाएगा।

कामयाबी की पहली शर्त इस्लाम

इन सब मे पहली चीज़ इस्लाम है।

﴿ان المسلمين والمسلمات﴾

तर्जुमाः इस्लाम लाने वाले मर्द और इस्लाम लाने वाली औरतें।

मुसलमान होना, इस्लाम लाना, इस्लाम क्या है? एक तो इसके ज़ाहिरी आमाल हैं तौहीद (अल्लाह को एक मानना) व रिसालत, नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात।

इस्लाम की हक़ीक़त क्या है एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा

﴿ما الاسلام يا رسول الله صلى الله عليه وسلم.﴾

इस्लाम क्या है या रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम यानी इस्लाम की हक़ीक़त क्या है? तो आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿ان تسلم قلبك الله﴾ इस्लाम यह है कि तेरा दिल अल्लाह के हवाले हो जाए और उसमें अल्लाह के सिवा कुछ न रहे।

﴿ان تسلم قلبك الله﴾ इस्लाम यह यह है कि जिस मर्द व औरत के दिल से सब कुछ निकल जाए और सिर्फ़ अल्लाह बाक़ी रह जाए। यह इस्लाम है। दूसरे यह बताया कि

﴿وان يسلم المسلمون من لسانك ويدك.﴾

तर्जुमाः फ़रमाया तेरे हाथ और ज़बान से मुसलमान की इज़्ज़त महफ़ूज़ रहे।

दूसरी शर्त ईमान

दूसरी शर्त ईमान है

﴿والمؤمنين والمؤمنت.﴾

तर्जुमाः ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औरतें

ईमान की बुनियाद क्या है? अल्लाह पर ईमान, फ़रिश्तों पर ईमान, रसूलों पर ईमान, किताबों पर ईमान, आख़िरत पर ईमान, तक़दीर पर ईमान लाना ईमान की बुनियाद है।

इसकी हक़ीक़त क्या है? एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा

﴿ما الایمان یا رسول الله صلی الله علیه وسلم﴾

तर्जुमाः ईमान क्या है या रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम?

आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿الصبر والسماحة﴾ ईमान सब्र करना और माफ़ करना और ﴿والسماحة﴾ का दूसरा मतलब सख़ावत करना है। फिर उसने पूछा ﴿ای الایمان افضل﴾ सबसे बेहतरीन ईमान क्या है? तो आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿حسن الاخلاق﴾ अच्छा अख़्लाक़ सबसे बेहतरीन ईमान है।

अख़्लाक़ की पस्ती

पंजाब में तो नमाज़ का भी रिवाज नहीं है। पर्दे का भी नहीं लेकिन आपके इलाक़े सरहद में नमाज़ का भी रिवाज है और पर्दे का भी रिवाज है। बहुत से लोग नमाज़ी होते हैं वैसे नमाज़ियों की तादाद अब बढ़ती जा रही है और बेनमाज़ियों की तादाद कम हो रही है लेकिन जो अच्छे अख़्लाक़ हैं ये न सरहद में हैं न पंजाब में हैं, न बुलूचिस्तान में हैं, न सिन्ध में हैं।

लाखों मर्दों व औरतों में कोई एक नज़र आता है जिसके अख़्लाक़ अच्छे हों और ईमान का कमाल अच्छे अख़्लाक़ हैं।

एक हदीस में आता है एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

﴿يا رسول الله صلى الله عليه وسلم اريد ان يكمل ايماني.﴾

तर्जुमाः या रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं चाहता हूँ कि मेरा ईमान कामिल हो जाए।

तो आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

﴿حسن خلقك يكمل ايمانك.﴾

तर्जुमाः या रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं चाहता हूँ कि मेरा ईमान कामिल हो जाए।

तो आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

﴿حسن خلقك يكمل ايمانك.﴾

तर्जुमाः तू अपने अख़्लाक़ अच्छे कर ले तो तेरा ईमान कामिल हो जाएगा।

अख़्लाक़ के मस्अले में बहुत बड़ी गिरावट आई हुई है। मर्दों में और औरतों में माफ़ करने का जज़्बा नहीं है। आगे अपनी औलाद को छोटा बनना, माफ़ करना, दरगुज़र करना, सह जाना, पी जाना नहीं सिखाते। यही वजह है कि छोटी छोटी बातों पर लड़ाईयाँ हो रही हैं क़त्ल ग़ारत हो रही है और इस तरह आसानी से एक दूसरे को मार देते हैं जैस ऊपर कोई है ही नहीं जिसने उन्हें पकड़ कर अपने सामने खड़ा करना है। तमाम बुराईयों की असल जड़ बदअख़्लाक़ी है। सब्र का दामन हाथ में है नहीं बेसब्री है।

क़ातिल और जिसका क़त्ल किया गया दरबार खुदावन्दी में

और क़यामत के दिन अल्लाह तआला जो सब से पहला फ़ैसला फ़रमाएगा वह क़ातिल और क़त्ल हुए का होगा। मामलात

की पहली कचहरी जो अल्लाह के दरबार में लगेगी उसमें पहला मुक़द्दमा क़ाबील और हाबील का आएगा।

क़ाबील और हाबील अल्लाह के दरबार में इस तरह पेश होगें कि हाबील की गर्दन क़ाबील के हाथ में होगी और हाबील ने क़ाबील का गिरेबान पकड़ा हुआ होगा। क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया था और हाबील अल्लाह से अर्ज़ करेगा या अल्लाह! इससे पूछ इसने मुझे क्यों क़त्ल किया था? फिर क़ाबील से लेकर आज तक जितने लोग क़त्ल कर रहे हैं और आज से क़यामत तक जितने लोग होंगे ये सब ज़ालिम उसी तरह पकड़े जाएंगे कि हर मक़्तूल चाहे वह गोली से मारा गया हो, पत्थर से मारा गया हो, ज़हर से मारा गया हो उसकी गर्दन क़ातिल के उल्टे हाथ में होगी और मक़्तूल का हाथ क़ातिल के गिरेबान पर होगा और उसको अल्लाह तआला के अर्श के नीचे लाकर सवाल करेगा, "या अल्लाह! पूछ इससे इसने मुझे क्यों क़त्ल किया था?"

तो ईमान का कमाल यह है कि मुसलमान के अख़्लाक़ अच्छे हों एक और हदीस में आता है कि एक औरत की इबादत बहुत ज़्यादा थी लेकिन अख़्लाक़ अच्छे नहीं हैं। आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया दोज़ख़ में जाएगी। फिर एक दूसरी औरत के बारे में ज़िक्र में किया गया उसकी इबादत तो ज़्यादा नहीं हैं। उसके अख़्लाक़ बहुत अच्छे हैं। आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया जन्नत में जाएगी तो अख़्लाक़ की बुलन्दी ईमान है।

तीसरी शर्त सच्चाई

﴿والصدقين والصدقت﴾ सच्चे मर्द और सच्ची औरतें।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या मुसलमान बदकारी कर सकता है? ज़िना कर सकता है?

आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हो सकता है। इन्सान है हो जाता है।

अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या मुसलमान बख़ील हो सकता है?

आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हो सकता है।

अर्ज़ किया रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या मुसलमान झूठ बोल सकता है?

आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर्गिज़ नहीं मुसलमान झूठ कभी नहीं बोल सकता। मर्द है या औरत झूठ नहीं बोल सकते।

अब मर्द और औरतों में झूठ बोलना कितना आम हो गया है? आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो झूठ बोलना छोड़ दे मैं उसे जन्नत के दर्मियान में घर लेकर दूंगा। मुझ से इस बात की ज़मानत ले लो जो झूठ बोलना छोड़ दे मैं उसे जन्नत के दर्मियान में घर लेकर दूंगा और जो अपने अख़्लाक़ अच्छे कर ले मेरी ज़मानत ले लो मैं उसे जन्नतुल-फ़िरदौस में घर ले कर दूंगा।

चौथी शर्त इबादत

﴿والقنتين والقنتت﴾ इबादत करने वाले मर्द और इबादत करने वाली औरतें शब गुज़ार, रात को उठने वाले मर्द, रात को उठने वाली औरतें।

माअज़ा अदविया रह० के ख़ाविन्द शहीद हो गए थे। उसके बाद बीस साल तक ज़िन्दा रहीं। इस बीस साल में जब रात आती तो अपने आपसे कहतीं कि आज की रात आख़िरी रात है कल तेरी मौत है। सारी रात मुसल्ले पर गुज़ार देतीं। बीस साल में वह औरत चारपाई पर नहीं सोई पूरे बीस साल। बस मुसल्ले पर बैठे बैठे जो नींद आ गई सो आ गई वरना बीस बरस में वह चारपाई पर लेटी भी नहीं मौत के वक़्त के अलावा।

जब मौत का वक़्त आया तो रोने लगीं फिर हँसने लगीं। किसी ने पूछा क्यों रोती हो? कहने लगीं आज नमाज़ रोज़े से जुदाई हो जाएगी। इसलिए रोना आया। फिर उन्होंने पूछा क्यों हँसी हो? कहने लगीं सामने खड़े हुए मेरे ख़ाविन्द मुझे नज़र आए हैं कह रहे हैं तुझे लेने आया हूँ। तेरा इस्तिक़बाल करने आया हूँ। इस पर मुझे उम्मीद लग गई है कि अल्लाह तआला ने हमारा साथ बना दिया है और मेरे जन्नत का फ़ैसला कर दिया है। ﴿والقنتين والقنتت﴾ तो इस्लाम ईमान, इबादत, सच्चाई।

पाँचवीं शर्त सब्र

आगे फ़रमाया

﴿والصبرين والصبرت﴾

सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें।

क़यामत के दिन ऐलान होगा कि सब्र करने वाले खड़े हो जाएं। एक छोटी सी जमात खड़ी होगी।

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे जाओ तुम जन्नत में जाओ।

फिर उनके इकराम को ज़ाहिर करने के लिए फ़रिश्तों को खुद भेजूंगा। फ़रिश्तें आ जाएंगे और कहेंगे भाई! आप लोग कहाँ जा रहे हो?

वह कहेंगे हम जन्नत में जा रहें हैं।

फ़रिश्ते कहेंगे हिसाब तो देकर ज़ाओ?

वह कहेंगे हमारा हिसाब है ही नहीं।

फ़रिश्ते पूछेंगे तुम कौन हो?

वे कहेंगे हम सब्र वाले हैं।

फ़रिश्ते कहेंगे वाह! वाह! जाओ भाई तुम्हें कौन पूछ सकता है, जाओ! जाओ! यही होता है अमल वालों का बदला।

फिर फ़रिश्ते कहेंगे तुम्हारा सब्र क्या था?

वे कहेंगे अल्लाह ने हमें तंगी में रखा हम ने सब्र किया, नाफ़रमानी के मौके आते थे लेकिन हम ने अपने आपको बचाया, अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलना मुश्किल काम था। हम अल्लाह के हुक्मों पर जमकर चले। अपने नफ़्स को उस पर बांध के रखा। यह तीन काम थे हमारे सब्र के।

फ़रिश्ते कहेंगे जाओ भाई! अमल करने वालों का यही ठिकाना होता है।

छठी शर्त

﴿والخشعين والخشعت﴾

अल्लाह से डरने वाले मर्द और अल्लाह से डरने वाली औरतें।

जो अकेले में भी अल्लाह से डरें जो मजमों में भी अल्लाह से डरें, जिन्हें तन्हाई में भी अल्लाह का ख़ौफ़ हो, जिन्हें मजमे में भी अल्लाह का ख़ौफ़ हो। अल्लाह पाक के ख़ौफ़ ने उन्हें हराम कामों से रोक दिया हो। नाफ़रमानियों से रोक दिया हो और हुक्मों पर चला दिया हो।

और ख़ुशू दिल के डर को कहते हैं कि दिल में अल्लाह का डर पैदा हो जाए और अल्लाह पाक की हैबत और बड़ाई और हलाल इस दर्जे पर उसके दिल में पैदा हो जाए कि हर हराम से क़दम हट जाए।

सातवीं शर्त

﴿والمتصدقين والمتصدقٰت﴾

अल्लाह के नाम पर खर्च करने वाले मर्द और अल्लाह के नाम पर खर्च करने वाली औरतें।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास एक लाख दरहम हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने भेजे। ख़ुद रोज़े से थीं। ख़ैरात करने बैठ गयीं। अस्र तक एक लाख दरहम बाँट दिए। ख़ादिमा ने अर्ज़ किया आपको पता नहीं था घर में फ़ाक़ा है एक दरहम अपने लिए रख लेतीं मैं आपके लिए गोश्त पका देती। फ़रमाया मुझे याद नहीं था उस वक़्त बताती तो मैं रख लेती। अल्लाह के नाम पर खर्च करने वाले।

आठवीं, नवीं और दसवीं शर्त कामयाबी

﴿والصٰئمين والصٰئمٰت﴾

तर्जुमाः रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें।

इससे अगली सिफ़्त बताई है।

﴿والحفظين فروجهم والحفظت﴾

तर्जुमाः अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करने वाली औरतें यानी बदकारी और ज़िना से बचने वाले मर्द और बचने वाली औरतें।

﴿والذكرين الله كثيراً والذكرات﴾

तर्जुमाः कसरत से ज़िक्र करने वाले मर्द और कसरत से ज़िक्र करने वाली औरतें।

इन सिफ़ात वाले मर्द व औरत के लिए अल्लाह तआला का इर्शाद है

﴿اعد الله لهم مغفرة واجراً عظيما.﴾

तर्जुमाः हम ने ख़ास तौर से इन दस क़िस्म के मर्दों और औरतों के लिए बड़ अज्र तैयार कर रखा है और बहुत आला दर्जे की मग़फ़िरत का फ़ैसला किया है।

यह आयत सारी दुनिया के मर्दों और औरतों को एक क़ायदा देती है कि इन सिफ़ात पर जो आएगा और इन्हें अपने अन्दर पैदा करेगा मर्द है तो इज़्ज़त पाएगा, औरत है तो इज़्ज़त पाएगी। यह जहाँ भी बनेगा, वह जहाँ भी बनेगा।

नाकाम औरतों का क़िस्सा

अल्लाह तआला ने कामयाब मर्दों के भी क़िस्से सुनाए हैं और कामयाब औरतों के भी वाक़िआत सुनाए हैं।

क़ुरआन पाक ने नाकाम मर्दों के भी क़िस्से सुनाए हैं और नाकाम औरतों के भी क़िस्से सुनाए हैं।

﴿وضرب الله مثلا للذين كفروا امرات نوح وامرات لوط.﴾

ये दोनों दो नबियों की बीवियाँ हैं और दोनों काफ़िरा हैं। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि आओ तुम्हें दो औरतों का क़िस्सा सुनाऊँ एक नूह अलैहिस्सिलाम की बीवी है और एक लूत अलैहिस्सलाम की बीवी है। अल्लाह तआला इनके ख़ाविन्दों की कैसी तारीफ़ फ़रमा रहे हैं कि

﴿كان تحت عبدين من عبادنا صالحين.﴾

कि वे मेरे बहुत नेक बन्दों की बीवियाँ थीं। ﴿انبياء فخانتهما﴾ वह उन पर ईमान नहीं लायीं और अपनी क़ौम के साथ ही उन ही के कुफ़्र में शरीक रहीं ﴿فلم يغنيا عنهما من الله شيئا﴾ तो उनके ख़ाविन्द जो नबी थे वह भी उन्हें मेरी पकड़ से बचा न सके। ﴿وقيل ادخلا النار مع الداخلين﴾ और उन्हें भी जहन्नुम में डाल दिया गया जैसे और मर्दों और औरतों को डाल दिया गया।

कामयाब औरत का क़िस्सा और आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा का इस्लाम

फिर अल्लाह तबारक व तआला ने इसके साथ ही हज़रत आसिया का क़िस्सा सुनाया है और मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा का क़िस्सा सुनाया है

﴿وضرب الله الذين آمنوا امرات فرعون.﴾

ईमान वालों! अल्लाह तआला तुम्हें एक औरत का क़िस्सा सुनाता है जो फ़िरऔन की बीवी थी।

आप अन्दाज़ा करें एक अल्लाह के पैग़म्बर की बीवी जो अल्लाह के सबसे क़रीब बन्दे हैं। एक तरफ़ फ़िरऔन जो दुनिया में ख़ुदाई का दावा करने वाला उसकी बीवी है तो ईमान वाला बनना ऐसी ताक़तवर चीज़ है कि फ़िरऔन की बीवी होकर जन्नत का फ़ैसला हो रहा है।

और अगर ईमान नहीं है तो हज़रत नूह और हज़रत लूत अलैहिमुस्सलाम की बीवी होकर दोज़ख़ का फ़ैसला है।

यह जो फ़िरऔन की बीवी हैं हज़रत आसिया ईमान लायीं। उनके ईमान लाने का क़िस्सा यह हुआ कि आसिया की औलाद नहीं थी। फ़िरऔन की दूसरी से एक बेटी थी। उसकी एक ख़ादिमा थी जो उसे कंघी किया करती थी वह (मुशाता) मुसलमान हो गई और अपना छिपाया हुआ था। एक दिन वह फ़िरऔन की बेटी को कंघी कर रही थी उसके हाथ से कंघी गिर गई। अचानक उसके मुँह से निकला ﴿تعس من كفر بالله﴾ अल्लाह का इन्कार करन वाला हलाक हो गया तो फ़िरऔन की बेटी कहने लगी ﴿ولك رب غير ابى﴾ मेरे बाप के अलावा तेरा रब कोई और है? उसने कहा हाँ मेरा, तेरा, तेरे बाप का मूसा और हारून अलैहिमास्सलाम सबका रब अल्लाह है।

तो उसने फ़िरऔन को बताया कि यह तो हमारे घर की नौकर तुझे रब नहीं मानती तो फ़िरऔन ने एक बहुत बड़ा कढ़ाव में तेल डाला और उसके नीचे आग जलाई जब तेल खौलने लगा तो फ़िरऔन ने अपनी इस मुसलमान बांदी को बुलवाया।

उसकी दो बच्चियाँ थीं। एक दूध पीती थी और दूसरी साथ छोटी चलती थी और उससे कहने लगा अगर तू मूसा अलैहिस्सलाम के रब को मानेगी तो मैं तेरी बेटियों को भी जला दूंगा और तुझे भी जला दूंगा और अगर मुझे रब मानेगी तो तेरे घर को सोने चाँदी से भर दूंगा। बोल अब तुझे क्या मन्ज़ूर है?

उसने कहा यह तो अल्लाह ने मुझे दो दी हैं अगर और भी होतीं तो मैं वे भी अल्लाह के नाम पर जला देती। तुझे जो करना है कर ले। अब उन्होंने उसकी बड़ी बच्ची को पकड़ा और उसे टांगों से पकड़कर सर के बल उसे इस तरह तेल में डाला कि वह बेचारी चीख़ भी न सकी और माँ के सामने वह जलकर कबाब बन गई, पकौड़ा बन गई। जिस माँ के सामने उसकी बेटी को यूँ जला दिया जाए उस पर क्या गुज़रेगी।

माँ तो अपने बच्चे का रोना भी बर्दाशत नहीं करती और जिस माँ के सामने उसकी बेटी को जला दिया जाए उसका क्या हाल होगा।

जब अल्लाह तआला ने उसके अन्दर ग़म और दुःख देखा तो उसकी आँखों से पर्दा हटा दिया और उसने अपनी बच्ची की रूह को निकलते देखा। रूह निकल रही थी और माँ देख रही थी और वह बच्ची माँ को कह रही थी

﴿اصبر يا ام فان لك من الاجر كذا وكذا.﴾

अम्मा! तू सब्र कर तेरा बहुत बड़ा अज्र अल्लाह ने तैयार कर किया है, बस हम इकठ्ठे होने वाले हैं।

फिर उससे उसकी छोटी बच्ची को छीना जो दूध पीती थी और उस मासूम बच्ची को पता भी नहीं था कि मेरे साथ क्या होने

वाला है। उसे भी टांगों से पकड़कर माँ के सामने जलते तेल में डाल दिया।

तो वह मासूम फूल नरम व नाज़ुक गोश्त एक पल में जलकर कोयला बन गई तो अल्लाह तआला ने माँ की आँखों के सामने से पर्दा हटा दिया और फिर माँ ने दूसरी बच्ची की रूह को निकलते देखा और वह कह रही थीः

अम्मा सब्र करो तेरे लिए बहुत बड़ा अज्र तैयार है। अभी हम इकट्ठी होने वाली हैं।

जब उन्होंने फ़िरऔन की बांदी को पकड़ा तो उसने फ़िरऔन से कहा मेरी एक ख़्वाहिश है वह पूरी कर दोगे?

कहने लगा क्या है?

उसने कहा जब मुझे भी जला दो तो हम माँ बेटियों की हड्डियों को इकठ्ठे दफ़न करना जुदा न करना।

फ़िरऔन ने कहा यह ख़्वाहिश तुम्हारी हम पूरी करेंगे और उसे भी जला दिया। जब तीनों जल गयीं और उन्हें इकठ्ठा दफ़न कर दिया गया।

इस वाकिए को देखकर हज़रत आसिया मुसलमान हो गयीं। अल्लाह ने उनके दिल में यह बात डाली कि कोई माँ अपने बच्चों को यूँ क़ुर्बान नहीं कर सकती जब तक हक़ सामने न हो।

एक बात और जो इस वाकिए का हिस्सा है वह यह कि मैराज में जब रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम बैतुल्लाह से बैतुलमुक़द्दस गए और वहाँ से जब आसमानों का उरूज हुआ तो नीचे से आपको जन्नत की खुशबू महसूस हुई

आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से पूछा कि यह जन्नत की खुशबू कहाँ से आ रही है तो हज़रत

जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बताया कि फ़िरऔन की बांदी अपनी बेटियों समेत जिस मिट्टी में दफ़न है यह ख़ुशबू वहाँ से आ रही है।

और उस वक़्त उनकी वफ़ात को दो हज़ार साल से ज़्यादा का अरसा गुज़र चुका था क्योंकि सैयदना मूसा अलैहिस्सलाम और हमारे नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम के बीच में तक़रीबन दो हज़ार साल का फ़ासला है।

जब हज़रत आसिया मुसलमान हो गयीं तो फ़िरऔन बहुत परेशान हो गया कि यह मेरे घर में इस्लाम दाख़िल हो गया। पहले तो उन्होंने कोशिश की और समझाया जब वह न मानीं तो उन्हें क़ैद में डाला। वह नहीं मानीं।

फिर उन्हें भरे दरबार में कोड़े मारे। वह नहीं मानीं क्योंकि ईमान पर जितनी मुशक़्क़त आती है वह इतना बढ़ जाता है।

फ़िरऔन की सज़ाए

फिर फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि इसे सूली पर चढ़ा दिया जाए। सूली क्या थी? पीछे की तरफ़ लकड़ी होती थी और नीचे पाँव में कील लगाकर उसे भी लकड़ी के साथ जकड़ देते थे और इस तरह खड़ा करके मार दिया जाता था। कभी तीर मार देते, कभी खाल उतार कर मार देते, कभी वैसे ही लटका देते थे कि भूखा प्यासा सिसकता सिसकता मर जाता।

﴿وفرعون ذی الاوتاد﴾

क़ुरआन इस लफ़्ज़ से इशारा कर रहा है कि फ़िरऔन इस तरह सज़ाए देता था।

आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा का जमाव

तो उन्हें पकड़ कर ले जाया गया और उनके हाथें में कील गड़ गए पाँव में कील गड़ गए और कहने लगा उसे लिटाकर भारी चट्टान रखो जिसके नीचे यह तड़प तड़पकर जान दे दे। तो उस वक़्त उन्होंने अल्लाह के दरबार में दुआ की।

जिस औरत ने कभी तिनके को भी नहीं उठाया हो। उसके हाथों में कील रेशमी क़ालीनों पर चलने वाली के पाँव में कील। उस वक़्त उन्होंने दुआ की

ربی ابن لی عندك بيتاً فی الجنة ونجنی من
فرعون وعمله ونجنی من القوم الظلمين○

सूली पर लटके हुए दुआ की या अल्लाह! अपने पास जन्नत में घर दे दे। फ़िरऔन से निजात दे दे।

जैसी ही यह दुआ मांगी अल्लाह तआला की रहमत की ग़ैरत को ऐसा जोश आया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया जन्नत के सारे दरवाज़े खोल दो और उसे जन्नत में उसका घर दिखा दो।

तो अर्श तक सारे दर खुल गए तो हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने सूली पर लटके हुए जन्नत को देखा तो जन्नत को देखकर तो आदमी वैसे ही ज़िन्दा नहीं रह सकता तो ज़ोर से क़हक़हा निकला, ज़ोर से हँसीं और साथ ही जान निकल गई।

फ़िरऔन कहने लगा मौत के डर से पागल हो गई है। इसलिए ज़ोर ज़ोर से हँस रही है। जन्नत के शौक़ ने उन्हें पागल कर दिया।

जब हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल होने लगा तो आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया ख़दीजा! जब तू जन्नत में जाए तो अपनी सौकन को मेरा सलाम कहना।

वह कहने लगीं मेरी सौकन कौन है मैं तो पहली बीवी हूँ?

आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया फ़िरऔन की बीवी आसिया को अल्लाह तआला ने जन्नत में मेरी बीवी बना दिया है और मेरा उससे निकाह पढ़ दिया है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वालिदा मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा को भी अल्लाह तआला ने जन्नत में मेरी बीवी बना दिया है और मेरा उनसे निकाह पढ़ दिया है।

आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा की दुआ और क़ुबूलियत

हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने दुआ फ़रमाई थी ﴿ربی ابن لی عندک﴾ यहाँ उलमा फ़रमाते हैं कि हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने अल्लाह तआला से उसका पड़ौस पहले मांगा और जन्नत बाद में मांगी ﴿عندک بیتاً فی الجنة﴾ या अल्लाह! तेरा क़ुर्ब और घर जन्नत में हो।

दुआए वसीला

इस दुआ को अल्लाह तआला ने इस तरह क़ुबूल किया कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लाहु अलैहि वसल्लम को जन्नत में सबसे ऊँचा मक़ाम दिया है जो जन्नतुलफ़िरदौस के साथ

लगा हुआ है। जिसक नाम वसीला है। हमारे नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम की जन्नत का नाम वसीला है। जिसमें हमारे नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम आराम फ़रमाएंगे उसका नाम वसीला है और हमें हुक्म है कि जब तुम अज़ान सुनो तो मौज़्ज़िन जैसे कहे वैसे ही जवाब दो *"हय्याअलस्सलाह"* और *"हय्याअललफ़लाह"* के जवाब में *"ला हौला वला क़ुव्वता इल्लाबिल्लाहिल अलिय्युल अज़ीम"* कहो और आख़िर में यह दुआ करोः

اللهم رب هذه الدعوة التامة والصلوة القائمة ات محمدن الوسيلة والفضيلة وابعثه مقاما محمودن الذى وعدته انك لا تخلف الميعاد.

"अल्लाहुम्मा रब्बा हाज़िहिद्द दावतित्तामति व सलातिल क़ाइमति आति मुहम्मदिनिल वसीलता वल फ़ज़ीलता वब असहु मक़ामम महमूद-निल्लज़ी वअद्त्तहु इन्नका ला तुख़लिफ़ुल मियाद"

या अल्लाह हमारे नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम को वसीला अता फ़रमा। वसीला क्या है?

यह वह जगह है जहाँ अल्लाह का नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी जन्नत में रहेगा। हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा को अल्लाह तआला ने वहाँ पहुँचा दिया और बिल्कुल अपना पड़ौस अता कर दिया। अपना क़ुर्ब भी अता कर दिया। अपना साथ भी अता कर दिया और फ़िरऔन से भी निजात दे दी।

तो अल्लाह तआला दोनों क़िस्म के क़िस्से सुनाकर औरतों को इस तरफ़ तवज्जेह दिला रहा है कि तुम्हारी कामयाबी का रास्ता भी वही है जो मर्दों के लिए है और मर्दों की कामयाबी का रास्ता भी वही है जो औरतों के लिए है।

﴿من عمل صالحًا من ذكر او انثى وهو مؤمن فلنحيينه حيوة طيبة.﴾

मर्द हो या औरत अमल ठीक करे हम उसे आला और ख़ूबसूरत ज़िन्दगी अता फ़रमाएंगे।

अच्छा! अल्लाह की शान यह है कि बड़ी बड़ी औरतों के वाक़िआत अल्लाह तआला ने सुनाए हैं।

आसिया और ज़ुलेख़ा का फ़र्क़

नूह अलैहिस्सलाम, लूत अलैहिस्सलाम दीन के लिहाज़ से बड़े, फ़िरऔन की बीवी दुनिया के लिहाज़ से बहुत बड़ी फिर एक और नाफ़रमान औरत का क़िस्सा सुनाया है जो मिस्र ही की थी। आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा भी मिस्र की और ज़ुलेख़ा भी मिस्र की दोनों एक ही शहर ही की थीं। एक बादशाह की बीवी एक गर्वनर की बीवी। एक को अन्दर की सफ़ाई मिली जिसे क़ुरआन ने इस तरह बयान किया कि अल्लह तआला ने हमें कहा ﴿وضرب الله مثلا﴾ यह यूँ है जैसे कहा जाए सुनो ग़ौर से सुनो, तवज्जेह से सुनो, देखा! यह किसकी बात आ रही है? यह किसकी बात आ रही है? और इसी तरह अल्लाह तआला ने ज़ुलेख़ा का ज़िक्र किया है जो मिस्र में ही है। दुनियावी लिहाज़ से हज़रत आसिया रज़ियल्लहु अन्हा से कम दर्जे की है। वह बादशाह की बीवी यह गर्वनर की बावी। बीच में काफ़ी सारा फ़ासला है। वह अपने ही एक ग़ुलाम पर आशिक़ हो गई।

﴿وراودته التي هو في بيتها عن نفسه وغلقت الواب وقالت هيت لك.﴾

यह दो क़िस्म के इन्सानों की कहानी साथ साथ चलती है। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई अपना अमल बिगाड़ रहे हैं, ज़ुलेख़ा

अपना अमल बिगाड़ रही है यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपना अमल बना रहे हैं।

यह दोनों कहानियों को साथ साथ चलाते हुए आख़िर में अल्लाह तआला नतीजा देते हैं। जिससे यह बात सामने आती है कि कामयाबी किसे हासिल होती है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का सब्र और भाईयों का ज़ुल्म

अभी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की सोलह साल की उम्र है और वह बाप के क़रीब हो चुके हैं और भाईयों का आपस में मश्विरा हो रहा है कि क्या करें? कहा ﴿اقتلوا یوسف﴾ यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) का क़त्ल कर दो।

मश्विरा ख़ैर में भी होता है और बुराई में भी होता है और यह शर का मश्विरा हो रहा है। कहने लगे

﴿اقتلوا یوسف اواطرحوه ارضا یخل لکم وجه ابیکم.﴾

यूसुफ़ को क़त्ल कर दो और उसे कहीं दूर फेंक के आओ।

एक बोला क़त्ल न करो बल्कि कुंए में डाल दो वहाँ से कोई क़ाफ़िला उसे उठा के ले जाएगा।

एक शर का मश्विरा होता है और एक ख़ैर का मश्विरा होता है। एक मस्जिद की आबादी का मश्विरा होता है और एक गानों के अड्डों की आबादी का मश्विरा होता है, एक लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाने का मश्विरा होता है और एक लोगों को शैतान की तरफ़ बुलाने का मश्विरा होता है। हर शर और ख़ैर के पीछे मश्विरे की ताक़त होती है।

उनकी चाल चल गई और उन्होंने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को लाकर कुंए में डाल दिया और अल्लाह भी ऐसी क़ुदरतों वाला है कि जब उन्हें कुंए में फेंक रहे थे तो उनके भाईयों ने उनके हाथ पर ज़ोर ज़ोर से तलवार मारी ताकि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का हाथ मुंडेर से छूट जाए। उस वक़्त अल्लाह तआला ने "वही" भेजी कि

﴿لتنبئنهم بامرهم هذا وهم لا يشعرون.﴾

सब्र करो। एक वक़्त आएगा तो ऊँचा होगा और ये नीचे होंगे और तू उनके ज़ुल्म की कहानी याद दिलाएगा।

उस वक़्त कोई सोच भी नहीं सकता था कि यह कैसे होगा। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कुँए में गिरे और जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने नीचे संभाल लिया और एक पत्थर पर बिठा दिया। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का एक भाई यहूदा था नरम दिल। जिससे यहूदी मशहूर हो गए। वह रोज़ाना आकर खाना लटका जाता था। वह भी ज़ालिम साज़िश में शरीक रहा। क़ाफ़िला आया और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को उठाया और कहने लगे ﴿هذا غلام، هذا غلام﴾ यह कैसा ख़ूबसूरत जवान है ﴿واسروه بضاعة﴾ उसे छिपाया लेकिन ऊपर से आप अलैहिस्सलाम के भाई पहुँच गए और कहने लगे यह तो हमारा भागा हुआ गुलाम है।

﴿وشروه بثمن بخس دارهم معدودة وكانو فيه من الزاهدين٥﴾

आपको चन्द टकों में बेच दिया। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का सब्र देखो कि अपने भाईयों की लाज रखी यह नहीं कहा कि मैं इनका भाई हूँ और ये मुझ पर ज़ुल्म कर रहे हैं और क़रीब ही हमारा घर है चलकर पूछ लो बल्कि चुप कर गए और अपने भाईयों की इज़्ज़त रख ली और सब्र कर गए, सह गए।

एक तरफ़ अमल बन रहा है और एक तरफ़ अमल बिगड़ रहा है। एक तरफ़ सच चल रहा है और एक तरफ़ झूठ चल रहा है। एक तरफ़ तक़्वा है और एक तरफ़ मक्कारी और फ़रेब है।

अल्लाह तआला की सुन्नत यह है कि नाफ़रमानों को पहले कुछ ढील देता है और मानने वालों को कुछ कसता है। जब वह साबित क़दम रहते हैं तो उन्हें ऊँचा कर देता है और दूसरों को नीचा कर देता है।

बाज़ार मिस्र और अज़ीज़े मिस्र के घर में

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम मिस्र की मंडी में बिके। अज़ीज़े मिस्र ने ख़रीद लिया और कहने लगा बहुत ख़ूबसूरत जवान है उसकी कोई औलाद भी नहीं थी। कहने लगा

﴿عسى ان ينفعنا او نتخذه ولدا﴾

हम इसको अपना बेटा बना लेंगे।

अज़ीज़ मिस्र की बीवी का मकर व फ़रेब

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का हुस्न ऐसा निखरा कि अज़ीज़े मिस्र की बीवी आशिक़ हो गयीं।

﴿وراودته التي هو في بيتها عن نفسه وغلقت الابواب وقالت هيت لك.﴾

इस आयत का इतना लम्बा जुमला उस वक़्त के सख़्त हालात को बताता है। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम बोले ﴿معاذ الله﴾ नहीं हो सकता।

﴿انه ربی احسن مثوای انه لا یفلح الظلمون٥﴾

वह मेरा रब उसने मुझे बेहतर ठिकाना दिया है और ज़ालिम फ़लाह नहीं पा सकते इसलिए यह काम नहीं हो सकता।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम भागे और अल्लाह तआला ने दरवाज़ों के ताले तोड़ दिए। ﴿واستقاالباب﴾ आप अलैहिस्सलाम आगे और ज़ुलेख़ा पीछे। ﴿وقدت قميصه من دبر﴾ उसने हाथ जो डाला तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़मीज़ पीछे फट गई ﴿والقيا سيدها لدالباب﴾ दरवाज़े पर उसका सरदार मिल गया। औरत अगर बुराई की तरफ़ चले तो उसकी बुराई सत्तर मर्दों से ज़्यादा होती है तो उसने एक दम बात बदली

﴿ما جزاء من اراد باهلك سوءً.﴾

तेरे घर वालों के साथ जो बुराई करे उसकी क्या सज़ा होनी चाहिए?

﴿الا ان يسجن اوعذاب اليم.﴾

कहा उसकी सज़ा यह होनी चाहिए कि उसे क़ैद में डालो या उसकी बहुत ज़्यादा पिटाई करो।

यह नहीं कहा इसको क़त्ल कर दो तो क्योंकि अगर यह कहती तो फिर अपनी ख़्वाहिश कैसे पूरी करेगी क्योंकि उसके अन्दर चोर था। इसलिए कहा इसे जेल में डाल दो।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बेगुनाही

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा मैं बेगुनाह हूँ ﴿وشهد شاهد من اهلها﴾ एक तीसरा बोला, कुछ कहते हैं बच्चा था और कुछ कहते हैं बड़ा था कहने लगा देखा

﴿ان كان قميصه قد من قبل فصدقت وهو من الكذبين٥﴾

देखो कुर्ता कहाँ से फटा है आगे से फटा है तो औरत सच्ची है और मर्द झूठा।

﴿وان كان قميصه قد من دبر فكذبت وهو من الصدقين٥﴾

अगर कुर्ता पीछे फटा है तो औरत झूठी है मर्द सच्चा है।

﴿فلما راى قميصه قد من دبر.﴾

जब देखा कि क़मीज़ तो पीछे से फटी हुई है तो

﴿قال انه من كيد كن ان كيد كن عظيم﴾

कहा यह सब तेरी शरारत है तेरी बदनियती है

﴿يوسف اعرض عن هذا.﴾

यूसुफ़ छोड़ इसको यह है ही ऐसी

﴿واستغفرى لذنبك انك كنت من الخطئين﴾

जा तू अपनी शर्म को छुपा कहीं

वह अल्लाह को तो मानते नहीं थे इसलिए इस्तिग़फ़ार का तर्जुमा यहाँ नहीं हो सकता कि तू अल्लाह से माफ़ी मांग क्योंकि अल्लाह तो उनके सामने था ही नहीं तो गोया वे यह कह रहे थे कि जो मुँह काला किया तूने, जा कहीं दफ़ा हो जा, कहीं छिप बैठ जा।

एक तरफ़ से भाईयों के मकर व फ़रेब से बचे और दूसरी तरफ़ औरत का मकर व फ़रेब आ गया।

मिस्र की औरतों का ताज्जुब

औरतों में चर्चा हुआ कि लो भाई

﴿امرات العزیز تراود فتٰها عن نفسه.﴾

गर्वनर की बीवी और ग़ुलाम के इश्क़ में मुब्तिला हो गई। है कोई यह करने की बात।

﴿فلما سمعت بمکرهن ارسلت الیهن.﴾

जब उसे यह पता चला कि औरतें यह कह रही हैं तो कहा आओ सारी आओ। मेरे यहाँ खाना है।

﴿اعتدت لهن متکا﴾

उनके लिए एक दस्तरख़्वान बिछाया।

﴿واتت کل واحدة منهن سکیناً.﴾

हर एक के हाथ में चाक़ू पकड़ाया फल पकड़ाया और कहा खाओ।

लो बिस्मिल्लाह करो, बिस्मिल्लाह अपने मुहावरे में कह रहा हूँ। उन्होंने चाक़ू रखा सेब पर या अनार पर जो कुछ भी था।

﴿وقالت اخرج علیهن﴾

और कहा यूसुफ़ बाहर आओ।

जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम बाहर आए तो

فلما راینه اکبرنه وقطعن ایدیهن وقلن حاش
لله ما هذا بشرا ان هذا الا ملك کریم.

जब यूसुफ़ पर उनकी नज़र पड़ी तो छुरियाँ फल से फिसल कर उनके हाथों को काटने लगीं (हाथ कट रहे थे, ख़ून बह रहा था लेकिन उन्हें पता नहीं चल रहा था कि खाल कट रही है या फल कट रहा है) और उनके मुँह से निकला कि इन्सान नहीं है।

﴿ان هذا الا ملك كريم.﴾

वे तो फ़रिश्तों को मानते नहीं और अल्लाह को भी नहीं मानते थे लिहाज़ा इसका जो मुनासिब तर्जुमा है वह यह है कि

यह कोई देवता है, देवता।

﴿ان هذا الا ملك كريم.﴾

यह तो कोई देवता है देवता यह तो कोई अवतार है अवतार इन्सान नहीं।

तो उसने कहा

﴿قالت فذلكن الذى لمتننى فيه.﴾

यह वह है जिसके बारे में तुम मुझे ताने देती थीं।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पाकदामनी

इतनी सख़्ती के बावजूद भी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पाकदामनी पर धब्बा नहीं आया। वह अल्लाह से दुआ मांग रहे हैं या अल्लाह!

﴿الا تصرف عنى كيدهن اصب اليهن واكن من الجهلين﴾

या अल्लाह! मुझे बचा इन औरतों के मकर व फ़रेब से।

﴿رب السجن احب الى مما يدعوننى اليه.﴾

मुझे क़ैद पसन्द है लेकिन मैं तेरी नाफ़रमानी नहीं कर सकता तो अल्लाह तआला ने क़ैद में पहुँचा दिया।

देखो एक तरफ़ मकर व फ़रेब चल रहा है, नाफ़रमानी चल रही है और दूसरी तरफ़ तक़्वा चल रहा है। सब्र चल रहा है और इताअत चल रही है। तक़्वे वाला दबता जा रहा है, दबता जा रहा

है। बाप के घर से निकला तक़्वा इख़्तियार किया ।

देखने वाले ने कहा क्या फ़ायदा ऐसे तक़्वे का? जैसे आज लोग हमें कहते हैं क्या फ़ायदा हुआ मुसलमान होने का हर तरफ़ ज़लील हो रहे हैं? लेकिन अगर हम सच्चे मुसलमान होते तो हमारे साथ यह कुछ होता ही न।

फिर एक मुसीबत और बढ़ गई कि कुँए में गिराए गए। फिर खोटे सिक्कों में बिके और ज़िल्लत बढ़ गई, फिर मिस्र की मंडी में बोलियाँ लगीं और ज़िल्लत बढ़ गई, फिर ज़िना की तोहमत लग गई और ज़िल्लत बढ़ गई, फिर क़ैदख़ाने में जा गिरे और ज़िल्लत बढ़ गई।

तक़्वा, तवक्कुल, ईमान, अमल का क्या फ़ायदा तुम्हारी तबलीग़ का? क्या फ़ायदा तुम्हारे कलिमे का? क्या फ़ायदा तुम्हारी नमाज़ों का? क्या फ़ायदा तुम्हारे इल्म का?

आजकल हम पर यह ऐतिराज़ किए जाते हैं और अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के इस क़िस्से से ये सारे ऐतिराज़ात उठाए हैं।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और क़ैदी जेल

दो क़ैदी आ गए। उन्होंने ख़्वाब सुनाया। एक के बारे में बताया बच जाएगा और दूसरे के बारे में फ़रमाया फाँसी चढ़ेगा। यह नहीं कहा तू बचेगा और तू फाँसी चढ़ेगा।

﴿اما احد كما فيسقى ربه خمرا واما الآخر فيصلب﴾

तुम में से एक बच जाएगा और एक फाँसी चढ़ेगा।

कितनी प्यारी ताबीर है। जब वे निकलने लगे तो जिसके बारे में मालूम था कि वह बच जाएगा उसके कान में कहा

﴿اذكرنى عن ربك﴾

अपने बादशाह से कहना मैं बे क़ुसूर हूँ, बे गुनाह हूँ।

तो अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेज दिया। उन्होंने आकर पूछा या नबी अल्लाह! अल्लाह तआला पूछ रहे हैं आपके भाईयों के हाथों किसने बचाया? यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने।

आपको कुएँ से किसने निकाला? फ़रमाया अल्लाह तआला ने।

आपको औरतों के मकर व फ़रेब से किसने बचाया? फ़रमाया अल्लाह तआला ने।

तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा क्या जेल में अल्लाह तआला आपको भूल गया था? आप ने क्यों कहा बादशाह से कहना मैं बेगुनाह हूँ? अब आपको इसकी सज़ा काटना पड़ेगी।

﴿فلبث فى السجن بضع سنين﴾

तो क़ैद में उनको छः सात बरस गुज़ारने पड़े।

इज़्ज़त व ज़िल्लत

भाईयो औ बहनो! दीन पर चलने में कभी कभी यूँ नज़र आता है जैसे अगला भी चला गया और अल्लाह तआला की नाफ़रमानी में यूँ नज़र आता है कि हर आने वाला दिन ईद है। हर आने वाला दिन ईद है।

मिट्टी भी सोना बन रही है, मिट्टी भी सोना बन रही है, पत्थर को भी अगर हाथ लगाएं तो वह भी सोना चाँदी बन रहा है। इस वजह से आदमी समझता है कि मैं सही जा रहा हूँ और जो अल्लाह की मानकर चलने वाले होते हैं वह कहते हैं पता नहीं हम सच्चे भी हैं या नहीं? पता नहीं हम ठीक भी हैं या नहीं?

अल्लाह तआला के यहाँ एक वक़्त होता है, एक हद होती है, एक पैमाना होता है। वह वक़्त आया तो अल्लाह तआला ने एक वाक़िये से इज़्ज़त वाले की इज़्ज़त को ज़ाहिर किया और ज़लीलों की ज़िल्लत को ज़ाहिर किया।

बादशाह का ख़्वाब

बादशाह को एक ख़्वाब दिखाया गया और इस ख़्वाब के ज़रिए से अल्लाह तआला ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जेल से बाहर निकाला तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं नहीं आता, मैं नहीं आता जाओ और जाकर पहले अपनी औरतों से पूछो कि यूसुफ़ का क्या क़िस्सा है?

हुज़ूर सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सब्र पर कि इतनी लम्बी जेल काटकर भी बाहर आने से इन्कार कर दिया। फ़रमाया जाओ! पहले औरतों से पूछो कि यूसुफ़ सच्चा है या झूठा? तो बादशाह ने सारी औरतों को बुलाकर कहाः

﴿ما خطبكن اذ راودتن يوسف عن نفسه.﴾

बोलो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का क़िस्सा क्या है?

﴿قلن حاش لله ما علمنا عليه من سوء﴾

कहा वह पाकदामन है।

हक़ का सूरज

झूठ आख़िर झूठ होता है फिर ज़ुलेख़ा भी बोल उठी ﴿الـئـن حصحص الحق﴾ "हसहसा" का लफ़्ज़ क़ुरआन पाक में सिर्फ़ इसी एक जगह आया और उसका तर्जुमा उर्दू ज़बान में तो क्या दुनिया की किसी ज़बान में नहीं है। हम इसका तर्जुमा करते हैं वाज़ेह हो जाना।

वाज़ेह हो जाना और "हसहसा" में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है। बहरहाल हम यही तर्जुमा कर सकते हैं।

"हसहसा" कहते हैं नया सूरज निकल आया तो गोया ज़ुलेख़ा ने कहा अब मैं मान गई हक़ का सूरज निकल आया। हक़ का सूरज निकल आया यानी हक़ ऐसे वाज़ेह हो गया जैसे सूरज निकल आया। वह सच्चा है मैं झूठी हूँ।

﴿وقال الملك ائتونی به استخلصه لنفسی﴾

बादशाह ने कहा जल्दी बुलाओ मैं तो उसे अपना सलाहकार बनाऊँगा।

तो अल्लाह तआला ने जेल से निकाल कर तख़्त-ए-शाही पर बिठा दिया तो इसमें दो क़िस्से बराबर चल रहे हैं। एक तरफ़ औरत की नाफ़रमानी का चल रहा है और साथ में मर्दों की नाफ़रमानी का चल रहा है और बीच में एक नौजवान है जो सितमज़दा है लेकिन वह अल्लाह का हुक्म नहीं तोड़ता, अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं

करता और सब्र से हक़ के दामन को थाम कर चल रहा है। हर आने वाला दिन उसके ग़म को बढ़ा रहा है। आने वाली शाम हो या सवेरा हो, अन्धेरा या उजाला हो, मौसम बदले, रुत बदले लेकिन उसके ग़म बढ़ते गए और किसी हाल में भी उसने अल्लाह की नाफ़रमानी को क़बूल नहीं किया तो अल्लाह तआला उसे उन मुश्किल घाटियों से निकाल कर फिर यूँ तख़्त पर बिठाता है।

एक तरफ़ क़ुरआन नें ज़ुलेख़ा की ज़िल्लत को खोल दिया और आगे यह ऐसी ही बनावटी रिवायत है कि वह ईमान ले आई और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से उसकी शादी हो गई वग़ैरह।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई दरबारे यूसुफ़ी में

एक झूठ तो ज़िल्लतों का शिकार हो गया। अब दूसरे झूठ को अल्लाह ने पकड़ा

﴿وجآء اخوه يوسف فدخلوا عليه فعرفهم وهم له منكرون○﴾

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई आए ग़ल्ला लेने क्योंकि क़हत आ गया है। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने पहचान लिया और उन्होंने नहीं पहचाना आप वैसे भी नक़ाब में रहते थे क्योंकि आपका हुस्न बहुत ज़्यादा था। इसलिए आप एहतियातन नक़ाब रखते थे।

आप ने उन्हें ग़ल्ला भी दुनिया और साथ पैसे भी डाल दिए ﴿لعلهم يرجعون﴾ और उनसे कहा जब तुम दोबारा आओ तो अपने भाई को भी साथ लाना।

﴿فان لم تاتونى به فلا كيل لكم عندى ولا تقربون○﴾

अगर तुम भाई को न लाए तो मैं तुम्हें ग़ल्ला नहीं दूंगा।

वापस गए और कहने लगे कि हमारा तो ग़ल्ला ही बन्द हो गया क्योंकि अज़ीज़े मिस्र ने कहा भाई लाओ तो ग़ल्ला दूंगा। हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया

﴿هل امنكم عليه الا كما امنتكم على اخيه من قبل.﴾

जैसे यूसुफ़ को गंवाया इसे भी गँवा दूँ? मैं यह काम नहीं करता कि उसे भी तुम्हारे साथ भेजूँ।

﴿فالله خير حافظاً وهو ارحم الراحمين٥﴾

अगर जाना ही पड़ा तो मैं उसे अल्लाह के सुपुर्द कर दूँगा तुम्हारे सुपुर्द नहीं करता।

दोबारा सफ़र हुआ। बिन यामीन साथ है। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उसे क़रीब करके फ़रमाया ﴿انى انا اخوك﴾ मैं तेरा भाई हूँ। मैं तेरे रोकने का तरीक़ा इख़्तियार करूंगा तुम ख़ामोश रहना।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपना पैमाना अपने भाई बिन यामीन के बोरिए में रखवा दिया और जब क़ाफ़िला चलने लगा तो आवाज़ देने वाले ने कहा ﴿انكم لسارقون﴾ अरे चोरों! ठहर जाओ ﴿قالو واقبلو عليهم﴾ अरे क्या कह रहे हो हम चोर हैं? हम चोर नहीं हैं। उन्होंने कहा तलाशी दो। कहने लगे ले लो तलाशी। कहने लगे जज़ा क्या है?

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों ने कहा जिसके बोरे से तुम्हारा पैमाना मिल जाए वह तुम्हारा चोर होगा और तुम उसे ग़ुलाम बना लेना।

﴿فبدا باوعيتهم قبل وعاء اخيه.﴾

पहले औरों की बोरियाँ खोलीं और आख़िर में बिन यामीन की

बोरी खोली।

﴿فاستخرجهامن وعآء اخيه﴾

उसकी बोरी में पैमाना निकला और कहा यह हमारा चोर है। उस वक़्त यहूदा ने कहा कहा अल्लाह के बन्दो! पहले यूसुफ़ को खोया अब बिन यामीन खोया। अब बाप को क्या जवाब दोगे।

﴿لن ابرح الارض حتى ياذن لى ابى اويحكم الله لى.﴾

मैं तो वापस नहीं जाता यहाँ तक कि मेरा बाप मुझे इजाज़त दे दे या अल्लाह काई फ़ैसला फ़रमा दे।

फिर वह आकर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से कहने लगे

﴿خذ احدنا مكانه انا نراك من المحسنين.﴾

हम में से किसी को रखो और उसे हमें दे दो।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह नहीं हो सकता, यह नहीं हो सकता तो वे सारे परेशान और कहने लगे और वे कैसे सख़्त दिल थे कि जाओ और याक़ूब अलैहिस्सलाम से कहो ﴿ان ابنك سرق﴾ तेरे बेटे ने चोरी कर ली। यह नहीं कहा कि हमारे भाई ने चोरी की बल्कि कहा तेरे बेटे ने चोरी की क्योंकि बिन यामीन और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम एक माँ से थे और बाक़ी दूसरी वालिदा से।

याक़ूब अलैहिस्सलाम का बेटे को ख़त

जब ये याक़ूब अलैहिस्सलाम के पास पहुँचे और सारा क़िस्सा सुनाया तो याक़ूब अलैहिस्सलाम ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ख़त लिखा और उसमें यह लिखा कि

"हम नबियों का घर हैं। हम चोर नहीं होते। हमारा घर शुरू से आज़माईश की भठ्ठी में जल रहा है। मेरे दादा को आग में डाला गया। मेरे बाप को छुरी के नीचे से निकाला गया। मेरे बेटे को मुझे से जुदा किया गया। जिसकी याद में रोते रोते आज चालीस साल गुज़र गए हैं और मेरी आँखें चली गई हैं। उसकी याद का एक सहारा था वह भी तुमने मुझ से ले लिया तो मैं मिन्नत करता हूँ कि मेरा बच्चा मुझे वापस कर दो। तेरा बड़ा एहसान होगा।"

ऐसे ही दर्दनाक चन्द जुमले थे जिसे पढ़कर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम भी रोने लगे क्योंकि दोनों बाप बेटा नबी थे और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बताने की इजाज़त नहीं थी कि बाप को बताए कि मैं मौजूद हूँ ज़िन्दा और सलामत हूँ।

जब इधर भी रोए और उधर भी रोए तो अल्लाह तआला ने कहा अच्छा ठीक है अब अपने को ज़ाहिर कर दो।

नाफ़रमानी की आख़िरी इन्तिहा ज़िल्लत है और फ़रमांबरदारी की इन्तिहा इज़्ज़त और आख़िर कामयाबी है। आख़िरत तो है ही और कभी दुनिया में भी अल्लाह तआला ज़ाहिर कर देता है।

अब फिर वे आए और कहने लगे

يا ايها العزيز مسنا واهلنا الضر وجئنا ببضاعة مزجة فاوف
لنا الكيل وتصدق علينا ○ ان الله يجزى المتصدقين ○

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ज़लील करने वाले और उसके लिए मकर व फ़रेब का जाल बिछाने वाले आज यूँ कह रहे हैं "अल्लाह के नाम पर कुछ ख़ैरात दे दो।" ﴿تصدق علينا﴾ अल्लाह के नाम पर कुछ ख़ैरात दे दो।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सब्र और तक़्वे का बदला

हाँ! यही अल्लाह का निज़ाम है। वह कैसे लेकर आता है अपनी तदबीर को अब क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से इजाज़त आ चुकी थी तो जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने पूछा अपने भाईयों की आजिज़ी व इन्किसारी की इन्तिहा देखी तो अपने चेहरे से नक़ाब हटाया और इर्शाद फ़रमाया

﴿هل علمتم ما فعلتم بيوسف واخيه اذ انتم جهلون٥﴾

इस जुमले में नबियों के अख़्लाक़ आलिया का इज़्हार देखें। हम तो ताने से बाज़ नहीं आते। क्या कुछ नहीं किया यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ भाईयों ने क्या कुछ नहीं किया? और जान बूझकर हर क़दम पर किया और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कह रहे हैं:

> "ओ! कुछ ख़बर भी है जो तुम नादानी में, बेख़बरी में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर ज़्यादती कर बैठे? कुछ ख़बर है?

﴿هل علمتم﴾ लफ़्ज़ में हलका पन आ गया है ० ﴿ما فعلتم بيوسف﴾ जो हो गया। ग़लती से हो गया नादानी से हो गया हालाँकि कुएं में फेंक रहे हैं और ऊपर से हाथ पर तलवार मार रहे हैं कि उसका हाथ छूट जाए। इसको यूसुफ़ अलैहिस्सलाम फ़रमा रहे हैं ग़लती से हो गया यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर ज़्यादती भूल से हो गई। ﴿فعلتم﴾ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ कुछ क़िस्सा हो गया। वह भी बेख़बरी और नादानी में हो गया, कुछ याद है तुम्हें?

तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का ख़्वाब उन्हें अच्छी तरह याद था

और खटका तो था कि एक दिन यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ऊपर होगा और हम नीचे होंगें तो सब ने उन्हें ग़ौर से देखा और एक दम से की ज़बान से बेसाख़्ता निकला

﴿ءانك لانت يوسف﴾

हमें तो यही लगता है कि तू ही यूसुफ़ है।

﴿قال انا يوسف وهذا اخى﴾

फ़रमाया हाँ! मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है।

﴿قد من الله علينا﴾

आज देख लिया! अल्लाह ने हम पर कैसा एहसान किया।

इस इज़्ज़त का रास्ता क्या है?

﴿انه من يتق ويصبر فان الله لا يضيع اجر المحسنين○﴾

जो सब्र और तक़्वा इख़्तियार करता है अल्लाह कभी उसे ज़ाए नहीं करता।

ज़हन साज़ी

तो यह क़ुरआन के जो क़िस्से हैं एक ज़हन बनाते हैं कि अल्लाह की मानकर चलने वाले कामयाब और अल्लाह की ठुकरा कर चलने वाले नाकाम।

अल्लाह के नाफ़रमानों को मोहलत मिलती है फिर अल्लाह पकड़ करता है। अल्लाह के फ़रमांबरदार की थोड़ी सी आज़माईश होती है फिर अल्लाह तआला राहें और दरवाज़े खोलता है।

यह ज़हन बनाना यह है तबलीग़ का असल काम, यह ज़हन

साज़ी है और ज़हन साज़ी में सबसे पहला काम माँ का होता है।

पहला सबक़ माँ सिखाती है। हमारी बदक़िस्मती यह है कि हम छोटे छोटे बच्चों को स्कूल भेज देते हैं। आज का जो स्कूल है उसकी वही कैफ़ियत है जैसे बकरे ज़िब्ह करने के लिए जगह बनी होती है। ज़िब्ह ख़ाने में जैसे सारे शहर के क़साई जानवर लेकर आते हैं और छुरियाँ चला रहे होते हैं किसी को इधर तड़पता छोड़ रहे हैं किसी को उधर तड़पता छोड़ रहे हैं, किसी की खाल ख़ींच रहे हैं, उनकी आँतें फेंक रहे, उनके खुर फेंक रहे, उनके सींग फेंक रहे फिर उन्हें उठा उठाकर हमारे उठने से पहले लाकर दुकानों पर लटका देते हैं। हमारे आज के स्कूल में और क़साई के ज़िब्ह ख़ाने में कोई फ़र्क़ नहीं है। उसमें उस्तादों का भी क़ुसूर नहीं कि मैं उस्तादों को ज़िम्मेदार ठहराऊँ।

काँटों भरी नर्सरी

एक ग़ुलामी का ज़हन है जिससे हम अभी तक निकल नहीं सके तो क्योंकि आजकल तालीमी इदारे कमाई का ज़रिया बन चुके हैं और वह तर्बियत का ज़रिया तो अब नहीं रहे हैं तो क्योंकि इस वक़्त का हमारा मैयार यह बन चुका है कि अल्लाह मिले या न मिले पैसा मिल जाना चाहिए। अल्लाह राज़ी हो या न हो हुकूमत मिल जानी चाहिए और माँओं की भी अपनी तर्बियत नहीं है। उन्होंने बच्चों को स्कूल भेज दिया और स्कूल वालों ने बच्चों को "ए-बी-सी" के चक्कर में लगा दिया और वह एम०ए० और पीएच०डी० कर गए लेकिन उन्हें अल्लाह का तार्रुफ़ किसी

भी स्कूल व कालेज ने नहीं करवाया, किसी युनिर्वसिटी ने नहीं करवाया। है ही नहीं तो तार्रुफ़ होगा कैसे।

लिहाज़ा पचास साल के बाद दो तीन नस्लें ऐसी तैयार हुईं कि जिनके सामने कोई मंज़िल नहीं थी सिवाए पैसे के और दुनियावी ओहदों के और दुनियावी लज़्ज़तों के, उनकी सारी दौड़ की इन्तिहा यह थी कि बहुत बड़ा घर हो, बहुत बड़ा ओहदा हो, बहुत बड़ा कारोबार हो, बड़े बड़े लोगों से ताल्लुक़ात हों, हाथ में आला से आला अंगूठियाँ हों और मोबाईल हों और हमारे सफ़र यूरोप और अमरीका के हों, हमारे बच्चे बाहर पढ़ रहे हों।

बस यह है हमारी सारी ज़िन्दगी का निचोड़। पचास पचपन साल में इस मुल्क ने ऐसी नर्सरी तैयार की जो काँटों भरी थी जिसने सारे लोगों के दामन तो क्या उनके वजूद को भी तार तार कर दिया और हम एक ऐसा सिसकता हुआ लाशा बन गए जिसकी बोटी बोटी छलनी हो चुकी है। जिसके ख़ून का आख़िरी क़तरा भी निचुड़ चुका है।

हर किसी की रफ़्तार

जब अल्लाह सामने नहीं हो और आख़िरत सामने नहीं हो तो उसको कौन रोकेगा? उसको लगाम कौन देगा? माँएं फ़ारिग़ हो गयीं, बच्चे स्कूल से वापस आए, कोई ट्यूशन पढ़ने बैठ गया, किसी ने उसे मस्जिद में भेज दिया कि जा मस्जिद पढ़कर आ। वहाँ क़ारी साहब ने उसे "अलिफ़,ब,त,स" पढ़ा दिया, नूरानी क़ायदा पढ़ा दिया और उल्टा सीधा क़ुरआन जैसा उसने पढ़ा सो

पढ़ा दिया फिर वह ट्यूशन वाले के हाथ आ गया, फिर शाम हो गई और टेलीवीज़न खुल गया। एक घर में रहते हुए माँ और बेटे की आपस में मुलाक़ात नहीं।, बाप और बेटे की आपस में मुलाक़ात नहीं, बेटी और माँ का आपस में मेल जोल नहीं। दस्तरख़्वान पर इकठ्ठे बैठकर खाना खा लिया यह कोई मुलाक़ात है? रात को सो गए यह कोई मुलाक़ात है?

बच्चे स्कूल में चले गए और बाप अपने कारोबार पर चला गया, दुकान पर चला गया, दफ़्तर में चला गया। माँऐ अपने काम को लग गयीं। बच्चे आए, उन्हें खाना खिलाया, खाना खिलाकर उन्हें या क़ारी साहब के पास भेज दिया या ट्युशन पर भेज दिया। अस्र को खुद बाहर खेलने चले गए। शाम को टेलीवीज़न के सामने बैठ गए या स्कूल का काम कर लिया। माँ अपने काम में लगी और बच्चा अपने काम में लग गया

तो आप देख रहे हैं कि बच्चा अपनी रफ़्तार पर चल रहा है, माँ अपनी रफ़्तार पर जा रही है, बेटा अपनी रफ़्तार पर जा रहा है, बाप अपनी रफ़्तार पर जा रहा है।

पन्द्रह साल के बाद बेटा जब अपनी माँ को आँखें निकालता है तो माँ का कलेजा टुकड़े टुकड़े हो जाता है। वह कहती है हाय! यह मुझे क्यों आँखें दिखा रहा है? वह आँखें न दिखाए तो और क्या करे माँ ने उस पर मेहनत कब की थी? उसे इन्सान बनना कब सिखाया था? बाप से बेटा बदतमीज़ी न करे तो और क्या करे बाप ने उसे बाप होने का कब बताया था, उसे इन्सान होना कब सिखाया था।

वैसे तो तबलीग़ वालों को लोग ताने देते हैं कि बीवी बच्चों को छोड़कर चले जाते हैं। अब आजकल तो हर एक ने अपने बच्चों को छोड़ा हुआ है। कोई बाप नहीं जो बच्चों को वक़्त देता हो जो उनके पास बैठकर उन्हें ज़िन्दगी का मक़सद समझाता हो। उन्हें अख़्लाक़ व अदब सिखाता हो और फिर देहातों के लोगों में तो कोई कराची बैठा हुआ है, कोई दुबई बैठा हुआ है, कोई अबूज़हबी बैठा हुआ है, कोई इमारात बैठा हुआ है, कोई कुवैत बैठा हुआ है, कोई क़तर बैठा हुआ है। इतना लम्बा फ़ासला बाप और बच्चों के बीच में। एक घर में रहते हुए बच्चे को मंज़िल बताने वाला कोई नहीं है। पहली तर्बियत तो माँ ने करनी थी।

अल्लाह ने औरत को घर में बिठाया है। पर्दे का पाबन्द बनाया है ताकि यह बाहर कम निकले। पर्दे की पाबन्दी भी इसलिए लगाई है कि पर्दे का इतना इन्तेज़ाम करने से बेहतर है कि घर ही में बैठी रहूँ अगर बाहर निकलना भी पढ़े तो सख़्त पर्दे में निकले।

पर्दे की अहमियत

पूरे क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला ने किसी औरत का नाम नहीं लिया। शुरू से आख़िर तक पूरा क़ुरआन पाक मैंने कई दफ़ा देख चुका हूँ आप भी देख लें। सिर्फ़ मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम आता है उनके अलावा किसी भी औरत का नाम नहीं। “सबा” के बारे में मुझे यह ख़्याल आता था कि शायद यह किसी औरत का नाम है लेकिन एक हदीस में यह बात मिल गई कि किसी ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम सबा क्या है?

तो आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यमन का सरदार था जिसके दस बेटे थे तो मुझे जो शक था वह भी ख़त्म हो गया तो पूरे क़ुरआन में सिर्फ़ मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम आता है उनके अलावा किसी औरत का नाम नहीं आता। अल्लाह तआला ने जिस औरत का भी ज़िक्र किया है उसका ज़िक्र उसके बाप ख़ाविन्द या भाई की निस्बत से किया है। मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा के नाम के अलावा किसी का भी नाम ख़्वाह वह अच्छी औरत है या बुरी औरत है नाम छुपाया है।

जैसे ﴿امـــراة العزيز﴾ अब यह ज़ुलेख़ा है। यह बुरी औरत है, ﴿امـــراة فـرعون﴾ यह आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। यह अच्छी औरत हैं, ﴿امـــراة عمران﴾ यह मरयम की वालिदा हैं बड़ी आला औरत हैं लेकिन उनका नाम नहीं बताया फ़रमाया ﴿امـراة عمران﴾ इमरान की बीवी ﴿فـاقـبـلـت امراته﴾ यह इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बीवी हैं अल्लाह तआला ने नाम नहीं लिया ﴿امراة نوح و امراة لوط﴾ यह नाफ़रमान औरतें हैं अल्लाह ने उनका नाम भी नहीं बताया।

तो अल्लाह तआला ने मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम क्यों बताया?

मरयम का नाम इसलिए बताया कि मरयम के बेटे को लोगों ने अल्लाह तआला का बेटा बना दिया और कहा ईसा अलैहिस्सलाम तो अल्लाह का बेटा है ﴿وقالت النصرى المسيح ابن الله﴾ तो अल्लाह पाक ने इस शक को धोने के लिए खुलकर कहा कि नहीं नहीं:

﴿ذلك عيسى ابن مريم، ذلك عيسى ابن مريم قول الحق الذى فيه يمترون٥﴾

यह है ईसा (अलैहिस्सलाम) मरयम (रज़ियल्लाहु अन्हा) का बेटा।

अल्लाह तआला ने अपने ऊपर से इल्ज़ाम को धोया कि ईसा मेरा नहीं बल्कि मरयम का बेटा है। अल्लाह तआला ने मरयम का नाम बताया और उनके अलावा किसी भी औरत का नाम न बताया। इस पर तफ़्सीर वाले उलमा इर्शाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला को औरत का नाम ज़ाहिर करना भी पसन्द नहीं है तो चेहरे खालने की अल्लाह तआला कैसे इजाज़त देगा।

आपके यहाँ तो इतना नहीं हमारे यहाँ तो यह ज़ुल्म हो गया है कि औरत को बाहर निकाल दिया गया और यहाँ भी कोशिश हो रही है औरत को बाहर लाने के लिए अगर आप होश में नहीं आएंगे और तबलीग़ की मेहनत को अपने घरों में दाख़िल नहीं करेंगे कुछ सालों के बाद यहाँ भी यही कुछ हो जाएगा।

अल्लाह तआला तो औरत के नाम को ज़ाहिर करना पसन्द नहीं किया तो वह अल्लाह औरत को कैसे इजाज़त दे सकता है कि मुँह खोलकर बाहर घूमती फिरे।

दिल तो पर्दे में है

और कुछ नादान लोग कहते हैं कि पर्दा तो दिल का होता है। मैं कहता हूँ दिल तो पहले ही पर्दे में है। उस पर पर्दा डालने की क्या ज़रूर है। पर्दा उस चीज़ का होता है जो नज़र आने वाली हो।

हम खिड़की पर पर्दा लगाते हैं दीवारों पर पर्दा क्यों नहीं लगाते क्योंकि खिड़कियों से बाहर नज़र आता है। इस वजह से वहाँ पर पर्दा लगाया जाता है ताकि अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर नज़र न आए। दीवार पर कौन बेवक़ूफ़ पर्दा लटकाएगा? पर्दा उस

चीज़ का होता है जो नज़र आ रही हो और उसे छुपाया जाए। अल्लाह तआला ने चेहरे को ज़ीनत की चीज़ बनाया है इसलिए चेहरे को छुपाने का हुक्म इर्शाद फरमाया है।

औरत के लिए बाहर निकलने का तरीक़ा

हाँ पर्दे में निकलने की इजाज़त है। अपनी किसी ज़रूरत के लिए जाने की भी इजाज़त है कोई न हो तो सौदा सुलफ़ लाने की भी इजाज़त है।

लेकिन बाहर जाए तो किस तरह उसका नमूना अल्लाह तआला ने एक औरत के बाहर आने के अन्दाज़ को बयान करके बताया है कि एक औरत बाहर आई थी एक काम के लिए वह इस तरह चलकर आई कि वह चाल अल्लाह को पसन्द आ गई कि अल्लाह तआला ने उस औरत की चाल को क़ुरआन का हिस्सा बना दिया क़यामत तक के लिए।

हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम की बेटियाँ जानवरों को पानी पिलाकर एक दिन जल्दी वापस पहुँच गयीं। शुएब अलैहिस्सलाम ने पूछा जल्दी कैसे आ गई हो?

कहने लगीं एक नौजवान ने हमारी बकरियों को पानी पिला दिया तो शुएब अलैहिस्सलाम कहने लगे फिर उसे तो इसकी जज़ा देनी चाहिए। उन्होंने कहा ही देनी चाहिए।

शुएब अलैहिस्सलाम ने कहा अच्छा जाओ और उसे बुलाकर लाओ। अब शुएब अलैहिस्सलाम की एक बेटी बुलाने गई मूसा अलैहिस्सलाम को। अल्लाह उसके चलने के अन्दाज़ को बताने के लिए जो अलफ़ाज़ बयान फ़रमाए हैं वह ये हैं

﴿فجآءته احداهماتمشی علی استحیاء﴾

इसमें तीन लफ़्ज़ इज़ाफ़ी हैं एक ﴿تمشی﴾ एक ﴿علی﴾ एक ﴿استحیآء﴾ हालाँकि क़ुरआन में कम से कम बात करने को मद्देनज़र रखा गया है यहाँ पर इन अल्फ़ाज़ पर बात पूरी हो गई थी:

فجآءته احداهما فقالت ان ابی
یدعوك لیجزیك اجرما سقیت لنا.

यानी उनमें से एक लड़की आई और उसने कहा आपको मेरे अब्बा बुलाते हैं और आपको आपकी मज़दूरी देना चाहते हैं।

लेकिन यहाँ इस अन्दाज़ से बयान नहीं फ़रमाया है कि ﴿فجآءته احداهما﴾ उनमें से एक लड़की आई और वह आई और जो चली उसकी चाल अल्लाह को ऐसी पसन्द आई कि उसे क़ुरआन का हिस्सा बना दिया और फ़रमाया ﴿تمشی علی استحیآء﴾ वह लड़की चल रही थी हया से लेकिन यहाँ जो ﴿علی﴾ और ﴿استحیآء﴾ है यह एक ख़ूबसूरत मिसाल है। अल्लाह तआला ने हया को यहाँ सवारी से मिलाया है। हया को एक सवारी बनाया है मसलन ख़च्चर, ऊँट, घोड़ा वग़ैरह और उस बेटी को अल्लाह तआला ने सवार बनाया है। गोया अल्लाह तआला यूँ कह रहा है कि उनमें से एक लड़की जो चल रही थी वह यूँ लग रही थी जैसे हया सवारी हो और वह लड़की उस पर सवार हो। इसे अपनी ज़बान में बदलने के लिए यूँ कहा जा सकता है कि उनमें से जो एक लड़की आ रही थी वह लड़की नहीं आ रही थी बल्कि हया चलकर आ रही थी। यह तरीक़ा है मुसलमान औरत के लिए बाहर निकलने का।

मर्द और औरत की ज़िम्मेदारी

अल्लाह तआला ने औरत को घर बिठाया है और रोटी पकाना तो औरत के ज़िम्मे ही नहीं और इसी बात पर रोज़ाना घर में लड़ाई होती है। जो काम अल्लाह ने बीवी के ज़िम्मे लगाया ही नहीं उस पर तो लड़ाई होती है। औरत का एहसान है कि ख़ाविन्द को रोटी पका कर दे दे।

कपड़े धोना और खाना पकाना औरत के ज़िम्मे नहीं और इसी तरह बच्चे को दूध पिलाना भी औरत के ज़िम्मे नहीं है अगर औरत कहे कि अपने बच्चे को दूध पिलाने के लिए किसी दाया का इन्तिज़ाम कर में नहीं पिला सकती तो वह औरत नाफ़रमान नहीं कहलाती। मर्द के ज़िम्मे है कि वह दूध पिलाने के लिए दाया का इन्तिज़ाम करे।

﴿وعلى المولودله رزقهن وكسوتهن.﴾

क्योंकि इस्लाम से पहले औरत को बहुत ज़लील समझा जाता था और उसे एक जानवर का दर्जा दिया जाता था तो अल्लाह को मुक़ाम बख़्शा। कुछ औरत के हक़ हैं और कुछ मर्द के हक़ रखे हैं और यक़ीनन मर्द का दर्जा ज़्यादा है औरत से।

﴿الرجال قوامون على النسآء.﴾

मर्दों का दर्जा औरतों से ज़्यादा है।

अंबिया अलैहिमुस्सलाम भी मर्दों में आए है औरतों में नहीं। अलबत्ता नबियों ने औरतों की गोद में परवरिश पाई है यह औरत का ऐज़ाज़ है।

इस्लाम में जब हुक़ूक़ की बात चली तो चाहे मर्द का हक़ ज़्यादा है लेकिन क्योंकि औरत का बहुत बुरा हाल था तो अल्लाह तआला ने औरत के हक़ को पहले ज़िक्र किया औद मर्द के हक़ को बाद में ज़िक्र किया और फ़रमायाः

﴿ولهن مثل الذى عليهن بالمعروف.﴾

हालाँकि मतर्बे के लिहाज़ से यूँ होना चाहिए था कि जैसे मर्दों का औरतों पर हक़ है ऐसे ही औरतों का मर्दों पर हक़ है लेकिन अल्लाह तआला ने फ़रमाया जैसे औरतों का मर्दों पर हक़ है ऐसे ही मर्दों का औरतों पर हक़ है ﴿ولهن﴾ उनका हक़ है मर्दों पर ﴿مثل الذى عليهن﴾ जैसे कि मर्दों का हक़ है औरतों पर यानी औरतों के हक़ को असल बनाया और फिर मर्द के हक़ को समझाया।

विरासत में हक़ का अन्दाज़े बयान

इसी तरह विरासत में भी यही अन्दाज़ है। हमारा सारा इलाक़ा हिन्दुओं से मुसलमान हुआ है तो क्योंकि हिन्दुओं में बच्ची को कुछ नहीं देते तो हिन्दुओं के असर की वजह से हमारे इलाक़े में अब भी बच्ची को आम तौर पर विरासत में से कुछ नहीं दिया जाता लेकिन याद रखो जो बेटियों का हक़ नहीं देते वह सब जहन्नुम में जाएंगे एक भी नहीं बच सकता। मैं क़सम तो नहीं खा सकता क्योंकि अल्लाह की रहमत बहुत बड़ी है लेकिन अल्लाह के क़ानून है जो इस तरह बच्चियों का हक़ मार कर अपने बेटों को दे देगा उसे तबलीग़ के चिल्ले और साल भी

अल्लाह की पकड़ से नहीं बचा सकते। बाक़ी अल्लाह चाहे तो अबूजहल को भी माफ़ कर दे।

मैं अल्लाह की रहमत की नहीं बल्कि अल्लाह के क़ानून की बात कर रहा हूँ। क़ुरआन बेटी का हक़ पहले बताता है और बेटे का हक़ बाद में बताता है। फ़रमाया

﴿يوصيكم الله في اولادكم﴾

अल्लाह तआला तुम्हें औलाद के बारे में वसीयत कर रहा है।

﴿للذكر مثل حظ الانثيين﴾

यानी दो बेटियों को जितना मिलता है उतना एक बेटे का हिस्सा।

हालाँकि मतर्बे के लिहाज़ से यूँ बात होती कि

﴿للانثى مثل نصف حظ الذكر﴾

कि बेटी का हिस्सा बेटे से आधा है।

लेकिन अल्लाह तबारक व तआला ने यह नहीं कहा बल्कि इसकी उलट कहा और फ़रमाया

﴿للذكر مثل حظ الانثيين﴾

दो बेटियों को जितना मिलता है उतना एक बेटे को दे दो।

यानी बेटी के हक़ विरासत को बुनियाद बनाया और उस पर बेटे के हक़ को क़यास फ़रमाया।

और हुक़ूक़ में भी औरत के हुक़ूक़ को बुनियाद बनाया है। वजह इसकी यह है कि औरत के ज़िम्मे काम बहुत बड़ा है। नस्ल की तैयारी और तर्बियत क्योंकि बाप तो भाग दौड़ में रहता है

कारोबार, नौकारी और बाहर के हज़ारों काम और औरत घर में है और उसके ज़िम्मे एक बहुत अज़ीम काम रखा है।

पन्द्रह और तेरह बरस की माँ बाप को मोहलत है कि पन्द्रह और तेरह बरस में इस बच्चे और बच्ची को इस क़ाबिल बना दो कि जब अल्लाह की शरीयत उनकी तरफ़ मुतवज्जेह हो तो यह सौ फ़ीसद मानने वाले बन चुके हों क्योंकि माँ हर वक़्त साथ है इसलिए माँ की ज़िम्मेदारी भी तर्बियत औलाद के हवाले से बाप के मुक़ाबले ज़्यादा है।

माँ की तर्बियत का असर

तक़रीबन इस्माईल अलैहिस्सलाम की उम्र छः साल थी जब उन्हें इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा तुझे ज़िबह करना चाहता हूँ, तेरा क्या इरादा है? और इस छः बरस के बच्चे ने बाप को आज पहली दफ़ा देखा है क्योंकि पहले एक दफ़ा तो छोड़ने आए और दूसरी दफ़ा एक साल के बाद आए थे तो एक साल के इस्माईल को क्या पता कि कौन बाप है और दुश्मन कौन है?

तीसरी दफ़ा इस वक़्त आए हैं जिबह करने के लिए और अब वह भागने दौड़ने वाले हो गए थे, पाँच छः साल के होंगे।

अब ज़मीन और आसमान एक मन्ज़र देख रहे हैं। धरती ने आज तक ऐसा मन्ज़र कभी नहीं देखा था, न ज़मीन ने न आसमान ने, न फ़िज़ा ने, न काएनात ने।

एक वीराना है, पहाड़ियाँ हैं, जमूर-तुल-उक़्बा है बाप छुरी हाथ में लिए खड़ा है। मासूम बच्चा है। बच्चा तो पराया भी दिल को

भाता है और चौरास्सी साल की उम्र में मिला था अगर बीस साल की उम्र में शादी हुई होगी तो चौंसठ साल दुआ मांगी होगी और पच्चीस साल की उम्र में शादी हुई होगी तो तक़रीबन साठ बरस।

और जब वही बेटा भागने वाला हो गया तो बाप कहता है बेटे तुझे ज़िब्ह करना चाहता हूँ। तेरा क्या ख़्याल है? और तेरा क्या ख़्याल है का मतलब यह नहीं था कि अगर तू कहेगा तो ज़िब्ह करूंगा वरना नहीं बल्कि इसका मतलब यह था अगर तू मान जाए तो काम आसानी से होगा और नहीं मानेगा तो मुझे ज़बरदस्ती करना पड़ेगी।

लेकिन माँ ने छः साल की उम्र में बच्चे को इस जगह तक पहुँचाया कि वह बड़े आराम से कहता है

﴿يابت افعل ما تؤمر ستجدنی ان شآء اللہ من الصابرین٥﴾

तर्जुमाः अब्बा जी आप करें जो करना है। आप देख लेंगे मैं सब्र करूंगा।

औरत का असली ज़ेवर

यह माँ की तर्बियत है और इस तर्बियत से हमारी औरतें ग़ाफ़िल हैं। बस उनके कपड़े उनकी चीज़े होना चाहिए। माँएं कहती हैं मैंने अपनी बच्ची के लिए सब कुछ बना लिया है कपड़े, ज़ेवर, जहेज़ वग़ैरह अब मुझे उसकी शादी करना है।

सब कुछ बना दिया है। मैं यूँ कहता हूँ कि उसका दिल भी बना दिया या नहीं? उसके हाथों का ज़ेवर, उसके माथे का ज़ेवर, कानों का ज़ेवर, नाक का ज़ेवर, गले का ज़ेवर, पाँव का ज़ेवर तो

बना दिया है, कपड़े बना दिए हैं, तुमने जहेज़ भी बना दिया है, बैड भी बना दिया है, फ्रिज भी दे दी है, वाशिंग मशीन भी दे दी है, प्रेस भी दे दी है लेकिन उसके दिल को तक़्वे का ज़ेवर भी पहनाया या नहीं, उसके दिल को अल्लाह की मुहब्बत का ज़ेवर भी पहनाया नहीं? अगर दिल को ख़ाली भेज दिया तो यह घर बड़ी मुश्किल से आबाद होगा।

लोग कहते हैं मेरा बेटा कारोबारी हो गया है बस अब मैंने उसकी शादी करनी है, मेरा बेटा डाक्टर बन गया है बस अब मैंने उसकी शादी करनी है।

क्या उसको इन्सान बनना भी सिखाया है या सिर्फ़ डाक्टर बनना सिखाया है। माँ बाप कितने अरमान से बेटियों को पालते हैं और आगे वहशी ख़ाविन्द अपनी हाकमियत ऐसे इस्तेमाल करता है जैसे पाँव की जूती हो या घर की नौकर हो।

न औरतों को पता हैं कि अल्लाह की हदें क्या हैं? न ख़ाविन्दों को पता है कि अल्लाह की हदें क्या हैं? हर घर में आग लगी पड़ी है।

तो यह माँ के ज़िम्मे है कि वह बेटे को इस सतह पर लाएं कि वह इन्सान बनकर चले क्योंकि उसने एक ज़िन्दगी को लेकर चलना है तो उसकी रिआयत सीखे।

और बेटी को भी इस सतह पर लाओ कि वह तक़्वा सब्र और अख़्लाक़ सीख कर जाए। पराए घर जाना है पता नहीं कैसा मिले। ग़रीबी मिले या मालदारी मिले। ख़ाविन्द अख़्लाक़ वाला मिले या बदअख़्लाक़ मिले, ग़ुस्से वाला मिले या नरम मिज़ाज मिले

ज़ैसे भी मिले सब्र करे होंट सी ले।

आह न कर लबों को सी

अपने लब सीकर ज़िन्दगी गुज़ार ले लेकिन अगर ये अख़्लाक़ न लड़की ने सीखे और न लड़के ने सीखे और न लड़की को सिखाए गए और न लड़के को सिखाए गऐ तो फिर वही फट फटिया। फट फटिया।

इस्माईल अलैहिस्सलाम की कुर्बानी और इब्राहीम अलैहिस्सलाम का इम्तिहान

इस्माईल अलैहिस्सलाम छः बरस का बच्चा बाप ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम को नसीहत कर रहा है कि मेरे हाथ पाँव बांध लो ताकि मेरी हरकत से आपको तकलीफ़ न पहुँचे।

अपनी आँखों पर पट्टी बांध लें कहीं आपका हाथ न डोल जाए बेटे पर छुरी चलाना कोई आसान काम है।

मुझे उल्टा लिटाएं और नीचे से छुरी चलाएं कहीं नज़र न पड़ जाए और हुक्म न टूट जाए।

यह छः बरस का बच्चा कह रहा है। हाथ पाँव बांधे, ज़मीन पर लिटाया और जब छुरी निकाली तो आसमान के फ़रिश्तों के भी साँस रुक गए। काएनात थर थरा गई कि यह क्या होने लगा है! यह क्या होने लगा है?

तेज़ छुरी और मासूम छः बरस के बच्चे की नरम गर्दन। गर्दन तो वैसे ही नरम होती है चाहे साठ बरस का हो चाहे छः बरस का।

चल रही है छुरी। एक दफ़ा तो काएनात पर सकता तारी हो गया कि यह क्या हो रहा है और अल्लाह तआला ने भी यही देखना था कि मेरी मुहब्बत कितनी है?

जब छुरी ने गर्दन को छुआ तो अल्लाह तआला की तक़दीर दर्मियान में आ गई कि नहीं काट सकती हो। कई तफ़सीरों में लिखा है कि दर्मियान में लोहे या तांबे का टुकड़ा आ गया था यह सब कच्ची बातें हैं कुछ भी नहीं आया बल्कि गर्दन नरम गोश्त रही। लोहा सख़्त लोहा रहा, गर्दन की नरमी में कमी नहीं थी और लोहे की सख़्ती में कमी न थी। इरादा अल्लाह का ग़ालिब आया कि नहीं काट सकती। छुरी ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम के हाथ में हो या फ़िरऔन के हाथ में। जब अल्लाह बचाता है तो फ़िरऔन की छुरी मूसा अलैहिस्सलाम को नहीं काट सकती।

और ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम की छुरी इस्माईल अलैहिस्सलाम को नहीं काट सकती क्योंकि बचाने वाले अल्लाह की ताक़त बहुत ज़बरदस्त है।

एक दफ़ा चलाया नहीं चली। दूसरी दफ़ा चलाया नहीं चली। तीसरी दफ़ा चलाया नहीं चली। बाप और बेटे का क्या सब्र और इम्तिहान है कि बाप कहता है कि या अल्लाह! अब बस कर नहीं चली। हो गया इम्तिहान। बेटा कहता अब्बा जी! नहीं चली अब छोड़ मेरी जान बल्कि वह भी कह रहा है अपना पूरा ज़ोर दिखा और मेरे काटने में सुस्ती न कर और बाप भी लगा हुआ है कि मैंने इसकी गर्दन को काट कर ही उठना है।

आख़िर जब देखा यह तो नहीं चल रही है तो उसे पत्थर पर तेज़ किया और दोबारा आकर जब चलाया तो अल्लाह तआला ने

फ़रमायाः

﴿قد صدقت الرويا انا كذالك نجزى المحسنين۝﴾

और इसी वक़्त एक पल के भी हज़ारवें हिस्से में अल्लाह तआला ने मेंढे को जिब्राईल अलैहिस्सलाम के हाथ जन्नत से भेजा और इस्माईल अलैहिस्सलाम को निकाल लिया और मेंढे को डाल दिया और छुरी चल गई।

जब पट्टी खोली तो इस्माईल अलैहिस्सलाम साथ खड़े हैं और मेंढा ज़िब्ह हुआ पड़ा है। इस वजह से हमारे नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा मेंढा यानी भेड़ नर की क़ुर्बानी देते थे। एक अपनी तरफ़ से और एक उम्मत की तरफ़ से।

तो माँ इतनी तर्बियत कर सकती है। इसलिए हम कहते हैं कि मर्द भी अल्लाह की राह में निकलो और औरतें भी अल्लाह की राह में निकलें ताकि औरतों को तर्बियत करना आए कि हम ने बच्चों को अल्लाह के हुक्म पर कैसे तैयार करना है?

हबीब बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत और वालिदा का जमाव

हबीब बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को मुसैलमा बिन कज़्ज़ाब ने पकड़ा और कहने लगा कि एक दफ़ा कह दो मैं अल्लाह का रसूल हूँ मैं तुम्हें छोड़ देता हूँ।

उन्होंने कहा यह तो कभी भी नहीं कहूंगा। तो उसने उनका एक हाथ काट दिया और कहने लगा अब भी मौक़ा है। फ़रमाया नहीं कहता। उसने दूसरा हाथ काट दिया। फिर एक पाँव और फिर दूसरा पाँव भी काट दिया। फिर आँखें निकाल दीं, कान काट

दिए और फिर उनकी हड्डियों से गोश्त इस तरह उतारने लगा ज़िन्दा का ही जैसे क़साई जानवर का गोश्त उतारता है।

ज़िन्दा तड़प तड़प कर जान दे दी और यह न कहा कि तू रसूलुल्लाह है और यह दर्दनाक मौत की ख़बर जब माँ को पहुँची कि तेरे हबीब के साथ यह हो गया है तो उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा उनकी वालिदा थीं। उन्होंने इर्शाद फ़रमाया:

﴿لهذا اليوم ارضعته﴾

यही दिन देखने के लिए मैंने उसे दूध पिलाया था कि वह अल्लाह के नाम पर बोटी बोटी हो जाए। यह तर्बियत है माँओं की।

असमा रज़ियल्लाहु अन्हा का जमाव और इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की दर्दनाक शहादत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का हज्जाज ने घेराव कर लिया और सुलह की पेशकश की और आख़िरी में कुल चार आदमी साथ रह गए थे तो अपनी माँ असमा रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी और हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन से पूछने के लिए आए और अर्ज़ किया:

> **"अम्मा! सुलह की पेशकश हो रही है, क्या किया जाए कि दुश्मन कह रहा है सुलह कर लो तो जान बच जाएगी।"**

तो हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बहुत सख़्त अल्फ़ाज़ फ़रमाए वह अल्फ़ाज़ तो बयान नहीं कर सकता क्योंकि वह माँ थीं कह सकती थीं। मैं हल्के अल्फ़ाज़ कहता हूँ कि उन्होंने ने

फ़रमायाः

> "अगर तू दुनिया के लिए लड़ा है तो फिर अफ़सोस है तेरी सारी मेहनत पर और अगर आख़िरत के लिए लड़ा है तो फिर तेरा मरना और जीना मेरे लिए बराबर है और अपनी जान बचाने के लिए बातिल के सामने घुटने न टेक।"

इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहने लगे अम्मा! मुझे भी यही उम्मीद थी कि तू यही जवाब देगी ﴿ان فی الموت راحة﴾ मौत में बड़ी राहत है फिर कहने लगे गले तो मिल ले तो माँ से आख़िरी बार गले मिले तो जब माँ ने बेटे को सीने से लगाया तो उन्होंने ज़िरह महसूस की जो उन्होंने कुर्ते के नीचे पहन रखी थी। फ़रमाया यह क्या पहना हुआ है? अर्ज़ किया ज़िरह है। फ़रमाया क्यों? अर्ज़ किया मुझे डर है कि जब मैं क़त्ल हो जाऊँगा तो मेरी लाश के टुकड़े करेंगे।

तो हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक जुमला इर्शाद फ़रमाया जो बाद में अरबी अदब का मक़ूला बन गया। फ़रमाया

﴿الشاة المذبوحة العجوز المحصلة﴾

> बेटा! जब बकरी ज़िबह हो जाती है तो उसके बाद खाल के खिंचने का उसे दर्द नहीं होता। टुकड़े होने का दर्द नहीं होता।
>
> "मरने वाले लोहे का सहारा नहीं लिया करते। मेरे सामने ही इस ज़िरह को उतार दो।"

जैसे आजकल की माँएं दुल्हा को सजाती हैं ऐसे ही उस ज़माने की माँएं बेटों को अल्लाह के नाम पर मरने के लिए तैयार करती थीं। अल्लाह के नाम पर दुनिया के लिए नहीं।

चार आदमियों के साथ मिलकर तीन हज़ार आदमियों से मुक़ाबला किया। सुबह से अस्र के तक कोई उनके क़रीब नही आ सका। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों हाथ से तलवार चलाने में माहिर थे। लिहाज़ा उनके क़रीब आना मौत को दावत देना था। अस्र के बाद उन्होंने पहाड़ पर चढ़ कर ऊपर से पत्थर मारे। जिस पहाड़ पर अब सऊदी बादशाह का महल बना हुआ है। जबल-अबि-क़ैस पर उन्होंने तोपे फिट की हुई थीं। उस ज़माने की तोपें जो पत्थर फेंकती थीं।

उन्होंने तोप से पत्थर फेंका और उनके सर पर लगा। भारी पत्थर। जब ख़ून निकला तो सीधा आकर पंजों पर गिरा तो फ़रमायाः

﴿ولسنا على الاعقاب تدما كلومنا﴾
﴿ولكن على الاقدام تقطر دماء﴾

हम वह नहीं हैं जिनकी कमर पर ज़ख़्म लगें और उनकी ऐढ़ियों पर ख़ून गिरे बल्कि हम तो वे हैं जो अपने सीने के ख़ून से अपने पंजों पर मेंहदी लगाते हैं।

दो पत्थर सर में लगे और चकरा कर गिर गए और उस वक़्त सत्तर बरस उम्र थीं। सत्तर साल की उम्र में चार आदमियों के साथ तीन हज़ार का मुक़ाबला किया।

जब गिरे तो आख़िरी अल्फ़ाज़ यह थेः

﴿اسما ان قتلت لا تبكيني﴾
﴿لم يبق الا حسبي وديني﴾

अस्मा (रज़ियल्लाहु अन्हा) अगर मैं मर जाऊँ तो मुझ पर

रोना मत क्योंकि तूने ख़ुद ही भेजा था। अब रोना नहीं।

﴿لم يبق الا حسبي وديني﴾

मेरा दीन सलामत रहा बाक़ी सब कुछ चला गया और मेरी शराफ़त सलामत रही बाक़ी सब कुछ चला गया।

﴿وصارم الانت يمينى﴾

मेरे सब साथी छूट गए सिर्फ़ मेरी तलवार ने साथ दिया।

शहादत के बाद हज्जाज ने उनकी लाश को हजूं के मक़ाम पर सूली पर लटका दिया और एक हफ़्ते तक लाश लटकी रही।

तीसरे दिन अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा का उस तरफ़ से गुज़र हुआ तो देखकर फ़रमाने लगीं,

"क्या अभी सवार के उतरने का वक़्त नहीं आया।"

अब तो हमारी औरतों को यह भी नहीं पता कि तर्बियत है किस चीज़ का नाम? हमारे हाँ बस इतना ही बहुत कुछ है कि लड़का नमाज़ी बन जाए। लड़की नमाज़ी बन जाए हालाँकि सबसे ज़्यादा अख़्लाक़ देखने की ज़रूरत होती है। फ़राईज़ के साथ सबसे ज़्यादा अख़्लाक़ की रिआयत रखने की ज़रूरत होती है कि उसके अख़्लाक़ कैसे है? नया घर जो यह आबाद करेगा आबाद कर भी सकेगा या नहीं? और अख़्लाक़ बनाने पर आजकल माँ बाप की तवज्जेह नहीं है।

औलाद की तर्बियत के लिए चन्द उसूल

भाईयो और बहनो!

चन्द बुनियादें हैं जिन पर हमने अपनी नस्ल को लाना है।

सूरहः लुक़मान में अल्लाह तआला ने वह चन्द चीज़ें बयान की हैं। उनमें पहली बात है

﴿واذ قال لقمن لابنه وهو يعظه يبنى لا تشرك بالله.﴾

पहली चीज़ अपनी औलाद को ईमान सिखाना है। ﴿لا تشرك بالله﴾ शिर्क न करना। नफ़ी (इन्कार) मुश्किल होती है इस्बात (इक़रार) आसान होता है। इसलिए नफ़ी को ज़िक्र किया है। इस्बात का यहाँ ज़िक्र ही नहीं।

﴿لا الـه الا الله﴾ अल्लाह एक है उसका कोई शरीक नहीं। ﴿لا شريك له﴾ को दिल मे उतारना मुश्किल काम है। खुला हुआ शिर्क, छुपा हुआ शिर्क। अल्लाह का शुक्र है हम मुशिरक नहीं हैं लेकिन शिर्के ख़फ़ी में मुब्तिला हैं। पैसे पर उम्मीद, असबाब पर तवक्कुल, चीज़ों पर तवक्कुल।

अल्लाह से निगाह का हटना यह अन्दर का छुपा हुआ वह शिर्क है जिसे मरने से पहले पहले निकालना ज़रूरी है। माँ बाप को मोहलत मिली है पन्द्रह साल लड़के के लिए और लड़की के लिए बारह साल या जब वह बालिग़ हो जाएं इससे पहले पहले *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* उनके दिल में उतार दें कि अल्लाह के सिवा हर एक से उनकी निगाह हट जाए।

दर्मियान में अल्लाह औलाद को आदाब बता रहा है कि माँ बाप की इताअत और उनसे हुस्ने सुलूक औलाद के ज़िम्मे है। औलाद माँ बाप की ग़ुलाम बन कर रहे। उनके ज़ुल्म को बर्दाश्त करे, उनके सामने उफ़ भी न करे।

और दूसरा सबक़ यह देना है

يبنى انها تلك مثقال حبة من خردل فتكن في صخرة اوفى
السموت اوفى الارض يات بها الله ان الله لطيف خبير.

बेटा एक राई के बराबर नेकी करेगा या बदी, छिप कर करेगा या खुल कर करेगा, अल्लाह तुझे देखता। वह तेरा हिसाब व किताब ले लेगा। वह दूसरा सबक़ है अल्लाह की गिरफ़्त।

हिसाब व किताब और आख़िरत का तसव्वुर उनके दिल में बिठाना है कि आख़िरत में अल्लाह को जवाब देना है।

तीसरा सबक़ यह है कि

﴿يبنى اقم الصلوٰة﴾

बेटा नमाज़ पढ़। बच्चों को नमाज़ पर लाना।

चौथा सबक़

﴿وامر بالمعروف انه عن المنكر﴾

उन्हें तबलीग़ पर लाना है। कि जाओ भलाई फैलाओ, जाओ बुराई मिटाओ।

﴿واصبر على ما اصابك﴾

सब्र सिखाना

﴿ان ذالك من عزم الامور﴾

क्योंकि यह मुश्किल काम है इसलिए उन्हें हौसला देना है कि बड़े काम में तकलीफ़ें आती हैं। सब्र करो जैसे हम कहते हैं थोड़ी सी तकलीफ़ है। थोड़े से दिन हैं। थोड़ी सी मेहनत है फिर तुम बड़े आदमी बन जाओगे। बड़े डाक्टर बन जाओगे, बड़ी इ़ज़्ज़त होगी, बड़ा पैसा होगा।

हाय हाय! माँ बाप कैसे ग़लत सबक़ पढ़ाते हैं। बनाओ अपने

बच्चों को डाक्टर भी, इन्जीनियर भी, ज़मींदार भी, ताजिर भी, साइंसदान भी लेकिन उनकी अज़्मत तो उनके दिलों में पैदा न करो। अज़्मत इसकी पैदा करो कि

﴿ان ذالك من عزم الامور﴾

तर्बियत औलाद का अनोखा अन्दाज़

हमारे दोस्त हैं जमर्नी में रहते हैं। शम्सुर्रहमान उनका नाम है। उनकी बीवी नौमुस्लिम है। उनके हाथ पर ही मुसलमान हुई और फिर उनसे शादी हो गई। उसने अपने बच्चों की ऐसी तर्बियत की है कि चार साल की उम्र के बच्चे का यह हाल है कि अगर कोई औरत घर में आ जाए तो वह भाग कर कमरे में चला जाता है कि औरत आ गई मुझे पर्दा करना है।

और उनके बच्चे शरारत करें तो उनकी माँ कहती है अगर तुम बाज़ नहीं आओगे तो मैं तुम्हें डाक्टर बनाऊँगी तो बच्चे रोने लग जाते हैं नहीं नहीं हमें आलिम बनना है हमें डाक्टर नहीं बनना।

वह कहती है कि अगर तुमने कोई शरारत की तो मैं तुम्हें इन्जीनियर बनाऊँगी तो वे आगे से मिन्नतें करते हैं नहीं नहीं अम्मा हम शरारत नहीं करेंगे।

यह एक नौमुस्लिम है जिसने अपने बच्चों को इस सतह पर पहुँचा दिया है। एक मुसलमान माँ बाप हैं कि बच्चों की तरफ़ तवज्जेह ही नहीं।

﴿ان ذالك من عزم الامور﴾

यह इस अज़्मत की तरफ़ इशारा है कि बहुत बड़ी बात है

दावत देना, भलाई का फैलाना, बुराई का मिटाना, नमाज़ पढ़ना और इस पर सब्र करना बहुत ऊँची बात है। इन बातों की अज़मत उनके दिलों में बिठाना।

तालीम की अहमियत

हमारे एक साथी हैं मौलवी बिलाल। हम राएविन्ड में इकठ्ठे पढ़ते रहे हैं। उनके वालिद बंगलादेश में रहते हैं असल यू०पी० के थे।

1955-60 में उनकी टैक्साटाइल मील थी। जब लोगों के पास बहुत कम मीलें थीं। मौलवी बिलाल कहने लगे कि एक दफ़ा 1964 ई० में मुझ से बीस हज़ार रुपए खो गए मेरी अपनी ग़लती से। कहने लगे मेरे अब्बा ने एक दफ़ा भी नहीं पूछा कैसे ज़ाए हुए। मैं कई दिन तक डरता रहा कि अब सज़ा मिली।

मस्जिद में इशा के बाद तालीम होती थी। एक दिन मैं तालीम में नहीं बैठा और घर आ गया। मस्जिद से आते ही वालिद साहब ने मुझे इतना डाँटा इतना डाँटा कि तू तालीम नहीं बैठा।

कहने लगे मेरे दिल में ख़्याल आया कि तालीम में बैठना बीस हज़ार रुपए से ज़्यादा क़ीमती है। बीस हज़ार का पूछा नहीं कि क्या हुआ और तालीम में नहीं बैठा तो इतनी तंबीह और इतनी डाँट दी कि अपने आप मेरे दिल में आ गया कि तालीम बड़ा अमल है और बीस हज़ार छोटी चीज़ है। यह तर्बियत है भाई। बड़ी बात है तबलीग़ करना।

﴿لا تشرك بالله﴾ पहला सबक़।

﴿انها ان تك مثقال حبة﴾ आख़िरत दूसरा सबक़।

﴿اقم الصلوٰة﴾ नमाज़ तीसरा सबक़।

दावत चौथा। सब्र पाँचवा।

अख़्लाक़ की अहमियत व ज़रूरत

छठा सबक़ अल्लाह तआला बता रहे हैं जो हमारा चौथा नम्बर है वह अख़्लाक़। इकराम-ए-मुस्लिम यानी अच्छे अख़्लाक़। यह अच्छे अख़्लाक़ इतना बड़ा सबक़ है कि अल्लाह तआला ने ईमान के लिए एक जुमला फ़रमाया ﴿لا تشرك بالله﴾ आख़िरत के लिए डेढ़ लाईन है। नमाज़ के लिए एक जुमला है ﴿اقم الصلوٰة﴾ तबलीग़ के लिए ﴿وامر بالمعروف انه عن المنكر واصبر على ما اصابك﴾ तीन जुमले हैं लेकिन अख़्लाक़ के लिए फ़रमाया ﴿لا تصعر خدك للناس﴾ एक ﴿ولا تمش فى الارض مرحا﴾ दो ﴿ان الله لا يحب كل مختال فخور﴾ तीन ﴿واقصد فى مشيك﴾ चार ﴿واغضض من صوتك﴾ पाँच ﴿ان انكر الاصوات لصوت الحمير﴾ छः जुमले

अख़्लाक़ बताने के लिए छः जुमले आए हैं और कहा भी सबसे आख़िर में है। हम जब स्कूल पढ़ते थे तो हमारे उस्ताद कहा करते थे कि जब पेपर हो तो पहले आसान सवाल हल करो और मुश्किल सवाल सबसे आख़िर में हल करना अगर पहले ही मुश्किल सवाल शुरू कर दिया तो उसी में अटक जाओगे और आसान सवाल भी रह जाएंगे तो क्योंकि अख़्लाक़ बहुत मुश्किल सबक़ है इसलिए उसे आख़िर में रखा है।

अख़्लाक़ बहुत मुश्किल चैपटर है इसलिए आख़िर में रखा और इसकी ज़्यादा तफ़सील की और ज़्यादा साफ़ किया।

फ़रमाया ﴿لا تصعر خدك للناس﴾ बदतमीज़ न हो यानी गर्दन टेढ़ी हो मुँह इधर हो, आँख उधर हो। ﴿لا تمش فی الارض مرحا﴾ अकड़ कर न चल। ﴿ان الله لا يحب كل مختال فخور﴾ अल्लाह को तकब्बुर करने वाले पसन्द नहीं। ﴿واقصد فی مشيك﴾ चाल में मियाना रविश रख। ﴿واغضض من صوتك﴾ आवाज़ पस्त रख। गधा है जो शोर मचाता है। अच्छे अख़्लाक़ वाला शोर नहीं मचाता।

इब्ने अबिद्दुनिया रह० ने अपनी किताब "अल्‌ततवक्कुल" में यह रिवायत नक़ल की है एक सहाबी का क़ौल है कि अल्लाह तआला अपने बन्दों में सिफ़ात को बखेरा। दो सिफ़ते आसमान से बहुत थोड़ी आई हैं एक अल्लाह पर यक़ीन और एक अच्छे अख़्लाक़।

यह दो हैं ही बहुत थोड़े यानी बाज़ार में कोई चीज़ अगर कम पड़ जाए तो उसका रेट बढ़ जाएगा और ज़्यादा हो जाएगा तो इस्लाम की मंडी में, शरियत के बाज़ार में, दीन के गोदाम में ये जिन्सें अल्लाह तआला ने बहुत थोड़ी रखीं हैं एक सही यक़ीन और\अच्छे अख़्लाक़। सही यक़ीन और अच्छे अख़्लाक़ बहुत बड़ी मेहनत से हासिल होते हैं थोड़ी मेहनत से हासिल नहीं होते।

यक़ीन की अलग मेहनत हैं, अख़्लाक़ की अलग मेहनत है, इबादतों की अलग मेहनत है।

एक कारगुज़ारी

एक ज़मात की कारगुज़ारी है जब साथ हज भी होता था। एक जमात लड़ लड़कर मदीने मुनव्वरा पहुँची। मौलाना सईद अहमद

ख़ां साहब रह० उस वक़्त ज़िन्दा थे और उनके यहाँ बड़ी मेहमानी होनी थी। जमात वालों ने मदीने की मश्विरे वाली जमात से कहा कि हम इकट्ठे रहना नहीं चाहते हमें अलग अलग कर दो। हमें आगे जाना है हज करना है। हमारे दिलों में ऐसी नफ़रतें हैं कि हज भी सही नहीं हो सकेगा इसलिए हमें अलग कर दो।

मश्विरे वालों ने बहुत समझाया लेकिन उन्होंने कहा नहीं हम इकट्ठे नहीं रहना हमे अलग अलग कर दो। शूरा (मश्विरे वालों) के एक साथी को हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत हुई। इर्शाद फ़रमाया उन्हें जुदा न करना ये मुझे हर हाल में प्यारे लगते हैं। ये लड़कर भी अच्छे लगते हैं और जुड़ कर भी अच्छे लगते हैं। इन्सान जो हुए ऐसा हो ही जाता है।

एक दूसरी कारगुज़ारी

एक जमात में हम दस्तरख़्वान पर हम बैठे हुए थे और ख़िदमत वाले सालन रख रहे थे। एक साथी के सामने पलेट न रखी गई और उसके अगले के सामने रख दी गई। जब खाना ख़त्म हुआ तो उसने कहा मेरा टिकट दो मैं वापस जाता हूँ। हम ने कहा क्या हुआ भाई?

कहने लगा सालन मेरे आगे नहीं रखा पहले अगले के आगे रख दिया। क्यों? मैं को छोटे बाप का बेटा हूँ? बस मेरा टिकट वापस करो मैं ने वापस जाना है। बड़ी मिन्नतें ख़ुशामदें करके उसे समझाया कि अच्छा भाई माफ़ कर दे।

अख़्लाक़ बनाना मुश्किल है

मैं यह कहना चाहता हूँ कि साल लगाना आसान और अख़्लाक़ बनाना मुश्किल है। बनते इसी राह में हैं। अल्लाह की राह में निकल कर ही अख़्लाक़ बनते हैं और ईमान बनता है लेकिन उसके बनते हैं जो नियत करता है कि मैंने अख़्लाक़ और ईमान बनाना है। जो नियत न करे वह अज्र तो पाएगा लेकिन इन सिफ़ात से महरूम रहेगा।

और घर हमेशा अच्छे अख़्लाक़ पर क़ायम होते हैं। पैसे पर घर नहीं चला करते। फ़क़्र व फ़ाक़ा हो लेकिन अख़्लाक़ अच्छे हों तो ज़िन्दगी निभ जाती है।

मेरे भाईयो और बहनो!

अपने भी अख़्लाक़ बनाओ और अपनी औलाद के भी अख़्लाक़ बनाओ। यह वह है बुनियाद जिस पर औलाद को उठाया जाता है। अख़्लाक़ से जीत होती है। हमारे बचपन का वाक़िया है कि हमारे एक रिश्तेदार थे और रिश्तेदारी तो इतने क़रीब की नहीं थी लेकिन मेरे वालिद साहब और उनकी दोस्ती रिश्तेदारी से भी ज़्यादा थी।

वह इन्सपैक्टर थे। बड़े ख़ूबसूरत थे। हमारे ख़ानदान में कोई साढ़े छः फिट उनका क़द था। लाल सुर्ख़ रंग। उसकी माँ उसकी शादी हमारे ख़ानदान की सबसे बदसूरत लड़की से करना चाहती थी।

तो अब वह मेरे वालिद साहब से कहने लगे कि बता क्या करूं अल्लाह बख़्श माँ की मानूं तो सारी ज़िन्दगी मुसीबत। न मानूं तो

माँ नाराज़ है।

मेरे वालिद साहब ने कहा माँ को राज़ी कर ले कोई बात नहीं। कहने लगा अच्छा अगर तू कहता है तो ठीक है। शादी हो गई। उस औरत का नाम था नूर बीबी।

नूर बीबी अन्दर होती तो ज़ुलफ़ुक़ार बाहर होता, नूर बीबी बाहर होती तो ज़ुलफ़ुक़ार अन्दर होता क्योंकि कोई जोड़ ही नहीं था बिल्कुल बेजोड़ वह इतना बड़ा आफ़सर और ख़ूबसूरत और पढ़ा लिखा और वे वैसे भी अनपढ़ और शक्ल की भी ऐसी कि बात न की जा सके।

लेकिन नूर बीबी के अख़्लाक़ बहुत नूरानी थे। वह बीवी की बजाए नौकर बन गई। उसके कपड़े धो, बूट पालिश कर। पुलिस अफ़सर कभी एक बजे आ रहा है, कभी बारह बजे आ रहा है, कभी डेढ़ बजे आ रहा है। वह उसके आने तक जागती रहती जब वह आता तो ताज़ा रोटी पका कर उसके सामने रखती। जब वह लेट जाता तो उसे दबाती।

सुबह उठने से पहले उसकी वर्दी तैयार, बूट पालिश। इस तरह तीन बरस अपने ख़ाविन्द की नौकर बनकर गुज़ारे। बस अख़्लाक़ के हुस्न ने जिस्म की बदसूरती को छुपा दिया और वह अपनी बीवी का ग़ुलाम बन गया।

उसकी वह बीवी तो मुझे याद नहीं क्योंकि हमारा बचपन था। फिर उस नूर बीबी का इन्तिक़ाल हो गया। तीन बच्चे थे तो हमने उसके ख़ाविन्द को इस तरह रोते देखा जैसे बच्चे फूट फूट कर रोते हैं।

फिर उसकी दूसरी शादी हुई। अपने ख़ानदान की निहायत ख़ूबसूरत लड़की से और वह फिर सारी ज़िन्दगी सर पर हाथ रखकर रोया और नूर बीबी करता करता ही मर गया।

ज़िन्दगी अख़्लाक़ के साथ गुज़रती है

ज़िन्दगी हुस्न के साथ नहीं गुज़रती है अख़्लाक़ के साथ गुज़रती है। अपने बेटों ओर बेटियों को अख़्लाक सिखाओ अगर उन्हें ज़िन्दगी में सुख देना है। हम पैसे इकठ्ठा करने के चक्कर में रहते हैं ताकि सकून के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सकें लेकिन ख़ूब समझ लो कि पैसे से पुरसकून ज़िन्दगी नहीं गुज़रती बल्कि अच्छे अख़्लाक़ से पुरसकून ज़िन्दगी गुज़रती है।

इस ज़िन्दगी को बनाने के लिए अल्लाह की राह में फिरना पड़ता है तो मर्द भी निकलें अल्लाह भी राज़ी और उसका रसूल भी राज़ी।

यह मैंने मुख़्तसिर आपको छः बातें बताई हैं। ये बहुत अहम हैं और बहुत तफ़सील चाहती हैं। हर माँ को क़ुरआन का यह रुकू खोल कर पढ़ना चाहिए, हर बाप को क़ुरआन का यह रुकू पढ़ना चाहिए कि अल्लाह क्या चाहता है कि बच्चों को क्या क्या सिखाया जाए। आगे नसीब उनका अपना अपना है। वे माल वाले बनें, बादशाह बनें, फ़क़ीर बनें। यह हर एक का अपना नसीब है। माँ बाप औलाद का नसीब नहीं बनाते।

बात मुक़द्दर की है नसीब अपना अपना

अबू शुजा मछली पकड़े वाला माहीगीर था। मछलियाँ पकड़

रहा था और उसके तीन बेटे भी उसके साथ थे। एक नजूमी गुज़रा। अदेलम ईनरप में एक जगह है वहाँ का रहने वाला था। अबू शुजा ने कहा मैंने एक ख़्वाब देखा है उसकी ताबीर तो बता?

उसने कहा क्या ख़्वाब देखा है?

कहने लगा मैंने ख़्वाब देखा कि मैंने पेशाब किया और उसमें से आग निकली जो ऊपर जाकर शोला बन गई और फिर उसके तीन शोले बन गए और फिर उन शोलों पर छोटे छोटे और शोले बन गए।

नजूमी कहने लगा एक दिन आएगा यह तेरे तीनों बेटे बादशाह बनेंगे।

अबू शुजा ने अपना जूता निकाला और अपने बेटों से भी कहा इस बदमाश को मारो। यह हमारी ग़रीबी का मज़ाक़ उड़ाता है। तो चारों ने मिलकर उसकी ख़ूब ठुकाई की और ख़ूब मारा कि यह हमारी ग़रीबी का मज़ाक़ उड़ाता है।

वह कहने लगा जितना चाहें मार लो बादशाह तो बनोगे। जब उसकी ख़ूब पिटाई कर ली तो अबू शुजा कहने लगा इसकी इतनी पिटाई की है अब इसको एक मछली भी ईनाम में दे दो।

बीस बरस के बाद तीनों बेटे इस्लामी सलतनत के बादशाह बन गए। रुकनुद्दौला, माज़ुद्दौला, अज़ुद्दौला के नाम से उन्होंने और उनके बाद उनके ख़ानदान ने एक सौ बीस बरस हुकूमत की और इन्तिहाई कामयाब हुकमुरान बने। ख़ास तौर पर रुकनुद्दौला बहुत बड़ा फ़ाज़िल बना।

तो माँ बाप थोड़ा ही औलाद का नसीब बनाते हैं। तुम बस

उनके अख़्लाक़ बनाओ मुक़द्दर का रिज़्क़ लिखा जा चुका है।

नमाज़ का एहतिमाम करें

मर्द क्योंकि मस्जिद के पाबन्द होते हैं इसलिए वे काम छोड़कर मस्जिद जाते हैं और औरतों के लिए क्योंकि जमात की पाबन्दी नहीं इसलिए वे कहती हैं यह काम कर लूँ, यह कर लूँ। यह करते करते ज़ोहर अस्र के पास चली जाती है। अस्र मग़रिब के पास चली जाती है, मग़रिब इशा के पास चली जाती है और इशा बारह बजे पर चली जाती है। यह बेबरकती है।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा ﴾ای اعمال خیر﴿ या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे बेहतरीन अमल किया है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴾الصلوٰة علی وقتها﴿ नमाज़ को उसके वक़्त पर अदा करना सबसे बेहतरीन अमल है।

औरतों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि नमाज़ का एहतिमाम इस तरह फ़रमाएं यहाँ नमाज़ का रिवाज तो है लेकिन दो चीज़ें हैं मर्दों में भी जमात का एहतिमाम कम लोग ही करते हैं और औरतों में है ही नहीं यानी वक़्त की पाबन्दी।

एक तो वक़्त की पाबन्दी से नमाज़ अदा करें। दूसरी बहुत बड़ी ग़लती जो है वह यह है कि नमाज़ का तेज़ी से पढ़ना। इतनी तेज़ तेज़ नमाज़ पढ़ते हैं कि न रुकू पूरा होता है न सज्दा पूरा होता है, न रुकू से उठना पूरा होता है और न दोनों सज्दों के बीच बैठना सीधा होता है। बहुत तेज़ नमाज़ पढ़ी जाती है और फिर नमाज़ में भी खड़े हैं इधर आने वालों को भी देख रहे होते हैं ओर

उधर जाने वालों को भी देख रहे होते हैं। नमाज़ भी पढ़ रहे होते हैं और आँखों को फेर फेर कर आने जाने वाले को देख भी रहे होते हैं।

बाबा इमामुद्दीन की नमाज़

हमारे गाँव में एक बूढ़ा बाबा था इमामुद्दीन पक्का नमाज़ी था। दुकानदार था। हम छोटे छोटे होते थे। गाँव में बस उसी की ही दुकान थी। वह नमाज़ पढ़ने आ जाता और कभी चाबी वग़ैरह उसकी जेब में रह जाती तो उसका बेटा आकर खाँसता और वह नमाज़ के दौरान ही चाबी निकाल कर उसे दे देता।

यह मामला हमने ख़ुद देखा है तो यह सारे बाबा इमामुद्दीन वाली नमाज़ पढ़ते हैं। अक्सर औरतें और मर्द नमाज़ पर ज़ुल्म करते हैं। बन्दों पर ज़ुल्म करना भी बुरी बात है लेकिन नमाज़ पर ज़ुल्म करना इससे भी बुरी बात है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सबसे बुरा चोर वह है जो नमाज़ में चोरी करे। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया नमाज़ में चोरी क्या होती है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रुकू को ठीक न करे सज्दा ठीक न करे। हम इस तरह नमाज़ पढ़ें कि देखने वाले को भी पता चले कि इसका दिल नमाज़ में लगता है।

नमाज़ में ख़शु व ख़ुज़ु पैदा करने के लिए नुस्ख़ा

एक छोटा नुस्ख़ा मैं बताता हूँ एक तो सब ने क़ुरआन में से

"क़ुल हुवल्लाह" ही से जो ठेका लिया हुआ है कि हम ने हर रक्अत में तुझे ही पढ़ना है यानी हर रक्अत *"क़ुल हुवल्लाह"* ही पढ़ते हैं।

आज से यह ठेका बदलो कि दो और दो चार ठेके और कर लो। कम से कम चार सूरतें तो याद करो ताकि हर रक्अत में अलग सूरत पढ़ी जाए। एक ही सूरत को हर रक्अत में पढ़ना उलमा ने मकरूह लिखा हैं, कराहत है। और कुछ दुआए क़ुनूत की जगह भी *"क़ुल हुवल्लाह"* ही पढ़ते हैं।

तो भाई यह कहाँ का फ़त्वा है चलो कम से कम दुआ की जगह तो दुआ पढ़ो अगर दुआ पढ़ोगे तो वाजिब अदा हो जाएगा लेकिन दुआ की जगह *"क़ुल हुवल्लाह"* पढ़ने से तो वाजिब अदा नहीं होता और वितर होते ही नहीं। दुआए क़ुनूत याद करें और जब तक याद नहीं होती तब तक

﴿ربنا اتنا فی الدنیا حسنة وفی الاخـــرة حسنة وقنا عذاب النار﴾

"रब्बना आतिना फ़िद्-दुनिया ह-स-न-तवं वफ़िल आख़िरति ह-स-न तवं वक़िना अज़ाबन्नार।"

पढ़ लिया करें तो यह दुआ क़नूत का बदल हो जाएगी लेकिन *"क़ुल हुवल्लाह"* बदल नहीं होती।

एक तो हम बदल बदल कर सूरतें पढ़ें।

और दूसरा यह कि रुकू में *"सुब्हा-न-रब्बियल अज़ीम"* तीन दफ़ा के बजाए पाँच दफ़ा पढ़ना शुरू कर दें और यह भी नहीं कि जितनी देर में तीन दफ़ा पढ़ा जाता है तेज़ तेज़ उतनी देर में पाँच दफ़ा पढ़ लिया तो फ़ायदा हासिल न होगा बल्कि आराम से ठहर

ठहर कर पाँच दफ़ा पढ़ें और जब रुकू से खड़े हो तो *"समिअल्लाहुलिमन हमिदा"* और *"रब्बना लकल हम्द"* यह सब खड़े खड़े कहो। अभी आम तौर से हमारा "रब्बना लकल हम्द" सज्दे में पूरा होता है फिर *"अल्लाहुअकबर"* कह देते हैं इसलिए "रब्बना लकल हम्द" खड़े खड़े कहें।

औरतों ने फ़र्ज़ भी अकेले पढ़ने हैं और सुन्नत भी अकेले पढ़ना हैं तो दुआ भी पढ़ा करें। मसलन "रब्बना लकल हम्द" के बाद *"हम्दन कसीरन तैयिबन मुबारकन फ़ीह"* और मर्द सुन्नतों और नफ़लों में पढ़ें। इससे लम्बी दुआ आती है

﴿ملأ السموات وملا الارض وملا ما بينهما وملا ما شئت من بعد.﴾

"मिल अस्समावाति व मिल अल अरज़ि व मिलआ मा बैनहुमा व मिल-अ-म-शिता मिम बादि।"

आप अगर मेहरबानी फ़रमा कर *"रब्बना लकल हम्द"* ही खड़े खड़े पढ़े (रुकू में) जाते जाते न पढ़ें तो भी बात बहुत अच्छी हो जाएगी।

दो सज्दों की बीच इतनी देर बैठना कि तीन दफ़ा *"सुब्हानल्लाह"* कहा जा सके।

औरतें भी नमाज़ के अवक़ात मालूम करें और सारा काम छोड़कर उस वक़्त नमाज़ अदा करें।

तालीम करवाएं

बयान के दौरान मैं ने कहा था कि बच्चों को वक़्त दिया करो तो बच्चों को वक़्त देने का बहुत ख़ूबसूरत तरीक़ा यह है कि

तालीम की जाए। घरों में सब बैठकर तालीम करें और इसमें बच्चों का ज़हन भी बनाएं। आख़िरत का, जन्नत का, जहन्नुम का। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की ज़िन्दगी बताएं तो इन्शाअल्लाह तआला माँ बाप और औलाद का आपस में ताल्लुक़ बढ़ेगा और उनके सामने अख़्लाक़ भी आएंगे। आमाल भी आएंगे, सही तर्बियत भी आएगी तो इसका थोड़ा सा एहतिमाम भी कर लिया जाए तो समाज में बहुत जल्दी बदलाव आ सकता है।

दुआ

○ ○ ○

कामयाब ज़िन्दगी

الحمدلله وكفى والصلوة والسلام على سيد الرسل وخاتم النبياء. اما بعد.

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم

بسم الله الرحمن الرحيم.

يايها الناس انا خلقنكم من ذكر وانثى وجعلنكم شعوبا وقبآئل

لتعارفوا ان اكرمكم عند الله اتقكم.

صدق الله مولانا العظيم.

अल्लाह तआला का फ़ैसला

मेरे भाईयो और बहनो!

अल्लाह तआला ने किसी को मर्द और किसी को औरत बनाया।

﴿انا خلقنكم من ذكر وانثى.﴾

जैसे अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान का एक निज़ाम बनाया ऐसे ही अल्लाह तआला ने मर्द व औरत का भी एक निज़ाम बनाया है। मर्द को मर्द होने में इख़्तियार नहीं और औरत को औरत होने में इख़्तियार नहीं यह तो अल्लाह तआला ने ख़ुद ही फ़ैसला किया है कि इस रुह को मर्द के पुतले में डाल दो और इस रुह को औरत के पुतले में डाल दो। फिर आगे जो क़बीले

बनाए उसमें भी हमें इख़्तियार नहीं ﴿وجعلنكم شعوبا وقبائل﴾ किसी को किसी ख़ानदान में पैदा किया और किसी को किसी ख़ानदान में पैदा किया। इसमें भी हमारा अपना इख़्तियार नहीं।

फिर मौत पर भी ज़ाती इख़्तियार नहीं। आ जाएगी तो चले जाएंगे। कितना ज़ोर लगाएं। चाहे कितना दौड़ें, जितना छिपें ﴿اين ما تكونوا﴾ जाओ कहाँ तक जाओगे ﴿يدرككم الموت﴾ मौत तुम्हें ज़रूर दबोचेगी ﴿ولو كنتم فى بروج مشيدة﴾ चाहे बड़े बड़े बुर्ज बनाओ। हिफ़ाज़ती किले बनाओ और लोहे की दीवारें खड़ी करो। मौत के फ़रिश्ते को कोई रोक नहीं सकता।

अक़्ल की कोताही

यह जो दर्मियान की ज़िन्दगी का वक़्त है यह बहुत थोड़ा है। बनाने वाले से पूछें कि यह कितना जहान बनाया है तूने। अपने अन्दाज़े तो ग़लत हैं। जिस आदमी की, जिस मर्द की, जिस औरत की अक़्ल बड़ी थोड़ी हो उसके फ़ैसले भी हमेशा नाक़िस ही रहेंगे।

नाक़िस सोच का फ़ैसला भी नाक़िस ही होता है। ग़ुस्से में अक़्ल मारी जाती है, ग़म आ जाए तो अक़्ल मारी जाती है, ख़ुशी ज़्यादा चढ़ जाए तो अक़्ल मारी जाती है, थक जाएं तो अक़्ल मारी जाती है, बीमार हो जाएं तो अक़्ल मारी जाती है और जब सही फ़ैसला हो तो भी हज़ारों फ़ैसले इन्सान ग़लत करता है कुछ ही सही करता है। हम ने इस दुनिया को अगर कोई मक़ाम दिया तो वह बहुत ग़लत फ़ैसला होगा।

दुनिया की हक़ीक़त

जिसने बनाया उससे ही पूछें कि इस जहान की क्या क़ीमत है? उसकी कितनी ज़िन्दगी है तो उसने बताया है।

اعلموا انما الحیوۃ الدنیا لعب ولهو وزینة وتفاخر بینکم وتکاثر
فی الاموال والاولاد کمثل اعجب الکفار نباته ثم یهیج فتراه
مصفرا ثم یکون حطاما وفی الاخرة عذاب شدید ومغفرة من
اللّٰه ورضوان وما الحیوۃ الدنیا الا متاع الغرور. (الحدید)

एक बच्चे और बड़े की निगाह में कितना फ़र्क़ होता है? हम सब मिलकर भी कुछ नहीं उस दो जहान के बादशाह के सामने। वह बता रहा है कि जिस दुनिया को तुम बहुत कुछ समझ चुके हो, जिसके पीछे तुम दीवाने हो गए, पागल हो गए, मजनून हो गए इस दुनिया की क्या हैसियत है खेल, कूद तमाशा, बनाओ सिंगार, फ़ख़्र तकब्बुर, खेलकूद है।

हम देखते हैं कि बच्चे छोटी छोटी गाड़ियों से खेलते हैं तो बड़े आदमी कहते हैं बच्चे खेल रहे हैं। जब वह बड़ा होता है तो वह बड़ी बड़ी गाड़ियों के साथ कारोबार करता है। ख़रीदता है और अपनी गाड़ियों को अपने लिए बड़ाई समझता है। हमारी नज़र में बच्चे खेल रहे हैं और अल्लाह की नज़र में हम खेल रहे हैं।

बच्चे छोटे छोटे मिट्टी के घर बनाते हैं तो हम कहते हैं बच्चे खेल रहे हैं। हम बड़े बड़े संगमरमर के घर बनाते हैं तो अल्लाह की नज़र में हम खेल रहे हैं।

छोटे छोटे बच्चे गुड्डे गुड़िया की शादियाँ करते हैं तो हम कहते हैं बच्चे खेल रहे हैं और हम बड़े लोग अपने बच्चों और बच्चियों

की शादियाँ करते हैं तो अल्लाह तआला की नज़र में हम खेल रहे हैं तो यह तो खेल है। अल्लाह तआला ने कहा है तमाशा है।

फिर यह कुछ दिन की ज़िन्दगी है फिर यह धोके का घर है यह ﴿متاع الغرور﴾ है यह ﴿متاع قليل﴾ है। इसकी क़ीमत भी थोड़ी है, इसका वक़्त भी बहुत थोड़ा है और यह भी धोका ही धोका है

﴿ثلاثه ايام﴾ दुनिया की ज़िन्दगी तीन दिन है ﴿يوم امس مضى﴾ एक दिन गुज़र गया। जुमेरात चली गई ﴿ما بيدك منه شيء﴾ सारी दुनिया मिलकर भी उसे वापस नहीं ला सकती ﴿يوم غد﴾ एक कल हफ़्ता ﴿لاتدرى اتدركه ام لا﴾ किसी को दावा नहीं कि हफ़्ते का दिन वाक़ई मेरा है। कोई है दावा करने वाला मर्दों में या औरतों में।

﴿يوم انت فى﴾ वह दिन जो मेरे ऊपर गुज़र रहा है यह मेरी ज़िन्दगी है यही मेरी पूँजी है कि अल्लाह तआला की इताअत में गुज़री तो काम बन गया और अगर अल्लाह तआला की नाफ़रमानी में गुज़री तो काम बिगड़ गया।

अल्लाह तआला ने जैसे हमें मौत में इख़्तियार नहीं दिया, अल्लाह तआला ने हमें अपने बाक़ी रहने में इख़्तियार नहीं दिया, अल्लाह तआला ने मर्द व औरत होने में इख़्तियार नहीं दिया इसी तरह ज़िन्दगी का मक़सद अपने तौर पर चुनने में भी हमें इख़्तियार नहीं दिया बल्कि अल्लाह तआला ने ख़ुद ही मक़सद तय किया कि मेरे बन्दों मुझे राज़ी करके आओ। मेरे बनकर आओ।

﴿وما خلقت الجن والانس الا ليعبدون﴾

मुझे रब मान कर आओ। मेरी बन्दगी करते हुए मेरे पास आओ। फिर दूसरी जगह फ़रमाया

﴿يا ابن آدم خلقتك لعبادتي فلا تلعب.﴾

मैं तेरे लिए मक़सद तय कर चुका हूँ कि तू मेरे लिए हैं तू खेलकूद में ज़ाय न हो। यह मकानों की दौड़, यह फ़ैक्टरियों की दौड़, यह गाड़ियों की दौड़, यह घरों की दौड़, यह ज़ेवर की दौड़, यह सोने और चाँदी की दौड़, यह बड़े क़ीमती लिबास व पौशाक की दौड़। इसको अल्लाह तआला ने खेल तमाशा कहा है। फ़रमाया तू इसलिए नहीं कि तू अपने ज़ाहिर को सवांर बल्कि तू इसलिए है कि तू अपने अन्दर को संवार कि मैं तुझे पसन्द करूँ। मैं तेरे दिल में उतर जाऊँ। मैं अपने लिए साफ़ कपड़े पसन्द करता हूँ मैले हो जाएं तो उतार देता हूँ।

इन्सान के दिल की वुसअत

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मैं ज़मीन व आसमान में तो आता नहीं। ये तो बहुत छोटे हैं मुझे सहार नहीं सकते लेकिन ऐ मेरे बन्दे! मैंने तेरा दिल ऐसा बनाया है कि उसमें मैं आ सकता हूँ तू इसको मेरे लिए साफ़ कर कि मैं इसमें आ जाऊँ।

मेरा अर्श एक ऊपर है और मेरा एक अर्श नीचे।

ऊपर तो वह अर्श है जिस पर मैंने अपने तख़्त को बिछाया और नीचे अर्श वह है जो तेरे सीने में तेरा दिल धड़कता है। यह मेरा अर्श है।

﴿وانا عند المنكسرة قلوبهم.﴾

टूटा हुआ दिल मेरा अर्श है और जितना टूटा होता है और यह जितना शकिस्ता होता है और जितना ख़्वाहिशात से पाक होता है

उतना ही मेरा महबूब होता है, उतना ही मैं उसमें आता हूँ, उतरता हूँ, समाता हूँ। फिर एक वक़्त ऐसा आता है:

﴿كنت سمعا الذى يسمع بها.﴾

मैं उसका कान बन जाता हूँ

﴿بصرة الذى يبصربها.﴾

मैं उसकी आँख बन जाता हूँ।

﴿يده التى يبطش بها.﴾

मैं उसका हाथ बन जाता हूँ।

﴿رجله التى يمشى بها.﴾

मैं उसका पाँव बन जाता हूँ।

मैं उसके दिल में, दिमाग़ में, रग रग में, रेशे में, ख़ून में, खाल में, बाल बाल में, हड्डियों में। उसके जिस्म के एक एक ज़र्रे में अपनी मुहब्बत के दरिया बहा देता हूँ और उसके अन्दर को नूर ही नूर बना देता हूँ।

उसके अन्दर और बाहर ऐसी ज़िन्दगी बना देता हूँ कि जो उसके पास बैठता है उसे भी अल्लाह की मुहब्बत की गर्मी महसूस होती है कि यहाँ कुछ है।

जैसे बड़े घर के सामने से जब आदमी गुज़रता है तो पता चलता है कि यहाँ कुछ पैसे वाला कोई रहता है और किसी झोपड़ी के पास से गुज़रें तो पता चलता है कि यहाँ कोई फ़क़ीर रहता है और जिस दिल में अल्लाह होता है उससे बड़ा तो दुनिया में कोई बादशाह ही नहीं है चाहे वह मर्द है या औरत।

बनावट अलग अलग मक़सद एक

मेरे भाईयो और बहनो!

हम शक्ल व सूरत के ऐतिबार से अलग अलग हैं। मर्दों के और काम हैं और औरतों के और काम हैं लेकिन मक़सद के ऐतिबार से हम एक हैं। औरतों का भी मक़सद भी दिल में अल्लाह तआला को लेना है और मर्दों का मक़सद भी दिल में अल्लाह को लेना है। औरतों के ज़िम्मे भी लगाया अपने दिल को साफ़ कर। अपने बर्तन को साफ़ कर ताकि मैं उसमें आ जाऊँ। अपनी आँखों को पाक कर ताकि मैं उसमें आ जाऊँ। अपने कानों को पाक कर ताकि मैं उसमें आ जाऊँ, समा जाऊँ। अपने वजूद को पाक कर गुनाहों से उसमें मैं पूरे का पूरा का आ जाता हूँ।

अल्लाह तआला का साथ

मेरे भाईयो!

फिर जिस दिल में अल्लाह उतरता है बड़े बड़े बादशाह भी उसके सामने लरज़ते हैं थर्राते और काँपते हैं कि अल्लाह साथ हो गया, ज़मीनों और आसमानों का बादशाह, बादशाह ही नहीं बल्कि शँहशाह।

﴿لله ملك السموات والارض وما فيهن.﴾

जो ज़मीन व आसमान का बादशाह है जिसके हुक्म के बग़ैर पत्ता भी नहीं गिरता। ﴿وما تسقط من ورقة﴾ पत्ता भी नहीं गिरता ﴿الا يعلمها﴾ उसका इल्म उसके सामने है। ﴿كل صغير وكبير مستطر﴾ हर

छोटी बड़ी चीज़ उसके सामने खुली हुई है। इतना बड़ा बादशाह इन्सान के दिल में आने के लिए मुतालबा करता है। मसूअला आसान है कि वहाँ से मुतालबा हो रहा है कि ऐ मेरे बन्दे! ऐ मेरी बन्दी! मेरी तरफ़ चल, मेरी तरफ़ आ, मैं तेरे इन्तिज़ार में। तू मुझे अपना बनाने की जद्दोजहद कर मैं तुझे ज़रूर मिल जाऊँगा।

मेरे मोहतरम भाईयो और बहनो!

इस वक़्त में हम अल्लाह की ज़ात को मक़सूद बना कर ज़िन्दगी नहीं गुज़ार रहे हैं बल्कि अपनी ख़्वाहिशात और ज़रूरियात को मक़सद बनाकर चल रहे हैं क्योंकि मुसलमान हैं। हम इस वजह से कोई सज्दा नमाज़ का भी अदा कर लेते हैं, कभी क़ुरआन भी पढ़ लेते हैं, कभी किसी फ़क़ीर को भी कुछ दे देते हैं, कभी हज, उमरा भी कर लेते हैं लेकिन इस दिल का जो रुख़ है वह अल्लाह की तरफ़ नहीं है बल्कि अल्लाह की ग़ैर की तरफ़ फिरा हुआ है।

मुहब्बत में शिर्क

मेरे भाईयो!

ग़ैरत अल्लाह की ख़ासियत है जो अल्लाह ने अपने बन्दों और औरतों में रखी है। शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० के पास एक औरत आई और कहा ऐ शेख़! अगर अल्लाह ने पर्दे का हुक्म न दिया होता और अल्लाह ने औरत को अगर चेहरा छुपाने का हुक्म न दिया होता तो मैं अपने चेहरे से नक़ाब उठाकर तुझे दिखाती कि अल्लाह ने मुझे कैसा जमाल बख़्शा है फिर भी मेरा ख़ाविन्द दूसरी शादी करना चाहता है। यह सुनकर शेख़ पर ग़शी तारी हो

गई। ग़श खाकर गिर गए। लोग बहुत हैरान हुए यह किस बात पर ग़शी है?

जब होश आया तो फ़रमाया अरे लोगों! यह एक मख़्लूक़ है जो अपनी मुहब्बत में शिर्क को बर्दाश्त नहीं कर रही है वह दो जहान का बादशाह अपनी मुहब्बत में शिर्क कैसे बर्दाश्त करेगा और जिस दिल में अल्लाह रहा ही न हो।

होश में आओ

अरे मेरे भाईयो!

अल्लाह की क़सम अगर ख़ून के आँसू भी रोएं जाएं तो भी इस नुक़सान की भरपाई नहीं हो सकती जो आज तक हम कर चुके हैं कि चालीस साल में एक सज्दा भी ऐसा नसीब नहीं जिसमें अल्लाह ही अल्लाह का ध्यान हो किसी और का ध्यान न हो तो उसको कहाँ से गुंजाइश है कि अपनी फ़ैक्टरियों को देखे, कारख़ानों को देखे। जिसको दिल का दौरा पड़ता है वह कहता है मुझे ले चलो। मेरी फ़ैक्टरी को जाने दो, मील को जाने दो, कारोबार जाने दो, मुझे शादी की ज़रूरत नहीं है, मैं किसी फ़ंक्शन में जाने का नहीं पहले मेरे दिल को संभाल लो। ज़िन्दगी है तो सब कुछ है।

और वह दिल जो अल्लाह की मुहब्बत से ख़ाली हो चुका हो और गुनाहों की लज़्ज़त का आदी हो चुका हो और वह आँख जो गुनाहों की लज़्ज़त से आशना हो चुकी हो, वह कान जो गुनाहों की लज़्ज़त को सुनने के आदी हो चुके हों। वह वजूद जिसके सर से लेकर पैर तक एक एक बाल और एक एक रेशा गुनाहों में

जकड़ा हुआ हो उसे यह होश नहीं कि मैंने कल अल्लाह के समाने हाज़िर होना है।

एक झटका दिल को लगे तो सारे कारोबार छूट जाते हैं यहाँ सारे वजूद को झटका लग चुका है कि नाखुनों तक अल्लाह की नाफ़रमानी में जकड़ा हुआ है, हर बाल अल्लाह की नाफ़रमानी में जकड़ा हुआ है, इस ज़बान ने कितने ग़लत बोल बोले हैं, इन आँखों ने कितना ग़लत देखा है, इन कानों ने कितना ग़लत सुना है, इन हाथों ने कितने ज़ुल्म किए हैं, यह पाँव कैसी कैसी ग़लत महफ़िलों की तरफ़ उठे हैं और इसी वजूद के साथ अल्लाह के सामने जाना है।

मेरे भाईयो!

हम थोड़ी देर तो होश में आने की कोशिश करें। शराबी को भी होश आ जाता है। शराब में मस्त भी होश में आ जाता है। यह कैसा नशा चढ़ा हुआ है कि होश ही नहीं। पचास साल हो चुके हैं, साठ साल हो चुके हैं, चालीस साल हो चुके हैं। होश ही नहीं आ रहा है कि हम किस तरफ़ जा रहे हैं और किसके सामने हमारा मामला पेश होने वाला है। जहाँ खरे खोटे को अलग किया जाएगा। आज अल्लाह तआला पर्दा रखता है। कल पर्दे खोलेगा।

﴿يوم تبلى السرائر فما له من قوة ولا ناصر.﴾

आज मैं तेरे पर्दे चाक कर दूंगा न कोई तुझे बचा सकता है और न कोई तेरी मदद कर सकता है। आज पर्दे डाले जा रहे हैं कल पर्दे उठाए जाएंगे और उस दिन की रुसवाई बड़ी ज़बरदस्त रुसावाई है।

मेरे भाईयो!

आज वह दिन है जिसके सामने ज़मीन व आसमान झुके हुए हों ज़मीन व आसमान का अकेला बादशाह हो।

﴿ليس معه وزير﴾ न उसका कोई वज़ीर हो,

﴿ولا مشير﴾ न उसको कोई मश्विरा देने वाला हो,

﴿ولا مدبر﴾ न उसका कोई मुदब्बिर हो, न उसका कोई मददगार हो न उसका कोई शरीक हो न उसका कोई मिस्ल हो न उसका कोई साथी हो न उससे पहले कुछ न उसके बाद कुछ न उसके ऊपर कुछ है और न उसके नीचे कुछ है।

﴿بلا بداية﴾ इब्तिदा से पाक,

﴿بلا نهاية﴾ इन्तिहा से पाक,

﴿بلا مكان﴾ मकान से पाक,

﴿بلا زمان﴾ ज़माने से पाक,

﴿اين ما تولوا فثم وجه الله﴾ सिम्त (दिशा) से पाक, शक्ल से पाक, रंग से पाक, ऐब से पाक,

﴿لا تاخذه سنة﴾ ऊँघ से पाक,

﴿ولا نوم﴾ सोने से पाक,

﴿يطعم ولا يطعم﴾ खिलाता है खुद ख़ाने से पाक है, पिलाता है खुद पीने से पाक है, सुलाता है खुद सोने से पाक है, आराम करवाता है खुद आराम से पाक है, देता है खुद लेने से पाक है, जिसकी पाकी की कोई हद नहीं।

﴿لا تراه العيون﴾ जिसको कोई आँख देख न सके।

﴿لا تخالطه الظنون﴾ जहाँ ख़्याल न पहुँच सके,

﴿ولا يصفه الواصفون﴾ जिसकी तारीफ़ कोई न कर सके,

﴿لا تغيره الحوادث﴾ जिस पर कोई असरअन्दाज़ न हो सके।

﴿ولا يخشى الدوائر﴾ जो न किसी से डरे और न झिझके।

﴿لا يسئل عما يفعل﴾ उसके किए को कोई पूछ न सके।

﴿وهم يسئلون﴾ और हमारे किए में से एक एक को वह सामने करके दिखा दे।

﴿احق من ذكر﴾ जिससे ज़्यादा कोई याद करने के क़ाबिल नहीं,

﴿احق من عبد﴾ जिससे ज़्यादा कोई बन्दगी के क़ाबिल न हो,

﴿انصر من ابتغى﴾ जिससे ज़्यादा कोई मददगार न हो,

﴿ارء ف من ملك﴾ जिससे ज़्यादा कोई मेहरबान न हो,

﴿اجود من سئل﴾ जिससे ज़्यादा कोई सख़ी न हो।

दो आदमियों पर सख़ावत रब्बानी

हश्र के मैदान में दो आदमियों को दोज़ख़ से निकालेगा फिर फ़रमाएगा चले जाओ दोबारा दोज़ख़ में। एक भागेगा और जाकर छलाँग लगा देगा दूसरा चलेगा और पीछे मुड़ मुड़कर देखेगा।

अल्लाह उसको भी निकाल लेगा और उसे भी बुला लेगा और कहेगा तूने क्यों आग में छलाँग लगाई?

वह अर्ज़ करेगा या अल्लाह! सारी ज़िन्दगी तो तेरी नाफ़रमानी की जिसकी वजह से आग देखी। मैंने सोचा एक हुक्म मान लूँ शायद इसी पर मेरा काम बन जाए।

दूसरे से पूछेगा अरे तू पीछे मुड़ मुड़कर क्या देखता था?

वह कहेगा या अल्लाह! जब एक दफ़ा तूने जहन्नुम से निकाल लिया था। तेरी सख़ावत की कहानियाँ तो ज़मीन व आसमान में मशहूर हैं। मैं इन्तिज़ार में था कि कब तेरी सख़ावत तवज्जेह करे और मेरी बख़्शिश का फ़ैसला हो।

अल्लाह तआला फ़रमाएगा चल तू भी जन्नत में चला जा और तू भी जन्नत में चला जा।

﴿اجود من سئل﴾ बड़ा सख़ी, बड़ा मेहरबान जिससे बड़ा कोई मेहरबान न हो वह कहे मुझ से ताल्लुक़ जोड़ो। हम अपनी अवक़ात देखें।

धोके से बचो

अरे भाईयो!

शीशे के सामने अपने को न तोला करो। शीशा बड़ा धोका देता है बल्कि पाख़ाने में बैठकर अपने आपको तोला करो कि मेरी अवक़ात क्या है?

शीशा धोका देता है, दफ़्तर धोका देता है, गाड़ी धोका देती है, ज़ेवर से लदा हुआ माथा धोका देता है, माथे का टीका धोका देता है कानों के झुमके धोका देते हैं, और दस दस हज़ार या पचास पचास हज़ार रुपए के सूट धोका देते हैं।

पाख़ाने में बैठे हुए अपनी हक़ीक़त पर ग़ौर करें कि मैं क्या हूँ फिर इतना बड़ा बादशाह कहे कि मुझ से यारी लगाए। मुझ से दोस्ती लगा। दुनिया के गन्दे बादशाहों से दोस्ती लगाना पड़े तो

हज़ारों पापड़ बेलने पड़ते हैं और वह ऐसा मेहरबान कि पल में यारी लगाने पर तैयार। सारी बुराईयाँ माफ़ करने पर तैयार।

बनी इसराईल के गुनाहगार की तौबा

बनी इसराईल में क़हत आ गया बहुत ज़बरदस्त। बनी इसराईल आए और कहने लगे मूसा अलैहिस्सलाम दुआ करो अल्लाह क़हत को दूर कर दे। मूसा अलैहिस्सलाम सत्तर हज़ार बनी इसराईल को लेकर निकले। नमाज़ पढ़ी दुआ मांगी या अल्लाह बारिश बरसा।

﴿فما زادت الشمس الا تخشعا﴾

सूरज की आग और बढ़ गई तो अर्ज़ किया या अल्लाह! हम बारिश की दुआ कर रहे हैं और तू सूरज की आग को बढ़ा रहा है, आसमान की तपिश को बढ़ा रहा है तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि

﴿ان فيكم رجلا يبارزني بالمعاصي منذ اربعين عاما.﴾

तुम में से तुम्हारा एक आदमी है जिसने पिछले चालीस साल से एक भी नेकी नहीं की और चालीस साल से मुझे ललकार रहा है और मेरी नाफ़रमानी पर तुला हुआ है। उसकी वजह से बारिश रोकी हुई है। उससे कहो बाहर आकर अपने को ज़ाहिर करे तब बारिश होगी।

मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ﴿يامن عصى الله اربعين سنة﴾ अरे वह इन्सान बदबख़्त! जिसे चालीस साल गुज़र गए कोई अच्छा काम नहीं किया। बाहर आ तेरी वजह सारे अज़ाब में हैं।

उसे तो पता है कि मैं हूँ और किसी को पता नहीं कि कौन है और न ही अल्लाह तआला ने बताया कि फ़लाँ है। उसने इधर देखा उधर देखा जब कोई न निकला तो अपने दिल में कहने लगा

﴿لو خرجت فضحت نفسی﴾

मैं अगर बाहर निकलूँ तो अपने आपको ज़लील करूँ और अगर खड़ा रहूँ तो मेरी वजह से बारिश बन्द। सारी मख़्लूक़ परेशान है तो उसने अपने सर को अपनी चादर से छुपाया और सर झुकाया ताकि कोई मेरे आँसुओं को देखे नहीं और आँसुओं के दो क़तरे आँखों से निकाल कर कहने लगा या अल्लाह!

﴿عصيتك اربعين سنة فامهلتنی.﴾

ऐ अल्लाह! मैं चालीस साल तक तेरी नाफ़रमानी करता रहा और तू मुझे मोहलत देता रहा, तूने किसी को न बताया कि मेरी रात कैसे गुज़रती है, तूने किसी को न बताया कि मेरा दिन कैसे गुज़रता है।

﴿فجئتك تائبا فاقبلنی﴾

अब मैं तेरे सामने तुझ से तौबा करता हूँ किसी को न बता और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा।

अभी उसकी दुआ पूरी भी नहीं हुई कि काली घटा उठी और छमाछम बारिश हो गई। इर्शाद फ़रमाया जिसकी वजह से रोकी थी उसी की वजह से कर दी।

जो ऐसा रहीम और मेहरबान बादशाह ज़मीन व आसमान का। मेहरबानी और सख़ावत ऐसी कि चालीस साल की नाफ़रमानियों

को दो आँसुओं से धो दिया।

मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया या अल्लाह! अब तो बता दे कि वह कौन है?

इर्शाद फ़रमाया जब मेरा नाफ़रमान था तो मैंने किसी को न बताया और अब मेरा फ़रमांबरदार है तो मैं अब उसे कैसे रुसवा करूँ। नहीं नहीं मैं किसी को नहीं बातऊँगा।

मेरे भाईयो और बहनो!

हम होश के नाखुन लें। कपड़ा और ज़ेवर इज़्ज़त की चीज़ नहीं। गाड़ी और बंगले इज़्ज़त की चीज़ नहीं, फ़ैक्टरी और मीलें इज़्ज़त की चीज़ नहीं बल्कि मेरा वजूद जो रब की इताअत में ढल जाए यह मेरी इज़्ज़त है चाहे मेरे जिस्म पर दस रुपए का कपड़ा है या दस हज़ार का कपड़ा है।

फिर मुझे परवाह नहीं अगर मेरे वजूद में अल्लाह उतरा हुआ है। अल्लाह जल्ले जलालुहू को मतलूब बनाकर ज़िन्दगी गुज़ारने का रिवाज मिट चुका है। यह तर्बियत माँ के ज़िम्मे थी। यह माँ ने तर्बियत देना थी कि बेटा! तू अल्लाह के लिए पैदा हुआ है, बेटा तू अल्लाह की अमानत है, बेटा! तुझे अल्लाह पर क़ुर्बान होना है। यह तर्बियत माँ की गोद से मिलना थी। यह बाप ने तर्बियत देना थी लेकिन हाय अफ़सोस! कि माँ-बाप ही अन्धे हैं तो अन्धा क्या किसी को रास्ता बता सकता है?

माँ-बाप ने भी पैसे को पूजा, औलाद को भी पैसे का पुजारी बना दिया। माँ-बाप ने भी ज़ेवर कपड़े को पूजा औलाद को भी ज़ेवर और कपड़े का पुजारी बना दिया।

हज़रत हबीब रज़ियल्लाहु अन्हु का जमाव व शहादत

या वह वक़्त था कि हज़रत अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा के बेटे को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसैलमा कज़्ज़ाब काफ़िर नबुव्वत का झूठा दावा करने वाले के पास भेजा कि जाओ और उससे कहो कि वह तौबा कर ले। मुसैलमा कज़्ज़ाब ने हज़रत हबीब रज़ियल्लाहु अन्हु को पकड़ लिया।

हज़रत हबीब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मैं तुझे दावत देता हूँ कि तू तौबा कर ले। वह कहने लगा

﴿اتشهد انی رسول الله﴾

क्या तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ?

कहने लगे नहीं बल्कि

﴿اشهد ان محمدا رسول الله﴾

मैं तो गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं

उसने कहा मेरी नबुव्वत की गवाही दे।

फ़रमाया नहीं देता।

उसने हज़रत हबीब रज़ियल्लाहु अन्हु का एक हाथ काट दिया। फिर कहने लगा मेरी नबुव्वत की गवाही दे।

हज़रत हबीब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया नहीं देता।

उसने दूसरा हाथ काट दिया। फिर कहने लगा मेरी नबुव्वत की गवाही दे।

फ़रमाया नहीं देता।

उसने आपका एक पाँव काट दिया। फिर कहने लगा मेरी नबुव्वत की गवाही दे।

उन्होंने फ़रमाया नहीं देता।

उसने दूसरा पाँव काट दिया। फिर कहने लगा मेरी नबुव्वत की गवाही दे

फ़रमाया नहीं देता।

तो उसने ज़बान खींचकर कटवा दी। फिर कहने लगा मेरी नबुव्वत की गवाही दे

फ़रमाया सर से इन्कार करके बताया नहीं देता।

उसने ख़न्जर से गोश्त को उतारना शुरू किया जैसे क़साई जानवर के गोश्त के टुकड़े उतारता है।

आख़िर तक सिसक सिसककर तड़प तड़प कर जान दे दी लेकिन उस सहाबी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत हबीब रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बान से यह नहीं निकला कि तू नबी है।

इतनी दर्दनाक मौत। उस माँ पर क्या बीती होगी जिस माँ को यूँ सुनाया जाए कि तेरे बेटे के टुकड़े टुकड़े हो गए। हाथ कटे, पाँव कटे, ज़बान कटी, जिस्म को बकरी की तरह टुकड़े टुकड़े कर दिया गया लेकिन आगे वह माँ क्या कहती है जब उसे बताया गया कि तेरे बेटे को इस तरह बेदर्दी से शहीद कर दिया गया और वह कहती है:

﴿لهذا اليوم ارضعته﴾

अरे यही दिन तो देखने के लिए तो मैंने उसे दूध पिलाया था।

वह माँएं कहाँ चली गयीं। सदियाँ गुज़र गयीं यह उम्मत बांझ हुई पड़ी है और इस उम्मत की माँ की कोख बांझ हो गई। आवारागर्द पैदा हो रहे हैं, अय्याश बदमाश पैदा हो रहे हैं। रातों को रोने वाले और अल्लाह के अर्श को जिनका रोना हिला देता था, आसमान के फ़रिश्ते जिनके रोने पर रोते थे कहाँ हैं?

वह औरतें कि जिनके रोने ने अल्लाह के फ़ैसले को नबी के कहने के बावजूद उनके हक़ में कर दिया।

हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा की फ़रियाद और फ़ैसला रब्बानी

ख़ौला बिन्ते सालबा रज़ियल्लाहु अन्हा के ख़ाविन्द ने उन्हें तलाक़ दे दी "ज़हार" जो कि जाहिलियत की तलाक़ थी। कोई मर्द अगर अपनी बीवी से कह देता कि तू मेरी माँ है तो हमेशा के लिए वह औरत उस पर हराम हो जाती थी। रुजू भी नहीं हो सकता था।

यह दौड़ी हुई दरबार रिसालत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरे ख़ाविन्द ने "ज़हार" कर लिया है। आप उसे ख़त्म कर दें।

यह तो जाहिलियत की तलाक़ है शरियत का हुक्म अभी आया नहीं था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तलाक़ हो गई। रिवाज के मुताबिक़ फ़त्वा दे दिया।

वह अर्ज़ करने लगी या रसूलुल्लाह! मैं कहाँ जाऊँ अगर यह तलाक़ हो गई तो मेरा पेट फट गया बच्चे जनते हुए। ﴿کبر سنی﴾

बूढ़ी हो गयीं हूँ ﴿تفرق اهلی﴾ माँ-बाप मेरे मर गए। ﴿افنی مالی﴾ ﴿واکل شبابی﴾ जवानी इसके घर गुज़र गई पैसा मेरा ख़त्म हो गया अगर यह तलाक़ हो गई तो मैं कहाँ जाऊँगी। यह एक ख़ास किस्म की तलाक़ थी दौरे जाहिलियत की।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तलाक़ हो गई।

उसने फिर मुतालबा किया कि नहीं इस तलाक़ को ख़त्म कीजिए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सर झुका लिया।

तो वह कहने लगी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं सुनते तो मैं अपने अल्लाह को खुद सुनाती हूँ।

और वहीं आसमान को देखा और बारगाहे ज़ुलजिलाल में हाथ उठाए और ऐसा उसकी दुहाई है और ऐसा उसका अजीब क़िस्सा है और उसने दुआ मांगी और कहने लगी

﴿اللهم انی لی صبیة صغار.﴾

ऐ अल्लाह तू जानता है कि मेरे छोटे छोटे बच्चे हैं।

﴿ان ضممتهم الی فجاعوا.﴾

मेरे पास रहें तो उन्हें कहाँ से खिलाऊँ।

﴿ان ضممتهم الیه فضاعوا﴾

उसके पास छोडूँ और वह आगे दूसरी शादी कर ले तो मेरे बच्चे तो दर-ब-दर के हो जाएंगे।

या अल्लाह! तू मेरे हक़ में फ़ैसला उतार। यह नहीं कहा जो तू चाहे फ़ैसला उतार बल्कि कहा ऐ अल्लाह मेरे हक़ में फ़ैसला उतार।

फिर अल्लाह तआला ने आम हुक्म नहीं भेजा भेजा कि ठीक है

हमने फ़ैसला कर दिया नहीं बल्कि क़ुरआन भेजा क़ुरआन कि जब तक क़ुरआन रहेगा, अट्ठाइसवाँ पारा रहेगा ख़ौला का क़िस्सा उम्मत सुनती रहेगी और उसकी अज़मत के गीत गाती रहेगी।

उसके हाथ अभी नीचे नहीं आए और उसका रोना अल्लाह के अर्श के दरवाज़े खुलवा गया और जिब्राईल अलैहिस्सलाम दौड़े हुए आ रहे हैं कि एक ख़ातून है जिसकी दुःख दर्द भरी फ़रियाद अल्लाह के अर्श को हिला रही है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर "वही" के आसार नमूदार हुए। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया हाथ नीचे कर ले "वही" आ गई है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पसीना पोंछा और फ़रमाया ख़ौला तुझे मुबारक हो तेरे रब ने तेरे हक़ में फ़ैसला कर दिया है।

﴿قد سمع الله قول التی تجادلك فی زوجها﴾

हम ने सुना अपनी बन्दी की फ़रियाद को जो आप से अपने ख़ाविन्द का झगड़ा कर रही थी।

﴿وتشتکی الی الله﴾

फिर आप ने तो सुना न। आपने तो रद्द कर दिया तो उसने अपने रब को पुकारा।

﴿والله یسمع تحاورکما﴾

मैं तुम दोनों की बहस सुन रहा था।

आप इक़रार पर थे और वह इन्कार पर थी। मैं सुनता भी था और देखता भी था और आज के बाद मैं इस तलाक़ को ख़त्म करता हूँ।

الذین یظهرون منکم من نسآئهم ما هن امهتهم

ان امهتهم الا الئى ولدنهم وانهم ليقولون
منكرا من القول وزورا وان الله لعفو غفور ٥

हमेशा ईमान व अमल ही के तज़्किरे रहते हैं, हमेशा तक़्वा बाक़ी रहता है, हमेशा सच्चाई ही के तज़्किरे बाक़ी रहते हैं। कौन जाने कितनी बड़ी बड़ी शहज़ादियाँ पेवन्द ख़ाक हो गयीं। आज उन्हें जानने वाला कोई नहीं।

बड़े बड़े बादशाह पेवन्द ख़ाक हुए आज उनका नाम लेने वाला कोई मौजूद नहीं है लेकिन जिन्होंने अपने आपको अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान किया, अपने आपको मिटा दिया, मिट गए। उनके तज़्किरे क़यामत तक के लिए अल्लाह जल्ले जलालुहू ने ज़िन्दा कर दिए।

अन्धी इन्सानियत

मेरे भाईयो!

आज के मर्दों और औरतों का सबसे बड़ा मसूअला और सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि हम अल्लाह की ज़ात का मक़सूद बनाकर ज़िन्दगी नहीं गुज़ार रहे। हम यह बात कर रहे हैं इस तबलीग़ की मेहनत में जो जमा करते हैं और कहते हैं मर्दों और औरतों को एक साथ जमा करो क्यों जमा करो?

सिर्फ़ बयान सुनाने के लिए नहीं मक़सद बदलवाने के लिए कि हम अपने मक़सद से भटके नहीं हैं बहुत दूर चले गए।

न राह रहा न राही रहा
न रहबर रहा न मंज़िल रही

समान भी लुटा, काफ़िले से भी बिछड़े। न आगे का पता और न पीछे का पता उस मुसाफ़िर की तरह जो अपना सामाने सफ़र गुम कर चुका।

जो क़ाफ़िले से भी बिछड़ चुका है। आगे रात अन्धेरी है, सफ़र बड़ा लम्बा है, मंज़िल को उसे इल्म नहीं। कटी पतंग है उसे नहीं पता कि किस तार में फँसना है और किस झाड़ी में उलझना है और कौन से काँटे ने मेरे सीने को चीरना है।

इस अन्धी इन्सानियत को अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह करना तबलीग़ की मेहनत का मक़सद है। हमारे मर्दों और हमारी औरतों का।

अल्लाह की नज़रों में जचें

मेरे भाईयों और बहनो!

नशा उतरे और अल्लाह की ज़ात को मक़सद बना कर ज़िन्दगी गुज़ारना सीखें। अल्लाह पर मरना सीखें, अल्लाह पर मिटना सीखें, अल्लाह के लिए जीना सीखें, अल्लाह के लिए मरना सीखें, ख़ुशी भी हो तो वह जो अल्लाह को पसन्द, ग़म भी हो तो वह जो अल्लाह को पसन्द हो, इज़्हार भी हो तो वह जो अल्लाह को पसन्द हो, छुपाना भी हो तो वह जो अल्लाह को पसन्द हो!

हम लोगों की नज़रों में जचें इससे हमारा मस्अला नहीं हल होगा। याद रखना अल्लाह की नज़र में जचेंगे तब मस्अला होगा।

एक लड़की दुल्हन बनाई जा रही, बड़ी सजाई जा रही। उसकी सहेलियाँ कहने लगीं माशाअल्लाह बड़ी अच्छी लग रही हो तो वह

रोने लगी और कहाः—

तुम्हारी नज़रों में जंचने से मेरा काम नहीं बनेगा। जिसके हाँ जा रही हूँ जब तक उसकी नज़रों में जंच न जाऊँ उस वक़्त तक मेरा मस्‌अला हल नहीं हो सकता।

अरे मेरे भाईयो और बहनो!

यह अन्धी दुनिया है, यह पागलों की दुनिया है, यह दीवानों की दुनिया है, यह बेवक़ूफ़ों की दुनिया है, यह जाहिलों की दुनिया है। उनकी नज़रों में जंच जाने से न किसी मर्द का काम बनेगा और न किसी औरत का काम बनेगा। उस बड़े मालिक की नज़रों में जंच जाने से काम बनेगा। फिर चाहे कोई हमें जाने या न जाने, चाहे हमें कोई माने या न माने, चाहे कोई देखे या न देखे, कोई पूछे या न पूछे, चाहे हमें कोई चाहे या न चाहे, कोई क़रीब करे या दूर करे, कोई मुहब्बत करे या नफ़रत करे, कोई सलाम करे, कोई ठुकरा दे। हमारा मस्‌अला ऊपर हल हो चुका। हमारा काम बन चुका कि हम अल्लाह को राज़ी कर चुके हैं। यह मक़सूद है। यह मतलूब है। इस पर आना है फ़ैक्टरी वालों को, हर फ़ैक्टरी वाली को, हर मील वाले को, हर मील वाली को, हर रेढ़ी चलाने वाले को, हर ग़रीब को, हर अमीर को, हर बूढ़े को, हर जवान को, हर मर्द व औरत को दिल व दिमाग़ में अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रच जाएं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की याद एक बुढ़िया की ज़बान पर

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रात को गश्त कर रहे हैं। एक औरत बुढ़िया चर्ख़ा कात रही है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को याद करके यह शे'र पढ़ रही

﴿عليك صلوات الله وسلام الله﴾

आप पर अल्लाह की रहमतें और सलाम हो। मालूम नहीं वह मिलने देगा या नहीं देगा और मौत तो आनी जानी है कोई पहले मरा कोई बाद में मरा काश! कि मैं वह दिन देखूँ कि जब मैं आपके साथ हूँ और आपका मुझे साथ जन्नत में नसीब हो।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर खड़े सुन रहे थे। खड़े नहीं हो सके वहीं बैठ गए और ज़ार व क़तार रोए और फिर दरवाज़े पर दस्तक दी। पूछा कौन है?

कहा मैं उमर।

कहा ﴿ما لي ولعمر﴾ उमर का मुझ ग़रीब बुढ़िया से क्या काम?

कहा अल्लाह के वास्ते दरवाज़ा खोल।

उसने दरवाज़ा खोला तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे मुझे वह शे'र फिर सुना जो तू अपने हबीब की याद में पढ़ रही थी और मुझे भी अपनी दुआ में शरीक कर फ़रमा।

मतलूब और महबूब

बूढ़ों और बच्चों का, मर्द व औरत का एक ही जज़्बा बन जाए कि मेरा मतलूब अल्लाह है और मेरा महबूब अल्लाह का रसूल है न दाएं देखें न बाएं देखें बल्कि यह देखें कि अल्लाह क्या चाहता है। अल्लाह तआला कहता है कि मैं अपने नबी की ज़िन्दगी चाहता हूँ। हम अल्लाह के नबी की पाकीज़ा ज़िन्दगी पर आएं जो मुहम्मद मुस्तुफ़ा अहमदे मुजतबा सैयदुल कौनैन सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की पसन्दीदा ज़िन्दगी है उस पर आ जाएं। हमारे मर्द आ जाएं और हमारी औरतें आ जाएं। यह बतौर मक़सद मिला है।

आप सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत में हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हा की बेक़रारी

ओहद की लड़ाई में ख़बर पहुँची कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं। हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हा अम्र बिन जमूअ रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी बेक़रार होकर नंगे पाँव भागीं न अपना होश, न घर का होश और ज़बान पर एक ही रट कि मेरे नबी का क्या हुआ? मेरे रसूल सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम का क्या हुआ?

उनके ख़ाविन्द शहीद हो गए थे, उनके दो बेटे शहीद हो गए थे, उनका भाई शहीद हुआ था। बताओ जिस औरत का ख़ाविन्द गया, बेटे गए, भाई गया उस औरत के पल्ले क्या रह गया। एक ने कहा कहाँ जारी रही हो तुम्हारे ख़ाविन्द शहीद हो गए।

कहा अल्लाह के सुपुर्द यह बताओ मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या हाल है?

दूसरे ने कहा तेरे बेटे शहीद हो गए।

कहा अल्लाह के सुपुर्द यह बताओ मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या हाल है?

तीसरे ने कहा तेरा भाई भी गया।

कहा वह भी अल्लाह के सुपुर्द यह बताओ मेरे नबी सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? क्या वह ठीक हैं?

कहा नहीं जब तक मैं आपको न देख लूँ जब तक मेरी आँखें ठंडी नहीं होंगी। उस वक़्त तक मुझे करार कैसे आए।

दौड़ी जा रही हैं ओहद की तरफ़। सामने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जब नज़र पड़ी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बैठ गयीं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुर्ते को पकड़कर अर्ज़ करने लगीं:—

या रसूलुल्लाह! अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़िन्दा हैं फिर अगर सब कुछ भी लुट गया तो भी कुछ नहीं लुटा अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साया सर पर है तो सब कुछ छिन जाने के बावजूद भी कुछ नहीं छिना। सब कुछ चला जाए तो भी कुछ नहीं गया।

आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा का जमाव

मेरे मोहतरम भाईयो और बहनो!

हम अपनी ज़िन्दगी के मक़सद को बदलें। हम अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को राज़ी करने वाली ज़िन्दगी को अपना लें जो मर्दों के लिए भी है और औरतों के लिए भी है। अल्लाह तआला ने दुनिया के सब से बड़े बादशाह जिसने रब होने का दावा किया वह फ़िरऔन है उसकी मलिका की कितनी शान होगी। वह ईमान ले आयीं। मुसलमान हो गयीं। फ़िरऔन हर तरह की धमकी दे बैठा। फ़िरऔन हर क़िस्म का लालच दे बैठा लेकिन जब यह दिल अपनी जगह पर आ जाए तो कोई हिला नहीं

सकता यह दिल बना ही अल्लाह के लिए है। यह दिल बना ही रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए है। इसमें किसी दूसरे का दख़ल ही नहीं।

उसने कहा अब मैं अपने रब को पहचान चुकी हों। क़ैद में गयीं, भूख बर्दाश्त की।

ईमान भी अजीब चीज़ है, अल्लाह और रसूल की मुहब्बत भी अजीब चीज़ है जितनी सख़्ती होती है ईमान उतना अन्दर उतर जाता है। जितनी मुशक़्क़त होती है ईमान उतना अन्दर उतर जाता है। यह अजीब मस्अला है।

फ़िरऔन का ज़ुल्म बढ़ रहा है आसिया का ईमान बढ़ रहा है।

फ़िरऔन की शिद्दत बढ़ रही है और आसिया की मुहब्बत बढ़ रही है।

फ़िरऔन क़ैद में डाल रहा है और आसिया अल्लाह की मुहब्बत में हवा में उड़ रही हैं। यहाँ तक कि फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि उसे लाओ और दरबार में कोड़े मारे जाएं। वह शहज़ादी जिसने कभी तिनके को टेढ़ा न किया, मख़मल के फ़र्श के अलावा चलकर न देखा और जिसकी कमर दीबाज और फूलों की सेज से जुदा न हुई हो आज उसी कमर पर अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत में कोड़े मारे जा रहे हैं। कपड़े फट गए, ख़ून के फव्वारे छोटे, गोश्त के लोथड़े दरबार में उड़ रहे हैं और वह कह रही है और मारो और मारो। जान से मार दो लेकिन अल्लाह और उसके रसूल से रिश्ता नहीं कट सकता।

आख़िर तंग आकर फ़िरऔन ने कहा इसे सूली पर लटका दो।

सूली क्या थी? हाथ पाँव में लकड़ी के साथ लगा कर कील ठोंक देते थे।

किसको कील लगाए जा रहे हैं। दुनिया की बहुत बड़े बादशाह की सबसे महबूब बीवी के हाथों में कील गड़ गए पाँव में कील लग गए फिर कहने लगा इसकी खाल खींचो।

उस वक़्त आसिया ने आसमान को देखा और अर्ज़ किया। क़ुरआन ने क़िस्सा बयान किया है:

﴿وضرب الله مثلا للذين آمنوا امرأت فرعون﴾

आसमान को देखा और अर्ज़ किया या अल्लाह! तू जानता है मैं औरत ज़ात हूँ बड़ी कमज़ोर हूँ अब वह मेरी खाले खींचेगें मुझे कहाँ बर्दाश्त होगा। या अल्लाह मुझे जन्नत दिखा दे। मुझे मेरा घर दिखा दे लेकिन अपने पड़ोस में बना।

अजीब दुआ मांगी है। उलमा ने लिखा है कि आसिया की दुआ बड़ी अजीब दुआ है। पहले अल्लाह का पड़ौस मांगा फिर जन्नत मांगी।

﴿رب ابن لى عندك﴾ अपने पास अपने पास अपने क़रीब।

﴿بيتا فى الجنة﴾ मेरा घर तेरे क़रीब हो।

﴿ونجنى من فرعون﴾ फ़िरऔन से निजात दे अपने पास मेरा घर बना दे।

अल्लाह की रहमत जोश में आई और आसमानों के दरवाज़े खुलते चले गए। अर्श फ़र्श खुलता चला गया और अल्लाह तआला ने रिज़वान जन्नत के दारोग़ा से फ़रमाया कि

आसिया को उसका घर दिखा दो जो हम ने जन्नत में उसके

लिए बनाया है। घर देखा लबों पर मुस्कुराहट आई और जान निकल गई।

अब अगली बात सुनो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को देखा कि जाने का वक़्त आ चुका है तो इर्शाद फ़रमाया ख़दीजा! जन्नत में जाएगी तो अपनी सौकन से मेरा सलाम कहना।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! ﴿ای زوجة قبلی﴾ मुझ से पहले आपकी बीवी कौन है?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया फ़िरऔन की बीवी आसिया को अल्लाह तआला ने जन्नत में मेरी बीवी बना दिया है।

दुनिया फ़रेब और धोका है

हम दुनिया के नाज़ नख़रों के लिए नहीं आए बल्कि यह गुज़रगाह है, यह धोके का घर है, यह मच्छर का पर है, यह मकड़ी का जाला है, यह ग़द्दार है, यह दग़ाबाज़ है, यह मक्कार है, यह फ़रेबी है, यह धोकेबाज़ है। इसका ज़ाहिर और है और इसका बातिन और है। इसकी खुशियों के पीछे ग़म की क़तारें हैं, इसकी राहत के पीछे दुखों के समन्दर हैं, इसकी इज़्ज़त में ज़िल्लत की स्याहियाँ हैं, इसकी बुलन्दी के पीछे पस्ती का बहुत बड़ा साँप है, इसकी खुशियों को ग़म निगलते हैं, इसकी ज़िन्दगी को मौत खाती है, इसकी जवानी को बुढ़ापा ले जाया करता है, इसकी मालदारी को फ़क़ीरी मिटाती है, इसकी राहत को मुसीबतें ले

जाती हैं और इसकी सेज को क़ब्र की सेज से बदल दिया जाता है।

अरे दस दस मंज़िला इमारते बनाने वाले क्या पता दस हाथ गहरी तेरी क़ब्र तैयार हो चुकी हो।

अरे ऊँचे से ऊँचे जोड़े पर तेरी निगाह जम रही हो क्या पता तेरे मेरे कफ़न का कपड़ा भी बाज़ार में आ चुका हो।

अरे बड़ी उम्दा खुशबू से अपने आपको मौत्तर करने वाले क्या पता क़ब्र की अन्धेरी कोठरी तेरे मेरे पेट को फाड़कर पूरी क़ब्र को बदबू दार बनाने के लिए तैयार हो चुकी हो।

अरे खुशियाँ मनाने वाले क्या पता तेरे ऊपर मातम होने वाले हों।

अल्लाह तआला की रज़ा

मेरे भाईयो!

हम अपने मक़सद पर आ जाएं। हम अल्लाह के लिए हैं।

﴿انا لله﴾ हम अल्लाह के हैं।

﴿وانا اليه راجعون﴾ और हमने अल्लाह के पास ही जाना है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को अपनाना यह अल्लाह को राज़ी करना है। मर्द व औरत, बूढ़े, बच्चे, जवान, बादशाह, फ़क़ीर, बंगले वाला हो या झोंपड़ी वाला, मील चलाता हो या टोकरी उठाता हो सब के सब अगर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी को अपना लें तो अल्लाह राज़ी हो जाएगा और मज़े होंगे।

सज्दे की तौफ़ीक़ नहीं

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी अपना ली जाए। आपकी ज़िन्दगी को सीखा जाए कि आप ने कैसे ज़िन्दगी गुज़ारी इबादात कैसे कीं कि नमाज़ को आँखों की ठंडक बता रहे हैं।

﴿جعلت قرة عینی فی الصلوٰة﴾

मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में है।

कितने मर्द व औरत हैं जो नमाज़ पढ़ते हैं।

आज लाखों घर ऐसे होंगे जिनमें किसी एक को भी सज्दे की तौफ़ीक़ नसीब नहीं। करोड़ों मुसलमान ऐसे हैं जिन्हें पूरे हफ़्ते में एक सज्दे की भी तौफ़ीक़ नसीब नहीं सिवाए जुमा की नमाज़ के और करोड़ों मुसलमान ऐसे हैं जिनको एक सज्दा की तौफ़ीक़ नसीब नहीं सिवाए ईद के।

और करोड़ों मुसलमान ऐसे हैं जो यह भी नहीं जानते कि नमाज़ क्या चीज़ है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे हैं मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ है और अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं:

﴿قد افلح من تزکی. وذکر اسم ربه فصلی.﴾

पास हुआ कामयाब हुआ नमाज़ पढ़ने वाला।

﴿قد افلح المؤمنون الذین هم فی صلوتهم خشعون.﴾

कामयाब हुए वे मोमिन जो नमाज़ में अल्लाह से डरने वाले हैं।

﴿ان الانسان خلق هلوعا﴾

इन्सान बड़ा बेसब्रा है। मुसीबत आए तो परेशान हो जाता है।

पैसा आए तो बख़ील, कन्जूस, घमंडी होजाता है ﴿الا المصلين﴾ लेकिन नमाज़ी ऐसा नहीं। हर नमाज़ी ऐसा नहीं बल्कि ﴿الذين هم على صلاتهم دائمون﴾ जो अपनी नमाज़ों पर क़ायम हैं ﴿تتجافى جنوبهم عن المضاجع﴾ जो आधी रात के बाद अपने बिस्तर से उठ जाते हैं और अल्लाहु-अकबर की गूँज अर्श तक जाती है फिर उनकी आँहें और सिसिकियाँ अल्लाह के अर्श के दरवाज़े खुलवाती हैं और अल्लाह उनके रोने को देखकर ख़ुश होता है।

कुछ आधी रात को उठ रहें हैं। कुछ औरतें अन्धेरे में रो रही हैं। अल्लाह के सामने गिड़गिड़ा रही हैं। फ़रिश्तें सिफ़ारिश करते हैं कि ऐ अल्लाह इसका काम बना देना बहुत अर्से से रो रहा है। अल्लाह तआला कहते हैं मुझे इसका रोना बहुत अच्छा लग रहा है ज़रा और रोने दो। मुझे इसके आँसू बहुत अच्छे लग रहे हैं।

और कुछ ऐसे मेरे जैसे बदबख़्त कि हाथ उठाते हैं अल्लाह कहता है इसकी ज़रूरत को जल्दी पूरा करो मैं इसकी आवाज़ नहीं सुनना चाहता। इसका चाहा इसे फ़ौरी दे दो ताकि दोबारा मुझ से न मांगे।

और कुछ ऐसे हैं कि वे आँसुओं की झड़ियाँ लगा रहे हैं और उनका एक एक आँसू अर्श में जमा किया जा रहा है और कल तराज़ू के पलड़े में पहाड़ बनाकर तोला जा रहा है। उसका सज्दे में रोना, उसका क़याम में क़ुरआन पढ़ना, उसका रुकू में थक जाना, उसका सज्दे में सर रख देना और उसका अल्लाह से राज़ व नियाज़ करना और सब सो रहे हैं यह जाग रहा है, सब नींद के मज़े ले रहे हैं और यह अल्लाह तआला से राज़ व नियाज़ के मज़े ले रहा है।

एक बाँदी से अल्लाह की मुहब्बत का किस्सा

मुहम्मद हुसैन बग़दादी रह० बाज़ार गए और देखा एक बाँदी बिक रही है। काली कलौटी। बेचने वाले ने कहा थोड़ी सी पागल है लेना चाहते हो तो ले लो।

कहने लगे मुझे उसके चेहरे पर पागल पन नज़र न आया। मैंने उसे ख़रीद लिया। जब आधी रात का वक़्त हुआ। मेरी आधी रात के वक़्त आँख खुली तो देखा कि वह बाँदी मुसल्ले पर बैठी हुई है। आँसुओं की झड़ियाँ लगी हुई हैं। राज़ व नियाज़ हो रहे हैं और मैं सुनता रहा अचानक उसने कहा,

"ऐ अल्लाह! जो मुझ से तुझे मुहब्बत है (यह नहीं कहा जो मुझे तुझ से मुहब्बत है।) नहीं बल्कि कहा जो तू मुझ से मुहब्बत करता है मैं तुझे उस मुहब्बत का वास्ता देती हूँ। अभी इतनी बात की थी उन्होंने उसकी बात को काटा कहा अरे अल्लाह की बन्दी क्या कहती है उल्टा कर दिया यूँ कह ऐ अल्लाह! जो मैं तुझ से मुहब्बत करती हूँ उसका तुझे वास्ता देती हूँ।

उस बाँदी ने कहा मुहम्मद हुसैन ख़ामोश हो जा अगर मुझ से उसे प्यार न होता तो मुझे यहाँ न खड़ा करता और तुझे वहाँ न सुलाता। मुझ से प्यार है तो मुझे यहाँ खड़ा किया और अगर तुझ से प्यार होता तो तुझे भी खड़ा करता।

फिर उसने आसमान को देखा और कहा ऐ अल्लाह! आज तक तेरा मेरा राज़ छुपा हुआ था अब लोगों को भी तेरे मेरे ताल्लुक़ का पता चल गया। अब मुझे अपने पास बुला ले। चीख़ निकली और जान निकल गई।

वह फ़रमाते हैं कि मैं घबराया और सुबह सुबह उसके कफ़न के लिए बाज़ार गया और कफ़न ख़रीद कर वापस हुआ तो क्या देखता हूँ कि सब्ज़ रेशम का कफ़न उसे पहनाया जा चुका है और उसके ऊपर लिखा हुआ है

﴿الا ان اولياء الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون﴾

सुन लो! सुन लो! अल्लाह के दोस्तों को न कोई ग़म है और न कोई ख़ौफ़ है।

इबादतें और रहन सहन

हर घर में पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसी इबादतें ज़िन्दा हो जाएं। कोई बच्चा बच्ची बेनमाज़ी न हों। हुज़ूर सल्लाहु अलैहि वसल्लम वाला रहन सहन ज़िन्दा हो। सादा रहन सहन। मालदार भी सादा हों, ग़रीब भी सादा हों। शादी के एक जोड़े पर जो मालदार का पैसा ख़र्च होता हैं उससे दस ग़रीब बच्चियों की शादियाँ हो सकती हैं।

एक वलीमे पर जो एक मालदार का पैसा ख़र्च होता है उससे सौ ग़रीब बच्चियों की शादियाँ हो सकती हैं।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की फ़ज़ीलत और रुख़सती

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से बढ़कर काएनात में कोई बेटी नहीं पैदा हुई और उनके शहज़ादों से बढ़कर कोई औलाद पैदा नहीं हुई कि उनको जन्नत के नौजवानों का सरदार कहा।

उनकी माँ को जन्नत की औरतों की सरदार कहा। फ़रमाया फ़ातिमा मेरी बेटी जन्नत की औरतों की सरदार, फ़ातिमा के बेटे जन्नत के नौजवानों के सरदार और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जब पुलसिरात से गुज़रेंगी तो सारे महशर में ऐलान होगा नज़रें झुका लो, नज़रे झुका लो, मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी पुलसिरात से गुज़र रहीं हैं। जिसकी इतनी ऊँची शान है उसकी शादी का क़िस्सा सुनाऊँ और अगर वह नहीं कर सकते तो उसके क़रीब आने की कोशिश तो करें।

मस्जिद में निकाह हो रहा है। दो महीने या चार महीने या छः महीने पहले (तीनों बातें दर्ज हैं) के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! रुख़्सती हो जाए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बहुत अच्छा रुख़्सती कर देते हैं। मग़रिब की नमाज़ पढ़ाई घर में तशरीफ़ लाए। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मुझे ख़बर नहीं कि मेरी आज रुख़्सती है। मैं घर का काम कर रही थी जिस तरह घर की बच्चियाँ काम करती हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा को बुलाया और फ़रमाया उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हु यह मेरी बेटी को अली के घर छोड़ आओ।

यह जन्नत की औरतों की सरदार की बारात जा रही है न बाजा न गाजा न मेला न ठेला कुछ भी नहीं।

हमारी नाक बहुत ऊँची हो गई कि मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाक से भी ऊँची हो गई। हमारी बेटी इतनी ऊँची हो गई कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से भी ऊँची

चली गई।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जन्नत की शहज़ादी और जन्नत के शहज़ादों की माँ, बादशाहों के बादशाह, नबियों के नबी की बेटी और सरदारों के सरदार हैदर किरदार रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी ऐसी ख़ातून काएनात में न आई और न आएगी वह अपने क़दमों से चलकर जा रही है। दरवाज़े पर दस्तक हो रही। अली रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर आते हैं तो देखा हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा खड़ी हैं।

कहा यह क्या?

उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रुख़्सती कर दी है और अपनी अमानत को संभाल लो। रहन सहन अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपना लें।

अरे मेरे भाईयो!

आज के मालदार सादगी पर आ जाएं तो कोई ग़रीब भूखा नहीं रह सकता किसी ग़रीब की बेटी की शादी नहीं रुकेगी। किसी ग़रीब के बेटे की शादी नहीं रुकेगी।

मक़ाम व मर्तबा हज़रत मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

लोगों को सामने रखकर चलना हलाकत है अगर मुशाबिहत अपनानी है तो उसकी क्यों न अपनाएं जिसकी क़समें अल्लाह खा रहा हो। जिसकी सरदारी की गवाही अल्लाह तआला दे रहा हो.

जिसके पीछे अल्लाह तआला ने सारे नबियों को खड़ा करके इमाम बना दिया, जिसकी इतनी ऊँची परवाज़ हो कि अर्श फ़र्श पर ख़ुशी सुनाई जा रही हो। जहाँ जिब्राईल अलैहिस्सलाम की ताक़त ख़त्म हो रही हो, जहाँ अंबिया अलैहिमुस्सलाम इस्तिक़बाल में खड़े हो रहे हों, आसमान सजाए जा रहे हों कि मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी आ रही है। आसमान सजाए जाएं, फ़रिश्तों को इस्तिक़बाल के लिए लाया जा रहा हो कि मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी आ रही है। इतने ऊँचे बादशाह की बेटी की क्या शान होगी। सिदरतुल मुन्तहा पर सारी मख़्लूक़ की ताक़त ख़त्म। जिब्राईल अलैहिस्सलाम की भी सिदरतुल मुन्तहा पर इन्तिहा, नबियों की इन्तिहा, वलियों की इन्तिहा, सब की की इन्तिहा, फ़रिश्तों की इन्तिहा और फिर अर्श पर लरज़ा तारी हो रहा है कि आज मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे ऊपर आ रहे हैं कहीं कोई ग़ुस्ताख़ी न हो जाए।

अर्श भी ख़ुशी से झूम रहा है कि मुझे मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार होने वाला है। आज उसकी सवारी मेरे ऊपर से भी गुज़रने को है। आज अर्श के ऊपर से तख़्त उतरा, तख़्त पर हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बिठाया फिर उसे ऊँचा उड़ाया फिर अर्श सिकुड़ता चला गया, अर्श भी सिमटता चला गया। जिसके सामने अर्श भी झुक जाए, जिसके सामने अर्श भी ज़ेर हो जाएं और मुहब्बत भरी निगाहें डालता हुआ अपने दरवाज़े खोल दे, जिसके आगे सत्तर हज़ार नूर के पर्दे इस ख़ुशी में हों कि हम भी मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार करें। हर पर्दा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआएं

लेता जाए और अपने आपको हटाता जाए, दीदार भी करता जाए, उठता भी जाए, पर्दों पर पर्दे उठे सत्तर हज़ार नूर के पर्दे उठे वह हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, वह मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

उसकी क्या शान न कोई नबी बता सके, न कोई नात कहने वाला बता सके, न कोई आलिम बता सके न कोई मुफ़स्सिर बता सके। मेरे रब की क़सम मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान सिवाए अल्लाह के कोई बयान नहीं कर सकता। हम सब के सब मिल जाएं जो कुछ कहा गया वह भी थोड़ा, जो कुछ कहा जाएगा वह भी थोड़ा। जिसकी परवाज़ इतनी ऊँची के अर्श भी झुके, सितारे भी झुकें, सय्यारे भी झुकें, फ़रिश्ते भी झुकें, अर्श के पर्दे भी उठें और अल्लाह ने अपने सामने खड़ा किया। आँखों से आँखें चार हुईं। आपस में दीदार हुआ।

इतना बड़ी समाई की अल्लाह की अज़मत, बड़ाई, किबरियाई सारी अन्दर ले ली और मज़बूत क़दमों में ज़र्रा बराबर भी डगमगाहट नहीं आई बल्कि इससे भी ऊपर का ऐज़ाज़ मिला कि

﴿السلام عليك ايها النبي﴾

ऐ मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तेरा रब तुझे सलाम करता है।

और फिर क़रीब होने के बावजूद इर्शाद होता है और तो क़रीब आओ

﴿ادن مني يا حبيبي يا محمد﴾

ऐ मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐ मेरे नबी ﴿ادن منی﴾ ज़रा और क़रीब आओ ज़रा और क़रीब फिर राज़ व नियाज़ की बातें फिर सलाम व कलाम। इससे बढ़कर किसका मक़ाम हो सकता है?

और उनसे बढ़कर कौन है जिसकी ज़िन्दगी को अपनाया जाए। हम उनके पीछे चल रहे हैं जो अच्छे बुरे को नहीं समझते। जिन पर जितना रोया जाए थोड़ा है। यह रहम के क़ाबिल हैं कि हम उन पर रोंए। हमारे भाई हैं, हमारी बहनें हैं। ज़िन्दगी अगर अपनाना ही है तो उसकी अपनाएं जिसको अल्लाह भी सलाम करे, उसकी अपनाएं जिसको अल्लाह भी कहे ﴿ولسوف يعطيك ربك فترضى﴾ ऐ मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं तुझे राज़ी करूँगा।

हमें कह रहा है मुझे राज़ी करो और अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कह रहा है मैं तुझे राज़ी करूँगा।

﴿والله ورسوله احق ان يرضوه﴾

मुझे राज़ी करो, मेरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को राज़ी करो और अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कह रहे हैं ﴿ولسوف يعطيك ربك فترضى﴾ ऐ मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं आपको राज़ी कर दूँगा।

क़समें खायीं कभी जान की ﴿لعمرك﴾ कभी बोल की ﴿وقيله﴾ कभी अपने नाम अता फ़रमाएं। अल्लाह अपने बारे में कहता है ﴿ان ربكم لرؤف الرحيم﴾ मैं तुम्हारा रब रऊफ़ व रहीम हूँ और अपने नबी को भी कहता है ﴿بالمؤمنين رؤف رحيم﴾ यह मेरा नबी रऊफ़ है रहीम है।

अल्लाह तआला की अताएं

अर्श तक परवाज़ है फिर वहाँ अजीब सवाल है जो आमने सामने हैं। सवाल होता है बड़ा मज़ेदार सवाल होता है लाड का, मुहब्बत का कि:—

ऐ अल्लाह इब्राहीम अलैहिस्सलाम तेरे ख़लील, मूसा अलैहिस्सलाम तेरे कलीम, दाऊद अलैहिस्सलाम के लिए लोहा नरम, सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए हवाएं ताबे, ईसा अलैहिस्सलाम के लिए मुर्दे ज़िन्दा, मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम तो मेरे लिए क्या है? मैं हबीब तू मुहिब, मेरे लिए क्या है?

इर्शाद होता है ऐ मेरे हबीब!

﴿اولیس قد اعطیتك افضل من ذالك كله﴾

मैंने आप को सबसे आला चीज़ अता फ़रमाई है।

﴿الا ذكرت الا ذكرت معي﴾

क़यामत तक तेरा नाम मेरे नाम के साथ चलेगा जुदा नहीं हो सकता। ﴿لا اله الاالله محمد رسول الله﴾ जुदा नहीं हो सकता ﴿جعلتك فاتحا و خاتما﴾ मैंने तुझे अव्वल बनाया मैंने आख़िर बनाया, मैंने तुझे कौसर अता फ़रमाई, मैंने तुझे क़ुरआन अता फ़रमाया, मैंने तुझे सूरहः बक़रा का आख़िर अता फ़रमाया, मैंने तेरी उम्मत के सीनों को क़ुरआन के लिए सन्दूक़ बनाया कि तेरी उम्मत के बच्चे के अन्दर, बच्ची के अन्दर, मर्द के अन्दर, औरत के अन्दर मेरा सारा क़ुरआन उतर जाए। मैंने तुझे अव्वलीन व आख़िरीन का सरदार बनाया। ﴿رحمة للعلمين﴾ बनाया ﴿كافة للناس بشيرا﴾

﴿ونذيرا﴾ बनाया।

انا ارسلنك شاهدا ومبشرا ونذيرا
وداعيا الى الله باذنه وسراجا منيرا.

अल्लाह पाक अपने नबी की तारीफ़ कर रहा है।

انك لعلى خلق عظيم. وما ارسلنك الا رحمة
للعلمين. وما ارسلنك الا كافة للناس بشيرا ونذيرا.
يتلوا عليهم ايته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة

अल्लाह पाक अपने नबी की तारीफ़ कर रहा है। आदमी अपनी ज़िन्दगी में किसी को तो सामने रखता है।

अरे भाईयो!

सब नक़्शों को तोड़ दें, सब बुतों को तोड़ दें, मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नक़्शे को अपना लें अल्लाह के पसन्दीदा हो जाएंगे, अल्लाह के महबूब बन जाएंगे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रहन सहन आ जाए, नमाज़े ज़िन्दा हों, ज़िक्र ज़िन्दा हो? तिलावत ज़िन्दा हो।

पहले ज़माने में इबादत का शौक़

एक वह ज़माना था कि हर घर से क़ुरआन गूंजता था, तिलावत गूंजती थी, अल्लाह की याद में रोना धोना अर्श को हिलाता था, रात होती थी तो फ़रिश्तों के गिरोह दर गिरोह इस उम्मत के घरों में उतर रहे होते थे कि आओ आज इसका क़ुरआन सुनें। आओ आज उसका क़ुरआन सुनें।

आज रबिया बसरिया रह० का क़ुरआन सुनें।

आज राबिया अदविया रह० का क़ुरआन सुनें।

आज आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा का क़ुरआन सुनें।

आज ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का क़ुरआन सुनें।

आज फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का क़ुरआन सुनें।

आज उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा का क़ुरआन सुनें।

आज ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा का क़ुरआन सुनें।

आज मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा का क़ुरआन सुनें।

आज आतका रज़ियल्लाहु अन्हा का क़ुरआन सुनें।

आओ आओ चले आओ यह वह ज़माना था कि इस उम्मत की औरत हो या मर्द, जवान हो या बूढ़ा, बूढ़े हों या बुढ़ियाँ। रात उनकी अल्लाह की याद में गुज़रती थी

दौर हाज़िर में इबादतों में कोताही

और अब वह ज़माना है कि फ़रिश्ते अज़ाब के कोड़े लेकर फिर रहे हैं कि किस घर पर अल्लाह का अज़ाब को कोड़ा बरसे।

वह ज़मीन जो कभी हमारे आँसुओं से सैराब होती थी वह ज़मीन आज ज़लज़ले ला रही है।

वह पानी जो कभी हमारी दुआओं पर बरसता था वह पानी तूफ़ान बनकर उठ रहा है।

वह फ़रिश्ते जो कभी हमारी दुआओं पर आमीन कहते थे वह फ़रिश्ते अज़ाब के कोड़े लेकर फिर रहे हैं।

वह रब जो कभी हम पर मेहरबान था हमारी तरफ़ उठने वाली

आँख को फोड़ देता था, बढ़ने वाले हाथ काट देता था, उठने वाले पैर तोड़ देता था, हमारे ख़िलाफ़ चलने वाली स्कीमों को बर्बाद कर देता था आज वही रब रब है, वही फ़रिश्ते फ़रिश्ते हैं लेकिन उम्मत का ख़ून आज भेड़ बकरियां से भी ज़्यादा सस्ता है। इतनी बेदर्दी से तो कोई बकरी को ज़िब्ह नहीं करता जितना बेदर्दी से मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत ज़िब्ह हो रही है। इतना बेदर्दी से तो कोई चिड़िया के बच्चे को ज़िब्ह नहीं करता जितना बेदर्दी से उम्मत के बच्चे ज़िब्ह हो गए।

यह हमारा अपना अपने ऊपर ज़ुल्म है अल्लाह ज़ालिम नहीं है। हमने ज़ुल्म किया है। अल्लाह की क़सम हम इस क़ाबिल नहीं कि इस ज़मीन पर चल फिर सकें। यह हमारे गुनाहों से दाग़दार और स्याह हो चुकी है। फ़िज़ाएं गन्दी हो गयीं, पानी कड़वे हो गए, धरती सारी जल गई है हमारे गुनाहों के दफ़्तर की वजह से फिर भी उसका करम है कि हमें छोड़ा हुआ है।

अल्लाह की रहमत बहुत क़ीमती है

मेरे भाईयो!

तौबा करें और पूरी उम्मत को तौबा पर लाएं। इस ग़फ़लत की ज़िन्दगी से निकल जाएं वरना हलाकत के दरवाज़े खुल जाएंगे

अरे अल्लाह से ज़्यादा महबूब कौन है जिससे जी लगाया जाए। जो खुद बैठा हुआ है इन्तिज़ार में।

सत्तर साल एक आदमी "या सनम" "या सनम" कहता रहा एक दिन ग़लती से मुँह से निकल गया "या समद"

अल्लाह ने फ़ौरन फ़रमाया ﴿لبيك لبيك لبيك﴾ मेरे बन्दे मैं हाज़िर हूँ। फ़रिश्ते पुकारे या अल्लाह! ग़ल्ती से बोल बैठा है। उसको तो तेरा पता ही नहीं। इर्शाद हुआ सत्तर साल से इन्तिज़ार में था कभी तो मुझे बुलाएगा। आज बुलाया तो है चाहे भूल से है।

जब उससे ऐसा प्यार है तो जो मानेंगा उससे कैसे प्यार होगा। यह मुबारक ज़िन्दगी हम ने अपने अन्दर ज़िन्दा करनी है और सारी दुनिया के मुसलमानों में ज़िन्दा करनी है। यह हमारी मेहनत है। यह हमारा काम है। ख़त्मे नबुव्वत को हर मुसलमान मर्द मानने वाला है, हर मुसलमान औरत मानने वाली है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िरी नबी हैं हम आख़िरी उम्मत हैं। आपके बाद कोई नबी नहीं हमारे बाद कोई उम्मत नहीं। सारी दुनिया के मर्दों और औरतों से तौबा करवाएं।

इस उम्मत का अन्दर अभी नहीं बिगड़ा सिर्फ़ बाहर बिगड़ा है। मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कलिमा जिस दिल में है उसको कभी बुरा न समझना। आज जो औरत तुम्हें बहुत बड़ी फ़ाहेशा नज़र आती है एक क़दम बढ़ा ले तो उसी पर फ़रिश्ते क़ुर्बान हो जाएंगे।

आज जो नौजवान हमें नाचता नज़र आता है शराब के जाम लुटाता हुआ नज़र आता है यही एक क़दम आगे बढ़ जाए तो फ़रिश्ते भी उसके सामने झुक जाएंगे। उसके पीछे बहुत बड़ी ताक़त है।

मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अरफ़ात के मैदान की दुआ हम सब के पीछे है। इसलिए किसी मुसलमान को

बुरा नहीं समझना चाहिए यह बड़ी अज़ीम उम्मत है। ऐसी उम्मत आज तक नहीं आई। उसकी रगों में मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर है। यह कितना गिर जाए फिर एक दफ़ा उसकी आँख खुल जाए तो यह ऐसा उड़ेगी कि फ़रिश्ते भी उससे पीछे रह जाएंगे।

ईमान को ज़िन्दा कर दिया

अमरीका में जमात गई। बयान हुआ अरबी में। अरबी भी बैठे और औरतें भी बैठीं। बयान के बाद एक लड़की आई तुर्की और कहने लगी एक बात करना चाहती हूँ लेकिन आप लोग मुझ से नफ़रत न करना।

हम ने कहा हम तो मुहब्बत सीखते हैं और मुहब्बत ही फैलाते हैं।

उसने कहा मैं तुर्की हूँ मैंने इस आदमी की बात सुनी है मुझे कुछ समझ नहीं आती क्योंकि मुझे अरबी नहीं समझ आती लेकिन उसका एक लफ़्ज़ मेरे दिल पर हथौड़ा मारता है कि उसकी बात में "ईमान" "ईमान" "ईमान" का बोल बार बार आ रहा था। इस ईमान के बोल ने मेरे ईमान को ज़िन्दा कर दिया। मैं यहाँ एक यहूदी लड़के के साथ बग़ैर निकाह के रहती हूँ। इसलिए मैंने कहा था कि मेरी बात सुनकर नफ़रत न करना। उस लड़के को बुलाओ अगर वह मुसलमान हो जाए तो मेरी शादी उससे कर दो अगर वह मुसलमान नहीं होता तो मैं तुम सब को गवाह बनाती हूँ कि मैं अपनी पिछली ज़िन्दगी से तौबा करती हूँ और मैं वापस चली जाऊँगी।

उस लड़के को बुलाया और तीन दिन तक उसे दावत देते रहे। उसने इन्कार कर दिया फिर उस बच्ची को बुलाया और बताया कि वह तो नहीं मानता। उसने पर्स में से टिकट निकाल कर दिखाया और कहा देखो मैं इस्तंबूल का टिकट ले चुकी हूँ।

जो बच्ची तुर्क अमरीका में हो जहाँ पहले ही बेदीनी है उसको एक बोल "ईमान" "ईमान" उसके दिल के सारे दरीचों को खोल दे तो कितनी क़ाबलियत है इस उम्मत में। इसलिए किसी मुसलमान मर्द व औरत को नफ़रत की निगाह से नहीं देखना चाहिए।

चारों तरफ़ ज़हर

मेहनत कब हुई और किसने की कि यह बच्ची राबिया बसरिया बने, किस ने मेहनत की कि यह बच्चा जुनैद बग़दादी का नमूना बने।

डाल दिया गुनाहों के समन्दर में, गाने बजाने की चारों तरफ़ आवाज़े हों और जब चारों तरफ़ से ज़हर पिलाया जा रहा हो क्या बेबसी है अगर बचना भी चाहें तो नहीं बच सकते।

मस्जिद में बैठे हुए गाने की आवाज़े आती हैं। यह इस उम्मत की मेहनत है मर्दों की भी और औरतों की भी, छोटो की भी और बड़ों की भी। कोई नबी नहीं आएगा। औरतें भी दीन का काम करें, मर्द भी दीन का काम करें। अपने बच्चों को तैयार करें कि जाओ अल्लाह का दीन फैलाओ, अपने ख़ाविन्दों को तैयार करें कि जाओ अल्लाह का दीन सीखो और फैलाओ भी, अपने भाईयों को तैयार करें जाओ अल्लाह का दीन सीखो भी और फैलाओ भी।

क़ब्र का साथी

इसलिए कि नबी कोई नहीं आएगा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िरी नबी हैं। हम मर्दों और औरतों के ज़िम्मे यह ज़िम्मेदारी लगी है कि हम अपने बच्चों को पढ़ने अमरीका भेज सकते हैं तो उनको अल्लाह के दीन के लिए भी भेजो।

वही क़ब्र का साथी बनेगा, उसी का अमल क़ब्र में साथ देगा, डाक्टर बनकर वह क़ब्र में क्या पहुँचाएगा? इन्जीनियर बनकर वह क़ब्र में क्या पहुँचाएगा? बाप मरा पड़ा है और बेटे को पता नहीं इसको ग़ुस्ल कैसे देना है? पराए आदमी को बुलाता है कि मेरे बाप को ग़ुस्ल दो उस की बला क्या है कि कोई सुन्नत छूटे या रहे। उसका कोई बाप मरा है कि उसकी फ़िक्र हो कि मुझे ग़ुस्ल सही देना है।

बेइल्मी का सैलाब

उसको क्या ग़म है बाप मेरा मरा है ग़ुस्ल कोई और दे। जिस बाप ने मेरे लिए करोड़ो रुपए छोड़े आज उसकी मुसीबत के वक़्त में उसके क्या काम आ रहा हूँ। आओ जी मेरे अब्बा को ग़ुस्ल दो।

आओ जी मौलवी साहब मेरे अब्बा का जनाज़ा पढ़ाओ। मौलवी साहब को क्या ग़म है। मौलवी साहब का कोई बाप मरा है। बाप तो मेरा मरा है मुझे हुक्म था कि मैं अपने बाप का जनाज़ा पढ़ाता। अपने बेटे का जनाज़ा पढ़ाता। मुझे हुक्म था अपनी माँ का जनाज़ा पढ़ाता। जो बेटा अपनी माँ का ख़ुद जनाज़ा पढ़ाएगा वह किस दर्द के साथ माँ की बख़्शिश की दुआ

करेगा?

जो बेटा बाप का जनाज़ा पढ़ाएगा वह बेटा किस दर्द के साथ अपने बाप के लिए बख़्शिश की दुआ करेगा? निन्नानवें फ़ीसद तो जनाज़े की दुआ नहीं आती ग़ुस्ल देना तो दूर की बात है।

हम इस मुबारक ज़िन्दगी को सीखें। यह एम०ए०, बी०ए० की डिग्रियाँ और यह मास्टर की डिग्रियाँ क़ब्र में कुछ काम नहीं आएंगी। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि तालीम हासिल न की जाए बल्कि उनके साथ दीन की रोशनी भी हासिल की जाए। वह ज़िन्दगी सीखी जाए कि जिस बाप की वजह से वजूद मिला है, जिस माँ की वजह से वजूद मिला उनके मरने के बाद उन्हें कुछ तो नफ़ा पहुँचा सकें।

यह हमारी मेहनत है। ऐसी ग़फ़लत का ज़माना आ गया कि बेटा बाप का जनाज़ा पढ़ रहा है और उसे जनाज़े की दुआ याद नहीं आती। कितना बड़ा धोका है कि अपने बाप को धोका दे रहा है।

ग़फ़लत से निकलें

मेरे भाईयो!

हम ग़फ़लत से निकलें और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी सीखें, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को फैलाएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िरी नबी हैं। आपके बाद कोई नबी नहीं। तबलीग़ की मेहनत यह दो बातें हैं।

कि हर मुसलमान ख़ुद दीन पर चले।

और हर मुसलमान दीन फैलाए।

हर मर्द फैलाए, हर औरत फैलाए। औरतें औरतों में काम करें और उन्हें बताएं कि अल्लाह के सामने खड़े होकर इस पूरी ज़िन्दगी का हिसाब देना है।

मर्द मर्दों में काम करें। सारी दुनिया में काम करें। माँऐं अपनी तबियत में बढ़ें, बीवियाँ अपनी तबियत में बढ़ें। अपने ख़ाविन्दों को भेजें। यह क़ुर्बान होने वाली उम्मत है। अल्लाह का कलिमा ज़िन्दा हो हम चाहे जहाँ मरें। कल जन्नत में हमेशा के लिए इकठ्ठे होंगे और अल्लाह तआला कहेगा चला जा जन्नत में बीवी को भी ले जा, माँ को भी ले जा, बाप को भी ले जा, औलाद को भी ले जा। आज के बाद कभी जुदाई नहीं।

यहाँ का मिलाप जुदाई में बदलने वाला है, यहाँ की ख़ुशी ग़म में बदलने वाली है, यहाँ की मालदारी फ़क़्र में बदलने वाली है।

आज क्योंकि माँ-बाप को भी समझ नहीं है कि जो मेरा बेटा अल्लाह के रास्ते में जा रहा है यह मेरे लिए कितनी ऊँची रहमत के दरवाज़े खुलवाएगा, बीवी को नहीं पता कि मेरा ख़ाविन्द जो तबलीग़ में अल्लाह के रास्ते में जाएगा कितनी रहमत के दरवाज़े खुलवाएगा। जब मेहनत मिटती है तो समझ भी मिट जाती है फिर भूल जाता है फिर भूलना भी भूल जाता है।

हज़रत ख़न्सा रज़ियल्लाहु अन्हा और उनके बेटों का ज़ज़्बा जिहाद

एक यह माँ है हज़रत ख़न्सा रज़ियल्लाहु अन्हा जो चार बेटों

को लेकर जिहाद में आई हुई है और उन्हें कह रही है बेटा कल जंग है अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कलिमे की

﴿انكم لبنوا رجل واحد﴾

तुम एक बाप के हो।

﴿كما انتم لبنوا امرأة واحدة﴾

जैसे तुम एक माँ के हो।

﴿ما غيرت نسبكم ما حيث اخوالكم وما افلت نسبكم.﴾

मैंने तुम्हारे नसब को ख़राब नहीं किया। मैंने तुम्हारे ननिहाल को ख़राब नहीं किया।

मैंने अपनी इज़्ज़त पर कोई दाग़ नहीं लगने दिया। कल जब अल्लाह के कलिमे की आवाज़ लगे तो चले जाना और मरते जाना जन्नत में इकठ्ठे हो जाएंगे।

यह माँ की दावत है बेटों को एक बेटा गया शहीद हो गया। दूसरा बेटा गया शहीद हो गया। तीसरा बेटा गया शहीद हो गया। चौथा बेटा गया शहीद हो गया और जब उसे कहा गया कि तेरे चारों बेटे क़बूल हो गए तो उसने कहा ﴿الحمد الله﴾ मैं कल जन्नत में उनके साथ रहूँगी।

सदा लगाओ

यह ज़िन्दगी इस जहान को भी बनाएगी और आने वाले को भी बनाएगी। इसको सीखने के लिए भाई मर्द वक़्त निकालें। हर औरत वक़्त निकाले और सारे आलम में इस सदा को लगाए और

दुनिया में जितने काफ़िर मर रहे हैं वे हमारी गर्दन पर हैं। जितने मुसलमान नाफ़रमानी में मर रहे हैं ये भी हमारी गर्दन पर हैं। कारोबार का नुक़सान हमें नज़र आता है लेकिन अगर एक आदमी भी बग़ैर तौबा के मर गया तो यह कितना बड़ा नुक़सान है। एक औरत भी अगर बग़ैर तौबा के मर गई तो यह कितना बड़ा नुक़सान है।

काँटा चुभ गया

एक ताजिर सुबह सुबह दुकान पर आया और अपने तराज़ू को तोड़ दिया। बराबर वाले ने पूछा क्यों तोड़ रहा है? कहने लगा आज मेरा पड़ौसी मर रहा था हम उसे कहते थे कलिमा पढ़ो वह कहता था पढ़ा नहीं जाता। हम ने कहा क्यों नहीं पढ़ा जाता। उसने कहा जो मेरी दुकान का तराज़ू था उसका जो काँटा होता है दर्मियान में चुभ गया जिसकी वजह से कलिमा नहीं पढ़ सकता। उस काँटे से कितनी डंडी मारी होंगी, कितना ग़लत तोला होगा अगर ग़लत तोलकर सारी दुनिया भी अपने पास जमा करते हो तो आख़िरी वक़्त अगर ईमान हाथ से चला गया तो क्या लेकर गया।

मेरे भाईयो और बहनो! हम मक़सद वाले हैं बे मक़सद नहीं हैं कि कमाना, खाना और मर जाना, पहनना पहनाना और मर जाना। नहीं नहीं हमारे सामने मेहनत है कि अल्लाह वाला बनना है और अल्लाह वाला बनाना है।

हुज़ूर सल्लललाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी का सीखना है और सब को हुज़ूर सल्लललाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी को

सिखाना है। इस पर आना है और लाना है, फिरना है और फिराना है, रोना है और रुलाना है।

औलाद को माँएं तैयार करें, ख़ाविन्दों को बीवियाँ तैयार करें, भाईयों को बहनें तैयार करें जैसे पहले ज़माने की औरतों ने तैयार किया और सारी दुनिया में इस्लाम फैल गया।

तश्कील और दुआ

○ ○ ○

इस्लामी समाज का वजूद

الحمد لله وكفى والصلوة والسلام على رسوله الكريم
وعلى اله واصحابه اجمعين اما بعد.
فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم.
بسم الله الرحمن الرحيم.
ان الذين امنو وعملو الصلحت اولئك هم خير البرية .وقال
تعالى من عمل صالحا فلنفسله ومن اساء فعليها.
وقال النبي صلى الله عليه وسلم ان في الجسد
مضغة اذا صلحت صلح الجسد كله واذا فسدت
فسد الجسد كله الا وهي القلب اوكما قال صلى
الله عليه وسلم .صدق الله مولانا العظيم.

मेरे भाईयो और दोस्तो!

इस्लामी समाज की कुछ बुनियादें हैं। जिसमें सबसे पहला तसव्वुर यह दिया जाता है कि हम इस दुनिया में आज़ाद नहीं हैं। हमें जिसने पैदा किया है वह हमारी जान का मालिक है। हमें जो चीज़ें मिली हैं यानी ज़िन्दगी, रिज़्क़, दौलत जो कुछ मिला है बतौर मिल्क नहीं बल्कि बतौर अमानत मिला है और इसमें हमारा इम्तिहान है।

हमें क्या सिखाया जा रहा है?

यह पहली बुनियाद है। यहाँ से बात को उठाया जाता है। इस सारी बुनियाद ताबीर है ﴿لا إله إلا الله﴾ *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* हमारे माहौल में जो कुछ हमें सिखाया जा रहा है वह यह है कि यह सब कुछ तुम्हारा है। तुम ने दुनिया में बड़ा बनना है और बड़ा बनने का तसव्वुर क्या है?

दौलतमंद हो, इज़्ज़त वाला हो, शोहरत वाला हो, ओहदे, कारोबार, मालदार, सोसाईटी, बड़े घर, बड़े लोगों से ताल्लुक़।

यह हमारा मक़सद बताया जा रहा है और इनके हासिल करने के लिए हमें भगाया और दौड़ाया जा रहा है। यह दौड़ है जिसका कोई आख़िर नहीं सिवाए मौत के वक़्त की हसरत, नदामत और अफ़सोस के।

अब्दुल मलिक की हसरत

अब्दुल मलिक बिन मरवान ने लाखों आदमी क़त्ल किए अपनी हुकूमत का तख़्त बिछाने के लिए। उसके गर्वनर हज्जाज ने सवा लाख इन्सानों को क़त्ल किया। जो उसने ख़ुद किए वे अलग हैं। जो जंगों में हुए वे अलग हैं और उसने कोई उन्नीस साल हुकूमत की। बनू उमैय्या का तख़्त बिछाया लेकिन जब उसकी मौत का वक़्त आया। बाहर एक धोबी कपड़े धो रहा था और वह धोबी जब कपड़ा पत्थर पर मारता तो आवाज़ आती थी। खिड़की खुली थी उसने कहा यह क्या आवाज़ है?

ख़ुद्दाम ने कहा धोबी कपड़े धो रहा है।

अब्दुल मलिक ने ठंडी आह भरकर कहने लगा काश! मैं एक ग़रीब क़ुरैशी होता। लोगों के ऊँट चराता। ताज़ा मज़दूरी मिलती उसे खाकर ज़िन्दगी गुज़ार जाता और इस हुकूमत व तख़्त का ज़ाएक़ा मैंने न चखा होता लेकिन आज का अफ़सोस किसी काम नहीं। तीर कमान से निकल चुका है। वक़्त एक ऐसा तेज़ रफ़्तार तीर है। कमान से निकला हुआ तीर तो फिर भी उठाया जा सकता है फिर चलाया जा सकता है लेकिन वक़्त का निकला हुआ तीर ज़मीन व आसमान उलटी छलाँग लगाएं या सीधी वक़्त के निकले हुए तीर को वापस लाने की कोई शक्ल नहीं।

बुनियादी तालीम

हमारी बुनियादी तालीम ग़लत हो रही है। हमारे सामने दुनिया को बतौर मक़सद के पेश किया जा रहा है। सबसे बड़ी ख़ता है। पढ़े लिखे, अनपढ़, हुकूमत, सदर, वज़ीर, मुशीर, मर्द, औरतें, माँ-बाप हम सब इस ख़ौफ़नाक ख़ता का शिकार हैं कि हम अपनी औलाद को दुनिया बहुत बड़ी बना कर दिखा रहे हैं और दौलत व इज़्ज़त व शोहरत में उन्हें बेहतरीन मुस्तक़बिल दिखा रहे हैं कि यह तुम्हारा रोशन मुस्तक़बिल है।

फ़िक्री गुमराही

मेरे भाइयो!

इससे बड़ा ज़ुल्म इस नस्ल पर नहीं हुआ कि हम फ़िक्री तौर गुमराह हो चुके हैं। अमली गुमराही तो बहुत ज़माने से थी लेकिन

फ़िक्री गुमराही पिछली सदी से शुरू हुई। अमली तौर पर कमी ज़्यादती हर दौर में होती रही और पिछले क़रीबी दौर में ज़्यादा हो गई है लेकिन पिछली सदी में हम फ़िक्री तौर पर हार चुके हैं और नज़रियाती तौर पर हमारी किश्ती डूब गई है और हम वह किश्ती बन गए जिसके बादबान फट चुके हों और जिसके पेन्दे में सुराख़ हो चुके हों। अब बड़ा मल्लाह और बड़े से बड़ा खवैय्या इस किश्ती को किनारे नहीं लगा सकता। इसके मुक़द्दर में मौजों के रहम व करम पर चलना है। वह उल्टी चलेंगी तो किश्ती उल्टी चलेगी, वह सीधी चलेंगी तो किश्ती सीधी चलेगी। अब उसकी अपनी मंज़िल कोई भी नहीं रही। यह वह किश्ती है और उस किश्ती के मुसाफ़िर हैं जिनका कोई घाट नहीं है। जिनकी कोई मंज़िल नहीं है बल्कि जहाँ मौजें फेंकेंगी वहाँ फिंक जाएंगे, डुबोएंगी तो डूब जाएंगे। किसी घाट पर उतार दें। उनके अपने ज़ाती इख़्तियार और इरादे छिन चुके हैं।

तो यह सबसे बड़ी इस वक़्त हम पर आफ़त है कि बसंत मनाना, नाचना कूदना यह ज़ाहिर में छोटी छोटी चीज़ें हैं लेकिन अपनी ज़ात में यह बहुत बड़े गुनाह हैं। जिस क़ौम का एक बच्चा नहीं करोड़ों बच्चे भूखे सोते हों वह क़ौम छत पर चढ़कर एक ही रात में करोड़ों रुपए को आग लगा दे उससे बड़ा ग़ाफ़िल और नादान कौन हो सकता है।

मुझे इतना सदमा हुआ कि यह जो पिछले दिनों क्रिकेट के बारे में जिसको देखो ग़मगीन है तो फिर मेरा ग़म और बढ़ गया। मेरा रोना और बढ़ गया कि जो क़ौम खेलकूद पर तो ग़मगीन हो लेकिन लाखों बच्चे रात को भूखे सो जाएं तो न किसी मालदार के

माथे पर बल पड़े न किसी ग़रीब की हाय निकले।

फ़ैसलाबाद के पिच्चानवें फ़ीसद मर्द व औरत पाँच में से एक नमाज़ भी अदा नहीं करें और बग़ैर नमाज़ पढ़े उन पर सुबह चढ़े।

और बग़ैर नमाज़ पढ़े उन पर शाम आए। इन्ही सुबहों और शामों में उनकी ज़िन्दगी का कारवाँ चल रहा है और एक आँख भी आँसू न बहाए।

लाखों औरतें बाज़ार में बेपर्दा हो कर जा रही हों और किसी की हाय न निकली हो।

सारे बाज़ार में दुकानदार झूठ पर सौदा बेच रहे हों।

और अदालतों के कलम कुछ लाख पर बिक रहे हों।

और वकील ज़ानी को पनाह देने के लिए अपना इल्म इस्तेमाल कर रहा हो और ज़ालिम को बचाने के लिए छोटे और बड़े इस्तेमाल हो रहे हों। इस पर कोई न रोया, कोई ग़मगीन न हुआ, किसी को ग़म न हुआ और एक बदबख़्त गेम के हारने पर सारे ग़मगीन तो मैंने कहा इस कौम को एटम बम बनाने से भी कोई फ़ायदा नहीं और उन्हें एटम बम मारने से भी कोई फ़ायदा नहीं ऐसे ही एटम बम ख़राब करना है ये तो पहले मर चुके हैं। यह क़ौम मर चुकी है।

यह समाज मर चुका है। जिस समाज सोच इस क़द्र पस्ती का शिकार हो जाएं कि वे खेलकूद को इज़्ज़त व ज़िल्लत का मैयार क़रार दें और फिर उस ज़माने का खेल जब ख़ून पानी की तरह सस्ता होकर बह रहा हो। इज़्ज़ते सरे बाज़ार निलाम हो रही हों, और दुपट्टे फट के तार तार हो चुके हों और मस्जिदें वीरान हो

चुकी हों और सूद की इमारतें सरेआम दावत नज़ारा दे रही हों और बाज़ार में नाचने वाली मुसलमान की बेटी हो और देखने वाले भी मुसलमान के बेटे हों, नाचने वाले भी मुसलमान हों, तबले वाले भी मुसलमान हों, थाप पर घुंघरू की छन छन को वजूद देने वाली भी मुसलमान बच्ची हो और फिर यह बस कुछ सरेआम हो रहा हो और कोई आँख आँसू न बहाए, किसी की हाय न निकली हो, कोई भी न तड़पता हो और इस बदबख़्त गेम और खेल पर लोग ग़मगीन और परेशान हों।

मैं अगर ख़ून के आँसू कहीं से लाऊँ और उन से रोना चाहूँ तो भी इस कौम का रोना पूरा नहीं हो सकता। मेरे और आपके आँसूओं में किश्ती चल पड़ें फिर भी उस क़ौम की बदबख़्ती का रोना नहीं रोया जा सकता।

मैं ने कहा हम नज़रियाती तौर पर हार चुके हैं। हमें नहीं पता कि हमारी क्या मंज़िल है।

नज़रियाती हार

मेरे भाईयो!

यह बहुत बड़े गुनाह हैं ज़ाहिर में छोटी चीज़ें नज़र आती हैं। सबसे बड़ी बाज़ी जो हम हारें हैं वह नज़रियात की हार है। हार तो नबियों को भी हुई।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्या ओहद की लड़ाई में हार नहीं हुई?

हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु जैसी पाक हस्ती भी करबला में ज़ेर व

ज़बर हो गई और टुकड़े टुकड़े हो गए। आले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में से सोलह ऐसे नौजवान जिनका एक एक बाल ज़मीन व आसमान से ज़्यादा क़ीमती था। उनका ख़ून ढेरों ढेर और सेरों सेर करबला की वादी में बह गया और कटे हुए सर और कटे हुए धड़। बिखरी हुई बोटियाँ पुकार पुकार कर बता रही हैं कि मैदान की हार कोई हार नहीं है अगर अल्लाह राज़ी है तो हम कामयाब हैं चाहे हम फ़तेह पाएं या हारें।

और अगर अल्लाह तआला नाराज़ है तो हम नाकाम हैं चाहे हम ने झंडे गाड़ दिए या हमारा झंडा झुके। हम इस मैदान में अर्से से शिकस्त खाते आ रहे हैं। नबियों ने हार खाई और यह पहली दफ़ा हार हुई कि हम नज़रियाती तौर पर डूब चुके हैं। हमारे पास कोई मंज़िल नहीं है। हमारे पास कुछ नहीं सिवाए माल इकठ्ठा करने और पैसा कमाने के।

मेरे भाईयो!

इस ज़ुल्म पर तो रोता कोई नहीं। हुकूमत टैक्स लगा दे तो हड़ताल कर देते और अगर हुकूमत कोई फ़ैसला करे तो हड़ताल कर देते हैं। तक़रीरें होती हैं और यह जो घर घर में ज़ुल्म हो रहा है इस पर कौन हड़ताल करता है।

यह जो घर घर का चार साला बच्चा गले में टाई लटकाए स्कूल जा रहा है इस पर कौन हड़ताल करे।

जिस क़ौम को अपना लिबास पहनना नहीं आता। वह दुनिया पर क़यादत का हक़ क्यों मांगती है? वह दुनिया में इज़्ज़त क्यों मांगती है? वह दुनिया में पहचान क्यों चाहती है जो नस्ल अपनी पहचान खुद ज़िब्ह करे।

जो माली अपने चमन को खुद अपने कुल्हाड़े से काटे वह चमन के सूखने की शिकायत करने को कैसे हक़दार हो सकता है हाँ जो ख़ून दे और ख़ून से पौध को सींच रहा हो और पत्ते पत्ते पर जान क़ुर्बान कर रहा हो। उसका कोई फूल टूटे तो उसका गिला बजा है और जो खुद चमन को आग लगा रहा हो, जो खुद डाली डाली को तोड़ रहा हो, जो खुद उसकी जड़ों को उखाड़ रहा हो वह क्यों गिला करता है की ख़िज़ां आ गई, ख़िज़ां आ गई।

तो भाईयो!

इस नज़रियाती हार का कोई इलाज नहीं। ऐटम बम बनाने का क्या फ़ायदा होगा वापस लौटना पड़ेगा और अपने दीन पर आना पड़ेगा वे चन्द बुनियादें हैं जिन पर इस्लामी समाज क़ायम है। कुछ बुनियादें। इन बुनियादों को ज़िन्दा करने के लिए पहला फ़र्ज़ माँ-बाप के ज़िम्मे है फिर पढ़ाने वालों के ज़िम्मे हैं फिर माहौल है फिर समाज है फिर हर फ़र्द है कि एक दूसरे को इस बुनियाद पर क़ायम रखना वह टूट गया तो सब कुछ टूट गया।

पहली बुनियाद तौहीद

अल्लाह तआला ने सूरहः लुक़मान में इन बुनियादों को मुख़्तसिर तौर पर बयान किया है उनमें सबसे पहली चीज़ हज़रत लुक़मान की नसीहत और वसीयत की शक्ल में है। यह एक ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा है। यह एक बुनियादी सुतून है इस्लामी समाज का।

﴿يبنى لا تشرك بالله﴾

पहला- सबक़ *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* कि हम अपनी ज़ात के भी मालिक नहीं अगर हम अपनी ज़ात के मालिक होते तो हम पर मौत न आती।

अगर हम अपनी ज़ात के मालिक होते तो हम सदा रहने की तमन्ना करते।

अगर हम अपनी ज़ात के मालिक होते तो हम अपने क़रीब ही न फटकने देते बीमारियाँ हमारे क़रीब भी न गुज़रतीं लेकिन हम तो हर वक़्त आफ़तो के ख़ूंख़ार पंजों में हैं और वह हमें झंझोड़ भी रही हैं लेकिन हम तो बेबस हैं और देखते नहीं हो कि कोई और है जो हम पर फ़ैसले जारी करता है।

तो पहली बुनियाद *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* कि हर बच्चा और बच्ची, बड़ा और छोटा, मर्द और औरत, ताजिर और काश्तकार, देहाती और शहरी। यह बुनियाद अपने दिल में उतारे कि मैं अल्लाह की मानकर चलना है। ﴿يعنى لا تشرك بالله﴾

तौहीद व रिसालत का ज़रूरी होना

और तौहीद रिसालत के बग़ैर क़बूल नहीं होती और रिसालत बग़ैर तौहीद का कोई बोल नहीं है।

लिहाज़ा ﴿لا تشرك بالله﴾ के अन्दर ही ﴿محمد رسول الله﴾ *"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"* छुपा हुआ है। ﴿لا اله الا الله﴾ *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* के अन्दर ही *"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"* छिपा हुआ है।

इस तौहीद व रिसालत के बग़ैर यह कलिमा ईमान का कलिमा नहीं है। यह कलिमा इस्लाम का कलिमा नहीं है तो *"ला-इला-ह-*

इल्लल्लाह" दिल की चीज़ है और *"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"* ज़ाहिर की चीज़ है। *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* नज़र नहीं आता और *"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"* छिप नहीं सकता। यह दोनों एक दूसरे की ज़िदें हैं।

एक ऐसा खुला हुआ कि छिपाओ तो छिप न सके।

एक ऐसा छिपा हुआ है कि दिखाओ तो दिखाया न जा सके। तो लिहाज़ा *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* दिल में, इसकी पहचान होगी *"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"*।

औरत है तो उसकी ज़िन्दगी बताएगी मर्द है तो उसकी ज़िन्दगी बताएगी, ताजिर है तो उसकी तिजारत बताएगी, खेती है तो उसकी खेती बताएगी। ज़िन्दगी की तमाम लाईनों में जब *"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"* झलकता है, चमकता है, दमकता है तो यह इस बात की निशानी है कि *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* दिल में उतरा हुआ हो।

जब पेड़ों पर फल लगते हैं और उनके गुच्छे लटकते हैं तो यह इस बात की निशानी होती है कि इसकी जड़ें जमी हुई हैं और उतरी हुई हैं। इसी तरह जब *"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"* घर में, आफ़िस में, बाज़ार में, जिस्म पर, अख़्लाक़ पर, बोल पर, नज़र पर, हाथों पर, पाँव पर, तमाम जिस्म पर और ज़िन्दगी की सारी लाईनों पर हावी हो जाता हे तो यह इस बात की निशानी होती है कि *"ला-इला-ह-इल्लल्लाह"* की जड़ें जमी हुई हैं।

दूसरी बुनियाद माँ-बाप से अच्छा सलूक

दूसरी बुनियाद है

﴿ووصينا الانسان بوالديه حسنا﴾

अल्लाह और उसके रसूल के हक़ के बाद वह माँ-बाप का है कि हम ने कहा माँ-बाप की ख़िदमत करो, एहसान करो, अच्छा सलूक करो। अल्लाह तआला ने तौहीद के साथ ही माँ-बाप का ज़िक्र किया है और दूसरी जगह फ़रमाया

﴿وقضی ربك الا تعبدوا الا اياه وبالوالدين احسانا﴾

हमारा फ़ैसला है तुम्हारे लिए मेरे बन्दों कि अपने रब के ग़ुलाम बनकर चलो और अपने माँ-बाप के साथ एहसान करो। माँ-बाप की ख़िदमत करो।

यह दूसरी बुनियाद है तौहीद व रिसालत के बाद यह दूसरी चीज़ है कि औलाद को माँ का मक़ाम समझाया जाए बाप का मक़ाम बताया जाए। माँ-बाप की आहें अल्लाह का अर्श हिला देती हैं। नस्लें बर्बाद हो जाती हैं। माँ बद्दुआ देने वाली कोई नहीं होती लेकिन जब वह हाय करती है औलाद के दुःख सह कर तो वह हाय बद्दुआ से कम नहीं होती।

माँ-बाप की नाफ़रमानी की सज़ा

एक सहाबी का इन्तिक़ाल हो रहा है और उससे कलिमा नहीं पढ़ा जा रहा था। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बताया गया कि फ़लाँ आदमी कलिमा नहीं पढ़ पा रहा है। सहाबी! सहाबी नबियों के बाद दुनिया के अफ़ज़ल तरीन इन्सान। उन जैसा कोई हो ही नहीं सकता। आप तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहली नज़र में देख लिया कि किसी गुनाह की नहूसत ने ज़बान बन्द कर दी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़ौरन उसकी माँ को बुलवाया। जब वह आ

गयीं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया! अपने बेटे को माफ़ कर दे।

उसने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं माफ़ नहीं करूंगी इसलिए कि इसने मुझे बहुत दुःख दिया हैं।

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि फिर मैं इसको आग लगा दूं?

उसने कहा यह भी मुझे बर्दाश्त नहीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर तूने इसे माफ़ नहीं किया तो यह सीधा दोज़ख़ में जाएगा।

उसने कहा अच्छा या रसूलुल्लाह! मैं उसे माफ़ करती हूँ। इधर उसके मुँह से निकला माफ़ उधर उसकी ज़बान से कलिमा जारी हो गया ओर साथ ही जान निकल गई और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जनाज़ा पढ़ाया।

जिसको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत नसीब थी। उसने भी जब माँ की नाफ़रमानी की तो उसकी नहूसत भी सबके सामने खुलकर आ गई। यह वह नहूसत है जिसके बारे में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

> "शिर्क के बाद सबसे कबीरा (बड़ा) गुनाह माँ-बाप को दुःख देना है और माँ-बाप की नाफ़रमानी है।"

यह आज घर घर में हो रही है।

जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने एक दिन पूछा या रसूलुल्लाह! क़यामत कब आएगी? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह को पता है कब आएगी।

उन्होंने फ़रमाया जब तुम देखो की माँओं के साथ औलाद नौकर

जैसा सलूक कर रही हो तो समझ लेना कयामत के नक़्क़ारे पर चोट पड़ने वाली है।

यह वह दूसरी बुनियाद है जो बिल्कुल टूट चुकी है। माँओं के आँसू बाप के सदमे और हाय अर्श हिला रहे हैं लेकिन औलाद के कानों में ऐसा ढक्कन पड़ चुका है। संगीत ने उनके कानों को इतना गन्दा कर दिया है और स्क्रीन ने उनकी आँखों को इतना अंधा कर दिया कि उन्हें माँ-बाप की हाय सुनाई देती है।

न उनके आह भरे चहरे दिखाई देते हैं और वे बदबख़्त सिर्फ़ और सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिश के ग़ुलाम हैं। यह कयामत के दिन बदतरीन शक्ल में उठाए जाएंगे।

तौबा पर तो हर चीज़ माफ़ हो जाती है लेकिन अगर तौबा न की तो उनकी ख़ैर नहीं है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

> **"एक गुनाह ऐसा है जिस चीज़ की सज़ा दुनिया में भी मिलेगी और आख़िरत में भी मिलेगी बाक़ी गुनाह ऊपर हैं लेकिन एक गुनाह ऐसा है जिसकी सज़ा यहाँ भुगत के मरना होगा और वह माँ-बाप की नाफ़रमानी है।"**

तो यह हमारी दूसरी बुनियाद है। जिस पर हमारा समाज शक्ल पाता है और बनता है।

माँ-बाप का हक़ अदा नहीं हो सकता

एक बद्दू ने माँ को कन्धे पर सवार करवा कर तवाफ़ करवाया। ख़ुद अपना तवाफ़ भी काफ़ी मुश्किल होता है फिर

किसी को कन्धे पर बिठाकर तवाफ़ करना और मुश्किल है। वह हाँप गया और थक गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा सामने बैठे हुए थे। उनसे जाकर कहने लगा हज़रत! क्या मैंने माँ का हक़ अदा कर दिया?

तो उन्होंने फ़रमाया तेरी माँ ने तुझे पालते हुए जो लाखों साँस लिए लम्बे लम्बे उनमें से एक साँस का भी अदा नहीं हुआ। एक साँस का हक़ अदा नहीं हुआ। यह नहीं कहा कि एक साँस का हक़ अदा हो गया बल्कि फ़रमाया अभी तो एक साँस का हक़ अदा नहीं हुआ तू क्या कह रहा है कि तूने सारे हक़ अदा कर दिए। यह हमारी दूसरी बुनियाद है।

तीसरी बुनियाद आख़िरत का यक़ीन

तीसरी बुनियाद है

ينبى انها ان تلك مثقال حبة من خردل فتكن فى صخرة او فى
السمٰوٰت او فى الارض يات بها الله ان الله لطيف خبير.

तीसरी बुनियाद आख़िरत को सामने रखना है और ईनाम व सज़ा का दिल में यक़ीन बिठाना है। अच्छे और बुरे के बीच फ़र्क़ बताना है।

खुलासा यह है कि ऐ मेरे बच्चे तू एक राई के दाने के बराबर अच्छाई करे या बुराई करे, पहाड़ की गुफ़ा में छिपकर करे या ख़लाओं में उड़कर करे, ज़मीन की तह में गुम होकर करे या जहाँ करे, अन्धेरे में उजाले में, खुल्लम खुल्ला करे या अकेले में करे तेरे रब की नज़र इतनी ताक़तवर है कि ख़लाओं में भी फ़िज़ाओं से

भी, ज़मीन की तहों से भी और पहाड़ों की ग़ारों से भी जहाँ भी तू कोई अमल करेगा तेरे अमल को निकाल कर बाहर लाएगा और क़यामत के दिन तेरे सामने कर देगा।

﴿وان كان مثقال حبة من خردل اتينابها وكفى بنا حاسبين.﴾

एक राई यानी चीनी का एक दाना उठाकर हथेली पर रख लें तो यह राई के के दाने के बराबर है अल्लाह तआला कह रहा है इस दाने के करोड़वें हिस्से के बराबर भी अगर तूने कोई अमल किया अच्छा या बुरा तो मैं उसे खींचकर तेरे सामने कर दूंगा।

﴿اتينا بها﴾ खींचूंगा और तेरे सामने कर दूंगा और फिर कहूंगा ﴿وكفى بنا حاسبين﴾ है कोई मेरे जैसा हिसाब करने वाला? फिर तुम इन्कार नहीं कर सकते।

यह तीसरी चीज़ है जो हमने अपने समाज में ज़िन्दा करनी है कि कोई देख रहा है, कोई देख रहा है। यह एहसास जवान की जवानी को पाक कर देगा, ताजिर के तराज़ू को सीधा कर देगा, वकील के क़लम को सही चलाएगा, क़ाज़ी के फ़ैसलों को ठीक कर देगा।

आख़िरत का एहसास

मलिक महमूद मुज़फ़्फ़र बादशाह था गुजरात का उसकी हुकुमत बड़ी नाक़बर थी। उसने अपने दरबार में एक आदमी तय किया हुआ था जिसके हाथ में कफ़न रहता था। उसको काफ़ूर लगा हुआ था उसके ज़िम्मे था कि जब तुम देखो कि मैं कोई ज़ुल्म का फ़ैसला सुना रहा हूँ तो तुमने खड़े होकर इस कफ़न को लहरा देना

है।

बादशाह तो बादशाह होते हैं तो जब वह कोई ऐसा फ़ैसला करता तो वह खड़ा होकर कफ़न लहरा देता था। बस कफ़न लहराना होता था कि मलिक महमूद बेहोश होकर वहीं तख़्त पर गिर जाता था और जब होश में आता तो अपना फ़ैसला वापस ले लेता।

यह आख़िरत का एहसास किसी माँ ने उस के दिल में बिठा दिया था कि बादशाह होकर भी वह इस एहसास के साथ ज़िन्दा रहा और बादशाही में ही जन्नत कमा गया और आज चपरासी होकर ज़ुल्म नहीं छोड़ता।

यह हमारी तीसरी बुनियाद है कि एक ज़िन्दगी है जिसका हमें मौत के बाद सामना करना है और वहाँ हमें अल्लाह के सामने पेश होना है। लिहाज़ा हम आज़ाद नहीं

﴿افحسبتم انما خلقنكم عبثا وانكم الينا لا ترجعون.﴾

यह ख़्याल दिल से निकाल दो कि तुम आज़ाद हो और तुम पर कोई निगरान नहीं है और तुम्हें लौट कर नहीं आना।

﴿ايحسب الانسان ان يترك سدى﴾

यह बात ज़हनों से निकाल दो कि मौत के बाद तुम्हें कोई पूछने वाला नहीं है। नहीं! नहीं बल्कि ताक़तवर निज़ाम है।

चौथी बुनियाद नमाज़ क़ायम करना

चौथी चीज़ जिस पर हमने अपने समाज को उठाना है शक्ल देना है। फ़रमाया

﴿يبنى اقم الصلوة﴾

ऐ बेटा! ऐ बेटी नमाज़ नहीं छोड़ना। नमाज़ पढ़ो। कोई समाज इस्लामी नहीं हो सकता नमाज़ के बग़ैर।

समाज इस्लामी नहीं कहला सकता नमाज़ के बग़ैर। सारी ऊँची सिफ़ात मौजूद हों लेकिन नमाज़ न हो तो वह समाज इस्लामी नहीं कहलाएगा। नमाज़ मौजूद हो और बाक़ी आमाल में कमी कोताही हो तो फिर भी यह बात बड़ी पहचान है कि यह इस्लामी समाज है। लोग भागते हैं मस्जिदों को।

अबु सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु पर नमाज़ का असर

फ़तेह मक्का पर अबु सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु को जब पकड़ लिया और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु लेकर आए थे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसको अपने ख़ेमे में ठहराओ। जब फ़ज्र की अज़ान हुई तो लोग दौड़े तो अबु सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा यह क्या कर रहे हैं? क्या हमला की तैयारी कर रहे हैं?

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा नहीं बल्कि नमाज़ के लिए जा रहे हैं। अबु सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे यह तेरे भतीजे की हर बात मानते हैं।

कहा हाँ हर बात मानते हैं चाहे वह मुतालबा रखें कि जान भी दे दो और माल भी दे दो तो ये जानें भी दे देते हैं और माल भी क़ुर्बान कर देते हैं।

अबु सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अब्बास! मैंने बड़े बड़े बादशाहों के दरबार देखे हैं लेकिन तेरे भतीजे जैसा मुल्क और बादशाही मैंने देखी ही नहीं है।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे अबु सुफ़ियान! यह मुल्क नहीं बल्कि यह नबुव्वत है, बादशाही नहीं है। बादशाहों की ऐसी नहीं मानी जाती।

हमारे समाज की बड़ी पहचान नमाज़ है नमाज़।

﴿يبنى اقم الصلوٰة﴾

ईमान ﴿لا اله الا الله﴾

वालिदैन ﴿ووصينا الانسان بوالديه حسنا﴾

आख़िरत जज़ा सज़ा ﴿انها ان تك مثقال حبة﴾ नेकी और बदी की समझ

चौथी चीज़ है नमाज़।

﴿يبنى اقم الصلوٰة﴾

नमाज़ को ज़िन्दा करो अगर यह मेहनत माँ-बाप ने की होती तो क्या आज पिच्चानवें फ़ीसद बेनमाज़ी नज़र आते? कोई कोई होता जो नमाज़ छोड़ता और सबकी दौड़ मस्जिद की तरफ़, सब भागते मस्जिद की तरफ़।

एक मिसाल से वज़ाहत

मेरा नौकर दो हज़ार, दस हज़ार बीस हज़ार, चालसी हज़ार तन्ख़ाह वाला मेरे सामने बैठा हो मैं उससे कहूँ भाई बात सुनो। वह आगे

से हाँ हूँ न करें।

फिर मैं कहूँ भाई बात सुनो। वह फिर भी चुप करके देखना रहे, फिर मैं कहूँ भाई बात सुनो। वह फिर भी चुप करके देखना रहे, फिर मैं चौथी दफ़ा कहूँ भाई बात सुनो। वह फिर भी चुप करके देखता रहे। फिर मैं पाँचवी दफ़ा कहूँ भाई बात सुनो। वह फिर भी इसी तरह चुप करके देखता रहे।

मेरी पाँच पुकार अगर वह न हाँ करे और न करे तो मेरे दिल में उसके बारे में क्या आएगा? क्या मैं उसे नौकरी पर रखूंगा? क्या मैं उसे बर्दाश्त करूंगा? मैं कहूंगा तू क्या घमंडी आदमी है हमारी बिल्ली हमें मियाऊँ हालाँकि मैंने उसे दिया क्या है आपको मालूम है। यह दुकान वाले सेलमैन को क्या देते हैं ज़्यादा से ज़्यादा तीन हज़ार, ये मील वाले मज़दूरों को क्या देते हैं ज़्यादा से ज़्यादा साढ़े तीन हज़ार। साढ़े तीन हज़ार में आज के ज़माने में चुल्हा भी नहीं जलता लेकिन उसके बावजूद उनका कितना एहसान है। वह एक दिन न जाए तो उस दिन के पैसे भी काट लेते हैं। ऐसे बख़ील लोग हैं।

अल्लाह के राज़ी और नाराज़ होने की निशानियाँ

मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया या अल्लाह! तेरे नाराज़ होने की निशानी क्या है? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया जब मैं नाराज़ होता हूँ तो बारिशें बेवक़्त करता हूँ, पैसा बख़ीलों को देता हूँ, हुकूमत ज़ालिमों और बेवक़ूफ़ों को देता हूँ।

तो आज पैसा बख़ीलों के पास है, हुकूमत बेवक़ूफ़ों के पास है,

बारिशों का निज़ाम दरहम बरहमह है। ज़मीनें तड़प रही हैं। कलियाँ आसमान की तरफ़ देख रही हैं लेकिन इन्सानों की नाफ़रमानियों ने उनको भी तड़पा के रख दिया है और प्यासा छोड़ दिया गया है।

फिर पूछा या अल्लाह! जब तू राज़ी होता है तो क्या करता है?

कहा जब मैं राज़ी होता हूँ तो बारिशें वक़्त पर करता हूँ, पैसा सख़ियों को देता हूँ और हुकूमत समझदारों को देता हूँ। अल्लाह हम से रूठा हुआ है और उसने पैसा बख़ीलों को दे दिया है जो अपने ऊपर ख़र्च करते हुए लाखों उड़ा देंगे और ग़रीब को देते हुए उनकी मुठ्ठी में भी पसीना आ जाता है।

कामयाबी की पुकार

पाँच दफ़ा बुलाया और वह उठकर न आया तो क्या रवैय्या होगा मैं कहूंगा निकल जाओ, हिसाब करो, उठ जाओ और अल्लाह दिन में पाँच दफ़ा बुलाने आता है ﴿حی علی الصلوۃ﴾ और हर दफ़ा दो दफ़ा बुलाता है ﴿حی علی الصلوۃ، حی علی الصلوۃ﴾ आ जाओ नमाज़ की तरफ़ आ जाओ क्या मिलेगा ﴿حی علی الفلاح﴾ मैं तो नौकर के कोई न कोई काम ज़िम्मे लगा रहा हूँ और अल्लाह तआला फ़रमा रहा है आ जा मुझे सज्दा कर तुझे कामयाबी मिलेगी ﴿حی علی الفلاح﴾ अब तेरे लिए कामयाबी मस्जिद में है। आ जाओ, आ जाओ। वह चुप करके बैठा हुआ है, सोया हुआ है तो जागता नहीं, बैठा हुआ है तो उठता नहीं। उसके बावजूद भी अल्लाह इनायतों और रहमतें बराबर उसके बन्दों पर जारी हैं।

मैं तो अपने नौकर को पाँच दफ़ा न मानने पर उठाकर बाहर फेंक दूँ। मेरा अल्लाह अगर यह करता तो आज सत्तानवें फ़ीसद इन्सानों की शक्लें बिगड़ चुकी होतीं।

कितना उसका करम है, कितना उसका एहसान है कि बीस बरस से एक आदमी को पुकारा। एक दफ़ा हमारे फ़ैसलाबाद में हम दो आदमियों को मस्जिद में लाए। मैंने उनसे बात शुरू की तो वह कहने लगे आज हम पहली दफ़ा मस्जिद में आए हैं।

मैं समझा इस मस्जिद में पहली दफ़ा आए होंगे। उनकी उम्र कोई पैंतीस से चालीस साल के बीच थी तो मैं ने कहा इस मस्जिद में पहली दफ़ा आए हो? तो वे कहने लगे नहीं हम वैसे ही ज़िन्दगी में पहली दफ़ा आए हैं।

मैंने कहा तुमने कभी नमाज़ नहीं पढ़ी?

कहने लगे आज तक नहीं पढ़ी।

मैंने कहा जुमा तो पढ़ा होगा?

कहने लगे आज तक नहीं पढ़ा।

मैंने कहा कोई ईद तो पढ़ी होगी?

कहने लगे आज तक नहीं पढ़ी।

कितनी बर्दाश्त है मेरे अल्लाह को जो इतना कुछ देखकर भी कहता है अच्छा अच्छा कोई बात नहीं। मोहलत देता हूँ, मोहलत देता हूँ, कभी तो तौबा करोगे, कभी तो तौबा करोगे। इतना ज़ुल्म आप देख रहे हैं और किसी को कोई ग़म नहीं क्रिकेट हारे और सब को ग़म हो रहा है। कितनी बड़ी बदबख़्ती कि एक बेकार और खेल तमाशे और नाफ़रमानी की चीज़ पर ग़म, सदमा और

अफ़सोस और पिच्चानवें फ़ीसद ग़ाफ़िल है नमाज़ नहीं पढ़ता, नमाज़ी भी नहीं रोए, उलमा भी नहीं रोए, तहज्जुद गुज़ार भी नहीं रोए। हमारी पहचान है नमाज़।

﴿يبنى اقم الصلوة﴾

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की आख़िरी नमाज़

उठो नमाज़ पढ़ो। कितना ख़ौफ़ का आलम था करबला में। हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने पैग़ाम भिजवाया कि हमें नमाज़ पढ़ने दो ज़ोहर की क्योंकि अस्र तो पढ़ ही नहीं सके उससे पहले ही शहीद हो गए।

तो शिमर ने कहा तुम्हारी नमाज़ क़बूल ही नहीं।

मैंने कहा तेरा बेड़ागर्क़ हो जाए अगर आले रसूल की क़बूल नहीं तो फिर किसकी क़बूल है।

इस हाल में ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी। इस ख़ौफ़, वहशत और दहशत के आलम को बयान करने के लिए अल्फ़ाज़ कहाँ से लाऊँ अल्फ़ाज़ ही ख़त्म हो गए हैं। इस हाल में भी नमाज़ नहीं छोड़ी जा सकती। क्रिकेट मैच देखते हुए कितनों ने नमाज़ छोड़ी? तुम्हें इस पर रोना चाहिए था कि इतने लोगों की नमाज़ें बर्बाद हो गयीं। इस पर अफ़सोस हो रहा है कि पाकिस्तान हार गया। अल्लाह करे और हारे जो क़ौम अपना शऊर मुर्दा कर चुकी है, जो क़ौम इज़्ज़त व ज़िल्लत के मैयार मिटा चुकी है, जिन्हें दोस्त व दुश्मन की तमीज़ न रही हो उसका क्या बनेगा। यह हमारी बुनियाद टूटी और टस से मस नहीं। घर की तो दीवार भी टूट

जाए तो हाय निकल जाती है। एक पौधा सूख जाए तो हाय निकल जाती है।

हमने बाग़ लगवाया। आज मैं घर से होकर आया हूँ। कुछ पौधे सूखे हुए थे। बीस पच्चीस एकड़ में कुछ पौधों का सूख जाना कौन सा बड़ा मस्‌अला है लेकिन इसके बावजूद इन पौधों का सूख जाना भी मुझे चुभ रहा था। दिल में आकर कोई चीज़ लग रही थी कि क्यों सूख गए। जिससे बाग़ लगवाया था मैंने उसे बुलवाया और पूछा कि पौधे क्यों सूख गए हैं? अभी तो वे फलदार भी नहीं हुए।

जहाँ ख़ून बहा वहीं दर्द होता है। दीन पर हमारा लगा क्या है। यह हमारी बुनियाद है

﴿يبنى اقم الصلوة﴾

पाँचवी बुनियाद अल्लाह की तरफ़ दावत देना

पाँचवी बुनियाद है ﴿وامر بالمعروف وانه عن المنكر﴾ मेरे बेटे भलाईयों का दाई बन बुराईयों का मिटाने वाला बन यह तेरी ज़िन्दगी का मक़सद है। यह तेरी ज़िन्दगी की मंज़िल और बुनियाद है कि तू भलाईयों का फैलाने वाला और बुराईयों का मिटाने वाला बन।

जो काम तबलीग़ वाले कर रहे हैं और उन पर एतिराज़ हो रहे हैं कि यह कहाँ से नया दीन आ गया। बिस्तर उठाकर चलो यह कहाँ लिखा हुआ है?

मैंने कहा जहाँ लिखा है वहाँ पढ़ते नहीं जहाँ पढ़ते हो वहाँ

लिखा ही नहीं तो कैसे समझ में आएगा। जंग और नवाए वक़्त पढ़ने से थोड़ी समझ में आएगा, डाइजेस्ट पढ़ने से बात थोड़ी समझ में आएगी।

यह माँ-बाप से कहा जा रहा है कि उसको पहले दिन से ही अल्लाह की तरफ़ दावत देने की आदत डाल दो। उसको तबलीग़ी बना दो कि यह भलाईयाँ फैलाता फिरे और बुराईयाँ मिटाता फिर रहा हो।

दिलों को जीतने वाले

﴿وامر بالمعروف وانه عن المنكر﴾

हमारी पाँचवीं बुनियाद है कि भलाईयों के दाई बनो और बुराईयों को मिटाने वाले बनो। इस बुनियाद पर ही तो इस्लाम मदीने की गलियों से निकला और काशग़ज़ तक चला गया सिर्फ़ अस्सी साल में। सेंगाल तक चला गया सिर्फ़ अस्सी साल में। जुनूबी फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन तक और स्तंबूल के दरवाज़ों तक सिर्फ़ अस्सी साल में पहुँच गया। यह कोई मुल्क जीतने की हवस न थी अगर मुल्क जीतने का शौक़ होता तो मकरान आने की क्या ज़रूरत थी।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में मकरान फ़तेह हुआ तो हज़रत उमर ने पूछा उस मुल्क को क्या हाल है? तो बताने वाले ने बताया क्या पूछते हो ﴿ماءها قليل وبلاءها شديد﴾ पानी उसमें नहीं और दुःख उसमें बेशुमार हैं।

ऐसे मुल्क को फ़तेह करने की क्या ज़रूरत थी कि वह ज़मीन

को जीतने के लिए नहीं निकले थे बल्कि दिलों के जीतने वाले बनकर निकले थे कि इन्सानियत को ज़ुल्म से निकाल कर और कुफ़्र से निकाल कर अल्लाह का पैग़ाम सुनाकर उन्हें इस्लाम की चादर में लाना यह काम था उनका इसलिए जो रेगिस्तान में हैं वहाँ भी जाओ जो पहाड़ों में हैं वहाँ भी जाओ, जो जंगल में वहाँ भी जाओ। जहाँ तक उनकी ज़िन्दगी ने वफ़ा की है वे इस पैग़ाम हक़ को लेकर निकले हैं। यहाँ तक कि अस्सी साल में आबाद दुनिया का बहुत बड़ा दायरा था जहाँ इस्लाम की किरनों ने चमक चमक कर दिलों को भी रोशन किया और काएनात को भी रोशन किया।

भूलना भी भूल गए

यह इस उम्मत का फ़रीज़ा है। जिसको भुलाए हुए इतना ज़माना गुज़र चुका है कि अब भूलना भी भूल गए कि हम भूले हुए हैं।

एक तो यह कि हम भूल गए, मैं भूल गया और फिर एक वक़्त यह भी आता है कि यह भी भूल जाता है कि मैं भूला हुआ हूँ। तबलीग़ वह अमल है जिसका भूलना भी भुला दिया गया।

छठी बुनियाद सब्र

छठी बुनियाद है ﴿واصبر على ما اصابك﴾ सब्र करो। ﴿على ما اصابك﴾ का ताल्लुक़ पिछली सारी चीज़ों के साथ है सिर्फ़ तबलीग़ के साथ नहीं बल्कि ﴿على ما اصابك﴾

जब कलिमा तौहीद पर आओगे तो बहुत कुछ छोड़ना पड़ेगा।

जब रिसालत के तरीक़ों पर आओगे तो बहुत कुछ छोड़ना पड़ेगा।

जब आख़िरत को सामने रखोगे तो बहुत कुछ छोड़ना पड़ेगा।

जब माँ-बाप की इताअत पर आओगे तो सीने पर छुरियाँ चलेंगी क्योंकि एक जनरेशन का गैप आ जाता है। वह किसी चीज़ को अहम समझते हैं ये किसी और चीज़ को अहम समझते हैं। उनका मिज़ाज और होता है इनका मिज़ाज और होता है। जब आपस में टकराओ हो तो सहना, सहना होंटों को सीना।

जब नमाज़ पढ़ोगे तो बहुत कुछ छोड़ना पड़ेगा।

जब दावत दोगे तो बहुत कुछ छोड़ना पड़ेगा। जब लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाओगे तो घर छोड़ना पड़ेगा। इस सब में जहाँ जहाँ जो घाटी आए उसके बारे में हुक्म है।

सरदारी और बिला हिसाब जन्नत

﴿واصبر علىٰ ما اصابك﴾ सब्र को सीने से लगा लो। सब्र करोगे तो दुनिया में क्या मिलेगा? फ़रमाया

﴿وجعلنا منهم ائمة يهدون بامرنا لما صبروا﴾

तुम्हें दुनिया में ही अल्लाह तआला सरदारी अता फ़रमाएगा, तुम्हें इज़्ज़त अता फ़रमाएगा, तुम्हें बुलन्दियाँ अता फ़रमाएगा और आख़िरत में अल्लाह तआला ऐलान करेगा

﴿فليقم اهل الصبر﴾

सब्र वाले खड़े हो जाएं।

तो एक जमात छोटी सी खड़ी हो जाएगी। उन्हें अल्लाह तआला फ़रमाएगा चलो जन्नत में जाओ।

जब वे जन्नत की तरफ़ जा रहे होंगे तो फ़रिश्ते कहेंगे आप लोग कहाँ जा रहे हो?

वे कहेंगे हम जन्नत की तरफ़ जा रहे हैं।

फ़रिश्ते कहेंगे कोई हिसाब तो दे जाओ।

वे कहेंगे हमारा कोई हिसाब नहीं।

फ़रिश्ते कहेंगे तुम कौन लोग हो?

वे कहेंगे हम सब्र वाले हैं सब्र।

फ़रिश्ते कहेंगे अच्छा अच्छा, चलें आपका कोई हिसाब नहीं। ﴿نعم اجر العملين﴾ अमल करने को ऐसा ही अज्र मिला करता है। सब्र दुनिया में इज़्ज़त और आख़िरत में बिला हिसाब ज़न्नत है।

﴿واصبر على ما اصابك﴾

﴿على ما اصابك﴾ लफ़्ज़ ﴿على﴾ ने आकर यहाँ अजीब मतलब दिया है। एक आदमी कहे मैं कितना सब्र करता अख़िर में भी तो इन्सान हूँ। आख़िर मैं फट पड़ा, मैं बोल पड़ा। उसने सुनाई मैं कितना सुनता, आख़िर मैं बोल ही पड़ा। यह हमारे माहौल की बातें हैं तो यहाँ ﴿على﴾ का लफ़्ज़ बता रहा है कि इस को भी दफ़्न कर दो। इस को भी पी जाओ। ﴿على ما اصابك﴾ लफ़्ज़ ﴿على﴾ ने इस जुमले की भी नफ़ी की है और बताया है कि हर हाल में पी जाओ, हर हाल में सह जाओ, हर हाल में होंटों को सी लो तो अल्लाह तआला तुम्हें दो इज़्ज़तें अता करेगा दुनिया में

सरदारी और आख़िरत में बिला हिसाब जन्नत। ﴿على ما اصابك﴾ क्योंकि जब आदमी फटता है तो फिर अगला पिछला सब बराबर कर देता है बल्कि बराबर से भी आगे निकल जाता है इसलिए फ़रमाया ﴿على ما اصابك﴾ जैसे हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अल्लाह तआला ने फ़रमाया

﴿واصبر على ما يقولون واهجرهم هجرا جميلا﴾

ये जो कुछ भी तुम्हें कहें (ऐ हमारे नबी) तुम ने सब्र ही करना है। यह न कहना मैं कितना बर्दाश्त करता आख़िर मैं तो इन्सान हूँ। यह तुम ने नहीं कहना बल्कि ﴿على مايقولون﴾ तुम्हें पत्थर मारें, गालियाँ दें, तेरी ज़ात को कोसें, तेरे अमल को कोसें, तुझे दुःख दें, तेरे घर वालों को दुःख दें, तेरे घर वालों पर झूठे इलज़ाम लगाएं जो भी करें और जो कहें ﴿على مايقولون﴾ सब चीज़ों पर तेरा सब्र होना चाहिए ﴿اهجرهم هجرا جميلا﴾ यही कुछ अल्लाह हमें कह रहा है ﴿واصبر ما اصابك﴾ सब्र करो, सब्र करो। सब्र इ़ज़्ज़तों का ज़ीना है। अपनी औलाद को सिखाओ।

सातवीं बुनियाद अच्छे अख़्लाक़

हमारी सातवीं बुनियाद सबसे मुश्किल है इसलिए इसे सबसे आख़िर में रखा है। यह सबसे मुश्किल पर्चा है इसलिए इसे सबसे आख़िर में रखा। हमारे उस्ताद साहब मरहूम फ़रमाया करते थे बच्चो! पर्चा पढ़ो जो सवाल आसान हो उसे पहले हल करो और जो सवाल मुश्किल हो उसे सबसे आख़िर में हल करो। कहीं ऐसा न हो कि मुश्किल सवाल में फँस जाओ और सारा वक़्त उस में

ही लग जाए और फिर बाद में तुम आसान सवाल भी हल न कर सको तो इसलिए पर्चे को पढ़ो तो जो सबसे आसान हो उसे सबसे पहले हल करो।

तो मैं जब इस तर्तीब को पढ़ता हूँ तो मुझे अपना उस्ताद याद आता है कि अल्लाह तआला की तर्तीब भी यही है कि आसान चीज़ पहले लाए जो सबसे मुश्किल सबक़ था उसे सबसे आख़िर में रखा। उसे सातवाँ पर्चा बना दिया कि पहले छः पर्चे हल करो फिर सातवाँ भी हल होगा उनके बग़ैर सातवाँ हल नहीं हो सकता। वह पर्चा और सबक़ है "हुस्ने अख़्लाक़"।

वह अच्छे अख़्लाक़ इस्लाम का, क़ुरआन का, हदीस का, फ़िक़ह का, अदब का, तबलीग़ का, इल्म का, ज़िन्दगी का सबसे मुश्किल तरीन पर्चा है। सबसे मुश्किल सबक़ है। मैंने इस से मुश्किल सबक़ इस्लाम में कोई भी नहीं देखा। इसको सबसे ज़्यादा जगह भी अता की।

﴿لا تصعر خدك للناس﴾ एक जुमला,

﴿ولا تمش فى الارض مرحا﴾ दो,

﴿ان الله لا يحب كل مختال فخور﴾ तीन,

﴿واقصد فى مشيك﴾ चार,

﴿واغضض من صوتك﴾ पाँच,

﴿ان انكر الاصوات لصوت الحمير﴾ छः

छः जुमले इस पर अल्लाह लाया है। छः जुमले एक साथ कोई थोड़े नहीं हैं क़ुरआन पाक में।

तौहीद पर एक जुमला ﴿لا تشرك بالله﴾,

नमाज़ पर एक जुमला ﴿اقم الصلوٰة﴾,

तबलीग़ पर एक जुमला ﴿وامر بالمعروف﴾,
सब्र पर एक जुमला ﴿واصبر علی ما اصابك﴾,
और अच्छे अख़्लाक़ पर छः जुमले

खिले चेहरे की फ़ज़ीलत

﴿لا تصعر خدك للناس﴾ सबसे पहले बदतमीज़ी जो ज़ाहिर होती है वह चेहरे के उतार चढ़ाव से होती है तो सबसे पहले अल्लाह तआला ने उसे बयान किया है देखो अपने चेहरे को ऐसा न करना।

इसी वजह से हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

﴿ابتسامك فی وجه اخيك صدقة﴾

तेरा अपने भाई से मुस्कुरा कर मिलना भी अल्लाह के दरबार में सदक़े का सवाब रखता है।

जब दो मुसलमान मिलते हैं तो उन पर सौ रहमतें उतरती हैं और निन्नानवें उस पर उतरती हैं जो ज़्यादा गर्मजोशी से मिले निन्नानवें एक ले जाता है और दूसरे को एक मिलती है। निन्नानवें वह ले जाता है जो ज़्यादा ख़ुश होकर मिल रहा है।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि अल्लाह के नबी घर में कैसे रहते थे?

तो आपने फ़रमाया ﴿ضحاكا بساما﴾ घर में मुस्कराने वाले बड़े खुले माथे वाले थे। बड़े हँसने वाले थे, बड़ी खुली तबियत से रहने

वाले थे अपने घर में।

तो पहली चीज़ जो आदमी की बदतमीज़ी को ज़ाहिर करती है वह चढ़ा हुआ मुँह और टेढ़ा मुँह है। चेहरे का बिगाड़ तो जिस चीज़ पर पहली नज़र पड़े अल्लाह तआला ने उसकी नफ़ी की है कि ﴿لا تصعر خدك للناس﴾ चेहरे पर मसकनत लाओ, मुस्कुराहट लाओ, छोटापन लाओ।

तकब्बुर की मनाही

फिर चाल की अकड़ मर्द में भी हराम है और औरत में भी और वह अकड़ कर चले तो वह तो बर्बाद हो गई। इसलिए फ़रमाया

﴿ولا تمش فی الارض﴾

ज़मीन पर अकड़ कर मत चलना।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अल्लाह तआला ने पहली किताबों में फ़रमाया है

﴿لو یمشیٰ علی السراج لم من تحت قدمیه من سکینة﴾

अल्लाह तआला पहली उम्मतों को कह रहा है कि एक नबी भेज रहा हूँ उसको ऐसी तवाज़े सिखाऊँगा कि जब वह ज़मीन पर चलते हुए किसी जलते चिराग़ पर पाँव रखेगा तो इतनी मसकनत से रखेगा कि चिराग़ भी न बुझने पाए। जब वह सूखी लकड़ियों पर चलेगा तो इतनी आजज़ि से चलेगा कि लकड़ियों के कड़कड़ाने की आवाज़ न आएगी और उसकी उम्मत ऐड़ी मार कर चले!

﴿لا تمش فی الارض مرحا ان اللہ لا یحب کل مختال فخور﴾

अल्लाह तबारक व तआला को तकब्बुर पसन्द नहीं है।

﴾واقصد فی مشیک﴿ चाल में आजज़ि लाओ,

﴾واغضض من صوتك﴿ आवाज़ में पस्ती लाओ, बोल को पस्त रखो।

ज़बान दिल को आबाद व बर्बाद करने वाली है

बोल को मीठा रखो। बोल को सख़्त न बनाओ। सबसे ज़्यादा इन्सानी ज़िन्दगी जिस चीज़ मुतास्सिर होती है वह ज़बान का बोल है। सबसे ज़्यादा जिस चीज़ से दिलों पर नश्तर पड़ते हैं वह ज़बान का बोल है।

शायरों का कलाम पढ़ो तो वे दिल को शीशे से मिसाल देते हैं। शुरू से ही ऐसा चला आ रहा है, अरबी अदब हो, उर्दू अदब हो, फ़ारसी अदब हो, शायरों ने दिल को हमेशा शीशे से तश्बीह दी है। शीशे से तश्बीह देने में इस बात की तरफ़ इशारा है कि दुनिया में शीशा ही एक ऐसी चीज़ है जो टूट जाए तो दोबारा जुड़ता नहीं है। यह एक वाहिद चीज़ है। यह एक ऐसी बला जो जब टूट जाता है तो फिर जुड़ नहीं सकता। लाख जोड़ो नहीं जुड़ेगा तो दिल ऐसी बला हे कि अगर यह एक दफ़ा टूट जाए तो यह जुड़ने का नाम नहीं लेता और दिल को तोड़ने वाली सबसे बड़ी चीज़ ज़बान का बोल है, ज़बान का बोल है ज़बान का बोल कह रहा हूँ, ज़बान का बोल जब वार करता है और दिलों को ज़ख़्मी करता है तो ज़ख़्म घाव से बदलता है और घाव नासूर से बदलता है, फिर नासूर रिसना शुरू करता है फिर रग रग में इसकी

कड़वाहट उतर जाती है फिर सारा वजूद इसी ज़ख़्म में ज़ख़्मी हो जाता है।

इसी नासूर में नासूर बन जाता है। मौत आ जाती है लेकिन दिल का ज़ख़्म नहीं धुलता।

इसलिए ज़बान सबसे ज़्यादा दिल की दुनिया को बर्बाद करने वाली है और सबसे ज़्यादा दिल की दुनिया को आबाद करने वाला ज़बान का बोल है! ज़बान का बोल है। अल्लाह तआला ने मीठे बोल में जादू रखा है।

अख़्लाक़ वाले का दर्जा

मेरे भाइयो और बहनो!

अच्छे अख़्लाक़ ज़िन्दगी का सबसे मुश्किल सबक़ है। इसकी अल्लाह तआला ने क़ीमत बढ़ा दी है जो चीज़ मंहगी होती है क़ीमत ज़्यादा होगी।

जो चीज़ क़ीमती होगी क़ीमत ज़्यादा होगी जो चीज़ बाज़ार में थोड़ी होगी उसकी क़ीमत अपने आप ज़्यादा हो जाएगी। एक हदीस में आता है कि

> "अच्छे अख़्लाक़ और अल्लाह पर यक़ीन और तवक्कुल आसमान से बहुत थोड़ा उतारा गया है।"

दीन की मंडी में बेशुमार सिफ़ात को उतारा गया है लेकिन दो सिफ़तें बहुत थोड़ी उतारी गई हैं एक सही अख़्लाक़ और एक सही यक़ीन।

चीज़ थोड़ी हुई क़ीमत फ़ौरन बढ़ गई। अब क्या होगा? अब ज़्यादा क़ीमत से यह चीज़ हासिल होगी। क़ीमत ज़्यादा है इसलिए मेहनत करनी पड़ेगी अगर आप ने अख़्लाक़ की दौलत को ले लिया तो आगे उस पर क्या मिलेगा? अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मिसाल देकर समझाया है कि एक आदमी इतनी बन्दगी करता है कि वह सारी ज़िन्दगी नहीं सोता। इशा से जागता हुआ फ़ज्र पढ़ता है और सारी ज़िन्दगी नहीं खाता यानी सारी ज़िन्दगी रोज़ा रखता चला गया सिर्फ़ ईद पर छोड़ा और तहज्जुद सारी ज़िन्दगी पढ़ी।

अमली तौर पर ये दो काम नामुमकिन हैं अमली तौर पर। मुमकिन है पहले दौर में लोगों ने किया हो क्योंकि ताक़त बहुत ज़्यादा थी अगर कोई आदमी इतने बड़े आमाल लेकर आया कि सारी ज़िन्दगी की रातों में एक पल की ऊँघ नहीं, ज़िन्दगी के सारे दिनों में से ईद के अलावा कोई रोज़ा नहीं छोड़ा हो। यह आदमी जब मैदाने महशर में अपना अमल पेश करेगा तो अच्छे अख़्लाक़ वाला उससे भी ऊपर के दर्जे पर खड़ा होगा।

इन्सान की क़ीमत

मेरे अज़ीज़ो! मेरे भाईयो और मेरे दोस्तो!

इन्सान की क़ीमत उसके अख़्लाक़ से है। लोग समझते हैं मेरे पास बड़ी गाड़ी होगी, मेरे पास बड़ा बंगला होगा, मेरे पास बड़ी दौलत होगी तो इज़्ज़त होगी हालाँकि वह इज़्ज़त मेरी नहीं बल्कि उन चीज़ों की है अगर ये चीज़ें मुझ से हटा ली जाएं तो कोई मुझे

पूछेगा भी नहीं।

एक मंसब की इज़्ज़त है और एक साथ की इज़्ज़त है। मंसब की इज़्ज़त धोका है और साथ की इज़्ज़त असली चीज़ है। दीन असली इज़्ज़त लाता है। मंसब झूठी इज़्ज़त लाते हैं झूठी।

मेरे भाईयों और बहनो!

यह वे बुनियादें हैं जिस पर हमारा समाज वजूद पाता है। तबलीग़ में इसको सीखने की मेहनत हो रही है। सिर्फ़ एक घन्टे की बात से यह हासिल नहीं होती।

सिर्फ़ क़ुरआन पढ़ लेने से यह बात हासिल नहीं होती।

सिर्फ़ किताब पढ़ लेने से यह बात हासिल नहीं होती बल्कि इस के लिए माहौल चाहिए, फ़िज़ा चाहिए। उसमें लगातार चलना पड़ता है तब जाकर ये बातें नसीब होती हैं। इनको घरों में लाना, औलाद में लाना, समाज में लाना है।

तर्बियत का काम

इन बुनियादों को जब उठाया जाएगा तो उसके ऊपर बनने वाली इमारत को कहा जाएगा इस्लामी इमारत, इस्लामी घर, इस्लामी शहर, इस्लामी हुकूमत।

शरियत के लागू करने से मुल्क इस्लामी नहीं बना करता। हुकूमत के इस्लामी हो जाने से मुल्क इस्लामी नहीं बना करता।

यह कोई जादू का डंडा नहीं है कि हुकूमत यूँ फेरेगी और सारे मुसलमान तक़्वे वाले और परहेज़गार बन जाएंगे। यह तर्बियत है और तर्बियत के बिना कोई भी चीज़ जी को नहीं लगती और

पकती नहीं।

तर्बियत का काम अल्लाह तआला ने हमें तबलीग़ की शक्ल में दिया है। इसमें वक़्त लगाओ और फिरो तो अल्लाह तआला यह दुनिया भी बना देगा और आख़िरत भी बनाएगा। इस पर इरादे भी करो और हिम्मत भी करो।

दुआ

○ ○ ○

आख़िरत का इम्तिहान

मक़ामः फ़ैसलाबाद

الحمد لله وكفى والصلوٰة والسلام علىٰ رسوله
الكريم وعلىٰ اله واصحابه اجمعين اما بعد.

فاعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم.
بسم الله الرحمٰن الرحيم.

من عمل صالحا من ذكر او انثى وهو مؤمن فلنحيينه حيٰوة
طيبة ولنجزينهم اجرهم باحسن ما كانوا يعملون. (الحديد)

وقال النبى صلى الله تعالىٰ وتبارك عليه وآله وسلم
من بطا به عمله لم يسرى به نسبه.

وقال النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم ما رايت مثل الجنة
نام طالبها وما رايت مثل النار نام ها ربها او كما قال صلى
الله تبارك وتعالىٰ عليه وسلم . صدق الله مولانا العظيم

परेशानियों का मकज़्

मेरे मोहतरम भाईयो और बहनो!

अल्लाह तबारक व तआला ने हमें इस दुनिया में पैदा करके बहुत बड़े इम्तिहान में डाल दिया है। हमारा आना अपनी मर्ज़ी से नहीं, हमारा मरना अपनी मर्ज़ी से नहीं। हालात व वाक़ियात हम

पर इस तरह अचानक हमला करते हैं कि न उसके हमलों से कोई ग़रीब बचता है न कोई करोड़पति और न कोई अरबपति। माल से अगर लोग ख़ुशियाँ ख़रीद सकते तो मालदारों के घरों में कभी रोना पीटना न होता।

और अगर कोई हुकूमत व ताक़त से चैन व सकून और राहत ख़रीद सकता तो हुकूमत वालों और मालदारों के घर परेशानियों का निशाना न बनतें।

यह कोई और ही ताक़त है जिसके हाथ बहुत लम्बे हैं। जिसकी क़ुदरत बड़ी कामिल है कि जिस पर जो हाल चाहता है ले आता है और जिस तरह चाहता है फेरकर रख देता है।

﴿تلك الايام نداولها بين الناس﴾

यह दिन हमारे हाथ में हैं जैसे चाहें फेर कर रख दें।

﴿اضحك وابكى﴾ माल से कोई ख़ुशियाँ नहीं ख़रीद सकता बल्कि मैं जिसे चाहूँ दूँ खुश कर दूँ, हँसा दूँ। फ़क़्र और फ़ाक़े से रंज नहीं आते बल्कि मैं जिसे चाहता हूँ रंज में मुब्तिला कर दूँ। ﴿اضحك وابكى﴾ हँसाना भी अल्लाह कहता है मेरा काम है। रुलाना भी अल्लाह कहता है मेरा काम है। वह ख़ुशी ले आए सारी दुनिया मिलकर उसे रंजीदा नहीं कर सकती। वह रंज डाल दे सारी दुनिया मिलकर उसे खुश नहीं कर सकती।

तीन दिन पहले एक करोड़पति आदमी से मुलाक़ात हुई। वह कह रहा था मेरा मरने को जी चाहता है। मेरा रहने को जी नहीं चाहता। मुझे पता नहीं क्या है। उसका बेटा बैठा हुआ था वह कहने लगा मौलवी साहब! दुनिया की हर चीज़ मौजूद है कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसकी हम तमन्ना करें और वह न मिले। यह

नहीं है।

हर चीज़ मौजूद है। हर तमन्ना पूरी है फिर पता नहीं यह क्यों परेशान हैं। वह कहे बस मैं मरना चाहता हूँ। यह कोई ज़िन्दगी है कोई अमल बताओ जिससे मेरी क़ब्र ठीक हो जाए। आख़िर में जाकर उसी का ख़्याल आता है।

तो कोई और है जो हमारे हालात व वाक़ियात पर क़ब्ज़ा किए हुए है। कोई और है जो ज़िन्दगियों को बनाता भी है और बिगाड़ता भी है। ख़ुशियाँ लाता है, रंज लाता है, मुहब्बतें आती हैं दुश्मनियाँ आती हैं।

इज़्ज़त व ज़िल्लत का पैमाना

इज़्ज़त आती है ज़िल्लत आती है

﴿وتعز من تشآء وتذل من تشآء﴾

जिसे चाहे इज़्ज़त दे दे जिसे चाहे ज़लील कर दे।

﴿تؤتي الملك من تشآء﴾

जिसे चाहे बादशाही दे दे।

﴿وتنزع الملك ممن تشآء﴾

जिस से चाहे मुल्क को छीन ले।

﴿تعزو من تشآء﴾ ज़िल्लत में से इज़्ज़त निकाल दे।

जब अल्लाह तआला कहता है कि फ़लाँ को इज़्ज़त दी जाए तो काएनात की हर हर चीज़ उसकी इज़्ज़त के लिए इस्तेमाल होना शुरू हो जाती है। लोग उसे ज़लील करते हैं उसी में से अल्लाह

इज़्ज़त निकालता है।

लोग उसको नीचा करते हैं और हवाएं उसको उठाकर ऊँचा ले जाती हैं।

﴿وتذل من تشآء﴾ अल्लाह तआला फ़रमाता है फ़लाँ को ज़लील कर दिया जाए तो इज़्ज़त की हर शक्ल और इज़्ज़त की हर तदबीर में से अल्लाह तआला ज़िल्लतें निकालना शुरू कर देता है।

लोग उसे ऊँचा करना चाहते हैं लेकिन हवाएं उसे नीचा कर देती है। लोग उसे उठाना चाहते हैं लेकिन तक़दीर उसे उठा के पटख़ देती हैं।

वह इज़्ज़त की हर तदबीर अपनाता है लेकिन अल्लाह तआला इज़्ज़त की हर तदबीर में ज़िल्लत को निकाल कर बाहर ले आता है।

अल्लाह तआला की क़ुदरत

फ़लाँ को सेहत दी जाए ज़हर में से अल्लाह तआला उसकी ज़िन्दगी का सामान बनाता है। काँटों में से अल्लाह तआला उसके लिए फूल उगाता है और मौत के असबाब में अल्लाह तआला उसके लिए शिफ़ा डाल देता है। फ़लाँ को बीमार कर दिया जाए तो सेहत के असबाब में से बीमारियाँ रेंगती चली आती हैं और ताक़त की शक्लों में से कमज़ोरी आकर डेरा डाल देती है।

फ़लाँ की हिफ़ाज़त की जाए तो मौत अगर अपने पूरे परों को फैला दे और सारे पंजों को फैला दे। अल्लाह तआला उन सारी चीज़ों को दरहम बरहम करके मौत में से ज़िन्दगी को निकाल कर ले आता है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि फ़लाँ को पकड़ लिया जाए और हिफ़ाज़त का निज़ाम हटा लिया जाए तो तलवारों की छाँव में, लोहे की दीवारों में, लोहे की छतों, लोहे के फ़र्शों में लाखों करोड़ों हथियार बन्द पहरेदारों के अन्दर से अल्लाह की तक़दीर जारी हो जाती है।

﴿ما شآء الله كان ومالم يشالم يكن﴾

जो अल्लाह चाहता है वह कर देता है न चाहे तो वह हो नहीं सकता।

बिल्कुल मौत थी आगे भी पीछे भी। आगे समन्दर पीछे फ़िरऔन दो मौतों के बीच बनी इसराईल बोले ﴿انا لمدركون﴾ हम मारे गए कि आगे समुन्दर है आगे जाएं तो मरें, पीछे फ़िरऔन है हटें तो मरें तो हम मर गए।

तो जिसकी नज़र अल्लाह के ग़ैब पर जा चुकी होती है। मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ﴿كلا﴾ ख़बरदार! ख़बरदार। हर्गिज़ नहीं क्या मौत फ़िरऔन के हाथ में है? नहीं! नहीं, क्या मौत समुन्दर के हाथ में है? नहीं! नहीं बल्कि मौत तो आसमान वाले के हाथ में है।

﴿امات واحى﴾ वह है मौत के फ़ैसले करने वाला, वह है ज़िन्दगी के फ़ैसले करने वाला और वह हमारे साथ है।

﴿فاضرب بعصاك البحر﴾ मारो लाठी समुन्दर पर। लाठी पड़ी। जब से दुनिया बनी है उससे लेकर आज दस मुहर्रम तक किसी ने पानी को थमते नहीं देखा, फटते न देखा, जमते न देखा, खड़ा होते न देखा। समन्दर क्या लगे और थमना और ठहरना क्या लगे, समुन्दर क्या लगे और रास्ते क्या लगें। यह दो एक दूसरे की

ज़िदें हैं लेकिन जिस अल्लाह ने पानी को बहने का हुक्म दिया, जिस अल्लाह ने पानी में मौजों को रखा है, जिस अल्लाह ने पानी में बहाव को रखा है उसी अल्लाह ने कुछ घन्टों के लिए पानी से अपना हुक्म वापस ले लिया।

न किसी का बहाव अपना, न किसी की सख़्ती अपनी, न किसी की ख़ूबी अपनी, न किसी का गाढ़ापन, न किसी की इज़्ज़त अपनी, न किसी का फ़क्र अपना, न किसी का हुस्न अपना, न किसी का जमाल अपना, न किसी की बड़ाई अपनी।

पीछे तो अल्लाह है। यह मिट्टी का नुत्फ़ा, इन्सान की अवक़ात क्या है।

एक नौजवान की जवानी को ज़वाल

नजरान में एक नौजवान खड़ा था जिसका लम्बा चौड़ा क़द था और एक आदमी देख रहा था तो वह कहने लगा बाबा जी क्या देख रहे हो?

कहा बेटा तेरी जवानी देख रहा हूँ।

वह कहने लगा मेरी जवानी पर तो अल्लाह भी हैरान है। मेरे हुस्न पर तो अल्लाह भी हैरान है।

बस यह बोल बोलना था कि सब के सामने उसका क़द घटना शुरू हुआ और साढ़े छः सात फ़ुट का आदमी था। घटते घटते एक बालिश्त रह गया, एक बालिश्त साढ़े छः फ़ुट से रब ने घटाया न मौत दी बल्कि ज़िन्दा रखा और उसे उसकी हैसियत बताई कि यह तेरी अवक़ात है। किस चीज़ को चैलेंज कर रहे

हो? किस से टक्कर ले रहो हो?

﴿انکم لتکفرون بالذی خلق الارض فی یومین وتجعلون له اندادا﴾

किस रब से टक्कर ली तुम ने तुम्हारे लिए ज़मीन का फ़र्श बिछाया।

ज़मीन के बनाने का मक़सद

यह फ़र्श इसलिए नहीं बिछाया गया कि तुम्हें पर नाच गाना करो।

इसलिए नहीं बिछाया था कि तुम तबले की थाप पर नाचो।

इसलिए नहीं बिछाया था कि तुम इस पर बनो सवंरो और शराब की महफ़िले सजाओ।

इसलिए नहीं बिछाया था की तुम इस पर बाजों की महफ़िलें जमाओ।

इसलिए नहीं बिछाया था कि तुम इस पर घमंडी लोगों के से घर बनाओ।

इसलिए नहीं बिछाया था कि तुम इस पर ऐड़ी मारकर चलो बल्कि इसलिए बिछाया था कि इसको सज्दों से आबाद करो, इसको अपने आँसुओं से सैराब करो। ﴿يمشون على الارض هونا﴾ इस पर आजज़ि से और छोटे बनकर चलो।

किस रब से टक्कर ले ली है तुम ने? मेरे बन्दों और बन्दियों! किससे टक्राते हो? जिसने ज़मीन दो दिन में बिछाई ﴿انكم﴾ किससे टक्कर ले रहो हो।

﴿لتكفرون بالذى خلق الارض فى يومين تجعلون له اندادا﴾

जानते हो भी यह कौन है ﴿ذالك رب العلمين﴾ यह कुल काएनात का शंहशाह है, बादशाह है, रब है रब। पालने वाला है, पालने वाला। ज़मीन के अन्धेरे में छिपी हुई च्युंटी को भी रिज़्क़ पहुँचा रहा है और च्यूंटी से भी हज़ारों गुना छोटे वजूद को रिज़्क़ पहुँचा रहा है।

आँखों से बड़ी बड़ी दूरबीन से नज़र न आने वाले जरासीमों को वह रिज़्क़ पहुँचा रहा है। उस रब से टक्कर ले ली तुम ने? किससे टकराए हो?

ज़मीन इसलिए बिछाई कि इस पर तुम मस्त होकर चलो?

इसलिए बिछाई कि इस पर अकड़ कि इस पर अकड़ के चलते रहो?

इस पर नाचते कूदते गाते हो क्या तुम्हें ख़बर नहीं है कि अल्लाह वह आँख रखता है ﴿لا تاخذه سنة ولا نوم﴾ जो न ऊँघती है और न सोती है। क्या उसे नज़र नहीं आ रहा है जब तुम बेपर्दा होकर चलती हो। जब तुम बन सवंर करके निकलती हो जब तुम तकब्बुर के साथ अपने माल के घमंड में अपने हुस्न के घमंड में अपनी कमाईयों के घमंड में जब तुम चलते हो तो क्या वह आँख सो गई है? क्या वह ग़ाफ़िल हो गया है? क्या उसे नज़र नहीं आ रहा है? क्या मौत तुम्हारा गला नहीं दबाएगी? क्या क़ब्र तुम्हें ज़ेर व ज़बर नहीं करेगी।

क्या इस हुस्न को अल्लाह तबारक व तआला मिट्टी में नहीं मिलाएगा। वह कीड़े भी तैयार हो चुके हैं जिन में तक़सीम हो चुकी है कि गालों का गोश्त यह कीड़े खाएंगे।

आँखों का गोश्त ये कीड़े खाएंगे जिसे काजल से सजाया और घन्टों जिनकी नोक पलक को संवारा। उसके तो कीड़े भी तय हो चुके हैं कि यह कीड़े इसकी आँखों को खाएंगे। वह माथा जिसे झूमर से सजाया उसको खाने वाले कीड़ों की तादाद तय हो चुकी है। इसका पेट, इसकी रानें, इसकी टांगे, इसके बाज़ू, इसकी उंगलियाँ। किसने क्या खाना है, रिज़्क़ बनकर हमारे वजूद तक़सीम हो चुके हैं। जिस वजूद को कीड़े खा जाएं।

क़ब्र की गर्मी

जिन हड्डियों को क़ब्र की गर्मी गला दे, गला दे। अभी तक ए०सी० चल रहे हैं हालाँकि मौसम ठंडा हो चुका है फ़िज़ाओं के रुख़ बदल चुके हैं लेकिन हमारी तबियतें इतनी गर्मी सहने की बर्दाश्त नहीं रखतीं कि अब भी ए०सी० चल रहे हैं हालाँकि यह वही वजूद है जिसको क़ब्र की ख़ौफ़नाक गर्मी पिघला देगी। ये हड्डियाँ पिघल जाएंगी। रेज़ा रेज़ा हो जाएंगी फिर एक ज़माना आएगा कि हम इस तरह भुला दिए जाएंगे जैसा कि दुनिया में आए ही नहीं थे। हमारी क़ब्रों के निशान भी मिट जाएंगे। फिर एक दिन बैठे बैठे ज़मीन करवट बदलेगी नीचे की मिट्टी ऊपर कर देगी और ऊपर की नीचे कर देगी। वह हसीन जिस्म, वह बांका जवान, वह पहलवान, वह ताक़तवर, वह घुड़सवार जिसकी हड्डयों को क़ब्र की गर्मी ने पिघलाया फिर रेज़ा रेज़ा बनाया फिर मिट्टी बना दिया। यही शहज़ादी थी आज उसकी मिट्टी नीचे से ऊपर आ गई है और ऊपर से हवा का हमला हुआ। ख़ौफ़नाक

झोंका आया और उसके वजूद को हवा में फैला दिया और यह उसी तरह फ़िज़ाओं में बिखर गई जैसे कभी फिज़ाओं में बिखरी हुई थी। यह उसी तरह मिट गई जिस तरह मिटी हुई थी। कहानी क्या ख़त्म हुई बल्कि भुला दी गई। भुलाई क्या गई बल्कि मिटा दी गई और ऐसी मिटाई गई जैसे दुनिया में आई ही न थी।

﴿كان لم تكن بينى وبينك خلة﴾

ऐसे मिट गए जैसे कभी मिल बैठे न थे।

﴿فلما تفرق كانى ومالك لطول اجتماع لم نبت ليلا معه﴾

जब जुदाईयाँ हुई तो ऐसे हो गए जैसे कोई मिल बैठा न था।

किस चीज़ पर घमंड है?

नादान समाज

वह बादशाह जो सोता नहीं, वह बादशाह जो ऊँघता नहीं, वह बादशाह जो ग़ाफ़िल नहीं, वह अल्लाह जो जाहिल नहीं, वह अल्लाह जिसके हाथ में लगाम, वह अल्लाह जो हमारी गर्दनों का मालिक, वह अल्लाह जो जिस्म के रेशे रेशे और रूंए रूएं का मालिक, वह अल्लाह जो जिस्म में आनी वाली हर छोटे से छोटे बदलाव पर भी नज़र रखे। अर्श व फ़र्श जिसके सामने खुली किताब की तरह हों। फिर लौट कर भी उसके पास जाना हो।

क्या नादान समाज है उसी से टक्कर ले रहा है। कहते हैं क्या करें जी सुसराल वालों को भी खुश करना है, क्या करें लोग नहीं मानते, यह नहीं मानता वह नहीं मानता।

अल्लाह तआला के दरबार में हाज़िरी की कैफ़ियत

वह क्या दिन होगा जब अकेली जान होगी और अल्लाह कहेगा कि फ़लाँ फ़लाँ का बेटी हाज़िर की जाए, फ़लाँ फ़लाँ का बेटा हाज़िर किया जाए।

فجاء وا بابن آدم يوم القيامة فيوقف
بين يدى الله تعالى كانه بزج

एक मर्द और एक औरत को फ़रिश्ते घसीट कर लाएंगे गर्दन में हाथ डालकर। अल्लाह के सामने खड़ा करेंगे।

उसकी हालत क्या होगी जैसे बकरी का बच्चा होता है। बकरी का बच्चा शहर की औरत क्या जानें कि बकरी का बच्चा क्या होता है?

बकरी का जब बच्चा पैदा होता है तो वह खड़ा होने की कोशिश करता है लेकिन उसकी टांगो में इतनी कमज़ोरी होती है कि जब वह खड़ा होता है तो उसकी टांगें काँपती हैं कभी यूँ गिर जाता है और कभी यूँ गिर जाता है।

फिर खड़ा होता है कभी यूँ गिरता है और कभी यूँ गिर जाता है। अभी टांगों में इतनी जान नहीं कि वह मज़बूती से खड़ा हो सके और चन्द घन्टों के बाद अल्लाह तआला उसकी टांगों में ताक़त पैदा करता है तो बकरी के बच्चे की वह कैफ़ियत जिसमें जब वह खड़ा हो तो वह लरज़े और काँपे और कभी यूँ गिरे और कभी यूँ गिरे। उसको अरबी में "बज़ज" कहते हैं।

तो आज बड़ी बड़ी शहज़ादियाँ और बड़े बड़े बहादुर और बड़े बड़े घुड़सवारों को जब अल्लाह बुलाएगा कि फ़लाँ फ़लाँ की बेटी हिसाब के लिए पेश हो जाए। फ़लाँ फ़लाँ का बेटा हिसाब के लिए पेश हो जाए।

दुनिया और आख़िरत के इम्तिहान का फ़र्क़

जब स्कूल में इम्तिहान होता है अगर तैयारी न हो तो कलेजा बाहर आता है, उछल उछल कर मुँह को आता है और सीना फटता महसूस होता है।

मेरा फिजिक्स का पर्चा था मैट्रिक का। मैं सारी रात पढ़ता रहा। मुश्किल से कोई घन्टा सोया हूँगा या आधा घन्टा और सुबह चला गया इम्तिहान देने के लिए। सारी रात की नींद और थकावट। जब पर्चा सामने आया तो सब भूल गया। सब कुछ भूल गया एक लफ़्ज़ भी याद नहीं रहा।

इस बात को अब कोई चौंतीस बरस हो चले हैं। उस वक़्त मेरी यह कैफ़ियत थी मेरे बाल बाल से पसीना फूटने लगा। मैं अगर मैट्रिक में फेल भी हो जाता तो क्या था लेकिन इसके बावजूद आप यक़ीन जानें कि पसीने में मेरा सारा वजूद बर्फ़ की तरह ठंडा हो गया और मैंने क़लम रख दिया, पर्चा रख दिया, पेपर रख दिया और आधा घन्टा गुमसुम बैठा रहा कि क्या बनेगा? क्या बनेगा? फेल हो जाता तो क्या हो जाता कौन सा मेरा रिज़्क़ बन्द हो जाना था या मेरे पीछे कोई सूली खड़ी थी जिस पर मैं लटक जाना था लेकिन एक छोटे से पर्चे के सवालात

मेरी आँखों के सामने से गुम हो गए, मेरे दिमाग़ से साफ़ हो गए। आज चौंतीस साल के बाद मैं आज भी उस तकलीफ़ को महसूस करता हूँ।

वह क्या दिन होगा जब अल्लाह पूछेगा और रब के सवाल के जवाब ज़हन में से हवा हो जाएंगे। जब तैयारी ही नहीं की होगी। जवाब तो उस वक़्त आएगा नहीं और यह मस्अला भी तो नहीं है कि मैट्रिक में फेल हो गई चलो अगले साल तैयारी कर लो।

एम०ए०, बी०ए० में फेल हो गया अगले साल तैयारी करो यह नहीं है बल्कि ख़ौफ़नाक जहन्नुम की आग है जो भड़क रही है, भड़क रही है।

जहन्नुम की चीख़

﴿تأكل بعضهم بعضا﴾ एक एक को खा रही है।

﴿تكاد تميز من الغيظ﴾ गुस्से से फट रही है।

जब जहन्नुम को लाया जाएगा मैदाने महशर में तो उसकी सत्तर हज़ार लगामें होंगी। घोड़े की एक लगाम होती है एक सिर्फ़ एक लगाम वह भी जब छूट जाए तो फिर उसे पता है जिसने उसकी सवारी की है कि फिर क्या होता है। सत्तर हज़ार लगामें होंगी, सत्तर हज़ार और हर लगाम को सत्तर हज़ार फ़रिश्तों ने थामा हुआ होगा और उनके हाथों से बेक़ाबू होकर निकल रही होगी। शहज़ोर, मुँहज़ोर घोड़े की तरह। जब वह मैदाने महशर में आएगी तो चीख़ मारेगी और उसकी चीख़ से बड़े बड़े फ़रिश्ते और सालिहीन और अल्लाह के क़रीब बन्दे मुँह के बल जा गिरेंगे और

हदीस पाक में आता है

"कि उस दिन अगर किसी आदमी के पास सत्तर नबियों का भी अमल हो (सत्तर वलियों का नहीं सत्तर नबियों का) सत्तर नबियों का अमल लेकर आने वाला भी जब दोज़ख़ की चीख़ सुनेगा तो वह भी कहेगा आज मेरी बख़्शिश नहीं हो सकती। आज मैं नहीं बच सकता।"

यह वह मौक़ा है जब सब इन्सान कहेंगे नफ़्सी, नफ़्सी,

आदम अलैहिस्सलम पुकारेंगे नफ़्सी, नफ़्सी,

जब नूह अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी, नफ़्सी

यह वह मौक़ा है जब अंबिया अलैहिमुस्सलाम भी नफ़्सी, नफ़्सी पुकार उठेंगे।

क़यामत के दिन की पकड़

अगर उस दिन मैं इन जवाबत में फ़ेल हो गया अगर यह फ़ेल हो गई तो यह नहीं होगा कि जाओ दोबारा तैयारी करके आओ बल्कि हुक्म होगा कि इसको जहन्नुम की ख़ौफ़नाक आग में फेंक दिया जाए। जब कोई मर्द फ़ेल हो जाएगा तो अल्लाह तआला कहेगा ﴿خذوه﴾ पकड़ो, ﴿فغلوه﴾ जकड़ो तो फ़रिश्ते आकर उसके मुँह में हाथ डालकर उसके नीचे वाला जबड़ा पकड़ेंगे और इस तरह खींचेगें कि सारा जबड़ा खिंचकर बाहर आ जाएगा। उसको इस तरह घसीटेंगे और औरतों को सर की चोटी से पकड़ेंगे और उनके बालों को झटका देंगे और ऐसे क़लाबाज़ियाँ खाते हुए मर्द और औरत को घसीटते चले आएंगे और कहें रहम! रहम, रहम

करो! रहम करो।

तो जवाब में फ़रिश्ते कहेंगे कि तुम पर सबसे बड़े रहीम ने रहम नहीं किया हम कैसे रहम कर सकते हैं।

﴿لم يرحمك ارحم الراحمين فكيف نرحم.﴾

तुम पर सब से बड़े रहीम ने रहम नहीं किया हम कहाँ से रहम करें।

संगीन मस्अला

मस्अला बड़ा संगीन है। मस्अला सिर्फ़ यह नहीं है कि बिजली का बिल कहाँ से दिया जाए और यह शादी आ रही है इसकी तैयारी कैसे हो?

मालदारों को तो शादी की तैयारी का कोई मस्अला नहीं। वह तो कहेगा पाँच लाख के कपड़े दे दो, पचास लाख का ज़ेवर दे दो, इतने करोड़ का यह दे दो।

मस्अला तो आगे आ रहा है कि जहन्नुम आ रही है। अब क्या करें। जहन्नुम ख़ौफ़नाक मुँह खोले हुए है अब क्या करें। अब कहाँ जाएं और वह भड़केगी और फटेगी और हदीस शरीफ़ में आता है कि अगर अल्लाह तआला उसको रोक न ले तो वह आगे बढ़कर सब को उठाकर अपने अन्दर ले जाए।।

वह उस वक़्त ऐसी बेलगाम हो रही होगी। उस ख़ौफ़नाक घाटी से बच जाना यह है कामयाबी और उसमें जा गिरना है यह नाकामी।

यह सब कुछ अल्लाह जल्ले जलालुहू ला शरीक के हाथ में है

जो ज़मीन व आसमान का अकेला बादशाह है उसने एक दम नहीं पकड़ा बल्कि उसने रसूल अलैहिमुस्सलाम भेजे। उसने अंबिया अलैहिमुस्सलाम को भेजा। उसने किताबें उतारीं। सबसे आख़िर में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हस्ती को भेजा जिन्होंने मर्दों और औरतों को ज़िन्दगी गुज़ारने का एक नमूना दिया और रास्ता दिया।

रात और दिन रोशन

﴿يا ابا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة﴾

अबू सुफ़ियान! मैं तुम्हारे पास दुनिया और आख़िरत की सब कामयाबियाँ लेकर आया हूँ।

﴿تركتكم على محجة بيضاء ليلها كنهارها.﴾

मैं तुम्हें ऐसे रास्ते पर छोड़कर जा रहा हूँ जिसका दिन भी रोशन है और रात भी रोशन है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी दुनिया और आख़िरत के सारे इम्तिहानों से पास होने का ज़रिया है और आप के तरीक़े से हटना यह दोनों जहाँन यानी दुनिया और आख़िरत में नाकामी, हलाकत और बर्बादी का ज़रिया है।

मर्दों और औरतों के लिए दुनिया और आख़िरत के दुःखों से बचने का एक ही तरीक़ा और क़ानून है कि अल्लाह तआला को सामने रखकर चलें और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक और प्यारी ज़िन्दगी को सामने रखकर चलें। आप पूरी दुनिया के इन्सानों को जन्नत की राह दिखाने आए और पूरी

दुनिया के इन्सानों को जहन्नुम से बचाने आए हैं लेकिन बचेगा वही जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर चलेगा। बाक़ियों के लिए फिसलना है। जहन्नुम में गिरना है उस ख़ौफ़नाक आग की तरफ़ चलना है।

प्रेशरकुकर से आयत की वज़ाहत

यह जो आयत है

﴿انها عليهم مؤصدة فى عمد ممدة﴾

यह आयत मुझे प्रेशरकुकर से अच्छी तरह समझ में आई है और इस आयत की वज़ाहत औरतें ज़्यादा अच्छी तरह समझेंगी जो अब मैं इसकी वज़ाहत करने लगा हूँ। "मुसदतुन"

﴿مؤصدة﴾ "मुसदतुन" का मतलब यह होता है कि चारों तरफ़ से बन्द दीवारें। छत बन्द, फ़र्श बन्द, दीवारें बन्द, न कोई खिड़की न कोई दरवाज़ा न कोई रास्ता और न कोई सुराख़।

आप रोज़ाना देखते हैं कि औरतें प्रेशरकुकर में गोश्त डालती हैं। उसकी मोटी तह का फ़र्श, मोटी दीवारें, मोटी छत और बीच में एक छोटा सा सुराख़ होता है। यह सुराख़ न हो तो अन्दर की भाप जब ताक़त पकड़ेगी तो यह प्रेशरकुकर बम बन जाएगा और अगर यह फट जाए तो सारे घर को आग लगाकर रखकर दे। इसके ऊपर से सुराख़ होता है छोटा सा। जिससे भाप थोड़ी थोड़ी निकलती है और जो अन्दर भाप रह जाती है वह इतनी ताक़त पैदा करती है कि वह गोश्त जो दो घन्टे गलने का नाम नहीं ले वह दस मिनट में हड्डियों से जुदा होकर रेशा रेशा हो कर और

रेज़ा रेज़ा होकर पानी बन जाता है। पाँच मिनट और लगा दें तो हड्डियाँ भी गल जाती हैं और ऐसे नरम हो जाती हैं जैसे गूदा होता है यह रोज़ाना हमारी औरतों का काम है।

वे रोज़ाना प्रेशरकुकर लगाती हैं और प्रेशरकुकर से मुझे ﴿مؤصدة﴾ का तर्जुमा समझ में आया।

﴿مؤصدة﴾ "मुसदतुन" कि नीचे जहन्नुम की मोटी तह होगी और ऊपर ख़ौफ़नाक मोटी छत होगी, दाएं बाएं मोटी मोटी दीवारें होंगी।

نارا احاط بهم سرادقها. لهم من جهنم مهاد ومن فوقهم
غواش. لهم من فوقهم ظلل من النار من تحتهم ظلل.

ऊपर नीचे दाएं बाएं सुराख़ नहीं जहाँ से भाप बाहर निकले। इसमें अल्लाह नाफ़रमानों को फेंक देगा और फिर उसको बिल्कुल बन्द कर देगा और जो स्टीम बनेगी उसके अन्दर वह बाहर नहीं जाएगी क्योंकि यह जहन्नुम की दीवारें हैं। फटने का नाम नहीं लेंगी बल्कि ये उस नाफ़रमान को फाड़कर रख देंगी और उसकी बोटी बोटी अलग हो जाएगी। रेशा रेशा अलग अलग हो जाएगी।

जहन्नुम की आग की शिद्दत

उसकी हड्डियों में आग क्या बल्कि उसके तलवों से आग उसके अन्दर दाख़िल हो जाएगी और उसके गोश्त और हड्डियों से गुज़रती हुई उसके पेट में रानों से गुज़रती हुई पेट और सीने से गुज़रती हुई गर्दन को चीरती हुई और खोपड़ी को चीरती हुई आग उससे पार निकल जाएगी पार। तलवों से दाख़िल होगी और खोपड़ी से निकल जाएगी। पाँव से लेकर सर के ऊपर तक ﴿مؤصدة﴾ होगा। इसमें घिरा हुआ। अब वह प्रेशर बनता है,

भाप बनती है, आग बनती है।

पिघल जाता है लेकिन मरता नहीं। फिर पिघल जाता है फिर जुड़ जाता नहीं। फिर पिघल जाता है फिर जुड़ जाता है। काश! कोई करोड़ ख़रब साल के बाद भी कह दिया जाता कि चलो इनको निकाल दिया जाए, नहीं नहीं। दस खरब साल भी अगर गुज़र जाएं काफ़िरों के लिए जहन्नुम ही है।

एक हदीस में आता है कि अगर दोज़ख़ वालों से कहा जाए कि दुनिया में रेत के जितने ज़र्रे हैं उतने साल तुम्हें जहन्नुम में रखकर निकाल लिया जाऐगा तो वह सारे ख़ुश हो जाएंगे और अगर जन्नत वालों से यह कहा जाए कि दुनिया में जितने रेत के ज़र्रे हैं उतने साल रखकर तुम्हें जन्नत से निकाल दिया जाएगा तो वे रोने बैठ जाएं लेकिन न वे निकलने को और न वे निकलने को। ये भी हमेशा और वे भी हमेशा।

خلدين فيها ابدا. ان الله قد حكم بين العباد.
وقضى بينهم بالحق وقيل الحمد لله رب العلمين.

क़यामत का दिन

यह वह दिन है जिस दिन अल्लाह खरे और खोटे को अलग करके

فريق فى الجنة وفريق فى السعير. يوم يات
لاتكلم نفس الا باذنه فمنهم شقى وسعيد.

यह वह दिन है जिस दिन इज़्ज़त वाले अलग होंगे, ज़िल्लत वाले अलग होंगे। यहाँ तो ख़ुश्क व तर चलता है। अच्छा और

बुरा चलता है लेकिन वह दिन आएगा जिस दिन अल्लाह कहेगाः

﴿وامتازوا اليوم ايها المجرمون﴾

ऐ मुजरिमों की जमात आज तुम अलग हो जाओ।

मेरे भाईयो और बहनो!

हम ने क्या ग़म बना लिए? कपड़ा, ज़ेवर, शादी, मुलाज़मत, इमारतें, घर, मोबाईल, ए०सी०। यह हमारी फ़िक्रें बन गयीं हैं और जिससे अल्लाह ने डराया है और जिससे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने डराया है उसका न ग़म न एहसास न फ़िक्र न समझ । जिन्हें अल्लाह ने दुनिया में ही बशारतें दे दीं कि यह जन्नती हैं। जिसे दुनिया में ही उनकी जन्नत के फ़ैसले कर दिए। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद फ़रमा रहे हैं, फ़ातिमा मेरी बेटी जन्नती औरतों की सरदार। इसके बावजूद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे हैं

﴿يا فاطمة بنت محمد انقذى نفسك من النار﴾

ऐ फ़ातिमा! दोज़ख़ से अपने आपको ख़ुद बचाना इस धोके में न रहना कि मैं नबी की बेटी हूँ। अपने आपको ख़ुद बचाना जहन्नुम की आग से हालाँकि उन्हें ख़ुद ही बता चुके हैं कि यह जन्नत की औरतों की सरदार है। इसके बावजूद उन्हें ख़ुद ही यह फ़रमा रहे हैं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाईल और कमालात

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वह हस्ती हैं जिनके तुफ़ैल बाईस

लाख स्कवायर मील में इस्लाम फैला।

और वह शख़्स है जिसके बारे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उमर जिस रास्ते से गुज़रता है शैतान वह रास्ता बदल देता है।

और वह हस्ती हैं जिनके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मैदाने अरफ़ात में फ़रमाया सवा लाख का मजमा है। सहाबा मौजूद हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला मेरे तमाम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर फ़ख़्र फ़रमा रहे हैं और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर ख़ासतौर से फ़ख़्र किया जा रहा है।

यह वह आदमी है जिस पर अल्लाह फ़ख़्र फ़रमा रहे हैं। जिस पर अल्लाह को फ़ख़्र है। वह हस्ती तो कितना बड़ा मक़ाम कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर होता।

मेरे दो वज़ीर ज़मीन में और दो वज़ीर आसमान में हैं।

अबूबक्र और उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा दुनिया के वज़ीर हैं और जिब्राईल और मीकाईल अलैहिमस्सलाम मेरे आसमान के वज़ीर हैं।

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक हाथ अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का और एक हाथ उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का पकड़ा और फ़रमाया मैं और अबूबक्र और उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा क़यामत के दिन ऐसे इकठ्ठे खड़े होंगे कि मेरे दाएं तरफ़ अबूबक्र और बाएं तरफ़ से उमर निकलेंगे। (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा)

कितनी बशारतें मैंने आपको सुना दीं। और बाईस लाख स्कवायर मील का इस्लाम लाखों इन्सान जिसकी बरकत से मुसलमान हुए। इस्लाम को उनकी बरकत से इ़ज़्ज़त मिली, बुलन्दी मिली और उन्हें अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मांग कर लिया या अल्लाह! मुझे उमर दे दे, मुझे उमर दे दे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आख़िरी ख़्वाहिश

और फिर उनको जो मौत आई वह ग़फ़लत की मौत नहीं शहादत की मौत है। नमाज़ पढ़ाते हुए फ़ज्र की नमाज़ में खड़े हुए उन्हें अल्लाह तआला ने शहादत का ईनाम बख़्शा और जब मौत की दस्तक को महसूस किया तो अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया। इतनी बशारतों के बावजूद और फ़रमाया,

"अब्दुल्लाह! अम्मा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछकर आओ कि उमर अपने साथियों के साथ दफ़न होने की इजाज़त चाहता है और यह न कहना कि अमीरुल मोमिनीन इजाज़त चाहता है बल्कि यह कहना कि उमर इजाज़त चाहता है अगर वह इजाज़त दे दें तो मुझे मेरे मरने के बाद वहाँ दफ़न करना अगर इजाज़त न दें तो मुझे कब्रिस्तान में दफ़न कर देना।"

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु जब पूछने गए तो देखा अम्मा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा रो रही हैं। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु अर्ज़ किया अम्मा जान! मेरा बाप उमर अपने साथियों के साथ जगह चाहता है।

तो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया यह जगह तो मैं ने अपने लिए रखी हुई थी लेकिन अगर उमर चाहते हैं तो उन्हें मैं अपनी ज़ात पर तरजीह दूंगी। मेरी तरफ़ से इजाज़त है। यह और बड़ी खुशख़बरी मिल गई और ऊँची बात हो गई।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर अर्ज़ किया अब्बा जान! मुबारक हो पड़ौस की इजाज़त मिल गई। क़यामत तक का साथ। दुनिया का भी और आख़िरत का भी।

फ़रमाया नहीं नहीं बेटा मुमकिन है मेरी शर्म में इजाज़त दी हो जब मैं मर जाऊँ, मेरा जनाज़ा उठाकर ले जाना और वहाँ रखकर एक दफ़ा फिर इजाज़त मांगना। इस वक़्त अगर इजाज़त मिल जाए तो अन्दर ले जाना।

यह सब कुछ फ़ज़ाईल भी आपने देख लिए, शहादत भी आपने देख ली और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पड़ौस की जगह भी आपने देख ली।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का आख़िरत का ख़ौफ़

इस सब के बावजूद जब महसूस हुआ कि मौत आ रही है तो उनका सर बेटे की गोद में था। इर्शाद फ़रमाया बेटा! मेरा सर ज़मीन पर रख दे, मिट्टी पर रख दे।

उन्होंने आप का सर मिट्टी पर रख दिया तो वह अपने गाल मिट्टी पर रगड़ने लगे और कहने लगे

﴿ويل لك يا عمر ان لم يغفرلك ربك﴾

ऐ उमर! तो बर्बाद हो गया अगर तेरे अल्लाह ने तुझे माफ़ न किया।

माफ़ी की कोई कसर बाक़ी थी। इसलिए मैंने आपको उनके फ़ज़ाईल व कमालात सुनाए ताकि पता चले कि कौन आदमी जा रहा है।

﴿ويل لك يا عمر ان لم يغفر لك ربك﴾

ऐ उमर! तो बर्बाद हो गया अगर तेरे रब ने तुझे माफ़ न किया।

यही दोहराते रहे और जान जान देने वाले के सुपुर्द कर दी।

यह वह आदमी है जिसके लिए जन्नत सजाई जा गई, जिनके इस्तिक़बाल फ़रिश्तों ने किए लेकिन मौत के वक़्त यह कैफ़ियत थी कि बार बार यह कह रहे थे मैं मर गया अगर मेरे रब ने मुझे माफ़ न किया।

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु ने जनाज़ा पढ़ाया। मैय्यत को उठाकर जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरवाज़े के सामने रख दिया। सारा मजमा पीछे मैय्यत आगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा उनके बेटे आगे बढ़े और दरवाज़े पर दस्तक दी।

हज़रत अम्मा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा अन्दर थीं। अर्ज़ किया अम्मा जान! मेरा बाप उमर बिन ख़त्ताब (रज़ियल्लाहु अन्हु) दरवाज़े पर हाज़िर हो चुका है और अन्दर आने की इजाज़त चाहता है।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने चादर उठाई। पर्दा किया और फ़रमाया ﴿مرحبا بعمر﴾ उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए राहें

खुली हैं।

और बाहर तशरीफ़ ले गयीं दूसरे घर में ताकि क़ब्र खोदी जा सके।

जिस आदमी को इतने एज़ाज़ मिल रहे हों वह मौत पर इस तरह कह रह हो बर्बाद हो गया मैं अगर मुझे मेरे अल्लाह ने माफ़ न किया।

मर्दों और औरतों के शौक़

हम ने कभी अपना अन्दाज़ा किया कि हम सुबह से शाम तक क्या करते रहते हैं? सुबह से शाम तक हम कैसे ज़िन्दगी गुज़ारते हैं? हमारी औरतें क्या कर रही हैं? हमारे मर्द क्या कर रहे हैं?

मर्दों को कमाने का शौक़ है, औरतों को संवरने के सिवा कोई शौक़ नहीं। घर संवारो, जिस्म संवारो। मर्दों को शौक़ है पैसा कमाओ। रक़म बनाओ और पैसा कमाने में दौड़ लगी हुई। मुक़ाबला हो रहा है, क्या नादानी है।

मेरे भाईयो!

पैसे में मुक़ाबला हो रहा है एक कहता है मैं उससे ज़्यादा कमाऊँ और दूसरा कहता है मैं उससे ज़्यादा कमाऊँ।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इर्शाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की शान में

जब क़ब्र ख़ोद रहे थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु

अन्हुमा फ़रमाते हैं मैंने महसूस किया कि मेरे कन्धे पर किसी ने हाथ रखा है। जब मैंने पीछे देखा तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए थे और उनकी आँखों से आँसू जारी थे और यह इर्शाद फ़रमा रहे थे,

ऐ उमर! मुझे पता था कि तू इस जगह के सिवा कहीं भी नहीं दफ़न हो सकता। तेरे लिए यही जगह थी इसलिए कि मैंने एक दफ़ा नहीं बल्कि कितनी दफ़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इन कानों से सुना कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

"मैं और मेरे साथी अबूबक्र और उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा,

मैं और मेरे रफ़ीक़ अबूबक्र और उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा,

मैं और मेरे सहाबी अबूबक्र और उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा,

यह बोल मैंने बीसियों बार अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना। इसलिए मुझे यक़ीन था कि इस जगह में तेरे सिवा कोई आ ही नहीं सकता।

दिली दुःख दर्द का इज़्हार

इतनी बड़ी तैयारी किए होने के बावजूद लरज़ रहे, काँप रहे। काँपते हुए थर्राते हुए मर गए। हमारे पास क्या है?

फिर कैसी ग़फ़लत है। इसको कैसे दूर किया जाए। मुझे समझ नहीं आता। कहाँ से वह बोल लाए जाएं जो दिलों के पर्दों को जाकर चीरें और अन्दर जाकर सोए हुए ईमान को जगा दें। अपनी बे बसी नज़र आती है।

हम ऐसी चीज़ पर मेहनत कर रहे हैं जिसकी एक चीज़ भी हमारे हाथ में नहीं। इन ताजिरों के तो गोदाम भरे पड़े हैं। कपड़े के स्वेटर के, लोहे के, दूसरी चीज़ों के। यह मेरा गोदाम यह आ गए ग्राहक, ख़रीदो बेचो और पैसे गल्ले में डालो। हम ऐसी चीज़ पर मेहनत कर रहे हैं जिसका एक ज़र्रा भी हमारे हाथ में नहीं है।

दिल बदल जाए। दिल तो मेरा अपना मेरे हाथ में नहीं औरों के दिल कैसे बदले जाएं। क़दम क़दम पर अपनी बेबसी का एहसास होता है कि एक मजमा रेले का रेला बिफरे हुए तूफ़ान की तरह जहन्नुम की तरफ़ बढ़ रहा है और आगे है कोई नहीं जो बन्ध बनाने की कोशिश कर रहा हो।

कोई रेत का टीला भी बनाकर खड़ा हो जाए और कहे कि बचो आगे आग है।

गाड़ियों के तो स्पीड ब्रेकर बनाए होते हैं कि तेज़ रफ़्तारी में कहीं टक्कर न हो जाए। जगह जगह स्पीड ब्रेकर बने हुए हैं। भाई ज़रा संभल कर, रुक कर चलो, रुक चलो।

और जहन्नुम की तरफ़ बढ़ते हुए इस रेले का कहाँ से स्पीड ब्रेकर बनाएं। क्या नौजवान, क्या मर्द, क्या औरतें, क्या ताजिर, क्या ज़मींदार, क्या हुकमुरान, क्या देहाती, क्या शहरी। ऐसे जहन्नुम की तरफ़ जा रहे हैं जैसे नयागर आबशार का पानी गिर रहा हो। इस तरह जहन्नुम की तरफ़ इन्सानियत खिंची चली जा रही है।

अल्लाह के हुक्मों की अहमियत

शीशे का गलास टूट जाए तो अफ़सोस होता है। गलासों से घर

भरा पड़ा है। अभी कुछ दिन पहले की बात है हमारी ख़ादिमा के हाथ से गलास टूट गया तो मेरी बीवी कहने लगी अभी तो मंगवाया था अभी टूट भी गया। यह हमारे घर की मिसालें हैं। शीशे का गलास टूटता है तो घर की मालिकन को दुःख होता है और दर्द होता है।

यह ताजिर बैठे हैं उनका एक लाख रुपया डूब जाए तो यह आग बगूला हो जाते हैं। सर से लेकर पाँव तक उनके बाल बाल में अंगारे भर जाते हैं। उनका गिरेबान पकड़ने को आते हैं। उसे मारने को आते हैं।

रोज़ाना कितने हुक्म शीशे की तरह चकनाचूर हो जाते हैं। जब कोई औरत बेपर्दा होकर बाज़ार का रुख़ करती है तो वह एक सफ़र में कितने हज़ारों हुक्म तोड़ती है। एक ताजिर जब ग़लत लेन देन करता है। एक लेन देन में वह कितने हज़ारों हुक्म तोड़ता है।

भाईयो!

शीशे के गलास टूटने का तो दर्द हो लेकिन अल्लाह के हुक्मों के टूटने का ग़म ही मिट गया, एहसास ही ख़त्म हो गया। क़ीमत तो आमाल पर लगेगी न कि चीज़ों पर न कि शक्ल व सूरत पर। वज़न तो आमाल से पैदा होगा। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ज़िन्दगी लाए। उस ज़िन्दगी को अपने अन्दर उतारना हमारी मेहनत है।

हम सिर्फ़ नमाज़ की बात नहीं कर रहे कि आओ नमाज़ पढ़ो, नमाज़ पढ़ो अगर तबलीग़ का काम सिर्फ़ नमाज़ पर मौक़ूफ़ होता तो भी बड़ा अज़ीम काम था। क्या नमाज़ कोई छोटा अमल है?

नमाज़ कोई मामूली हुक्म है? पिच्चानवें फ़ीसद मर्द व औरत नमाज़ छोड़ चुके हैं। पिच्चानवें फ़ीसद मर्दों व औरतों को सज्दा नसीब नहीं। जो सबसे पहला सवाल होने वाला है। शैतान ने एक सज्दे से इन्कार किया अल्लाह ने क़यामत तक के लिए मरदूद कर दिया जो पाँच नमाज़ें छोड़ता है कितने सज्दों का इन्कार रोज़ाना करता है। जो पूरा हफ़्ता सज्दा नहीं करता कितने सज्दों का उसने इन्कार किया।

एक सज्दा शैतान ने छोड़ा हमेशा के लिए मरदूद हो गया। बीस बरस गुज़र गए एक सज्दा भी नमाज़ का नसीब नहीं तो कितनी बड़ी मरदूदियात आएगी क़यामत के दिन उसके लिए लेकिन हम तो पूरे दीन को रो रहे हैं।

पूरा दीन पूरी दुनिया में

अरे भाईयो और बहनो!

सिर्फ़ नमाज़ इस्लाम नहीं है। शादियों पर उन औरतों को क्या हो जाता है, उन मर्दों को क्या हो जाता है। ये किस तरह अल्लाह के हुक्मों को टुकड़े टुकड़े करते हैं।

तिजारत में क्या हो जाता है। रहन सहन में क्या हो जाता है किस तरह हुक्म ऊपर नीचे हो जाते हैं और शरियत का मज़ाक़ उड़ता चला जाता है।

हम तो पूरे दीन को पूरी दुनिया में लाने की मेहनत कर रहे हैं। हर औरत सर से लेकर पैर तक मुहम्मदी नज़र आए, हर मर्द सर से लेकर पैर तक मुहम्मदी नज़र आए।

हमारे लिए नमूना आज की औरत नहीं है। हमारी औरतों के लिए नमूना हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकीज़ा बीवियाँ हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने कहा

﴿لستن كاحد من النسآء﴾

ऐ मेरे नबी की बीवियों! तुम्हारे जैसी कोई औरत दुनिया में है ही नहीं।

बेहयाई का सैलाब

हमारी औरतें यूरोप की औरत के पीछे जा रही हैं। औरतों के लिबास छोटे छोटे होते चले जा रहे हैं। बेहयाई और कैसे आती है नंगापन और कैसे आता है। पहले पर्दा छोड़ा और चादरों पर आयीं फिर चादरें भी उतर गयीं फिर लिबास कम से कम होता गया, फिर पतलूनें आ गयीं। अब स्कर्ट तक नौबत आने वाली है अगर हम ने आँख न खोलीं तो हमारी अगली नस्ल मुमकिन है नंगे होकर नाचना शुरू कर दे और जब कोई क़ौम बेहया हो जाती है तो अल्लाह तआला उसको मिटा कर रख देता है। अल्लाह उसको ज़मीन से ज़रूर मिटाता है। इसलिए मुझे यक़ीन है कि यूरोप व अमरीका के दिन गिने चुने रह गए हैं।

उनको अल्लाह ज़रूर मिटाएगा। कोई उन्हें दावत दे या न दे क्योंकि यह खुद बेहया और सारी नस्ल बेहया कर दी।

केबल घुसा दी, इन्टरनैट घुसा दिया।

हम छोटे छोटे थे हमारा एक मौज़्ज़िन होता था बाबा जी। वह हमें कहता था बेटा! एक दिन आएगा घर घर कंजरी नाचेगी और केबल ने घर घर में कंजरी नचा दी।

औरत अपने घर को साफ़ रखती है और धरती अल्लाह का आँगन है। अल्लाह इसे ऐसे ही गंदा रखेगा। यह धरती अल्लाह का सहन है कब तक यहाँ ज़िना गवारा करेगा। कब तक बेपर्दगी देखेगा, कब तक बाजों की महफ़िलें देखेगा, कब तक सूद के बैंक देखेगा और कब तक ज़ुल्म व सितम देखेगा और कब तक यहाँ नंगापन और बेहयाई देखेगा और कब तक यहाँ लड़का लड़कियों को नाचता देखेगा।

मेरे अल्लाह की क़सम! इस निज़ाम ने टूटना है अगर हम ने तौबा कर ली तो हम बच जाएंगे और अगर तौबा न की तो बहाव में हम भी बहते चले जाएंगे।

बेहयाई गवारा नहीं

सारी दुनिया ख़ौफ़नाक मोड़ पर आई हुई है। ख़तरनाक मोड़ पर आई हुई है क्योंकि अल्लाह कुफ़्र को गवारा करता है, बुतपरस्ती को गवारा करता है, शिर्क को चलने देता है लेकिन बेहयाई को अल्लाह की ग़ैरत गवारा नहीं करती। उस अल्लाह ने ज़रूर इस बेहयाई को तोड़ना है। यह ज़मीन अगर अल्लाह ने बिछाई है, आसमान की छत अगर अल्लाह ने तानी है, हवाएं अगर अल्लाह के हुक्म से आती हैं, सूरज अगर अल्लाह के हुक्म से चमकता है, रात अगर अल्लाह के हुक्म से आती है, दिन अगर अल्लाह के हुक्म से आता है तो यह धरती एक दिन ज़रूर अल्लाह के अम्र से धोई जाएगी। यह इस तरह गंदी नहीं रह सकती।

हम यह शोर मचा रहे हैं कि तौबा करो अल्लाह का वास्ता तौबा करो, तौबा करो। इस ग़लत ज़िन्दगी से हटो। आगे आग है. ख़ौफ़नाक घाटियाँ हैं। हम तो सारी दुनिया के लोगों से हाथ जोड़ कर कह रहे हैं।

भाईयो!

तौबा करो, अरी बहनों तौबा करो। यह ज़िन्दगी बता रही है, नमूना आंज के माहौल को न बनाओ नमूना आज के समाज को न बनाओ बल्कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को नमूना बनाओ जिसे दुनिया में ही अल्लाह का फ़रिश्ता कह रहा है ख़दीजा को मुबारक हो जन्नत में मोती के महल की। उसके पीछे चलो ताकि आप के भी मोती के महल बनें।

काएनात की अकेली औरत मर्दों और औरतों से आगे बढ़ने वाली औरत जिसको अल्लाह तआला ने सीधा सीधा सलाम भेजा। अंबिया अलैहिमुस्सलाम को तो सलाम आए ही थे अल्लाह तआला ने नबियों के बाद सबसे पहला जिसको सलाम भेजा वह हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं लेकिन यह सलाम कब आया जब हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का सारा माल अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर लग गया और घर में पकाने के लिए एक मुठ्ठी जौ भी बाक़ी न रहे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़क़्र व फ़ाक़ा

يا جبريل والذى نفس محمد بيده ما

امسى لآل محمد كفة من شعير.

ऐ जिब्राईल! उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े क़ुदरत में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान है आज आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के घर में एक मुठ्ठी जौ नहीं है।

हमारे बच्चे तो आधे बर्गर खाकर बाक़ी बाहर फेंक रहे होते हैं। आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में एक मुठ्ठी जौ न रहा।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि भूख की तेज़ी में करवटें बदल रहे थे। नींद नहीं आ रही थी।

रोज़े में जब असर के करीब भूख लगती है हालाँकि हमारी तो अभी तक सहरी भी हज़्म नहीं हुई होती फिर भी जिस्म गिरता है।

तीन दिन से जिसने एक लुक़्मा न चखा हो उसका क्या हाल होगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चारपाई पर लोटपोट हो रहे थे भूख की तेज़ी से कभी इधर करवट बदलते और कभी इस तरह करवट बदलते और पेट कमर के साथ लग गया था।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पेट पर हाथ फेरना शुरू किया और रोना शुरू कर दिया और कहने लगीं या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴾فداك نفسى﴿ मेरी जान आप पर क़ुर्बान आपका तो एक इशारा सब कुछ हाज़िर कर सकता है। आप इतना दुःख क्यों सहते हैं।

जिसको सब कुछ मिलता हो फिर भी वह कहे नहीं कोई तो उनके अन्दर ज़हर छुपा हुआ है जिससे वह बचना चाहते हैं।

तड़प रहे हैं कभी पेट को चारपाई से लगाते हैं और पत्थर भी इसलिए बाँधते थे ताकि आँतें दब जाएं और उनमें जो भूख की एक पुकार मची हुई है वह बन्द हो जाए।

इस दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी अपने पेट को एक तरफ़ से चारपाई से लगाते और कभी दूसरी तरफ़ लगाते। आख़िर हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फूट फूट कर रो पड़ीं और अर्ज़ किया आप इतनी परेशानी क्यों बर्दाश्त करते हैं?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आएशा! मैं अपने भाईयों के तरीक़े पर चलना चाहता हूँ। मुझ से पहले जितने नबी आए उन्होंने भी ऐसे ही फ़ाक़े बर्दाश्त किए। मैं अपने भाईयों के तरीक़े से हटना नहीं चाहता।

मैं चाहूँ तो ओहद पहाड़ सोना बनकर मेरे सामने ढेर हो जाए लेकिन मैं नहीं चाहता कि मैं अपने साथियों की राह छोड़ दूँ और उनके तरीक़े से हटूं।

यूरोपियन कलचर

उनको नमूना बनाओ जिनके पीछे चलकर आपको मंज़िल मिले। वह अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औरतें हैं।

﴿لستن كاحد من النساء﴾

ऐ मेरे नबी की बीवियों! तुम्हारे जैसी कोई औरत है ही नहीं।

जिन जैसी दुनिया में कोई है ही नहीं तो आप उनके पीछे क्यों नहीं चलतीं।

तुम मग़रिब (यूरोप) की औरत के पीछे चल रही हो। पछ्छिम में तो सूरज भी जाकर अँधा हो जाता है। आप कौन सी रोशनी देख रही हैं?

मग़रिब (पछ्छिम) में तो सूरज भी डूब जाता है यह हमारी औरत यूरोप की तहज़ीब में कौन सा उभरना देख रही है।

यह हमारे नौजवान पतलूनें कसे हुए, टाईयाँ लटकाए हुए ऐसे फ़ख़्र के साथ फिर रहे हैं जैसे कोई हिमालय पहाड़ की चोटी जीत ली हो। पछ्छिम में तो सूरज भी डूबता है। हम पछ्छिम के पीछे चलकर कैसे कामयाब हो सकते हैं?

पछ्छिम तो अँधेरों की जगह है। मशरिक़ (पूरब) रोशनियों की जगह है। अल्लाह तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूरब के बीचो बीच पैदा किया है मिडिल ईस्ट। पूरब का भी बीच। मक्का मुकर्रमा मशिरक़ बस्ता में है। हमारा नबी पूरब से उभरा। सूरज हमेशा पूरब से रोशनी फैलाना शुरू करता है और पछ्छिम आकर रोशन कर देता है लेकिन यही सूरज जब पछ्छिम को छूता है तो इसकी गहरी काली अँधेरियाँ सूरज पर भी स्याह चादर चढ़ाकर उसे भी अँधा कर देती हैं। हमारी बच्ची इसाईयों की तहज़ीब में कौन सी रोशनी देख रही है? हमारी बेटियों को यूरोप की तहज़ीब में क्या नज़र आ रहा है? हमारे बेटों को यूरोप में क्या नज़र आ रहा है? ये कौन सी इज़्ज़त देखना और हासिल करना चाहते हैं।

नस्ल को तैयार करना

कैसे समझाऊँ? कुछ समझ में नहीं आता। बस बेबसी का

आलम है। लोग इतनी बात पर सब कुछ छोड़कर चले जाते हैं कि जी! क्या करें समाज ही ऐसा है, क्या करें गुज़ारा नहीं, गुज़ारा कैसे करें? बस इतना कहकर सब कुछ दरहम बरहम करके ऐसे फेंक देते हैं जैसे रद्दी के काग़ज़ को फाड़कर रद्दी की टोकरी में फेंक दिया जाता है।

हमारे लिए कामयाबी का रास्ता हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आए हैं। उस रास्ते पर चलने के लिए नस्ल को तैयार करना है यह औरत की ज़िम्मेदारी है। तबलीग़ वालों का तो हम पर एहसान है कि काम हमारा और कर वे रहे हैं।

आज हमारी माँएं बांझ हो चुकी हैं। बच्चे तो पैदा होते हैं लेकिन उनकी गोद हरी नहीं है कि उसमें फूल नहीं खिले बल्कि काँटे हैं, उसमें महक नहीं बल्कि बदबू है, आबादियाँ नहीं बल्कि बर्बादियाँ हैं।

हमारी औरतों के ज़िम्मे था कि बच्चे के बालिग़ होने से पहले उसके अन्दर अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत को गूंधकर रचा देना लेकिन उनके अपने अन्दर ही नहीं वे बच्चों को क्या करेंगी।

उजड़े चमन के पंछी

तबलीग़ कोई जमात नहीं है कि हम सारे लोगों को तबलीग़ी जमात में शामिल करना चाहते हैं। भूला सबक़ है कि एक नस्ल तैयार करो जो अल्लाह पर फ़िदा और क़ुर्बान होना उसकी ज़िन्दगी का काम बन जाए। यह भी कोई नस्ल है जिन्हें पेट और शहवत

के सिवा कुछ सूझता ही नहीं।

हम ने तो बस ख़िज़ां ही देखी है और मालूम नहीं बहार देखना मुक़द्दर में भी है या नहीं अल्लाह ही जाने। बहरहाल तमन्ना तो हर कोई करता है।

उजड़े चमन के हम पंछी हैं जिन्होंने बहार देखी ही नहीं। इन्सानी शक्लें तो देखीं इन्सान नहीं देखे।

हम तबलीग़ के ज़रिये अपनी मुसलमान बहनों में वह छिपी हुई मुसलमान माँ ज़िन्दा करना चाहते हैं, वह छिपी हुई मुसलमान माँ जिसे मरे हुए सदिया गुज़र गयीं। हम वह माँ ज़िन्दा करना चाहते हैं जो एक नस्ल तैयार करके दे और अगली नस्ल को ईमान वाला बनाकर, अख़्लाक़ वाला और मुहब्बतों वाला बनाकर मरे।

ज़िन्दगी का रुख़

यह तबलीग़ की मेहनत है तो यह सिर्फ़ दर्स से नहीं आता कि हमने दर्स सुन लिया। सुनने और पढ़ने से आता तो मुझे क्या तकलीफ़ थी तबलीग़ में धक्के खाने की। मैं कोई बड़ाई के तौर पर नहीं कहता। मैं अपने शौक़ से दुनिया छोड़ी, मेडिकल छोड़ा फिर पढ़ता ही रहा, पढ़ता ही रहा, पढ़ता ही रहा। मेरे दिमाग़ की रग रग में अल्लाह का शुक्र है किताबें घुसी हुई हैं दुनिया घुसी ही नहीं। यह नहीं कि मैं अपने को बुज़ुर्ग बना रहा हूँ। मैं भी दुनिया का कुत्ता हूँ लेकिन मेरे दिमाग़ ने कभी दुनिया को नहीं सोचा, न उसके लिए मंसूबे बनाए, न उसके लिए प्लानिगं की। इसके बाजवूद कह रह हूँ तबलीग़ में फिरे बिना ज़िन्दगी का रुख़ नहीं

बदलता। यह घर छोड़ो अगर अल्लाह से जी लगाना है तो यह सौदा करो। औरतों से भी हम कहते हैं कि निकलो।

मर्दों से भी हम कहते हैं निकलो क्योंकि ज़िन्दगी का रुख़ बनता ही इसी से है। आप लोग चार चार महीने के इरादे करें। निकलो अल्लाह की राह में। औरतों के दिल नरम होते हैं इसलिए उन्हें तीन दिन ही काफ़ी होते हैं। साल में तीन दफ़ा तीन दिन लगा लें तो इन्शाअल्लाह सारे घर का नक़्शा बदल जाएगा।

O O O

ज़िन्दगी का मक़सद

मक़ामः सईद कालोनी फ़ैसलाबाद

الحمد لله وسلام على عباده الذين اصطفى اللهم صلى على محمد وعلى اله محمد كما تحب ترضى. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم
بسم الله الرحمن الرحيم.
افحسبتم انما خلقنكم عبثا وانكم الينا لا ترجعون.
فتعلى الله ملك الحق لا اله الا هو رب العرش الكريم.

وقال النبى صلى الله تعالى عليه وسلم ما الدنيا فى الاخرة الا مثل ما يجعل احدكم اصبعه فى اليم فلينظر بم يرجع او كما قال صلى الله تعالى عليه وسلم.

बनने में मोहताज

अल्लाह तबारक व तआला ने हमें पैदा करते हुए न हम से मशिवरा लिया न हम से पूछा और न हमें बताया ﴿هو الذى خلقكم﴾ बना दिया। फिर किसी को मर्द बनाया और किसी को औरत बनाया।

﴿انا خلقنكم من ذكر وانثى﴾

हम इधर मर्द बैठे हुए हैं और उधर औरतें हैं हम में से न किसी ने चाहा और न दरख़्वास्त पेश की कि हमें मर्द बना दिया

जाऐ और हमें औरत बना दिया जाए।

﴿وجعلنكم شعوبا وقبائل﴾ फिर आगे ख़ानदान भी अलग अलग कर दिए किसी ने दरख़्वास्त नहीं दी थी कि मुझे इस ख़ानदान में पैदा किया जाए तो हम देखते हैं कि हम अपने बनने में पूरे मोहताज हैं। अपने क़द में, रंगत में, जिस्मानी बनावट में, जिन्स में यानी मर्द व औरत में फिर ख़ानदान में।

जब हमने आँख खोली तो हमें पता चला कि मैं लड़का हूँ, मैं लड़की हूँ, मेरा यह ख़ानदान है। मेरी यह शक्ल है। फिर जब थोड़ी समझ पैदा हुई तो दाएं बाएं एक काएनात नज़र आई। एक जहान था जिस में नौ महीने गुज़ारे उसका तो पता ही नहीं।

फिर इस जहान में आया तो यह बहुत बड़ा, ख़ूबसूरत नज़र आया। वादियाँ भी हैं, पहाड़ भी हैं, हरे, काले, सफ़ेद बर्फ़ से ढके हुए, हरियाली से ढके हुए, स्याह पहाड़ काली चादर, बड़े बड़े मैदान। फिर कहीं फूल, कहीं परिन्दे, कहीं चहचहाहट।

मौत पर रोना पीटना

कहीं महक जब सारा जहान देखा तो दिल लगने लगा, रहने को जी चाहने लगा। अभी समझबूझ बेदाग़ नहीं है और दुनिया से दिल लगने लगा है लेकिन अचानक किसी घर में रोने पीटने की आवाज़ आई। अपने ही घर में रोना धोना मच गया तो मासूम ज़हन को एक धचका लगा और कहने लगा यह क्या हुआ?

उसे बताया बेटा! फ़लाँ मर गया।

मौत क्या होती है? अच्छा इतना ख़ूबसूरत घर बनाकर भी मर जाते हैं, छोड़ जाते हैं। मौत क्या होती है तो एक कोड़ा क़ुदरत ने

लगया यहाँ रहना नहीं है। यह एक धोके का घर है, यह कूच का मैदान है, यह गुज़रगाह है, स्टेशन है जहाँ कुछ मिनट इन्सान ससताता तो है लेकिन रहता नहीं, बैठता तो है लेकिन घर नहीं बनाता। उसे मंज़िल का फ़िक्र होता है। मुसाफ़िर शब से चलते हैं जो जाना दूर होता है।

जिनकी मंज़िलें दूर हो उनका पहिया तेज़ी से घूमता है वह धीमी धामी चाल से नहीं चलते।

एक मासूम बच्चे ने जब चीख़ पुकार और रोना धोना सुना, कई एक को देखा कि गिरेबान फाड़ रहे हैं, कई एक को देखा कि वह अपनी चूड़ियाँ तोड़ रही हैं, कई एक को देखा कि वे बेहोश होकर गिर रहे हैं, कई एक को देखा कि उन्हें पानी पिलाया जा रहा है।

वह हैरान होकर देखता है कि इस ख़ूबसूरत घर में यह मातम कैसा है? यह रोना कैसा है?

वह देखता है कि अपने दादा को, अपनी दादी को, अपने भाइ को, अपने चाचा को, अपनी अम्मा को, अपनी ख़ाला को, अपनी फूफी को, अपने दोस्त को कि उनकी आँख बन्द हो गई। उसकी आँखों की शमा बुझ गई और एक दम बोलता वजूद एक दम से चुप हो गया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के शे'र हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की याद में

مالی وقفت علی القبور مسلما

قبر الحبیب فلا یرد جواب

यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का शे'र है जब हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को दफ़न कर दिया तो फिर उनको पुकारा या फ़ातिमा! कोई जवाब (नहीं मिला) फिर कहा या फ़ातिमा! जवाब ही नहीं आया तो फिर यह शेअर पढ़ा

مالی وقفت علی القبور مسلما
قبر الحبيب فلا يرد جواب

यह क्या हुआ कि फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जिसको मैंने कभी रात में पुकारा तो उसने हाज़िर हूँ कहा, सोती को पुकारा तो उठ बैठ गई। काम करती को पुकारा तो काम छोड़कर आ गई। गर्मी सर्दी में बुलाया तो हाज़िर हूँ कहा। आज मैं बुला रहा हूँ तो जवाब ही नहीं आ रहा है। क्या हुआ?

قبر الحبيب فلا يرد جواب

यह तो मेरी महबूब थी आज इसका जवाब क्यों नहीं आ रहा। पता चल गया।

لكل اجتماع من خليلين فرقة
وكل الذى قبل الممات قليل

पता चल गया कि यह दुनिया की ज़िन्दगी धोका है और मैं और वह जो यहाँ रहे थे। अभी तो मिल बैठे भी न थे कि जुदाई हो गई और मौत ने हमें जुदा कर दिया और उसे मिट्टी में दबा दिया और मैं ज़िन्दा खड़ा हूँ। मुझ पर यह राज़ खुल गया।

ان افتقادى فاطمة بعد احمدا
دليل على ان لا يدوم خليل

पहले मैंने अपने हाथों से मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खोया फिर आज फ़ातिमा भी मुझ से खो गई तो मुझे

पता चल गया कि यहाँ कोई दोस्ती सलामत नहीं।

दुनिया ज़िन्दों का मक़ाम है

कोई घर सलामत नहीं। यह घर कितने शौक़ से बना पड़ा है लेकिन कितनी हसरत की बात है कि कुछ दिनों के बाद लोग इसको छोड़कर जाना शुरू हो जाएंगे और मिट्टी और कीड़ों के घर में जाकर उनके अपने ही उनको दबा देंगे। कोई उनकी हाय हाय भी नहीं सुनेगा कि हम ने कितने अरमानों से घर बसाया।

एक एक पौधा को चुन चुनकर लगाया। मुझे कहाँ ले जा रहे हो? हाँ, हाँ। यही दुनिया की रीत है कि मरने वालों को कोई घर में नहीं रखा करता। यहाँ ज़िन्दों के लिए जगह है मरने वालों के लिए कोई जगह नहीं है। जाओ जाओ।

كان لم تكن بيني وبينك خلة
ولا حسن ود مرة في التبازلي

एक दिन ऐसा आएगा कि इस घर बनाने वाले को कोई याद भी नहीं करेगा कि किसी ने यह घर बनाया था। क़ब्रें भी भूल जाएंगे, नाम भी भूल जाएंगे, यह भी भूल जाएंगे कि कभी मिल कर बैठे थे।

बेवफ़ाई दुनिया की फ़ितरत है

इस जहां की जड़ में ही बेवफ़ाई है। इस जहाँ की फ़ितरत भूल जाना है, फ़ितरत मिटना है। बचना नहीं है। कहते हैं मरते मरते बचा। अरे एक दिन बचते बचते मर ही जाओगे। कब तक कहोगे

मरते मरते बचा। एक दिन बचते बचते मर ही जाओगे।

वह देखो जनाज़े उठ रहे हैं। एक दिन हम भी उठा दिए जाएंगे। इस दुनिया में जी लगने से पहली ही एक चोट लगी कि यहाँ तो मरते भी हैं, यहाँ तो उठ भी जाते हैं बड़े बड़े ख़ूबसूरत नज़ारों को छोड़कर, बड़े बड़े ख़ूबसूरत बैडरूमों को छोड़कर, बड़े बड़े आलीशान बिस्तरों को छोड़कर मिट्टी के घरों में सोते हैं, मिट्टी के बिस्तर पर लेटते हैं और मिट्टी की चादर ओढ़कर ऐसे बुझ जाते हैं जैसे शमा जलते जलते बुझती है तो अपना वजूद भी मिटा जाती है जैसे थी ही कोई नहीं। कोई आया ही न था बनाने के लिए।

ज़िन्दगी की हक़ीक़त

अल्लाह तबारक व तआला बताता है

اعلموا انما الحيوة الدنيا لعب ولهو وزينة تفاخر
بينكم وتكاثر في الاموال والاولاد كمثل غيث اعجب
الكفار نباته ثم يهيج فتراه مصفرا ثم يكون حطاما

अल्लाह तआला दुनिया की क्या प्यारी तस्वीर पेश करता है। फ़रमाया क्या तुम नहीं देखते हो कि एक किसान कैसे खेती को तैयार करता है। वह हरी भरी होती है, लहलहाती है तो एक दम अचानक वह पीली होना शुरू हो जाती है फिर सूखनी शुरू हो जाती है तो कल जो किसान खुद ही डंडा लेकर चिड़ियाँ भगा रहा, कव्वे भगा रहा, बच्चे भगा रहा उसी किसान के हाथ में दरांती है और उसके एक एक पौधे को काटता जा रहा है,

काटता जा रहा है।

एक एक पौधे को पानी दिया था। उसी पर थ्रेशर चला रहा है और उसके पुर्ज़े पुर्ज़े करके उसमें से दाने निकाल रहा है। अपनी मेहनत की की हुई खेती को जिस तरह किसान खुद हवा में उड़ा देता है ऐसे ही इन बने हुए घरों में से तुम उड़ा दिए जाओगे। जैसे गेहूँ का भूसा उड़ा दिया जाता है। पिछलों को कोई परवाह नहीं कि कौन आया था और किसने बनाया था।

मौत की हक़ीक़त

चंगेज़ खाँ ने कहा था मेरी औलाद बड़े बड़े मुल्कों पर हुकूमत करेगी, बड़े बड़े महलों में रात गुज़ारेंगे और उन्हें यह भी याद न होगा कि कोई बूढ़ा उनके लिए अपना ख़ून देकर हुकूमत बना गया।

मौत एक ऐसी अटल हक़ीक़त है कि हर नशे को निकाल देती है। यह दुनिया खेल तमाशा है।

माल की दौड़ है कितना कमाना है? कब तक कमाना है? कोई हद है? कहीं जाकर रुकना है? कहीं तो रुको कि आख़िरत की भी कुछ सोच सके। रोज़ाना नया प्रोग्राम, नए से नए मंसूबे, नए से नए डिज़ाईन है।

एक वह मंसूबा है जो हमारे साथ साथ चल रहा है जो हमें तेज़ी के साथ मौत की तरफ़ धकेल रहा है।

इधर ऊँची ऊँची इमारतें बन रही हैं उधर हम गहरे गढ़े की तरफ़ लुढ़कते चले जा रहे हैं।

इधर ख़ूबसूरत लिबास तैयार किए जा रहे हैं उधर कफ़न का सादा लठ्ठा भी बाज़ार में आ रहा है।

इधर बड़े आलीशान और उम्दा खाने तैयार किए जा रहे हैं उधर क़ब्र के कीड़े भी इन्तिज़ार में हैं शेख़ साहब की पली हुई लाश को खाने के लिए।

आप काएनात में ग़ौर क्यों नहीं करते? यह कितनी इबरत की ज़िन्दगी है? एक दम आँख खुलती है कि यह क्यों मर गया? यह कहाँ जा रहा है? इसको इतने ख़ूबसूरत घर से क्यों ले जा रहे हैं? मौत क्या है?

तो फिर पता चला कि यह जहाँ तो लोग छोड़कर चले जाते हैं तो क्या आगे कोई ज़िन्दगी है या बस यही कुछ है। मर गया। कुछ दिन हम रोए और फिर सबने भुला दिया। आप देखते नहीं कि जोग लोग कहते हैं कि इसके बग़ैर क्या होगा? फिर देखते हैं कि उसके बग़ैर सब कुछ ही हो रहा है।

कहते हैं कि इसके बग़ैर हमारी तो ज़िन्दगी अब अँधेरी हो गई। देखते हैं उसी घर में रात को रोशनी हो रही होती है जैसे यहाँ कोई मरा ही नहीं था।

तो यहाँ आकर ज़हन ख़ामोश हो जाता है कि आगे क्या है? अक्ल तो ख़ामोश हो जाती है लेकिन अगर इन्सान की अक्ल सलीम हो, मैं कहता हूँ मुसलमान भी न हो सिर्फ़ अक्ल व फ़ितरत ही सही हो तो वह भी इस दुनिया से जी हटा लेता है और कहता है कि दफ़ा करो इसे छोड़ ही जाना है तो इस पर जान क्या लगाएं।

जिस वजूद को मिट्टी ने खाना है उसको घंटों सजाना भी कोई काम है? जिस वजूद के लिए उतार व फ़ना तय है, जिस हुस्न को बुढ़ापे ने खाना है उसके पीछे लगे रहना यह भी कोई ज़िन्दगी है?

मौत के बाद

यहाँ आकर शरियत ने हमारी रहबरी की है कि नहीं मौत के बाद एक ज़िन्दगी है। खेल तमाशा नहीं है।

﴿ايحسب الانسان ان يترك سدا﴾

ऐ मेरे बन्दे! यह ख़्याल दिल से निकाल दे कि मौत के बाद कोई जज़ा व सज़ा नहीं है।

﴿ايحسب الانسان ان لن نجمع عظامه﴾ तुम यह सोचते हो कि मुर्दों को कौन ज़िन्दा करेगा। उन हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा?

﴿بلى﴾ यक़ीनन। कहा या अल्लाह ﴿قدرين﴾ हमें क़ुदरत है। किस बात की?

﴿على ان نسوى بنانه﴾ तेरा वजूद ही नहीं बल्कि उंगली का पोरा भी तेरा ही तुझे वापस करूंगा।

﴿بنانه﴾ आप जानते हैं कि यह जो फ़िंगर प्रिन्ट होते हैं यह सब के जुदा जुदा होते हैं। इसलिए अल्लाह तआला ने कहा

﴿بلى قدرين على ان نسوى بنانه﴾

अपनी उँगली के फ़िंगर प्रिन्ट को आग लगाकर रख ले कयामत के दिन मैं तुझे यही वापस करूंगा किसी और का नहीं होगा।

क़यामत आएगी

लेकिन फिर भी तू ढिठाई करता है ﴿يسئل ايان يوم القيمة﴾ फिर भी मुझ से पूछता है क़यामत कब आएगी तो फिर सुनो

﴿فاذا برق البصر وخسف القمر وجمع الشمس والقمر﴾

जिस दिन आँखें फट जाएंगी। सूरज और चाँद बेनूर हो जाएगा उस दिन तुझे क़यामत नज़र आएगी फिर तू कहेगा

﴿يقول الانسان يومئذ اين المفر﴾

आज तू कहेगा बचाओ। मैं कहीं भागना चाहता हूँ, मैं कहीं छिपना चाहता हूँ ﴿كلا﴾ दिन गए भागने के। सईद कालोनी और है और मैदाने महश्र और है।

﴿الا ربك يومئذ المستقر﴾ आज तेरे क़दमों को ज़मीन ने पकड़ा हुआ है। ये हिल नहीं सकते। ज़मीन पकड़ लेगी। यह जो ज़मीन में कशिश है अगर इसी को अल्लाह तआला दस गुना और बढ़ा दे तो अभी भी ज़मीन हमें पकड़े और हम हिल नहीं सकते तो यह तो अल्लाह ने कशिश को हिसाब से रखा हुआ है। इसी वजह से हम उठते भी हैं, बैठते भी हैं, चलते भी हैं अगर अल्लाह तआला ज़मीन की कशिश को दस गुना बढ़ा दे तो कोई एक क़दम भी नहीं उठा सकता। आज अल्लाह तआला कह रहा है कि हिल नहीं सकते। तो क्या होगा

﴿ينبؤ الانسان يومئذ بما قدم واخر﴾

आज बेगम साहिबा जो तूने किया है वह मैं तुझे दिखा दूंगा, आज मियाँ साहब जो तूने किया वह मैं तुझे दिखा दूंगा।

﴿بل الانسان علٰی نفسی بصیرة﴾

आज तू देखेगा मैंने क्या किया है।

﴿ولو القٰی معاذیرة﴾

आज तू बहुत उज़्र पेश करेगा जी असल में यह था, यह था, समाज ऐसा था, माहौल ऐसा था, लोग ऐसे थे, बेगम नहीं मानती थी, मियाँ नहीं मानता था, बच्चे नहीं मानते थे।

﴿ولو القٰی معاذیرة﴾

आज तेरे बहुत से उज़्र मेरे सामने आएंगे लेकिन नहीं अब नहीं हो सकता।

तो मौत के बाद क्या है? ﴿ان یوم الفصل کان میقاتا﴾ वह एक दिन तय है ﴿ان یوم الفصل میقاتهم اجمعین﴾ जो तुम सबको जमा करेगा ﴿فتاتون افواجا﴾ फ़ौज दर फ़ौज चल रहे हो ﴿فتحت السمآء فكانت ابوابا﴾ दरवाज़े खुले आसमान के ﴿وسيرت الجبال﴾ पहाड़ रेत से बन गए।

क़यामत के दिन की बेहोशी

और इधर ﴿ازلفت الجنة للمتقين﴾ यह जन्नत आ रही है ﴿برزت الجحيم للغوين﴾ यह जहन्नुम आ रही है ﴿ونضع الموازين القسط﴾ यह तराज़ू आ गया ﴿وان منكم الا واردها﴾ यह पुल सिरात आ गई ﴿وجآء ربك والملك صفا صفا﴾ और क्या देखा कि अल्लाह भी खुद आ गया। अल्लाह पाक खुद सरों पर ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمنيه﴾ आठ फ़रिश्तों ने अर्श को उठाया होगा सिरों पर और एक सन्नाटा छा जाएगा और जब अल्लाह का अर्श आएगा और

उसकी आवाज़ और हैबत से सारा मैदाने महश्र बेहोश होकर गिर जाएगा क्या मर्द क्या औरत सब बेहोश पड़े हुए हैं।

सबसे पहले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को होश आएगा। आपने फ़रमाया कि मैं देखूंगा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अर्श का पाया पकड़ कर खड़े हैं तो फ़रमाया मुझ से पहले होश आया या बेहोश ही नहीं हुए? लेकिन मैं देखूंगा कि अर्श का पाया पकड़े खड़े होंगे फिर बाक़ी काएनात खड़ी होगी। फिर अल्लाह तआला की आवाज़ आएगी ﴿یا عبادی﴾ ऐ मर्द और औरतों! ﴿انی امسکت لکم﴾ तुम्हें पता है जब तुम सईद कालोनी में रहते थे मैं ख़ामोशी से तुम्हें देखता रहा।

आमाल का वज़न

﴿انظر اعمالکم واسمع اصواتکم﴾

जो तुम घरों में बैठकर बातें करते थे वह भी सुनता था और जो तुम बाज़ार में बैठकर हेराफेरियाँ करते थे वह भी देखता था और जो तुम पैसे के पीछे ईमान के सौदे करते थे और झूठी क़समें खाते थे और ग़लत को सही करके दिखाते थे मैं वह भी देखता और सुनता था। ﴿الیوم انصتوا لی﴾ आज तुम ख़ामोश हो गए और मैं बोलूंगा ﴿الیوم نختم علی افواھھم﴾ आज मैं तुम्हारी ज़बानों पर ताले लगा दूंगा। आज ज़बान नहीं बोलेगी बल्कि हाथ बोलेगा, नाख़ून बोलेगा, एक एक बाल बोलेगा, एक एक उँगली बोलेगी, एक एक हड्डी बोलेगी, एक एक बोटी बोलेगी और हुक्म होगा बोलो! क्या किया था जुमा के दिन, क्या किया था हफ़्ते के दिन,

क्या किया था रात और दिन में, क्या किया था बाज़ार में, दुकान और फ़ैक्टरी में। अब ज़बान ख़ामोश है और जिस्म बोल रहा है कि यह किया था, यह किया था

अल्लाह की क़सम! आपका और हमारा जिस्म हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है। यह सबसे बड़ा ग़द्दार है जिसको घर बनाकर दे रहे हैं और जिसको प्लाट बनाकर दे रहे हैं और जिसको कपड़े पहना रहे हैं और जिसको खाने खिला रहे हैं। यह हमारा जिस्म क़यामत के दिन सबसे पहले हम से ग़द्दारी कर जाएगा और मेरे ख़िलाफ़ बोल जाएगा फिर अल्लाह तआला ज़बान खोलेगा तो वह कहेगा ﴿فسحقا لكن﴾ अरे तेरा सत्यानास हो तू मेरे ख़िलाफ़ गवाही दे रहा है। तुम्हारे ख़ातिर तो मैं अल्लाह की नाफ़रमानी करता रहा। तुम्हें सुख पहुँचाने के लिए तो मैंने अल्लाह के दीन को छोड़ दिया तुम मेरे ख़िलाफ़ क्यों हो गए।

वे कहेंगे

﴿انطقنا الله الذى انطق كل شىء.﴾

हमारी क्या मजाल कि हम न बोलें। अब हमें बुलवा रहा है जो जब किसी को बोलने को कहता है तो वह चुप नहीं रह सकता।

सईद व शक़ी

आज कामयाबी और नाकामी का पता चलेगा। सईद का मतलब समझ में आएगा कि सईद किसे कहते हैं और शक़ी किसे कहते हैं।

सईद कामयाब। नेकियाँ कीं और पलड़ा झुक गया और बदियों

का उठ गया तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ऐलान करेंगे

﴿ان فلان بن فلان. ان فلان بنت فلان.﴾

फ़लाँ का बेटा, फ़लाँ की बेटी ﴿قد ثقلت موازينها﴾ उसकी नेकियाँ वज़नी हो गयीं ﴿وسعيدت سعادة﴾ और वह सईद हो गई और सईद हो गया कामयाब। ﴿لا يشقى بعدها ابدا﴾ अब कभी नाकाम न होगा।

मतलब सईद का है दोज़ख़ से बच गया और जन्नत में चला गया। यह कामयाबी है और ﴿ان فلانة بنت فلان﴾ फ़लाँ फ़लाँ की बेटी फ़लाँ फ़लाँ का बेटा ﴿قد خفت موازينها﴾ उसकी नेकियाँ घट गयीं ﴿وشقى شقاء﴾ और यह नाकाम हो गया। यह नाकाम हो गई। ﴿يا يسعد بعدها ابدا. لا يسعد بعدها ابدا﴾ अब यह कभी कामयाब न होगा, यह नाकाम होगा।

﴿ان تدع مثقلة الى حملها لا يحمل منه شيء ولو كان ذاقربى.﴾

उस वक़्त अम्मा कहेंगी मेरी बेटी, अरे मेरी बेटों! मैंने तुम्हारे लिए कितने दुःख झेले। थोड़ा सा मेरा हाथ तो बटा दो। वह कहेंगे जा जा हम तेरी औलाद ही नहीं।

बेटी कहेगी अम्मा तूने मुझे जना, तूने मुझे पाला, तूने मेरे लिए दुःख उठाए आज यह मेरा थोड़ा बोझ तो हटा दे। मेरा बोझ मुझ से बाँट ले। वह कहेगी तू मेरी बेटी ही नहीं ﴿اليك عنى﴾ दफ़ा हो जा।

अक़ल ख़ामोश है लेकिन क़ुरआन यहाँ बोल रहा है कि संभल कर आओ, संभल के आओ। यह खेल नहीं हैं। क्या ज़िन्दगी भी ऐसी चीज़ है जिसे ज़ाए कर दिया जाए। पैसे को अगर आदमी

आग भी लगा दे तो कोई बात नहीं ज़िन्दगी को आग न लगाओ। जिसके अन्दर जन्नत बन रही है या जहन्नुम बन रही है।

असल कामयाबी और नाकामी

कामयाबी और नाकामी का पैमाना यह नहीं है कि बहुत बड़ा घर मिल जाए और नाकामी का पैमाना यह नहीं कि किसी झोंपड़ी में सिसक सिसक कर मर जाए बल्कि यह है कि

जब अल्लाह कहेगा यह औरत जन्नती, यह मर्द जन्नती तो वह एक कहेगा ﴿هاؤم﴾ अल्लाह क़ुरआन में बता रहा है कि वह ख़ुशी में यह नारा मारेगा ﴿هــــاؤم﴾ आ जाओ, आ जाओ और इतने ज़ोर से वह आवाज़ लगाएगा कि सब मुतवज्जेह होंगे कि क्या हुआ? क्या हुआ?

वह कहेगा ﴿اقــرءوا كتـابيــه﴾ देखो मेरा पेपर पढ़ो। हमारे बच्चे पाँचवीं में पास हो जाएं तो ख़ुश होते हैं और कहते हैं हम पास हो गए। हम पास हो गए।

माँ भी ख़ुश बाप भी ख़ुश, बेटा भी ख़ुश आज उसके लिए यह कितनी ख़ुशी का दिन है जिसे अल्लाह जन्नत का ऐलान करके दे रहा है और जहन्नुम से निजात का परवाना दे रहा है तो एक दम फटेगा ﴿هـاؤم﴾ आओ, आओ। क्या हुआ? ﴿اقــرءوا كتـابيــه﴾ ज़रा मेरा पेपर तो पढ़ो। मैं पास हो गया। कैसे पास हो गया?

वह कहेगा ﴿انـى ظـنـنـت انى ملق حسـابيـه﴾ मुझे यक़ीन था मेरा हिसाब होना है। मेरा इम्तिहान होना है इसलिए मैं तैयारी करता रहा। तैयारी करता रहा।

ऊपर से जवाब आएगा

﴿فهو فى عيشة راضية فى جنة عاليه قطوفها دانية﴾

जाओ मज़े करो, हमेशा की ज़िन्दगी के वारिस बन गए। कामयाब ज़िन्दगी मिल गई।

और जिसके उल्टे हाथ में मिल गया और उसकी नेकियाँ घट गयीं तो वह कहेगा ﴿يٰليتنى﴾ यह ﴿يٰليتنى﴾ का मैं आपको मतलब क्या बताऊँ। जब कोई दुःख से हाय करता है क्या कोई उसका तर्जुमा कर सकता है? हाय तो हम ने लिख दी लेकिन हाय में जो उसकी नाकामियों का दर्द है वह तर्जुमा में कहाँ से करूं। ﴿يٰليتنى﴾ हाय मैं लुट गया।

यहाँ तो अगर किसी का करोड़ दो करोड़ रुपया डूब जाए तो वह कहता है हाय मैं मारा गया, किसी की तिजारत बैठ जाए तो वह कहता है हाय मैं मारा गया। अब तो मुझे घर भी बेचना पड़ेगा लेकिन मर तो नहीं गया।

यहाँ हुकूमतें टूट कर दोबारा मिल जाती है, नुक़सान की तिजारतें नफ़े में बदल जाती हैं, हार जीत में बदल जाती है लेकिन आज मेरे भाईयो और बहनो! उस औरत की सदा सुनों जो कह रही है ﴿يٰليتنى﴾ हाय मैं लुट गई ﴿يٰليتنى﴾ हाय मैं मर गया, हाय मैं लुट गया।

इस ﴿يٰليتنى﴾ के अन्दर जो दर्द और उसकी आह व बुका का जो ग़म है यह सिर्फ़ अरबी ज़बान का मौज़ज़ा है कि उसने अपने अन्दर लिया हुआ है कोई और ज़बान इसको अदा नहीं कर सकती। इसलिए मैंने मिसाल दी कि आदमी कहता है हाय मैं मर गया, हाय मैं मर गई, दुखी की हाय हाय सुनकर अजनबी रोने बैठ जाते हैं। इन्सान जज़्बाती मख़लूक़ है पत्थर नहीं है किसी का

भी ग़म उसे रुलाता है। ख़बर पढ़कर आदमी रोने लग जाते हैं हालाँकि न कोई वास्ता है और न कोई ताल्लुक़ है तो उस हाय का क्या हाल होगा जब मुँह से निकलेगा हाय मैं लुट गई ﴿يٰليتني لم اوت كتابيه﴾ काश! कि यह मेरा पेपर मुझे न मिलता। ﴿ولم ادرى ما حسابيه﴾ मुझे तो पता ही नहीं था कि मेरा हिसाब होना है ﴿ما اغنى عنى ماليه﴾ न पैसा काम आया ﴿هلك عنى سلطنيه﴾ न सलतनत काम आई।

उम्मत पर एहसान करने वाले

अगर अल्लाह का रसूल न होता और क़ुरआन न होता तो आज पूरी दुनिया जानवरों से बदतर होती। दुआ दें हज़रत मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जिन्होंने पेट पर पत्थर बाँध कर अपनी उम्मत का यह पैग़ाम पहुँचाया और उन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम और उनकी बीवियों को जिन्होंने अपने जज़्बात को अपने साथ क़ब्रों में ही दफ़न कर दिया और अगली नस्ल तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाया।

क़यामत के दिन का मालदार

तबलीग़ का जो काम हो रहा यह तबलीग़ी जमात कोई जमात नहीं है। यह इस बात की मेहनत है कि हम आख़िरत के लिए कुछ सफ़र का सामान इकठ्ठा कर लें और आख़िरत की कुछ तैयारी कर लें और आख़िरत का कुछ सौदा साथ ले लें। क़यामत का मालदार वह होगा जिसके पास ईमान और अमल का बहुत बड़ा सरमाया होगा और क़यामत का फ़क़ीर वह होगा जिसके पास

ईमान और अमल का सरमाया टूटा हुआ, खोटा या ख़सारे का होगा।

ज़िन्दगी की शाम

हम मर्दों और औरतों को इस बात के लिए जमा कर रहे हैं कि यह एक दिन लिखा हुआ है इन्हीं साल व माह की गर्दिश में और एक सुबह या शाम, दोपहर या रात ऐसी लिखी हुई है, एक हफ़्ता, एक घन्टा, एक मिनट, एक सेकण्ड ऐसा तय है जब कोई आएगा और मेरे साँस को तोड़कर रख देगा, मेरी आँखों के चिराग़ बुझाकर रख देगा। एक ऐसा है इन्हीं दिनों में, इसी हफ़्ते के दिनों में और इन्हीं सालों की गर्दिश में एक साल है, इसी ढलती शाम और उभरते दिन में एक दिन या एक शाम है जब हमारी ज़िन्दगी की शाम हो जाएगी।

सर में दर्द हो तो हम यह नहीं कहते देखा जाएगा जो होगा, सो होगा बल्कि फ़ौरन गोली खाते हैं। कोई कारोबारी मस्अला आ जाए तो हम यह नहीं कहते जो होगा देखा जाएगा बल्कि फ़ौरन हम हिसाब व किताब जोड़ते हैं।

कितना बड़ा मस्अला है कि मौत आ रही है और कितनी बड़ी नादानी है कहते हैं जो होगा देखा जाएगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का आख़िरत का फ़िक्र

अरे भाईयो और बहनो!

यह वह घाटी है जिसने बड़े बड़ों को रुला दिया। हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़न्जर लगा नमाज़ पढ़ाते हुए। आपने आधी दुनिया में इस्लाम फैलाया।

और आप वह हैं जिनके इस्लाम लाने पर फ़रिश्तों ने खुशियाँ मनायीं। उनकी मौत का जब वक़्त आया तो बेटे से कहा मेरा सर ज़मीन पर रख दे। ज़ोर से कहा तो उन्होंने जल्दी से आपका सर ज़मीन पर रख दिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु अपने गालों को मिट्टी में रगड़ने लगे और फ़रमाया

﴿ويل لك يا عمر ان لم يغفر لك ربك﴾

ऐ उमर तो बर्बाद हो गया अगर तेरे रब ने तुझे माफ़ न किया।

हालाँकि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तो वह हैं जिनकी बख़्शिश मरने से पहले ही उन्हें सुनाई जा चुकी है। इसके बावजूद यह हाल है कि फ़रमा रहे हैं ऐ उमर तू लुट गया अगर तेरे रब ने तुझे माफ़ न किया।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा का आख़िरत का ख़ौफ़

जो आख़िरत के लिए पूरी तरह तैयार हैं उनका यह हाल है कि हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा मौत की हालत में थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा आए तो देखा कि आप रो रही हैं और रोते रोते आपकी ओढ़नी तर हो चुकी है।

आज की ओढ़नी नहीं थी। यह तो ओढ़नी है ही नहीं जिसमें बाल नज़र आएं वह क्या ओढ़नी बल्कि बड़ी चादर आँसुओं से तर

हो चुकी थी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाने लगे ऐ अम्मा जान! आप क्यों रो रही हैं आप तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी हैं जिनके सीने पर अल्लाह के नबी का सर मुबारक था और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की बारगाह में हाज़िर हुए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन्तिक़ाल के वक़्त आपका सर मुबारक हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के सीने पर था। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुनिया को छोड़ा तो आप का सर मेरे सीने पर था। आप क्यों रो रही हैं? आप तो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे महबूब बीवी हैं। कहा ऐ अब्दुल्लाह! मुझे इन बातों से धोके न दे। काश! मैं कुछ भी न होती।

अमल में नमूना

﴿الكيس من دان نفسه وعمل لما بعد الموت.﴾

समझदार वह है जो मौत की तैयारी करे। उसके लिए हमें अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात का नमूना अता फ़रमाया है। सारे आलम के सारे इन्सानों और जिन्नात को और सारे ख़ुश्की और तरी के नबी बनकर आए और अल्लाह तआला के महबूब तरीन थे हबीबुल्लाह। जैसे हम अल्लाह को नहीं समझ सकते ऐसे ही हबीब के मक़ाम को भी नहीं समझ सकते। समझ और पहुँच से बाहर है आपके मक़ाम तक रसाई

और आप तक पहुँचना।

यह हमारा रहबर है जो मर्द व औरत भी उसके पीछे चला और उसका रास्ता जिसने भी अपनाया उसकी आख़िरत की तैयारी पूरी हो गई।

उसी की तरफ़ हम बुला रहे हैं कि अपनी ज़िन्दगी को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक तरीक़े पर ले आएं। उन जैसा अल्लाह ने कोई बनाया न बन सकता है।

नबुव्वत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

बेजान भी जानदार भी, जानवर भी, परिन्दे व चरिंदे भी जिसकी नबुव्वत को तसलीम करे। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को साँप ने काटा ग़ारे सौर में, फिर काटा, फिर काटा। आप के आँसू टपके और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे मुबारक पर गिरे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँख खुली और पूछा क्या हुआ?

अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साँप ने काटा है। आपने वहाँ अपना लुआबे दहन लगाया ठीक हो गया।

यह साँप क्यों काट रहा था इसलिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत करना चाहता था और सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का पाँव उसमें रुकावट था। वह काटने के लिए नहीं काट रहा था बल्कि वह यह कह रहा था कि पीछे हटो मैंने ज़ियारत करना है।

साँप का काटना इन्तिक़ाम के लिए नहीं था बल्कि इसलिए था

कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत करने दो। ऐस मूज़ी भी जिसके दीदार को तरसें उसकी ज़िन्दगी आज सईद कालोनी में से उठाकर कूड़े के ढेर पर फेंक दी गई कि हम उसे सिर्फ रसूल मानते हैं लेकिन उसकी ज़िन्दगी अपनाने के हम क़ाबिल नहीं। हम नहीं तो फिर और कौन है।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मैराज से उरूज व अज़मत

हमारे लिए अगर मुहम्मदियत नहीं है तो फिर किस के लिए है जिसके वजूद को इतनी ताक़त है कि यूँ उड़ान हुई बैतुल्लाह से बैतुल मुक़द्दस। बैतुलमुक़द्दस से बुर्राक़ को छोड़ दिया। अब वहाँ पहले आसमान से उड़ान है न कोई राकेट न कोई सवारी।

सलमान बिन अब्दुल अज़ीज़ रियाज़ के गर्वनर से हमारी जमात मिली तो सलमान कहने लगा मेरा बेटा पहला अरब है जो ख़ला में गया। वह राकेट पर गया था अमरीका से तो हमारा एक साथी क़तर का था उसने कहा नहीं शेख़ उससे पहले एक अरब गया है।

बादशाहों की बात काटना कोई आसान काम नहीं। वह तो गुस्से से काँपने लगा और कहने लगा कौन है जो मेरे बेटे से पहले गया है। कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तेरे बेटे से पहले ख़लाओं को चीर गए तो कहने लगा तूने मुझे लाजवाब कर दिया, तूने मुझे लाजवाब कर दिया।

हम उसके पीछे न चलें तो कितनी अजीब बात है। उनके

तरीक़ों में हम शर्म महसूस कर रहे हैं और जो हैं ही जानवर उनके तरीक़ो पर चलना इज़्ज़त महसूस किया जा रहा है। क्या अजीब जहाँ है जिन इन्सानों को अल्लाह इन्सान ही नहीं कहता बल्कि जानवर हैं। ﴿اولٰئك كالانعام﴾ जानवर हैं ﴿بل هم اضل﴾ जानवरों से भी बदतर। उनके पीछे तो भाग रहे हैं और जिन्हें अल्लाह यह मक़ाम दे रहा है परवाज़ देखो पहले आसमान पर आदम अलैहिस्सलाम ने बढ़ कर इस्तिक़बाल किया। सातों आसमान सजाए गए यहाँ तक कि जन्नत भी सजाई गई कि आज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद है फिर वहाँ से दूसरे आसमान पर ज़करिया और ईसा अलैहिमस्सलाम ने इस्तिक़बाल किया फिर वहाँ से तीसरे आसमान पर यूसुफ अलैहिस्सलाम ने इस्तिक़बाल किया, चौथे आसमान पर इदरीस अलैहिस्सलाम ने इस्तिक़बाल किया, पाँचवे आसमान पर हारून अलैहिस्सलाम ने इस्तिक़बाल किया, छठे आसमान पर मूसा अलैहिस्सलाम ने इस्तिक़बाल किया। सातवें आसमान पर बैतुल्लाह देखा जिसकी टेक लगाकर एक बड़े मियाँ गोठ मारकर बैठे हुए थे सफ़ेद दाढ़ी है वह नहीं उठे बाक़ी सारे उठते रहे इस्तिक़बाल करते रहे, आगे बढ़कर आते रहे लेकिन जब वहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास पहुँचे तो वह वैसे ही बैठे रहे तो आपने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से पूछा यह कौन हैं?

उन्होंने कहा आपके दादा इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं। जब उनके क़रीब पहुँचे तो वह खड़े हो गए और फ़रमाया ﴿مرحبا بالابن مرحبا﴾ मेरा बेटा आ गया मेरा बेटा आ गया और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माथे को चूमा और फिर

आगे रवाना कर दिया और सिदरतुल मुन्तहा पर पहुँच कर जिब्राईल अलैहिस्सलाम की ताक़त ख़त्म हो गई। उन्होंने अर्ज़ किया बस या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बालिश्त भी आगे बढ़ जाऊँगा तो मेरा वजूद ही न रहेगा और जलकर ख़ाक हो जाऊँगा।

और जिब्राईल अलैहिस्सलाम का इतना बड़ा वजूद है कि अगर वह अपने पूरे क़द में आएं तो उनका सर अर्श से टकराए और पाँव ज़मीन से टकराएं। इतना बड़ा वजूद है वह अगर एक बालिश्त उठ जाते तो जलकर राख़ हो जाते।

यहाँ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिस्मानी परवाज़ शुरू हुई। अभी रुहानी नहीं शुरू हुई। जहाँ जिब्राईल अलैहिस्सलाम की रुहानी जिस्मानी ताक़त ख़त्म हो गई वहाँ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिस्मानी ताक़त की शुरूआत हुई और आज तक अर्श किसी के लिए भी नहीं खुला आज उसके दरवाज़े खुल गए।

आज तक अर्श के ऊपर कोई नहीं पहुँचा। हमारा रसूल ऊपर पहुँच गया और ऊपर सत्तर हज़ार नूर के पर्दे हैं अगर अल्लाह तआला अपनी तजल्ली डाल दे। अपने चहरे से पर्दा हटा दे तो अर्श से लेकर ज़मीन तक काएनात जल जाए।

यह कितनी अज़्मत वाला रसूल है जो अल्लाह को यूँ देख रहा है और सारी तजल्लियात को सीने में हज़्म कर रहा है। वह कितना अज़्मत वाला रसूल है जिसका सीना अल्लाह पाक की तजल्लियों को सह ले। यह हमारा रसूल कितनी शान वाला रसूल है तो अर्श से भी बड़ा सीना रखकर तजल्लियात इलाही को अपने अन्दर समो गए।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर एक तजल्ली पड़ी और वह भी सीधी नहीं पड़ी बल्कि पहले "तूर" पर आई फिर आप अलैहिस्सलाम पर यानी पहले "तूर" फिर "तूर" से इधर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तो मूसा अलैहिस्सलाम को चालीस रोज़ तक होश नहीं आया और वह बेहोश पड़े रहे और यहाँ अल्लाह की ज़ात खुद सामने है और सिर्फ़ सामने नहीं बल्कि बात हो रही है।

﴾السلام عليك ايها النبى ورحمته الله وبركاته.﴿

ऐ मेरे महबूब तुझे तेरा रब सलाम पेश करता है। क्या कहने अज़मते मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के और आगे से आपने कहा ﴾السلام علينا﴿ क़ुर्बान जाएं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस मक़ाम पर भी हमें नहीं भुलाया। इतने अज़ीम मक़ाम पर खड़े होने के बावजूद अपनी उम्मत को आप नहीं भूले। ﴾السلام علينا﴿ ऐ अल्लाह हम पर भी सलाम हो और ﴾وعلى عباد الله الصلحين﴿ तेरे नेक बन्दों पर भी हो जो मेरी उम्मत में हैं उनको भी साथ शामिल कर लिया है।

इतनी बड़ी अज़मत व शान वाले नबी का तरीक़ा न शादी में नज़र आए और कहा जाए जी क्या करें रिवाज को तो देखना ही पड़ता है।

अरे यह ज़बान क्यों न कट गई यह बोल बोलने से पहले कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को न देखा रिवाज को देखा कि सईद कालोनी में शादियाँ कैसे हुई हैं?

और हमारे दूसरे भाई और रिश्तेदार शादियाँ कैसे करते हैं और कहते हैं कि क्या करें मजबूरी है कोई औरत यह मजबूरी भी

बनाती है और कहती है और कहती है क्या करूं मेरी मजबूरी है कि मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नाराज़ नहीं कर सकती तुम जाती हो तो जाओ।

दाढ़ी कट नहीं सकती

साहिवाल में एक धोबी के बेटे ने चिल्ला लगाया। उसकी मंगनी हो चुकी थी गाँव में। शादी की तारीख़ तय होने के बाद वह चिल्ले में के लिए गया। जब चिल्ले से वापस आया तो दाढ़ी रखी हुई थी। बारात दुल्हन के घर पहुँच गई। हमारे यहाँ दस्तूर है कि शादी में ज़मींदार भी शरीक होते हैं तो वहाँ उस गाँव का ज़मींदार भी शादी में मौजूद था। धोबियों के घर में बेटी की शादी में शरीक।

जब बारात पहुँची तो हंगामा खड़ा हो गया कि जब हमने दूल्हा देखा था तो उस वक़्त तो दाढ़ी नहीं थी। अब इसकी दाढ़ी है। उसकी दाढ़ी मुंढवाओ तो निकाह देंगे।

तो सब बारात वाले माँ क्या, भाई क्या, बाप क्या, चचा क्या सब कहने लगे,

"बेटे फिलहाल मुंढवा दे। कोई बात नहीं बाद में रख लेना। अब हमारी इज़्ज़त का सवाल है।"

और वह कहने लगा, "एक तरफ़ तुम्हारी इज़्ज़त है और एक तरफ़ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त है। अब आप बताओ मैं क्या करूं?"

लेकिन जब आँखों पर पर्दे पड़ जाते हैं और दिल पत्थर हो

जाते हैं। क्या करूं कैसे समझाऊँ? कहाँ से बोल लाऊँ जो दिल में उतर जाएं यह धोका है जिस पर आप चल रहे हैं। तबाही की ज़िन्दगी है जिसको आपने इख़्तियार किया हुआ है। इसका अन्जाम हलाकत है।

तो सब कहने लगें, "नहीं बेटा अल्लाह बड़ा ग़फ़ूर्रुरहीम है, अल्लाह बड़ा मेहरबान है। कोई बात नहीं मुंढा दे।"

अब सब उस पर चढ़ गए।

उसने कहा, "गर्दन उतार दो, गर्दन कट सकती है लेकिन दाढ़ी नहीं कट सकती।"

लड़की वालों ने कहा हम लड़की नहीं देते।

उसने कहा, "न दो, मैं अल्लाह और उसके रसूल को नाराज़ नहीं कर सकता सारे जहाँ को आग लगा सकता हूँ।"

हंगामा बरपा हो गया और यह सारा मन्ज़र देखने के बाद अचानक एक ज़मींदार खड़ा हुआ और कहा,

"सारी बारात लेकर मेरे मकान पर आ जाओ, मैं ख़ुद ज़मींदार का बेटा हूँ, धोबी के लड़के को लड़की दूंगा।"

सारी बारात को अपने डेरे पर बुलाई और अपनी बच्ची का निकाह करके साथ भेज दिया।

मतलब की दोस्ती

कहते हैं क्या करें माहौल को देखना पड़ता है।

मैं यूँ कह रहा हूँ यह कहो क्या करें अल्लाह और उसके रसूल को देखना पड़ता है जिसकी वफ़ाएं सादिक़ हैं और इन दुनिया

वालों की वफ़ाए झूठी हैं। ये ग़द्दार हैं चाहे सगी औलाद ही क्यों न हो सब मुहब्बतें मतलब की हैं और सब मुहब्बतों के पीछे मतलब की हैं। बीवी की एक ख़्वाहिश पूरी न करो तो फिर देखो क्या होता है और बीवी ख़ाविन्द की एक बात न माने तो फिर देखो क्या होता है?

अरफ़ात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ

और इधर देखो अरफ़ात के मैदान में हाथ उठाए हुए अप्रैल के महीने की धूप में न कोई साएबान और न कोई साया और न ज़मीन पर कोई गद्दे बिछे हुए बल्कि ऊँट पर बैठकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रो रहे हैं। पाँच घन्टे हाथ उठे हुए हैं अपनी उम्मत के मर्दों और औरतों के लिए और क़यामत तक आने वाली नस्ल के लिए दुआ कर रहे हैं या अल्लाह माफ़ कर दे, ऐ अल्लाह माफ़ कर दे।

पाँच घन्टे लगातार दुआ मांगी। उसका कोई हक़ बनता है। कहते हैं शादी आ रही है फ़लाँ को भी राज़ी करो, फ़लाँ को भी मनाओ। उनको भी मनाओ, इनको भी मनाओ।

अरे कोई यह भी तो सोचे के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी मनाओ और हमारी शादी में कोई ऐसा काम न हो जिससे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नाराज़ हो जाएं।

अगर हमने मरने के बाद उनका सामना नहीं करना और कहीं

और दूसरी जगह हमारा हिसाब जाना है तो फिर ठीक है लेकिन अगर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सामना होना है और आँखों से आँखें चार होनी हैं।

मैं हाथ जोड़कर अर्ज़ कर रहा हूँ उस दिन की ज़िल्लत बहुत बड़ी है आज की ज़िल्लत से और उस दिन की रुसवाई बहुत बड़ी है आज की रुसवाई से। अगर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतना ही कह दिया कि तुम्हें मेरा ख़्याल न आया तो बताओ कहाँ जाएंगे? मौत तो है नहीं कि अपने आपको मार कर मिटा दें। यहाँ तो लोग अपने आपको शूट कर देते हैं कि मैं रहने के क़ाबिल नहीं। वहाँ कहाँ से गोली लाएगा अपने आपको मारने के लिए अगर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतना ही कह दिया कि तुम्हें मेरा ख़्याल ही न आया।

तुमने मेरी बेटी फ़ातिमा को भी न देखा तो क्या जवाब दोगे? उस दिन कहोगे मेरी बीवी नहीं मानती थी, हमारे सुसराली नहीं मानते थे। शादी की तो एक मिसाल दे रहा हूँ। हम तो हर चीज़ में अल्लाह और रसूल को नाराज़ किए बैठे हैं। कौन सी चीज़ ऐसी है जिसमें हम ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बग़ावत नहीं की हुई।

और कौन सी ऐसी घड़ी है जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे लिए रो रोकर दुआ नहीं की हो। इन्तिक़ाल से एक दिन पहले हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद और कुछ सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलने आए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें देखकर रोने लगे और फ़रमाया मेरा सलाम हो आख़िरी और जो तुम्हारे बाद आएं उन्हें भी कह देना मेरा सलाम।

ऐसी वफ़ाएं। हमें किस तरह अपनी रहमत की चादर में लिया। एक सहाबी ने अर्ज़ किया मुबारक है वह जो जिसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा और ईमान लाया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हें बताऊँ सात दफ़ा मुबारक है उस पर जिसने मुझे नहीं देखा और ईमान लाया।

भौंकने वाले कुत्ते

हम तो बहुत क़ीमती थे। हमने अपने आपको खुद ज़लील कर दिया। यह क्या कहेगी? वह क्या कहेगी? यह क्या कहेगा? वह क्या कहेगा? कुत्तों के भौंकने से कभी किसी ने सफ़र बन्द किया कुत्ते भौंकते ही रहते हैं। जो हमें अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ा वाली ज़िन्दगी से हटा रहे है वे हमारे लिए भौंकने वाले कुत्ते से ज़्यादा हैसियत नहीं रखें। यह ईमान अल्लाह हम में देखना चाहता है और यह घर मैं बैठनें से हासिल नहीं होता। इसलिए हम खुद भी अल्लाह के रास्ते में निकलते हैं और अपनी औरतों को भी लाते हैं ताकि यकसूई के साथ बैठकर अल्लाह के, रिसालत के, आख़िरत के, जन्नत के तज़्किरे करके दिल में ईमान उतर जाए।

एक औरत की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रात को गश्त कर रहे थे एक औरत चर्ख़ा कातते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

याद में शेअर पढ़ रही

﴿عليك صلوة الله الابرار﴾

कि आप पर दरूद व सलाम हो अल्लाह का और नेक बन्दों का।

﴿كنت تقيا هجينا بالاسحار﴾

आप वह थे जो रातों को उठकर रोते थे और अल्लाह से डरने वाले थे।

पता नहीं मेरा रब मुझे कयामत के दिन आप से मिलने देगा या नहीं मिलने देगा। जिस तरह ज़माना रंग बदलता है ऐसे ही अमल भी बदलता है। पता नहीं किस हाल में मौत आए। आप से मुलाक़ात हो या न हो।

तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु गिर पड़े फिर दरवाज़े पर दस्तक दी। आधी रात का वक़्त था। उसने पूछा कौन?

फ़रमाया, उमर। कहा ﴿مالى ولعمر﴾ उमर का मेरे घर में क्या काम? फ़रमाया अल्लाह के वास्ते दरवाज़ा खोल दे।

उसने दरवाज़ा खोला तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया वह शे'र सुना दे जो तू अभी पढ़ रही थी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में जो कुछ तू कह रही थी वह मुझे भी सुना दे।

दिल की महफ़िल

यह क्या दिल है जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में न लरज़े, न तड़पे। यह क्या दिल

हैं। इन पत्थरों को लेकर हम मर जाएं तो फिर हमारी क्या क़यामत है? सफ़ेद कपड़ों को लोग देखतें हैं तो कहते हैं बड़े मियाँ साहब हैं। यह भी देखो अन्दर पाख़ाना छुपा हुआ है। अल्लाह तो देखता है कि इसमें क्या है और कौन है?

﴾وحصل ما فى الصدور﴿

वह क़यामत के दिन दिल को चीरकर देखेगा कि किसको दिल में बिठाकर आया है। यह दिल की महफ़िल किससे सजाई है? इसमें कौन है?

जो इतने दुःख में भी न भूले हम उसकी ज़िन्दगी को उठाकर बाहर फेंक दें और कभी ग़म भी न हो कि हाय मैंने क्या कर दिया और हम यही सीखने की दावत दे रहे हैं कि अल्लाह का रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरी ज़िन्दगी लाया है जिसका नाम इस्लाम है। इस्लाम पर चलना सीखा जाता है। यह दीन बिन सीखे का सौदा नहीं सीखने का सौदा है।

हलाल और हराम की हदें

नमाज़ पढ़ी, रोज़ा रखा यह तो इबादतें हैं बाक़ी चौबीस घन्टे में भी इस्लाम कुछ बताता है या नहीं बताता। कुछ अख़्लाक़ देता है, कुछ क़द्रें देता है, कुछ हदें क़ायम करता है, कुछ हलाल व हराम की हदें क़ायम करता है, कुछ ख़र्च करने के तरीक़े बताता है। सिर्फ़ यह तो नहीं कि हलाल कमाना फ़र्ज़ है ख़र्च करने की भी हदें लगाता है कि कहाँ ख़र्च करना है और कहाँ नहीं करना।

कमाई में भी आज़ाद नहीं छोड़ा बल्कि तरीक़े बताए। आज वे

उड़ गए हैं न किसी को यह पता है कि हलाल क्या है और हराम क्या है और न पूछते हैं और फिर जो हलाल कमाने वाले हैं उनके लिए भी ख़र्च करने का तरीक़ा बताया है। उन्हें आज़ाद नहीं छोड़ा कि जहाँ जो चाहा मर्ज़ी से लगा दिया और खपा दिया।

पाँच दस लाख रुपए सिर्फ़ टायलेट पर लगा दिए। इससे तो ग़रीब आदमी का घर बन सकता था तो फिर अल्लाह पूछेगा नहीं कि यहाँ इतना क्यों ख़र्च किया।

हमारी हलाल की कमाई है तो हलाल कमाई क्या इस तरह ज़ाय करने के लिए है? क्या सवाल व जवाब नहीं होने वाला है?

एक एक जोड़े पर लाखों रुपए ख़र्च कर दिए तो क्या सवाल व जवाब नहीं होने वाला है?

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का हिसाब

दस साल के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बेटे ने ख़्वाब में देखा पसीना पसीना। माथे से पसीना पोंछ रहे थे।

पूछा अब्बा जान क्या हुआ?

फ़रमाया बेटा आज हुकूमत के हिसाब से फ़ारिग़ हुआ हूँ। दस साल हुकूमत की और शहादत के दस साल बाद बेटे ने ख़्वाब में देखा पसीना पसीना।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसा हिसाब देते देते पसीने पसीने हो जाऐ। आज की औरत कैसे हिसाब देगी? और ये मर्द कैसे हिसाब देंगे। मैं और आप क्या हिसाब देंगे? हमारी कमाई आज़ाद हमारा ख़र्च आज़ाद।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का ख़ौफ़

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया मेरे पास एक कुर्ता था जिसकी क़ीमत पाँच रुपए थी। मदीने में किसी बच्ची की जब शादी होती तो मुझ से वह कुर्ता मांग कर ले जातीं और शादी की पहली रात को पहना कर अगले दिन मुझे वापस कर देतीं। इस कुर्ते में मदीने की पचास बच्चियों की शादियाँ हो गयीं। पाँच रुपए के कुर्ते में और अब पाँच पाँच लाख रुपए का एक सूट एक रात का बन जाता है।

हमने यह ज़िन्दगी सीखी ही नहीं। आपको पता नहीं एक सवाल मुस्तकिल है ﴿عن ماله﴾ पैसा ﴿من اين اكتسبه﴾ कहाँ से कमाया था यह एक सवाल है।

﴿فيما انفقه﴾ कहाँ ख़र्च किया था?

अगर उस वक़्त हम फँस गए तो हमारा क्या बनेगा। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु आए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरा एक नौकर है वह ग़लती करता है और मैं सज़ा देता हूँ तो इसका क्या हुक्म है?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर उसकी ग़लती और तेरी सज़ा बराबर है तो छूट हो जाएगी और अगर उसकी ग़लती कम और तेरी सज़ा ज़्यादा है तो पकड़े जाओगे।

वह सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु रोने लगे और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! इसका हल यही है कि मैं उसको आज़ाद करता हूँ।

यहाँ तक तराज़ू को क़ायम किया जाएगा।

रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ज़िन्दगी लाए जिस ज़िन्दगी का नाम इस्लाम है जो हमारी पहचान है। जिसको हमने सीखा नहीं। माँ बाप को तो फ़ुर्सत नहीं तो उन्होंने औलाद को कब सिखाया है। वालिदैन कमाइयों पर चले जाते हैं और बच्चे स्कूल चले जाते हैं। बच्चे वापस आते हैं तो ट्यूशन चले जाते हैं। वहाँ से आए तो टीवी के सामने बैठ जाते हैं। न कभी माँ ने बच्चों को बिठाकर समझाया और न कभी बाप ने समझाया कि हम दुनिया में क्यों आए है और मक़सद क्या है?

लोग तो हमें कहते हैं कि तबलीग़ वाले बच्चों को छोड़कर चले जाते हैं। बच्चों को टाईम नहीं देते। मैं कहता हूँ जो घरों में रहते हैं ये बच्चों को कितना टाईम देते हैं। दयानतदारी से बताएं।

सिर्फ़ आइसक्रीम खिलाने ले जाना। मिरी ले जाना यह तो कोई टाइम देना नहीं है। यह तो अय्याशी है जो माँ-बाप ने भी की बच्चों ने भी की। टाइम देने का मतलब यह है कि बच्चों को बताया जाए कि तुम क्या हो? किस लिए आए हो? क्या मक़सद है?

एक बच्चे को जहन्नुम का ख़ौफ़

बहलोल रह० गुज़र रहे थे एक बच्चे को देखा वह खड़ा रो रहा था। दूसरे बच्चे अख़रोट से खेल रहे थे। उन्होंने समझा कि इसके पास अख़रोट नहीं हैं इसलिए रो रहा है। मैं उसको लेकर दे देता हूँ। उन्होंने कहा बेटा रो नहीं मैं तुझे अख़रोट लेकर दे देता हूँ तू भी खेल।

उस बच्चे ने कहा बहलोल! हम दुनिया में कोई खेलने के लिए आए हैं? उनको इस बात की उम्मीद नहीं थी कि बच्चा ऐसा जवाब देगा। तो उन्होंने कहा अच्छा फिर क्या करने आए हैं?

बच्चे ने कहा अल्लाह तआला की इबादत करने आए हैं।

उन्होंने कहा बच्चे! अभी तो तू छोटा है तेरे ग़म की यह चीज़ नहीं है। अभी तो तेरा इस मंज़िल में आने में भी वक़्त पड़ा है।

तो उसने कहा अरे बहलोल! मुझे धोका न दे मैंने अपनी माँ को देखा है कि वह सुबह जब आग जलाती है तो पहले छोटी छोटी लकड़ियों से जलाती है और फिर बाद में बड़ी लकड़ियाँ रखती है। इसलिए मुझे डर है कि कहीं दोज़ख़ मुझ से न जलाई जाए और मेरे ऊपर बड़ों को न डाला जाए। यह सुनकर बहलोल रह० तो बेहोश होकर गिर गए।

किसी माँ ने उस बच्चे को वक़्त दिया था।

इन्सान होना सिखाएं

आप लोग कितना वक़्त देते हैं अपने बच्चों को जिसमें उन्हें ज़िन्दगी का मक़सद समझाएं। स्कलू व कालेज तो हमारे बच्चों को कुछ भी नहीं समझा रहे हैं। वे तो कमाई के तरीक़े समझा रहे हैं। इन्सानियत तो नहीं सिखा रहे हैं। इन्सान होना तो नहीं समझा रहे हैं।

फिर आप अगर अपने बच्चों को सिखा रहे हैं तो कारोबार सिखा रहे हैं। उनको इन्सान होना कब सिखा रहे हैं।

भाईयो!

इसलिए हम वक़्त मांगते हैं। माँ-बाप की एक ज़िम्मेदारी है अल्लाह तआला ने औरत को घर में बिठाया है तो किस लिए बिठाया है। फारिग़ नहीं है बल्कि बहुत बड़ा काम दिया है। इन्सानियत की नर्सरी को तैयार करने का काम हमारी औरत को मिला हुआ है।

इसलिए सारे काम अल्लाह ने मर्द के ज़िम्मे रखे हैं कि कमाकर भी लाओ और बाज़ार से सौदा भी लाकर दो और औरत की सारी ज़रूरतें घर में ही पूरी करो औरत को पर्दे में रखो। उसका नाम ही "औरत" रखा और औरत कहते हैं पर्दे को और उसका इस्लाम ने ऐसा पर्दा रखा है कि उसके नाम को भी ज़ाहिर करना पसन्द नहीं किया बजाय इसके कि वह बाल खोलकर बाज़ार में फिरे।

औरत का नाम भी औरत है

पूरे क़ुरआन में हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा के अलावा किसी औरत का नाम नहीं आया। आप "सूरहः फ़ातेहा" से शुरू करें और "सूरहः नास" तक पहुँच जाएं आपको किसी औरत का नाम नहीं मिलेगा।

हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम जो क़ुरआन में आया है वह इस वजह से आया है कि लोगों ने उनके बेटे हज़रत ईसा अलैहिससलाम को कहा कि यह अल्लाह का बेटा है। अल्लाह तआला ने इस इलज़ाम को साफ़ करने के लिए कहा

﴿ذالك عيسى ابن مريم﴾

संभल कर बोलो मेरा नहीं बल्कि मरयम का बेटा है

उनके अलावा किसी का नाम नहीं है।

﴿امرات فرعون﴾ फ़िरऔन की बीवी अगर अल्लाह आसिया (रज़ियल्लाहु अन्हा) कह देता तो क्या हर्ज था। तारीख़ में तो उनका नाम है।

﴿امرات العزيز﴾ गर्वनर की बीवी अगर अल्लाह ज़ुलेख़ा कह देता तो क्या हर्ज था। ज़ुलेख़ा का नाम मौजूद है।

﴿امراة نوح﴾ नूह अलैहिस्सलाम की बीवी।

﴿امراة لوط﴾ लूत अलैहिस्सलाम की बीवी।

औरत का नाम ख़ाविन्द के नाम से आया। भाई के नाम से आया

﴿يااخت هرون﴾ ऐ हारून की बहन। नाम सिर्फ़ मरयम का है। उलमा ने लिखा है कि,

"अल्लाह तआला इस बात करने के अन्दाज़ से यह बात समझा रहे हैं कि औरत का नाम भी औरत है यानी छुपा हुआ और पर्दे की चीज़ है।"

वह भी बग़ैर ज़रूरत के ज़ाहिर करना पसन्दीदा चीज़ नहीं है तो चेहरा खोलकर फिरना कहाँ से जाएज़ हो जाएगा। वैसे तो जाएज़ करने को तो चोरी भी जाएज़ करवा लें। हर जगह ऐसे मुफ़्ती मिल जाएंगे लेकिन एक वह मुफ़्ती है जो अन्दर बैठा हुआ है जो कभी कभी जब जागा होता है तो फिर पूरे वजूद को परेशान करके रख देता है। हम फिर उसको थपथपा कर सुला देतें हैं कि सो जा सो जा ताकि हमें अन्दर से दोबारा परेशान न कर दे।

तो औरत को घर क्यों बिठाया है? उम्मत की तामीर करने के लिए कि ऐसी नस्ल तैयार करो जो अल्लाह के दीन और अल्लाह की बताई हुई पसन्दीदा ज़िन्दगी लेकर सारी दुनिया में चल सकें।

मर्द तो पहले ही सारा दिन मसरूफ़ होते हैं। वे तो वक़्त दे ही नहीं सकते। ज़्यादा वक़्त तो बच्चा माँ के पास होता है और माँएं अपने कामों में मशग़ूल होती हैं। फ़ीडर बच्चों के मुँह में होता है और स्कूल जा रहे होते हैं क्या ज़ुल्म है। मक़सद यह होता है कि हमारी जान छूटे।

वहाँ से आए तो ट्यूटर के हवाले

वहाँ से आए तो टीवी के हवाले।

जिसके ज़रिये यहूद ने हमारी नस्ल सारी की सारी ख़रीद ली है और ऐसा बेहया समाज हमें दे दिया है जहाँ हयादार होना बेइज़्ज़ती हो गया। बुर्क़ा करना शर्म की चीज़ बन गया और खुले मुँह फिरना शराफ़त की चीज़ बन गया। या अल्लाह! हम किस माहौल और किस समाज में आ गए। जहाँ उल्टी गंगा बहती है।

बीवियों की कसरत में हिकमत

﴿وقرن فی بیوتکن﴾

बैठ जाओ घरों में।

﴿واذکرن ما یتلی فی بیوتکن من ایت اللہ والحکمۃ﴾

यह तुम्हारा काम है कि अपने घरों में बैठकर अल्लाह की किताब और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को

अपनी औलाद को सिखाओ और आने वाली औरतों को सिखाओ।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शादियाँ ज़्यादा करने की वजह यही थी। शौक़ से नहीं कीं हैं अगर आप शौक़ से कोई शादी करते तो पच्चीस साल की उम्र में चालीस साल की दो दफ़ा बेवाह औरत से शादी क्यों की। कुछ रिवायतों में तीन दफ़ा भी आता है लेकिन दो दफ़ा ज़्यादा मशहूर है।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की दो शादियाँ पहले हो चुकी थीं और पहले शौहरों से औलाद भी मौजूद है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ूबिया

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे हसीन नौजवान हैं जिनके बारे में हिस्सान रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं तू ऐसा बना है जैसे तूने खुद चाहा।

ऐसे ख़ूबसूरत कि हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखकर औरतों ने हाथ काटे थे अगर मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखतीं तो सीनों में छुरियाँ चला देतीं।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हम मस्जिद में बैठे थे और चौदहवीं रात चाँद चमक रहा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुर्ख़ धारीदार चादर ओढ़ी हुई थी तो हम कभी चाँद को देखते और कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे को देखते। अल्लाह की क़सम आपका चेहरा चाँद से ज़्यादा ख़ूबसूरत नज़र आ रहा था।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं मैं घर में कपड़ा सी रही थी और सुई गिर गई। अंधेरा था। मैंने तलाश किया नहीं मिली। इतने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्दर तशरीफ़ लाए तो आपके चेहरे की शुआओं से सुई चमकने लगी।

ऐसे हसीन को क्या कोई कुँवारी औरत नहीं मिलती थी। चालीस बरस की औरत से शादी की और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र पचास बरस की हो गई तो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल हुआ। पच्चीस बरस आपने अपने से पन्द्रह साल बड़ी औरत के साथ गुज़ारे और फिर तीन बरस एक और बेवाह हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ गुज़ारे। तरेप्पन साल की उम्र तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बेवाओं से निकाह किए है और जब बुढ़ापा आ गया और मौत दस्तक देने लगी तो फिर तीसरी शादी, फिर चौथी शादी, फिर पाँचवीं, फिर छठी, फिर सातवीं, फिर आठवीं, फिर नवीं, फिर दसवीं, फिर गयारहवीं।

यह कोई शौक़ की शादियाँ हैं। बुढ़ापे में भी कोई शादियों का शौक करता है।

ये ज़रूरत की शादियाँ थीं कि मदीने और दूर दराज़ तक इस्लाम फैल चुका था। औरतें भी आ रही थीं मर्द भी आ रहे थे इस्लाम सीखने के लिए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम औरतों के सामने तो जा नहीं सकते थे इसलिए आप अपनी बीवियों को बताते और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में नौ हल्क़े लगे होते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो बीवियाँ तो आपकी ज़िन्दगी में वफ़ात पा गयीं थी। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा

और हज़रत जैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा बाक़ी नौ बीवियाँ हैं और नौ के नौ घरों में दीन सिखाया जा रहा है। हदीस सिखाई जा रही है, दीन सिखाया जा रहा है क्योंकि वहाँ न तो घर की सफ़ाई का काम है और न बर्तन धोने की फ़िक्र है क्योंकि दो दो महीने तो चुल्हा नहीं जलता था और न कढ़ाई का काम है कि जोड़ा ही एक है और न कोई डेकोरेशन है कि सिवाए एक लिहाफ़ के है ही कुछ नहीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़क्र इख़्तियार करना

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में एक औरत आई तो देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ाई फटी हुई थी। वह गई और एक नई रज़ाई फूलदार भेजी और कहा यह मेरी तरफ़ से क़बूल कर लें।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा बहुत ख़ुश हुई क्योंकि उम्र अभी छोटी थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो, पूछा आएशा! यह क्या है? हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आपकी रज़ाई फटी हुई देखकर फ़लाँ अन्सारी बहन ने मुझे आपके लिए हदिया भेजा है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ आएशा! अगर मैं चाहता तो ओहद पहाड़ मेरे लिए सोने का बनकर हाज़िर हो जाता। मैंने इस ज़िन्दगी को खुद ठुकराया यह रज़ाई वापस कर दो।

अब हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा लाडली भी थीं अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे बहुत अच्छी

लगी है मैं क्यों वापस करूं?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आएशा! रसूलुल्लाह और यह रज़ाई एक घर में जमा नहीं हो सकते। आपने वापस करवा दी।

तो घर में तो कोई सामान ही नहीं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकीज़ा बीवियों के लिए मशग़ूली का सबब बन ता क्या काम था? नस्ल की तामीर, इन्सानियत की तामीर जो आज की औरत की अपनी ही नहीं होती तो वह औलाद की क्या तर्बियत करेगी।

ईमानी ज़िन्दगी सीखें

तो इसलिए हम कहते हैं निकलो। पहले हम ख़ुद ईमानी ज़िन्दगी सीखें। उसकी हदें सीखें। उसकी तर्तीब सीखें फिर आकर अपनी औलाद को सिखाएं और ख़ास तौर से अपनी बच्चियों सिखाएं। हम जानवर तो हैं नहीं कि जंगल में रहें बल्कि हम इन्सान हैं। हमने एक दूसरे के साथ मिल जुलकर रहना है। किसी की बेटी हमारे घर आएगी और किसी के घर में हमारी बेटी जाएगी तो अगर उन्होंने इन्सानियत नहीं सीखी हुई तो देखो आज घरों में कितनी सर्द आग है जो सुलग रही है और हड्डियाँ तक जल रही हैं। इसलिए कि लोगों ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रहन सहन सीखा ही नहीं।

सिर्फ़ घरों को देखा, पैसा देखा और शादियाँ कर दीं यह नहीं देखा कि इन्सान भी बने हुए हैं या नहीं तो इन्सान बनता है रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी सीखने से।

ज़िन्दगी का रुख़

तो इसलिए गुज़ारिश है कि हम अपनी ज़िन्दगी का कुछ रुख़ बनाएं। अपने आपको आज़ाद न समझें। हमारे पीछे एक बहुत बड़ी ताक़तवर ज़ात है जो हमारे हर अमल की निगरानी कर रही है। हम वह अमल करें जिससे वह राज़ी हो जाए और इसी को सीखने के लिए हम निकलते हैं। आप बहनों और भाईयों की ख़िदमत में भी गुज़ारिश है कि मेरी बात पर ग़ौर करें। मैं यह बात बताने आया हूं कि हम ग़लत राह पर चल पड़े हैं। कहीं रुक जाएं, कहीं रुक जाएं।

आदमी अगर रास्ते पर चलते चलते भटक जाए तो रुक जाता है और किसी से पूछता है कि मुझे सईद कालोनी जाना था। उसका रास्ता किस तरफ़ है तो हम भी रुकें और पूछें या अल्लाह वह कौन सी ज़िन्दगी है जिसे तू चाहता है।

वह ज़िन्दगी कौन सी है जिसे तेरा रसूल चाहता है। उसे हम ज़िन्दा करें। बस इसी से हमारे दोनों जहान बन गए। यह बात घर बैठे हाथ में नहीं आती। इसलिए निकाला जाता है।

एक दिन के लिए आपके मुहल्ले में आना अल्लाह ने हमारे मुक़द्दर कर दिया था तो यह मैं अमानत समझ कर अर्ज़ कर रहा हूँ।

क़ायदा

भाईयो!

अपनी आँखों से ग़फ़लत के पर्दे को हटाएं और इसके लिए

अपने को तैयार करें। जब ये आँखें बन्द हो जाएंगी और हम बिल्कुल अल्लाह के रहम व करम पर होंगे। हमारे मर्द भी तैयारी करें, हमारी औरतें भी तैयारी करें और अपने बच्चों को भी तैयार करें।

गुज़ारिश है यह है कि हर हर औरत अपने घर को मस्जिद बना दे

और पूरे घर में कोई बेनमाज़ी न हो,

और घर में अगर कोई लड़की हो तो वह बे पर्दा न हो,

लड़का हो तो हया वाला हो,

कुरआन पाक की तिलावत ज़िन्दा हो जाए,

और अपने मर्दों से कहो हमें हलाल खिलाओ, हराम न खिलाओ। रूखी सूखी हो मगर हलाल हो। हमें झूठ का पैसा नहीं चाहिए, हमें सूद का पैसा नहीं चाहिए, ग़लत तिजारत का पैसा नहीं चाहिए। हम झोपड़ी में रह सकती हैं लेकिन यह दौलत नहीं चाहिए जो कल को हमें अल्लाह की नज़रों में गिरा दे।

औरतों के लिए तीन दिन हैं। अपने ख़ाविन्द और महरम के साथ यानी बाप या भाई के साथ निकलें अगर तीन दिन दो तीन महीने के बाद तीन तीन दिन औरतें लगाती रहेंगी तो इन्शाअल्लाह दीन पर चलने की ताक़त पैदा होती रहेगी और यही ताक़त पूरे माहौल पर असरअन्दाज़ होगी। और लोग भी आप से असर लेकर दीन पर चलना शुरू कर देंगे।

○ ○ ○